दृक्सिद्धं निरयणञ्च चित्रापक्षीयमुत्तमम् । “विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्” भूमौ विजयतेतराम्।।

ISSN 2229-3450

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय

राजा–गुरु

विक्रम संवत्-२०८३
शक-संवत्-१९४८

मन्त्री–मंगल

भा०गणराज्य-संवत् ७९-८०
ईशवीय-सन् २०२६-२०२७

विद्यापीठ – पञ्चाङ्ग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

बी–4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली – 110016

वर्ष : 44 | संवत्सर - रौद्र | मूल्य रू. 100/–

प्रधान–सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक :

प्रो. प्रेमकुमार शर्मा

वरिष्ठाचार्य, ज्योतिष–विभाग

प्रो. बिहारीलाल शर्मा

आचार्य, ज्योतिष–विभाग

प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा

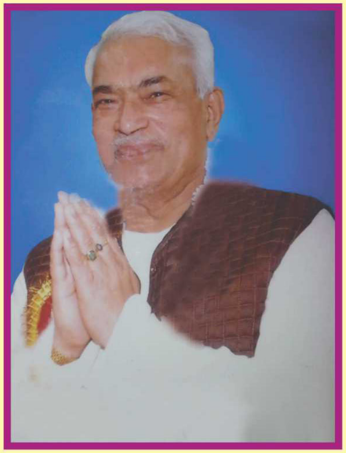
आचार्य एवं अध्यक्ष, ज्योतिष–विभाग



पञ्चाङ्ग–प्रवर्तक

स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा

"राष्ट्रपति–सम्मानित"



प्रेरणास्रोत

स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

"राष्ट्रपति–सम्मानित"

सम्पादक मण्डल

1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा – आचार्य, ज्योतिष–विभाग
2. प्रो. परमानन्द भारद्वाज – आचार्य, ज्योतिष–विभाग
3. प्रो. सुशील कुमार – आचार्य, ज्योतिष–विभाग
4. प्रो. फणीन्द्र कुमार चौधरी –आचार्य, ज्योतिष–विभाग
5. प्रो. रश्मि चतुर्वेदी – आचार्य, ज्योतिष–विभाग
6. डॉ. रत्न लाल – सह आचार्य ज्योतिष–विभाग
7. डॉ. मनोरमा कुमारी – सहायकाचार्य, ज्योतिष–विभाग
8. डॉ. खेमराज रेग्मी – सहायक आचार्य, अतिथि
9. डॉ. बृजमोहन – सहायक आचार्य, अतिथि
10. डॉ. होमेशदत्त – सहायक आचार्य, अतिथि

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय–विश्वविद्यालय)

बी–4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110 016

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली - ११००१६

संक्षिप्त-परिचय

भारत की राजधानी दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रिय संस्कृत-संस्थान के अभाव की पूर्ति के लिए स्वर्गीय ''प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी'' की प्रेरणा से अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन ने विजयदशमी विक्रम-संवत् २०२० को संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की। उस समय इस विद्यापीठ का नाम अखिल भारतीय संस्कृत विद्यापीठ रखा गया और भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी ने इसके शासन निकाय की अध्यक्षता स्वीकार की। स्वर्गीय श्री शास्त्री जी की प्रेरणा एवं उनकी संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति में अगाध निष्ठा से विद्यापीठ की समस्त प्रवृत्तियों को बड़ा बल मिला और अपनी स्थापना के दो-तीन वर्षों में ही इस विद्यापीठ ने देश के संस्कृत-शिक्षण-संस्थानों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

उनके निधन के उपरान्त विद्यापीठ की स्थापना में उनके महनीय योगदान और इस संस्था के साथ शास्त्री जी के ऐतिहासिक सम्बन्धों को ध्यान में रखते हुए दिनांक ०२ अक्टूबर १९६६ ई० को भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारत सरकार द्वारा इसका अधिग्रहण करके इसका नाम श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ रखने की घोषणा की। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्वयं विद्यापीठ के सभापति पद को स्वीकार किया। उनके सभापतित्व तथा तत्कालीन दिल्ली के उपराज्यपाल डॉ. आदित्य नाथ झा के कार्यवाहक सभापतित्व में इस विद्यापीठ ने प्रगति का एक महत्त्वपूर्ण दौर पूरा किया।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की घोषणा के अनुसार भारत सरकार ने शिक्षा मन्त्रालय में स्वायत्तसंस्था के रूप में ०१ अप्रैल १९६७ ई० को विद्यापीठ का अधिग्रहण कर इसके संचालन के लिए एक सभा नियुक्त की। दिनांक २१ दिसम्बर १९७० ई. से इस विद्यापीठ का प्रबन्ध 'राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान' के अन्तर्गत दिया गया। तब से इस विद्यापीठ का नाम 'श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ' रखा गया।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग की अधिसूचना सं. F.२/४५ U.३ दिनांक १६ नवम्बर १९८७ द्वारा इस विद्यापीठ को "मानित-विश्वविद्यालय" का स्तर प्रदान किया गया।

इसके संचालन के लिए श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ नाम से एक स्वायत्त समिति का पंजीकरण कर इसकी व्यवस्था उक्त समिति को स्थानान्तरित की गयी। मानित-विश्वविद्यालय के रूप में इसका उद्घाटन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम रामास्वामी वैंकटरामन् द्वारा २३ फरवरी १९९१ ई० को किया गया।

भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना सं. F. No. 4-4/2018-Skt-II दिनाङ्क १७.०४.२०२० के अनुसार श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित-विश्वविद्यालय) को श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय-विश्वविद्यालय) घोषित किया गया। श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा जारी अधिसूचना सं. F.No.1(149)/LBSV/Admn/2019-20/20 दिनाङ्क ३०.०४.२०२० के अनुसार केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में कार्य प्रारम्भ किया गया। विद्यापीठ के संस्थापक कुलपति **पद्मश्री श्रद्धेय डॉ. मण्डन मिश्र जी** ने अप्रतिम समर्पण भाव से इस कल्पवृक्ष का आरोपण किया, वर्तमान में इसके **कुलाध्यक्ष महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू जी** के मार्गदर्शन में यह विश्वविद्यालय पल्लवित, पुष्पित एवं फलीभूत हो रहा है।

वर्तमान में यह विश्वविद्यालय शास्त्री, शिक्षा-शास्त्री, आचार्य, शिक्षाचार्य, विशिष्टाचार्य, विद्यावारिधि एवं विद्या-वाचस्पति उपाधियों के लिए अध्ययन-अध्यापन, प्रशिक्षण एवं शोध कार्य की व्यवस्था कर रहा है।

विश्वविद्यालय ने अब तक १४१ उच्चकोटि के प्रकाशन राष्ट्र को समर्पित किए हैं। वर्तमान में ३४६ विद्यार्थी विभिन्न विभागों में शोध के लिए पंजीकृत हैं, जिनमें ४२ छात्र ज्योतिष शास्त्र के विविध विषयों पर शोधकार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोधकर्ताओं के शोधात्मक आलेख त्रैमासिक शोध पत्रिका **''शोधप्रभा''** में भी प्रकाशित किये जाते हैं ।

प्रस्तावना

भारतीय ज्योतिष-शास्त्र की एक प्रमुख विशेषता है, कि यह प्रत्यक्ष शास्त्र है। सौरमण्डलीय ग्रहों की गति, स्थिति, उदय, अस्त, मार्गत्व, वक्रत्व, ग्रहण एवं चन्द्रकलाओं की ह्रास-वृद्धि आदि कुछ ऐसी घटनायें हैं, जो हजारों-हजारों वर्षों से इसकी प्रत्यक्षता की गवाही दे रही हैं। ज्योतिष-शास्त्र में प्रत्यक्षता का अर्थ होता है- **''गणितागत परिणाम का ज्यों का त्यों दिखलाई देना।''** उदाहरणार्थ जिस समय गणित से पूर्णिमा आए और उस समय चन्द्रमा का परिपूर्ण बिम्ब दिखलाई दे अथवा जिस समय सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण गणित से निकाला जाए और उसी समय सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण पड़े अथवा गणित से ग्रहों के उदयास्त का जो समय बतलाया जाए, उसी समय ग्रहों का उदयास्त हो, इस प्रकार के गणितागत परिणामों का यथावत् घटित होना प्रत्यक्षता कही जाती है।

'प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्' की उद्घोषणा करने वाले वसिष्ठ एवं पराशर प्रभृति महर्षियों ने इस प्रकार के सत्यों एवं सिद्धांतों को दो प्रकार से ज्ञात किया था। १-अन्तर्दृष्टि (Intuition) एवं, २-पर्यवेक्षण (Observation)। अन्तर्दृष्टि या दिव्यदृष्टि एक ऐसी वैयक्तिक क्षमता है, जिसके द्वारा विचार-तरंगों में आन्दोलित तथ्यों को यथावत् आत्मसात् किया जा सकता है। तथ्य एवं सत्य दोनों को जानने की यह एक सयुक्तिक विधा है। क्योंकि यह विचारणीय पदार्थ के विहित गुण-दोषों का ही विवेचन नहीं करती, वरन् यह सर्वथा उदासीन या तटस्थ रहकर उसके सम्पूर्ण स्वरूप का यथावत् अवलोकन भी करती है। इसलिए अन्तर्दृष्टि अभिज्ञान (Intuitive Cognition) में सदैव एक मौलिक प्रकार की निश्चिन्तता एवं विश्वसनीयता पाई जाती है।

हमारे महर्षियों ने इसके साथ-साथ पर्यवेक्षण का सतत उपयोग किया था। वे अकेली-अकेली एवं सामूहिक घटनाओं को बार-बार घटित होने वाली ग्रहों की गतिविधियों के प्रकाश में ध्यानपूर्वक देखते थे और ग्रहों की गतिविधियों की आवृत्ति के साथ-साथ उनकी जनसमुदाय पर पड़ने वाली शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करते थे। इस प्रकार सैंकड़ों वर्षों के पर्यवेक्षण ने क्रान्तिद्रष्टा ऋषियों को समाहित कर दिया, कि राशिचक्र की राशिविशेष में ग्रहविशेष की विशिष्ट गतिविधि का तत्काल जन्म लेने वाले एवं जीवित मानवों पर एक सविशेष प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार की अन्तर्दृष्टि एवं पर्यवेक्षण की विधियों में ग्रह-नक्षत्रों की समस्त गतिविधियों एवं उनके मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का एकत्र संकलित स्वरूप भारतीय ज्योतिषशास्त्र है। यदि संक्षेप में कहा जाए तो यह शास्त्र उन सत्यों एवं सिद्धांतों का ज्ञानकोष है - जिनके द्वारा ग्रह-नक्षत्रों की समस्त गतिविधियों एवं उनके समस्त परिणामों को जाना जा सकता है। भारतीय ज्योतिष-शास्त्र के मनीषियों की यह सर्वसम्मत मान्यता है, कि जीवन में घटित होने वाली समस्त घटनायें ग्रह-नक्षत्रों की गतिविधियों के साथ सापेक्षता रखती हैं।

ग्रहों की गति एवं स्थिति को काल कहते हैं। चूँकि यह शास्त्र ग्रहों की गतिविधि अर्थात् काल तथा जीवन में घटित होने वाली घटना अर्थात् उसका परिणाम इन दोनों के बारे में सांगोपांग विवेचन करता है, अतः यह कालविज्ञान कहलाता है। काल के विविध मानों में तिथि, नक्षत्र, योग, करण एवं वार- ये पाँच अंग प्रधान होते हैं, जिन्हें पञ्चाङ्ग कहते हैं। इनकी जानकारी के बिना न तो श्रौत एवं स्मार्त्त कर्मों का विधान किया जा सकता है और न ही नित्य, नैमित्तिक एवं प्रायश्चित्त कर्मों का अनुष्ठान किया जा सकता है। सभी प्रकार के व्रत, पर्व एवं उत्सवों की जानकारी हमें पञ्चाङ्ग से ही मिलती है। अतः समस्त धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों के यथासमय सम्पादन में पञ्चाङ्ग हमारी सर्वाधिक सहायता करता है।

पञ्चाङ्ग में तिथ्यादि के मानों को अप्रत्यक्ष या अदृश्य कहकर उनकी स्थूल गणना, मकरन्द एवं ग्रहलाघव आदि की सारिणियों से करने के आग्रह और प्रमाण के लिए सूर्य-सिद्धांत का उल्लेख किया जाता है, जबकि सूर्य सिद्धान्तकार दृक्तुल्यता के समर्थक हैं, यथा -

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥

इसके साथ-साथ सिद्धान्त ग्रन्थों के प्रणेता प्रायः सभी आचार्यों ने दृक्तुल्य ग्रहों के द्वारा तिथ्यादि आनयन को व्रत-पर्व, एवं उत्सवों के लिए उपयोगी माना है।

यथा - **यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।**
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ।। - वशिष्ठ
यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।।
-भास्कराचार्य
तेभ्यः स्याद् ग्रहणादिदृक्सममियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मंगलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समा।। -तिथिचिन्तामणि

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार एवं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के द्वारा प्रवर्तित शास्त्रचूड़ामणि योजना में राष्ट्रपति-सम्मानित ज्योतिष यन्त्रालय जयपुर के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. म.म. पं० कल्याणदत्त शर्मा जी की सेवायें इस विद्यापीठ को प्राप्त हुईं । श्री शर्मा जी वेधशाला एवं भारतीय गणित के प्रमुख विद्वान् थे। उनके अहर्निश चिन्तन एवं प्रयत्न से विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग का श्रीगणेश हुआ।

श्री शर्मा जी को भी इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए एक कर्मठ एवं शास्त्रीय परम्परा में निष्णात प्रो. ओंकारनाथ चतुर्वेदी जी का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। परिणाम स्वरूप इन दोनों विद्वानों ने सन् १९८२ ई. के ग्रीष्मावकाश में अथक परिश्रम से वि. सम्वत् २०४० के पञ्चाङ्ग-गणित का कार्य सम्पन्न करके इसे सम्पादन के लिए तत्कालीन ज्योतिष- विभागाध्यक्ष प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी जी को सौंपा। प्रो. चतुर्वेदी जी ने शीघ्र ही इसका सम्पादन करके विद्यापीठ पञ्चाङ्ग के प्रकाशनार्थ पञ्चाङ्ग गोष्ठी का प्रस्ताव विद्यापीठ के संस्थापक कुलपति एवं तत्कालीन प्राचार्य श्रद्धेय पद्मश्री डॉ. मण्डन मिश्र जी को प्रस्तुत किया।

दिनांक ०५ अक्टूबर १९८२ को विद्यापीठ में सम्पन्न पञ्चाङ्गगोष्ठी के अनुसार इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्वी रेखांश ७७°-१२', उत्तरी अक्षांश २८°-३८' अर्थात् भारत की राजधानी दिल्ली को आधार मानकर चित्रापक्षीय एवं निरयण पद्धति से किया गया है। इस पञ्चाङ्ग में दैनिक स्पष्टग्रह, दैनिक लग्नसारिणी, जन्म-पत्री एवं वर्षफल के निर्माण की सुगम सारिणियाँ, उत्तरी भारत के प्रमुख नगरों की लग्न सारिणियाँ, व्रत-पर्व एवं उत्सवों की वर्गीकृत सूची, मांगलिक मुहूर्तों की तालिका, राहुकाल, लोकभविष्य एवं मेलापक जैसे लोकोपयोगी विषयों का समावेश किया गया है, जो एक प्रमुख पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक होते हैं।

वि. संवत् २०८३ के विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग के व्रत-पर्व एवं उत्सवों का ज्योतिष एवं धर्मशास्त्रीय नियमों के आधार पर निर्णय करने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन दिनाङ्क २३, २४ एवं २५ जुलाई, २०२५ को विश्वविद्यालय में किया गया, जिसमें श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के ज्योतिष-विभागाध्यक्षचर प्रो. ओंकारनाथ चतुर्वेदी, कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभङ्गा, बिहार के कुलपतिचर प्रो. रामचन्द्र झा तथा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रणवीर परिसर, जम्मू के निदेशकचर प्रो. वासुदेव शर्मा एवं ज्योतिष-विभागीय प्राध्यापकों प्रो. प्रेम कुमार शर्मा, प्रो. विनोद कुमार शर्मा, प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा, प्रो. परमानन्द भारद्वाज, प्रो. सुशील कुमार, प्रो. फणीन्द्र कुमार चौधरी, प्रो. रश्मि चतुर्वेदी, डॉ. रतन लाल, डॉ. खेमराज रेग्मी, डॉ. बृजमोहन, डॉ. होमेश दत्त एवं धर्मशास्त्र विभाग के प्रो. यशवीर सिंह, डॉ. हिमांशु शेखर त्रिपाठी एवं डॉ. मीनाक्षी मिश्र ने भाग लिया। इसका सम्पादन ज्योतिष-विभागाध्यक्ष, प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा द्वारा ज्योतिष विभागीय विद्वानों के सहयोग से किया गया, पञ्चाङ्ग के प्रकाशनार्थ विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. पवन कुमार शर्मा जी एवं वित्ताधिकारी श्री संतोष कुमार श्रीवास्तव जी का प्राशासनिक कार्यों में अद्वितीय सहयोग रहा है। मैं इन सभी महानुभावों को धन्यवाद देता हूँ। विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग का यह चव्वालिसवाँ अङ्क विज्ञजनों के हाथों में समर्पित करते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। आशा है आपका आशीर्वाद एवं परामर्श हमारे इस प्रयास को और अधिक उपयोगी बनाने में सहायक होगा।

वसन्त पञ्चमी, रविवार
दिनाङ्क २३ जनवरी २०२६ ई.

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति
प्रधान-सम्पादक

♦ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ♦ विषय-सूची ♦ विक्रम संवत् २०८३ ♦

अथ सन्ध्योपासनाविधिः

पवित्रीकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा इत्यस्य वामदेव ऋषिः
गायत्रीच्छन्दः विष्णुर्देवता हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ सर्वं शुचिः॥

आचमनम्

ॐ ऋग्वेदाय नमः स्वाहा । ॐ यजुर्वेदाय नमः स्वाहा।
ॐ सामवेदाय नमः स्वाहा। ॐ अथर्ववेदाय नमः ॥ (हस्तौ प्रक्षाल्य)

आसनशुद्धिः

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

पवित्रीधारणम्

ॐ पवित्रेस्थ इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः भूरिक् अत्यष्टिच्छन्दः आपो देवता पवित्रधारणे विनियोगः।

ॐपवित्रेंस्थोव्वैष्णव्व्योसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुंनाम्म्यच्छिंद्रेणपवित्रेंणसूर्य्यस्य रश्मिभिंः॥ तस्यंतेपवित्रपतेपवित्रंपूतस्ययत्कांमः पुनेतच्छंकेयम्॥

शिखाबन्धनम्

ॐ मानस्तोक इति मन्त्रस्य कुत्स ऋषिः जगतीच्छन्दः एकरुद्रो देवता शिखाबन्धने विनियोगः।

ॐमानंस्तोकेतनंयेमानऽआयुंषिमानोगोषुमानोऽअश्वेंषुरीरिषः॥
मानोंव्वीरानुंद्रभामिनोंवधीर्हविष्मंन्तः सदमित्त्वांहवामहे॥
चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥
स्नाने दाने जपे होमे सन्ध्यायां देवतार्चने।
शिखाग्रन्थिं विना कर्म न कुर्याद् वै कदाचन॥

भस्माभिमन्त्रणम्

ॐ त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता भस्माभिमन्त्रणे विनियोगः।

ॐ त्र्यंम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पुंष्टिवर्द्धनम्॥
उर्व्वारुकमिंवबन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतांत्॥

भस्मधारणम्

ॐ त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः आशीर्देवता भस्मधारणे विनियोगः।

ॐ त्र्यायुषञ्जमदंग्नेः कश्यपंस्यत्र्यायुषम् ॥
यद्देवेषुंत्र्यायुषन्तन्नोंऽअस्तुत्र्यायुषम्॥

ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वᳪहवा इदं भस्म। ॐ मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि॥
(इति भस्मानि अवधार्य हस्तौ प्रक्षालयेत्)

आचमनम्

ॐ ऋतञ्चेति माधुश्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृतं दैवतम् अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ ऋतञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रोअर्णवः।
समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोअजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतो वशी।
सूर्याच्चन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्चपृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥

प्राणायामः

ॐ प्रणवस्य परब्रह्मर्षिः देवीगायत्रीच्छन्दः परमात्मा देवता प्रणायामे विनियोग: सप्तव्याहृतीनां क्रमेण विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयः गायत्र्युष्णिग् अनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि अग्नि-वाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्र-विष्णवो देवताः प्राणायामे विनियोग: तत्स-वितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः गायत्रीच्छन्दः सविता देवता प्रणायामे विनियोग: आपोज्योतिरित्यस्य प्रजापतिऋषिः यजुश्छन्दः ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः।

(पूरक-कुम्भक-रेचक- पूर्वकं त्रिवारं प्राणायामम् आचरेत्)

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।

ॐ तत्संवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यंधीमहि॥ धियोयोनः प्रचोदयांत्॥

ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्॥ (हस्तौ प्रक्षाल्य)

सन्ध्यासङ्कल्पः

ॐ तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च ।
योगश्च करणं विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत्॥

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यवर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यप्रदेशे (इन्द्रप्रस्थक्षेत्रे) ..तमे श्रीशालिवाहनशके तमे विक्रमाब्दे षष्ट्यब्दानां मध्ये अस्मिन् वर्तमाने ....नामधेयसंवत्सरे, श्रीसूर्ये ..... अयने, ..ऋतौ, मासानामुत्तमे ...... मासे शुभे, ...पक्षे, अद्य शुभपुण्यतिथौ,.... वासरे, ..नक्षत्रे, .योगे, ..करणे, ...राशिस्थिते श्रीसूर्ये, ...राशिस्थिते श्रीचन्द्रे, ..राशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु, एवं ग्रहगणगुणविशेषेण विशिष्टायां वेलायां शुभपुण्यतिथौ, ... गोत्रोत्पन्नः ...शर्माऽहम् ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ब्रह्मवर्चसः सिध्यर्थञ्च प्रातः / मध्याह्नम् / सायम् सन्ध्योपासनं करिष्ये।

ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः।

दिग्रक्षणम्

प्राच्यां दिशि। आग्नेय्यां दिशि। दक्षिणायां दिशि। नैर्ऋत्यां दिशि। पश्चिमायां दिशि। वायव्यां दिशि। उत्तरस्यां दिशि। ऐशान्यां दिशि। ऊर्ध्वायां दिशि। अधोदिशि।

कुबेरो रक्षतु। ईशानो रक्षतु। ब्रह्मा रक्षतु। अनन्तो रक्षतु। इन्द्रो रक्षतु। अग्नी रक्षतु। यमो रक्षतु। निर्ऋती रक्षतु। वरुणो रक्षतु। ॐ वरुणाय नमः। वायू रक्षतु। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।

अम्बुप्राशनम्

प्रातः

ॐ सूर्यश्चमेति नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता अम्बुप्राशने विनियोगः।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चदुरितम्मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥ (वारत्रयम् आचमनं कुर्यात्)

मध्याह्नम्

ॐ आपः पुनन्त्विति ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः आपो देवता अम्बुप्राशने विनियोगः।

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पुनातु माम्।
पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्।
यदुच्छिष्टमभोज्यञ्च यद्वा दुश्चरितं मम।
सर्वं पुनन्तु मामापोऽसताञ्च प्रतिग्रहं स्वाहा॥

सायम्

ॐ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अम्बुप्राशने विनियोगः।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्।
यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितम्मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

मार्जनम्

ॐ आपोहिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः गायत्रीच्छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवः। ॐ ता नऽऊर्जे दधातन। ॐ महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्य भाजयते ह नः। ॐ उशतीरिव मातरः। ॐ तस्माऽअरङ्गमामवः। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ॐ आपो जनयथाचनः॥

अभिमन्त्रणम्

ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः आपो देवता शिरस्स्येके विनियोगः।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।
पूतम्पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तुमैनसः॥

अघमर्षणम्

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः भाववृतो देवता अघमर्षणे विनियोगः।

ॐऋतञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः।
समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतो वशी।
सूर्या च्चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥

आचमनम्

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥

सूर्यार्घ्यविधिः

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः देवीगायत्रीच्छन्दः परमात्मा देवता भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवताः तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः गायत्रीच्छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।

ॐ भूर्भुवःस्वः॥ तत्संवितुर्व्वरेंण्यम्भर्गोंदेवस्यंधीमहि॥

धियोषोनंः प्रचोदयांत्॥

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते।

अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मस्वरूपिणे/ विष्णुस्वरूपिणे/ रुद्रस्वरूपिणे सवित्रे श्रीसूर्यनारायणाय इदम् अर्घ्यं दत्तम्, न मम॥

सूर्योपस्थानम्

ॐ उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः निचृद्गायत्रीच्छन्दः सूर्यो देवता चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङथर्वण ऋषिः उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उद्वयन्तमंसस्परिस्वः पश्यंन्तऽउत्तंरम् ॥

देवन्देंवत्रासूर्य्यमगंन्मज्योतिंरुत्तमम्॥

उदुत्यञ्जातवेंदसन्देवंव्वंहन्तिकेतवंः॥ दृशेव्विश्श्वांयसूर्य्यम्॥

चित्रन्देवानामुदंगादनींकञ्चक्षुंर्म्मित्रस्यर्ष्यरुंणस्याग्ग्नेः॥

आप्प्राद्यावांपृथिवीऽअन्तरिंक्षद्ध सूर्य्यऽआत्माजगंतस्तस्थुषंश्श्च ॥

तच्चक्षुंर्देवहिंतम्पुरस्तांच्छुक्रमुच्चंरत् ॥

पश्येंमशरदंः शतञ्जीवेंमशरदंः शतद्ध श्रृणुंयामशरदंः शतम्प्रब्रंवामशरदंः शतमंदींनाः स्यामशरदंः शतम्भूयंश्चशरदंः शतात्॥

अङ्गप्रोक्षणम्

ॐ भूः पुनातु शिरसि। ॐ भुवः पुनातु नेत्रयोः।

ॐ स्वः पुनातु कण्ठे। ॐ महः पुनातु हृदि।

ॐ जनः पुनातु नाभौ। ॐ तपः पुनातु पादयोः।

ॐ सत्यं पुनातु पुनः शिरसि॥

करन्यासः

ॐ भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ धियो योनः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

अङ्गन्यासः

ॐ भूः हृदयाय नमः। ॐ भुवः शिरसे स्वाहा।

ॐ स्वः शिखायै वषट्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् कवचाय हुम्।

ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ धियो योनः प्रचोदयात् अस्त्राय फट्॥

गायत्रीध्यानम्

ॐ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैः

युक्तामिन्दुकलानिबद्धमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम्।

गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं

शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

बहुरूपिणि गायत्रि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति।

अजरे अमरे देवि ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥

प्रातः

ॐ ब्रह्माणी चतुराननाक्षवलयं कुम्भं करैः स्रुक्स्रुवौ

बिभ्राणारुणकान्तिरिन्दुवदना ऋग्रूपिणी बालिका।

हंसारोहणकेलिरम्बरमणेर्बिम्बाञ्चिता भूषिता

गायत्री हृदि भाविता भवतु नः सम्पत्समृद्ध्यै सदा॥

मध्याह्नम्

ॐ ध्येया सा च सरस्वती भगवती पीताम्बराऽलङ्कृता
श्यामातन्विजयादिभिः परिलसद्गात्राञ्चिता वैष्णवी।
तार्क्ष्यस्था मणिनूपुराङ्गददश-ग्रैवेयभूषोज्ज्वला
हस्तालम्बित-शङ्ख-चक्र-सुगदा भूत्यै श्रियै चास्तु नः॥

सायम्

ॐ रुद्राणी नवयौवना त्रिनयना वैयाघ्रचर्माम्बरा
खट्वाङ्ग-त्रिशिखाक्ष-सूत्रवलया ध्येया यजूरूपिणी।
विद्युद्दाम-जटा-कलाप-विलसद्-बालेन्दु-मौलिर्मुदा
सावित्री वृषवाहना शिततनूर्भूत्यै श्रियै चास्तु नः॥

गायत्र्यावाहनम्

ॐ तेजोसीती धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः यजुस्त्रिष्टुबुष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

ॐ तेजोँसिशुक्रमंस्यमृतंमसिधामनामांसिप्रियन्देवानामनांधृष्टन्देवय जनंमसि ॥

ॐ गायत्रीं त्र्यक्षरां बालां साक्षसूत्रकमण्डलुम् ।
रक्तवस्त्रां चतुर्हस्तां हंसवाहनसंस्थिताम् ॥
ऋग्वेदस्य कृतोत्सङ्गां सर्वदेवनमस्कृताम्।
ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्॥
आवाहयाम्यहं देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् ।
आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ॥
गायत्रि छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते ॥

गायत्र्युपस्थानम्

ॐ गायत्र्यसीति तुरीयपदस्य विवस्वान् ऋषिः स्वराणमहापङ्क्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ गायत्र्यस्येकपदीद्विपदीत्रिपदीचतुष्पद्यपदसि ।
न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परो रजसे सावदो मा प्रापत्॥

ब्रह्मशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः।

ॐ गायत्रीम्ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः।
तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाचमग्रतः॥
ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि।
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्॥
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव।।

वसिष्ठशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठऋषिः गायत्रीच्छन्दः वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा वसिष्ठशापविमोचने विनियोगः।

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसोऽस्म्यहम्॥
(योनिमुद्रां प्रदर्श्य त्रिवारं गायत्रीं जपेत्)
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव॥

विश्वामित्रशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिः गायत्रीच्छन्दः विश्वामित्रानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता वाग्देहा विश्वामित्रशाप-विमोचने विनियोगः।

ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भा यदुद्भवाः।
देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये॥
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव॥

शुक्रशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्रीशुक्रशापविमोचनमन्त्रस्य श्रीशुक्रऋषिः अनुष्टुप् छन्दः देवी गायत्री देवता शुक्रशापविमोचने विनियोगः।

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसोऽस्म्यहम्॥
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं शुक्रशापाद्विमुक्ता भव।
ॐ अहो देवि महा देवि सन्ध्ये विद्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥
वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव॥ विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव॥
शुक्रशापाद्विमुक्ता भव॥

चतुर्विंशतिमुद्राप्रदर्शनम्

ॐ सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुः पञ्चमुखं तथा॥
षण्मुखाधोमुखञ्चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रथितञ्चोन्मुखोन्मुखम्॥
प्रलम्बं मुष्टिकञ्चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकः।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥
चतुर्विंशतिरेतास्तु मुद्रा आदौ प्रकीर्तिताः॥

गायत्रीमन्त्रजपः

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः परमात्मा देवता भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्नि-वायुसूर्या देवताः तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः सर्वपापक्षयार्थे गायत्रीमन्त्रजपे विनियोगः।

मालाप्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमत्रार्थसाधिन साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा॥

गायत्रीमन्त्रः

ॐ भूर्भुवः स्वः॥ तत्संवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यंधीमहि॥
धियोयोनः प्रचोदयांत्॥ जपान्ते.....
ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥
ॐ यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि काश्यपप्रियवादिनि।

जपान्तेऽष्टौ मुद्राः

ॐ सुरभिर्ज्ञानवैराज्ञे योनिः शङ्खोऽथ पङ्कजम्।
लिङ्गं निर्वाणकं चैव जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत्॥

सूर्यप्रदक्षिणा

विश्वतश्चक्षुरिति भौवन ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः विश्वकर्मा देवता श्रीसूर्य-प्रदक्षिणायां विनियोगः।

ॐविश्वतंश्चक्षुंरुतविश्वतोंमुखोविश्वतोंबाहुरुतदविश्वतंस्पात्॥
सम्बाहुभ्यान्धमंतिसम्पतंत्रैर्द्यावाभूमींजनयंन्देवएकः॥
ॐ एकचक्रो रथो यस्य दिव्यः कनकभूषितः।
स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः॥

जपसमर्पणम्

ॐ देवागातुविद इत्यस्य मनसस्पतिर्ऋषिः वातो देवता विराट् छन्दः जपनिवेदने विनियोगः।

ॐ देवांगातुविदोगातुंवित्त्वागातुमिंत॥
मनंसस्पतऽइमन्देंवयज्ञं॑स्वाहाव्वातेधाः॥

हस्ते जलमादाय

अनेन कृतेन यथाशक्ति गायत्रीमन्त्रजपाख्येन कर्मणा भगवान् सविता श्रीसूर्यनारायणः प्रीयताम्।

गायत्रीविसर्जनम्

ॐ उत्तरे शिखरे इत्यस्य वामदेव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सन्ध्या देवता गायत्रीविसर्जने विनियोगः।

ॐ उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतमस्तके।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्॥
विसर्जिता वेदमातर्द्विजानां पापनाशिनि।
सर्वकामप्रदे नित्ये गच्छ देवि नमोऽस्तु ते॥

अभिवादनम्

....प्रवरान्वितः................वाजसनेयिशाखाध्यायी.........गोत्रोत्पन्नः शुक्ल-यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिन- वाजशनेयिशाखाध्यायी...शर्माऽहम्, भो वैश्वानर! अभिवादये। भो सूर्यचन्द्रमसौ ! अभिवादये । भो गायत्रि! सावित्रि! सरस्वति! अभिवादये। भो। आचार्य! अभिवादये। भो मातापितरौ! अभिवादये। भो मातापितरौ! अभिवादये। भो गुरो! अभिवादये॥

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति॥

हस्ते जलमादाय

अनेन कृतेन प्रातः/मध्याह्नम्/ सायम् सन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा भगवान्सविता श्रीसूर्यनारायणः प्रीयताम्।

ॐ तत्सत् श्रीब्रह्मार्पणमस्तु।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ॐ अच्युताय नमः। ॐ गयाय नमः। ॐ गदाधराय नमः। पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। श्रीविष्णुस्मरणात् परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सुशान्तिर्भवतु सर्वारिष्टसर्वोपद्रवशान्तिरस्तु॥
इति सन्ध्योपासनाविधिः

डॉ. खेमराज रेग्मी
ज्योतिष-विभाग

॥ श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः ॥

॥ श्रीवाग्देवतायै नमः ॥

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" - (शु.य.सं.- ७.४२)

सोमसूर्यानिलाकल्पामकल्पामिन्दुशेखराम्।
पञ्चबिन्दुं हरेः शक्तिं पञ्चकृत्यकरीं नुमः॥
पञ्चदेवात्मको भूत्वा पञ्चशक्तिसमन्वितः।
पञ्चसृष्टिमधिष्ठाय प्रपञ्चरहितोऽवतु ॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद् ध्वजारोपणम्
स्नानं मङ्गलमाचरेद्द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम् ।
देवानां गुरुयोषिताञ्च विभवाऽलङ्कारवस्त्रादिभिः
सम्पूज्यो गणकः फलञ्च शृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्॥
पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः।
सुपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः॥
मरीचिहिङ्ग्गुलवणजीरकेण च संयुतम्।
अजमोदायुतं कृत्वा भक्षयेद् रोगशान्तये॥

संवत्सरादिफलश्रवणमाहात्म्यम्-

राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतो मन्त्रीश्रवात् कौशलं,
धान्येशाद् विमला स्थिरा च सुरसावाणी भवेन्मेघपात्।
धर्मे बुद्धिरधिष्ठिता रसपतेर्दीर्घायुषत्वं भवेत्,
सस्येशाद् विमलामतिः शुभकरी राजा बलिः श्रूयताम्॥

अथ कल्पादितो गतवर्षाणि १९७२९४९१२७ सृष्टितो गताब्दाः १९५५८८५१२७ कृतयुगप्रमाणं १७२८००० अस्मिन् युगे श्रीविष्णुमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहावताराः । त्रेतायुगप्रमाणं १२९६००० युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम-रामचन्द्रावताराः। द्वापरयुगप्रमाणं ८६४००० अस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारौ। कलियुगप्रमाणं ४३२००० तन्मध्येऽहिंसाव्रती श्री बुद्धावतारोऽभवत्। साम्प्रतं गतकलिवर्षाणि ५१२६ भोग्यवर्षाणि ४२६८७४ । कलियुगस्य ८२१ वर्षावशेषकाले कल्क्यवतारः स्यात्।

कार्तिकशुक्लनवम्यां बुधवासरे मध्याह्ने श्रवणनक्षत्रे धृतियोगे कृतयुगोत्पत्तिः। तत्र पापं ० पुण्यं २०। वैशाखशुक्लतृतीयायां गुरोर्दिने रोहिणीनक्षत्रे द्वितीयप्रहरे धृतियोगे त्रेतायुगोत्पत्तिः। तत्र पापं ५ पुण्यं १५। माघकृष्णामावस्यायां शुक्रे धनिष्ठानक्षत्रे वरीयान्योगे निशायां द्वापरयुगोत्पत्तिः। तत्र पापं १० पुण्यं १०। भाद्रपदकृष्णत्रयोदश्यां रवौ सार्पभे व्यतीपातयोगे निशीथे कलियुगोत्पत्तिः। तत्र पापं १५ पुण्यं ५।

श्रीरामरावणयुद्धतो गता वत्सराः ८८०१६७ । श्रीकृष्णावतारतो गताब्दाः ५२६१ । महाभारतयुद्धतो गताब्दाः ५१२६ । श्रीमहावीर (जैन) निर्वाणसंवत् २५५१-२५५२ । श्रीबुद्धसंवत् २६४९-२६५०। श्रीमन्नृपतिवीर-विक्रमादित्यराज्यात् संवत् २०८३ । श्रीशालिवाहनराज्यात् संवत् १९४८, श्रीलक्ष्मणसंवत् ९१७-९१८। अंग्रेजीसंवत् २०२६-२०२७ ई. सन्, फसली सन् १४३३-१४३४। तत्र बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्ट्यब्दानां मध्ये "रौद्र" नामसंवत्सरः। तत्र मेषाऽर्कसमये गतमासादिः ०१/०३/३५/२५ भोग्यमासादिः १०/२६/ २४/३५ सङ्कल्पादौ वर्षान्तं यावत् "रौद्र" नाम संवत्सरः प्रयोक्तव्यः। आश्विनदेवदैवतं युगम्। वर्षनाम 'पौष' इति। मेघनाम 'पुष्करः'। रोहिणीनिवासः 'समुद्रे'। समयनिवासः 'मालीगृहे'। भारतीयगणराज्य-संवत् ७९-८० ।

आकाशस्थ ग्रहमन्त्रिपरिषद्

(विभागाधिकारियों के नाम तथा उनके शुभाशुभ फल)

रौद्र नामक संवत्सर का सामान्य एवं विशिष्ट फल –

नूतन संवत् रौद्र नामक होने से विश्व के बहुत से राष्ट्र अपने प्रबल विरोधी, शत्रु देशों की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं विकासनीति को ध्वस्त करने के लिए युद्ध, लड़ाई, टकराव आदि गतिविधियों में संलग्न रहेंगे, जिससे भौगोलिक कुछ भूभाग पर निरन्तर युद्ध, रक्तपात की स्थिति बनी रहेगी।नव संवत् का राजा गुरु होने पर अपने –अपने क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षित एवं प्रतिभाशाली कुशल विद्वान लोग प्रतिष्ठित एवं सम्मानित होंगे। धर्म–परायण लोग यज्ञ, होम, मंत्र, जाप, दान, स्नान पाठ आदि शुभ कार्यों के सम्पादन में प्रवृत्त रहेंगे तथा अनेक विरोधी राष्ट्रों के मध्य शांति वार्ताएं सम्पन्न होंगी। संवत् का मंत्री मंगल होने से लोगों में क्रोध, गुस्सा, जिद, अहम्, टकराव, तनाव, विद्रोह, स्वार्थ, लोभ एवं धन लोलुपता की भावना बढ़ेगी। भारत सहित अनेक देशों का सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक वातावरण विक्षुब्ध, परेशानीदायक, तनावपूर्ण एवं अशान्त रहेगा, परिणामस्वरूप अनेक देशों के मध्य युद्ध, विद्रोह, उपद्रव, टकराव एवं प्रतिद्वन्दिता आदि की प्रवृत्तियां बढेंगी। सोना, चांदी, तांबा, कांस्य, पीतल आदि धातुओं तथा हीरा –पन्ना आदि रत्नों के मूल्यों में वृद्धि होगी।

अल्पतोयप्रदा मेघा अल्पसस्या च मेदिनी।
निष्ठुराः पार्थिवाः रौद्रे दावाग्निः प्रजायते॥

रौद्र नामक संवत् में मेघों द्वारा कम वृष्टि होती है फलस्वरूप पृथ्वी पर अन्न और धान्य अर्थात् फसलों का उत्पादन कम होता है। राजा लोग कठोर,निष्ठुर और निर्दयी हो जाते हैं तथा जंगलों में अग्नि लगती है।

अल्पतोयास्तथा मेघाः कीटाश्च शलभाः शुकाः।
विकृताः पार्थिवाः देवि रौद्रवर्षे वरानने॥

रौद्र नामक संवत् में मेघ कम वर्षा करते हैं तथा कीट, पतंग और शुक विकृत होते हैं।

अन्योन्यं नृपसंक्षोभं चौरव्याघ्रादिभिर्भयम्।
मध्यवृष्टिरनर्घत्वं रौद्राब्दे नैव गुर्जरे॥

रौद्र नामक संवत् में राजाओं में परस्पर क्षोभ तथा जनता चोरी, व्याघ्रादि भय, मध्य वृष्टि तथा महंगाई से दुखी रहती है किन्तु गुजरात में ऐसा फल नहीं होता है अर्थात् शुभ फल होता है।

रौद्रेब्दे नृपसंभूतक्षोभक्लेशसमन्विते ।
सततं त्वखिला लोका मध्यसस्यार्घवृष्टयः॥

रौद्र संज्ञक संवत् में राजाओं में परस्पर क्षोभ होता है तथा उनमें क्लेश बना रहता है। समस्त पृथ्वी पर सामान्य वृष्टि होने से अन्न की पैदावार भी सामान्य ही होती है।

रौद्रोऽतिरौद्रः क्षयकृत्प्रदिष्टः।

बृहत्संहिता के अनुसार रौद्र नामक संवत् में अतिशय अशुभ फल की प्राप्ति तथा प्रजा की हानि होती है।

त्रिषष्ठे तु समं ज्ञेयं अन्ये पीडा न संशयः।

बृहज्ज्योतिषसार ग्रन्थ के अनुसार नव रौद्र नामक संवत्सर निस्संदेह रूप से समस्त जनता को पीड़ादायक रहेगा।

रौद्राब्दे नृपसम्भूत – संक्षोभक्लेशप्रजाभागिनः।
सततमखिला लोका भूपा मध्यसस्यार्घवृष्यः॥

रौद्र नामक संवत् में प्रजा को राजाओं से क्षोभ और क्लेश की प्राप्ति होती है। सामान्य वृष्टि होने से अन्न, फल आदि की पैदावार भी सामान्य ही होती है।

मध्यसस्या भवेद्धात्री सामान्येन प्रवर्तनम्।
दुर्मतीनां महत्त्वं स्याद् दुर्मतौ वर्णसंक्रमः ॥

रौद्र नामक संवत्सर में मध्यम वर्षा होने से धान्यादि फसलों का उत्पादन भी सामान्य ही होगा, परिणामस्वरूप फसलों के मूल्यों में वृद्धि होगी। राजा एवं मंत्री लोग दुर्मति से युक्त होकर निर्दयी भाव से जन विरोधी निर्णय लेंगे। कुछ राष्ट्रों में कहीं स्थान विशेष पर छत्र-भंग अर्थात् शासन परिवर्तन भी सम्भावित है। जनता क्लिष्ट रोगों से ग्रस्त और त्रस्त रहेगी। यथा -

युद्धयन्ति क्षितिपतयः परस्परं हन्तुमुद्यताः सर्वे।
कोंकणदेशक्षितिपतिनिधनं तत्रैव रौद्राब्दे॥

रौद्र नामक संवत् में राजा लोग परस्पर युद्ध तथा एक -दूसरे को मारने के लिए उद्यत रहते हैं तथा कोंकण देश के राजा की मृत्यु होती है।

राजा गुरु का फल -

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुग्धाश्च धेनवः।
यजन्ति विप्रा वहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवं सर्वजनेषु वर्तते॥

संवत् का राजा गुरु होने पर उत्तम वर्षा होती है, गायें अधिक दूध देती हैं, अग्निहोत्री ब्राह्मण लोग यज्ञ-यागादि शुभ कार्यो के सम्पादन में निरत रहते हैं तथा प्रायः सभी के घरों में उत्सवों का आयोजन होता है।

गुरुशुक्रेन्दवोऽधीशाः सन्ति चेज्जनसौख्यदाः।

नव संवत् २०८३ में गुरु राजा होने से जनता सामान्य रूप से सुखी रहेगी।

मन्त्री मंगल का फल -

अवनिजो ननु मंत्रिपदं गतो भवति दस्युगदादिजवेदना।
जनपदेषु जयं सुखसंचयं न बहु गोषु पयो द्विजकर्म च॥

यदि संवत् का मंत्री मंगल हो तो चोरों तथा रोगों आदि से लोगों को पीड़ा होती है। जनपदों में जय तथा सुख की वृद्धि होती है, गाएं कम दूध देने वालीं होती हैं तथा ब्राह्मण लोग अपने कर्म में निरत रहते हैं।

सस्येश गुरु का फल -

सस्यपतौ सुरराजपुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहूनि वसूनि वै॥

संवत् का सस्येश यदि बृहस्पति हो तो वेद-पारायण आदि शास्त्रोचित कर्मों में रत ब्राह्मण लोगों को समस्त सुखों की प्राप्ति होती है। पृथ्वी पर सर्वत्र पर्याप्त वर्षा होने से कृषि का अधिक मात्रा में उत्पादन होता है।रस पदार्थों और दूध का बहुत अधिक उत्पादन तथा धन का आगमन होता है।

धान्येश बुध का फल -

बहुसस्ययुता पृथ्वी रसानां च महर्घता।
नीतियुक्ताः सदा भूपा बुधे धान्याधिपे सति॥

यदि संवत् में धान्येश बुध हो तो पृथ्वी बहुत प्रकार के धान्यों से परिपूर्ण रहती है किन्तु रस पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि होती है। राजा लोग नीतिपूर्वक कार्यों को करने में संलग्न रहते हैं।

मेघेश चन्द्र का फल -

चन्द्रे मेघाधिपे जाते बहुतोयप्रदा घनाः।
नन्दन्ति पार्थिवाः सर्वे प्रजानां च सुखं सदा॥

यदि संवत् में मेघेश चन्द्रमा हो तो बादल बहुत वृष्टि करने वाले होते हैं। राजा लोग प्रसन्न और आनन्द में रहते हैं तथा प्रजा हमेशा सुखी और खुश रहती है।

रसेश शनि का फल –

रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः ।
अजगवां गजवाजिखरोष्ट्रहा जनपदेषु नरा न रसैर्युताः॥

यदि संवत् में रसेश शनि हो तो रस पदार्थों की हानि, वर्षा की कमी, रोगों की अधिकता तथा गाए,बकरी,हाथी, घोड़े,गदहे एवं ऊंटों के सुख की हानि होती है। जनपदों में जनता रस पदार्थों के सुख के अभाव में रहती है।

नीरसेश गुरु का फल –

हरिद्रापीतवस्तूनां पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा॥

संवत् में यदि नीरसेश गुरु हो तो समस्त प्राणियों की हल्दी,पीले पदार्थों,वस्तुओं तथा पीले वस्त्रों आदि के प्रयोग एवं भोग में अभिरुचि होती है।

फलेश चंद्र का फल –

यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता व्रतिभिः कुसुमैर्युताः।
द्विजमुखा वरभोगसमन्विता नृपतयो नयनाटनतत्पराः॥

यदि संवत् में फलेश चन्द्र हो तो वृक्षों में बहुत ज्यादा फल और फूल आते हैं। व्रति लोग अपने जीवन में फूलों और फलों का भोग एवं उपयोग करते हैं। ब्राह्मण लोग उत्तम भोग्य पदार्थों का भोग एवं उपयोग करते हैं तथा राजा लोग नीति निपुणता से व्यवहार करते हैं।

धनेश गुरु का फल –

सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिजवृत्तिपराः सुखभाजनाः।
फलितपुष्पितभूमिरुहाः सदा विविधद्रव्ययुता भुवि मानवाः॥

नवीन संवत् में धनेश गुरु होने पर व्यापारी एवं फूल के कारोबारी लोग अच्छे मन से सुख का भोग करते हैं। पृथ्वी और वृक्ष फल और फूलों से पल्लवित और पुष्पित व सुशोभित होते हैं। भू-लोक वासी मनुष्य विविध द्रव्यों के सुख से सम्पन्न होते हैं।

दुर्गेश चन्द्र का फल –

गढपतिर्मृगलांछनको यदा नृपसुराज्यविलासितपौरजाः।
बहुघनेक्षुजगोरसभोगिनो नरवरा नरवर्णितविग्रहाः॥

यदि संवत् में दुर्गेश चन्द्रमा हो तो राज्य में सुव्यवस्थित शासन और प्रशासन से जनता सुखी रहती है। संवत् में बहुत वर्षा होती है परिणामस्वरूप लोग ईख, गोरस आदि रसपदार्थों का पर्याप्त उपभोग करते हुए शासकों का यशोगान करते हैं।

पौष नामक वर्ष का फल –

विष्णुधर्मोत्तरे –

आदित्यपुष्यगे चाब्दं विज्ञेयं गुरुदैवतम् ।
आतंकरहिते लोके क्षेमारोग्यसुखप्रदम् ॥

बृहस्पति के पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्र में होने पर गुरुदैवत नामक पौष वर्ष होता है। पौष नामक वर्ष में संसार आतंकरहित होता है तथा सभी प्राणियों को क्षेम, आरोग्य और सुख की प्राप्ति होती है।

गर्गस्तु –

पुनर्वसुं च पुष्यं च चरेद्यदि बृहस्पतिः ।
पौषः संवत्सरः स स्यात् सर्वौषधिसमन्वितः ॥
शस्यं सम्पद्यते सर्वं सम्यग् वर्षति वासवः ।
उत्तमं क्षेमसौभिक्षं भवेद्धर्मस्तदा सताम् ॥

अर्थात् जिस संवत् में बृहस्पति पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्र में विचरण करता है वह पौष नामक संवत् होता है। पौष नामक वर्ष में औषधियों एवं सभी प्रकार के धान्यों की अच्छी उपलब्धता एवं पैदावार होती है। वर्षा अच्छी होने से समाज में सर्वत्र क्षेम और सुभिक्ष होता है तथा सज्जन लोग धर्म-कर्म में संरत रहते हैं।

पौष मास में राजाओं में परस्पर शत्रुता की निवृत्ति होती है तथा अन्य लोग रोगों से पीड़ित होते हैं। यथा -

पौषे निवृत्तवैरा राजानो व्याधिपीडितास्त्वपरे ।

वशिष्ठ संहिता अ.-६, श्लोक-४

शुभकृज्जगतः पौषो निवृत्तवैराः परस्परं क्षितिपाः।
द्वित्रिगुणो धान्यार्घः पौष्टिककर्मप्रसिद्धिश्च॥

पौष नामक वर्ष में संसार में सामान्यतया सभी लोगों को शुभ फलों की प्राप्ति होती है। राजा लोग परस्पर द्वेष का त्याग कर देते हैं। सभी धान्यों अनाजों के मूल्यों में द्विगुणित या त्रिगुणित वृद्धि होती है तथा पौष्टिक कार्य सिद्धि को प्राप्त करते हैं।

प्रशान्तव्याधिदुर्भिक्षदुर्वर्षाशनितस्करः।
सर्वलक्षणसम्पन्नः पौषः संवत्सरोत्तमः॥

पौष संवत् में व्याधियों, अकाल, दुर्भिक्ष,दुर्वृष्टि और चोरों का भय समाप्त हो जाता है। अतः सभी शुभ लक्षणों से युक्त पौष नामक संवत् को समस्त संवत्सरों में उत्तम संवत् कहा गया है।

निवृत्तवैराः क्षितिपाः जगदानन्दकारकाः।
पुष्टिकर्मरताः सर्वे पौषेऽब्देऽध्वरतत्पराः॥

पौष नामक वर्ष में राजा लोग वैर रहित हो जाते हैं। संसार में आनन्द व्याप्त हो जाता है। सभी लोग पौष्टिक कार्यों के निर्माण में रत तथा यज्ञादि शुभ कार्यों के सम्पादन में तत्पर रहते हैं।

पौषेऽब्दे सुखिनः सर्वे गुरुपूजारताजनाः।
क्षेत्रं सुभिक्षमारोग्यं वृष्टिः कृषकसम्मता॥

पौष नामक वर्ष में सभी लोग सुखी और प्रसन्न रहते हुए सभी बड़े एवं गुरुजनों की पूजा में रत रहते हैं। खेती द्वारा अच्छा उत्पादन होने से सुभिक्ष और आरोग्य रहता है तथा वृष्टि किसानों के मनोनुकूल होती है।

रोहिणी वास -

नव विक्रम संवत् 2083 में मेष संक्रान्ति का प्रवेश शतभिषा नक्षत्र में होने से कुछ आचार्यों के मत से रोहिणी का वास समुद्र में तथा अन्य कुछ आचार्यों के मत से सन्धि पर रहेगा।

रोहिणी वास का फल -

नव विक्रम संवत् २०८३ में रोहिणी का पतन समुद्र में होने से समुद्र के तटवर्ती क्षेत्रों में समुद्री- तूफान, भयंकर चक्रवात,तीव्र वायु वेग, भारी वर्षा तथा बाढ़ आदि से बहुत बड़े भूभाग पर भारी हानि प्रदायक प्रलयकारी स्थितियां उपस्थित होंगी, किन्तु अच्छी पर्याप्त वर्षा के कारण कुछ भूभाग फल, फूलों, नाना-विध धान्यों, फसलों की अच्छी पैदावार से पल्लवित और पुष्पित रहेगा। यथा -

यदि समुद्रगता शशिवल्लभा बहुजलैर्धरणीपरिपूजिता।
समुद्रे तु महावृष्टिः ।
समुद्रभेऽतिवृष्टिःस्यात् ।
यथा पयोनिधि स्थले गतो विरञ्चिभं तदा।
अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्यवर्द्धनम् ॥

मतांतर से नवीन विक्रम संवत् २०८३ में रोहिणी वास सन्धि पर होने से सामान्यतया बहुत से स्थानों पर विशेषकर वर्षा ऋतु में अनियमित व असमान रूप से अनुपयोगी खंड वृष्टि होती है तथापि धान्यादि फसलों की अच्छी पैदावार होती है। यथा –

"खण्डवृष्टिः सन्धिषु"।

"सन्धिगतादलवृष्टिदा"।

"सन्धिभे खण्डवृष्टिः स्यात्"।

सन्धिसंस्थं यदाब्राह्मभं जायते।

खंडवृष्टिस्तदासर्वधान्याप्तयः॥

संवत् का वास –

नव विक्रम संवत् २०८३ में रोहिणी वास समुद्र में होने से इस वर्ष संवत् का वास माली के घर तथा मतांतर से रोहिणी का वास सन्धि में होने से समय का वास वैश्य के घर में रहेगा।

संवत् वास का फल –

विक्रम संवत् २०८३ का वास माली के घर होने से सभी धान्यों व वस्तुओं की अच्छी उपलब्धता होने से मूल्यों में कमी होती है। यथा–

सर्ववस्तुसमर्घं स्यान्मालाकारगृहेऽब्दके।

मतांतर से नव विक्रम संवत् में समय का वैश्य (वणिज्) के घर पर होने से इस वर्ष व्यावसायिक क्षेत्र में विभिन्न नए नियमों, योजनाओं और व्यवस्थाओं का सृजन होगा, जिससे जनता में असन्तोष व्याप्त होगा। व्यापारी लोगों द्वारा वस्तुओं के अनावश्यक और अधिक संग्रह से समाज में मंहगाई बढने के कारण जनता दुःखी और परेशान रहेगी। यथा –

सर्वधान्यं महर्घं स्याद्वणिग्वेश्मनि संस्थिते।

संवत् का वाहन –

संवत् २०८३ का राजा गुरु होने के कारण नूतन संवत् का वाहन नौका तथा मतांतर से चातक होगा। यथा –

भौमेज्यौ नावकः ।

संवत् वाहन का फल –

संवत् का वाहन नौका होने पर सर्वत्र धन– धान्यों के उत्पादन एवं उपलब्धता की न्यूनता तथा आततायियों दुष्ट लोगों के आतंक तथा भय से जनता भ्रमित होकर इधर–उधर भ्रमण करती है। चौपायों वाहनों , पशुओं की चोट– रोग आदि से क्षति तथा अधिकतम फसलों एवं फलों की पैदावार में कमी रहने के कारण जनता दुखी और भ्रमित रहती है। यथा –

जनता भ्रमिता सर्वाश्चतुष्पदाः प्रपीडिताः।

विफला सकला धात्री नौकावाहनवत्सरे॥

मतांतर से समय का वाहन होने से इस संवत् में जनता वर्षा की न्यूनता एवं उपभोग्य उत्पादनों की कमी तथा मंहगाई से परेशान रहेगी।

सुबुध्नादि द्वादश नागों में नाग विचार –

नव विक्रम संवत् 2083 में सुबुध्नादि द्वादश नागों में से तक्षक नामक नाग होगा।

तक्षक नाग का फल –

जिस संवत् में तक्षक नामक नाग का उद्भव होता है उस संवत्सर में मध्यम वर्षा होती है तथा जनता और राजाओं में विग्रह एवं प्रजा की मृत्यु दर में निश्चित रूप सेअप्रत्याशित वृद्धि होती है। यथा –

"तक्षके मध्यमा वृष्टिर्विग्रहो मरणं ध्रुवम्"।

अथवा

तक्षकाभिधनागेन्द्रो जायते यत्र वर्षके ।
तत्रमध्यमवृष्टिः स्याद्विग्रहो नृपतेर्मतिः ॥

चतुर्मेघ विचार -

रौद्र नामक नव विक्रम संवत्सर २०८३ में आवर्तकादि चतुर्मेघों मे से इस वर्ष पुष्कर नामक मेघ रहेगा।

पुष्कर मेघ का फल -

पुष्कर नामक मेघ होने पर अल्प अर्थात् चित्रित मेघ, चित्र वृष्टिपात, चित्रशस्यवृद्धि और चित्र - विचित्र विश्व की स्थिति होती है अर्थात् वृष्टि एवं उपज आदि सभी की चित्र - विचित्र स्थिति एवं न्यूनतम उपलब्धि होती है।यथा -

"पुष्करो मन्दवृष्टिः"। "पुष्करे मध्यमं तोयम्।"
"पुष्करे चित्रिता वृष्टिः"।

अथवा

पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिता जलदाः सदा ।
चित्रिता तु भवेद्वृष्टिः शस्यवृद्धिस्तु चित्रिता ॥

नवमेघ विचार -

नव विक्रम संवत् २०८३ में नव मेघों में से काल नामक मेघ होगा।

काल नामक मेघ का फल -

काल नामक मेघ होने पर सामान्य रूप से सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त अल्प वृष्टि होती है। यथा -

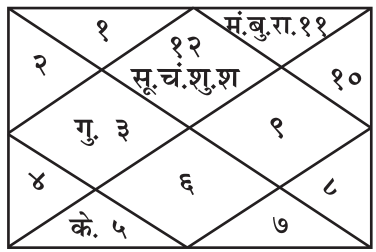
"अल्पवृष्टिश्च काले स्यात्"।

अर्थात् नूतन संवत् में काल नामक मेघ होने पर स्वस्थ और अच्छे लोग रोग, पीड़ा, कष्ट से व्याकुल हो जाते हैं। राजाओं में परस्पर विरोध, विग्रहऔर कलह होता है तथा वर्षा की कमी व अनावृष्टि के कारण जनता स्थनान्तरण के लिए विवश हो जाती है। सरकारी तंत्र जल की पर्याप्त आपूर्ति करने में असफल रहता है।इस संवत् में विविध प्राकृतिक आपदाओं, प्रकोपों समुद्री - तूफान, चक्रवात, वायु वेग, भूकम्प, भूस्खलन आदि से विशेषकर पहाड़ी राज्यों की जनता का जीवन अत्यधिक क्षति से व्यथित और त्रस्त रहेगा।यथा -

रोगतो विकलतावपुष्पतांस्यान्मिथः कलहताक्षमाभृताम्।
कालनामजलदोदयो यदा नैव वर्षति जलंवृषातदा ॥

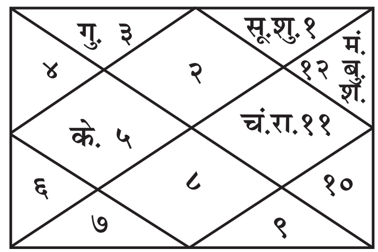
विक्रम शुभ सम्वत् २०८३ की वर्ष प्रवेशकालीन एवं जगत्-लग्न कुण्डलियाँ-

नववर्षप्रवेश-कुण्डली



१९ मार्च, सन् २०२६ ई., ०६ घं. ५३ मि. (भा.मा.स.)

जगल्लग्न-कुण्डली



०४ अप्रैल, सन् २०२६ ई., ०९ घं. ३१ मि. (भा.मा.स.)

गत सिद्धार्थ नामक विक्रम संवत् २०८२ की समाप्ति के अनन्तर रौद्र नामक विक्रम संवत् २०८३ का प्रवेश १९ मार्च, २०२६ ई. गुरुवार तदनुसार चैत्र कृष्ण पक्ष अमावस्या अर्थात् चौत्र मास ६ प्रविष्टे को प्रातः व ६:५३ पर उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, शुक्ल नामक योग, मीन राशिस्थ चन्द्र

के समय द्विस्वभाव संज्ञक मीन लग्न में होगा। नव रौद्र नामक विक्रम संवत् २०८३ में वासान्तिक नवरात्रों का प्रारम्भ भी १९ मार्च, २०२६ ई. गुरुवार को ही होगा। नव विक्रम संवत् २०८३ में वासान्तिक चैत्र नवरात्रे १९ मार्च, २०२६ ई. से २७ मार्च,२०२६ ई. तक हैं। शास्त्रानुसार इस रौद्र नामक विक्रम संवत् में श्री राम नवमी का पुण्य पर्व २६ मार्च, २०२६ ई. को तथा श्री दुर्गा नवमी पर्व २७ मार्च, २०२६ ई. को मनाया जाएगा।

नवरात्र के प्रथम दिन अर्थात् नवसंवत्सर चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन किसी योग्य विद्वान द्वारा विधिपूर्वक घटस्थापन, सम्वत्सर पूजन एवं श्री गणेश, विष्णु, शिव और देवी दुर्गा पूजन करने का शास्त्रों में विशेष महात्म्य प्रतिपादित है। इस दिन सम्पूर्ण अग्रिम नवीन सम्वत्सर के मंगलमय यापन हेतु विद्वान् ब्राह्मणों का विधिपूर्वक पूजन एवं सम्मान कर, उन्हें विविध प्रकार के दानों से सन्तुष्ट एवं प्रसन्न कर, नानाविध पक्वान्नों, फलों और मिठाईयों आदि का भोजन करवाकर उनके मुखारविन्द से परिवार के समस्त सदस्यों को संवत् का नाम, संवत् का वास, राजा और मन्त्री आदि का फल श्रवण करने का विधान भी शास्त्रोल्लिखित है, जो बुद्धिमान व्यक्ति चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को सम्वत्सर का पवित्र फल सुनता है वह धनाढ्य और बहुत अन्न वाला होता है तथा वर्ष भर के लिए उसके शरीर की समस्त पीड़ाएँ (व्याधियाँ) नष्ट हो जाती हैं। शाके को सुनने से मनुष्य को पुण्य प्राप्त होता है, सम्वत्सर से सम्पत्तिवान् होता है, संवत् के राजा का फल सुनने से राजकुल में विजय होती है, मन्त्री का फल बुद्धि देता है, धनाधिप से धान्य, रसाधिप से रस तथा सस्येश से समस्त सुख मिलते हैं। अत: सिद्धिदायक सम्वत्सर के फल को अवश्य सुनना चाहिए।

नव विक्रम संवत् २०८३ में ग्रहों की आकाशीय परिषद् के दस पदाधिकारों में से राजा के पद का अधिकार सर्वाधिक शुभ ग्रह देव गुरु बृहस्पति को प्राप्त है तथा मंत्री पद के नेतृत्व का अधिकार गुरु के नैसर्गिक मित्र अर्थात् ग्रह परिषद् के नैसर्गिक सेनापति सर्वाधिक क्रूर ग्रह भौम को प्राप्त है। इन दोनों प्रमुख राजा और मंत्री के अतिरिक्त सस्येश, नीरसेश, धनेश तीन महत्वपूर्ण पदों के नेतृत्व का अधिकार नव विक्रम संवत् के राजा गुरु ग्रह, मेघेश, फलेश एवं दुर्गेश तीन महत्वपूर्ण पदों के नेतृत्व का अधिकार चंद्र ग्रह, धान्येश के पद का अधिकार बुध तथा रसेश पद के नेतृत्व का अधिकार सर्वाधिक पापी ग्रह शनि को प्राप्त है।

उपर्युक्त ग्रह परिषद् के विवेचन से यह स्पष्ट है कि नव विक्रम संवत् २०८३ में ग्रह परिषद् के मुख्य १० पदाधिकारों में से ०८ पदों के नेतृत्व का अधिकार शुभ ग्रहों को तथा ०२ पदों के नेतृत्व का अधिकार पाप ग्रहों को प्राप्त है। इस प्रकार नव रौद्र नामक विक्रम संवत् २०८३ में ग्रह परिषद् के शाश्वत राजा भुवन भास्कर सूर्य तथा शाश्वत मंत्री दैत्य गुरु शुभ ग्रह शुक्र को किसी भी पद के नेतृत्व का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है।

नव रौद्र नामक विक्रम संवत् २०८३ में राजा सहित सस्येश, नीरसेश तथा धनेश आदि प्रमुख ०४ पदों के नेतृत्व का अधिकार ग्रह कौंसिल के शाश्वत मंत्री सर्वाधिक शुभ ग्रह देव गुरु बृहस्पति को प्राप्त होने के परिणामस्वरूप समाज में ब्राह्मण एवं धर्म परायण आस्तिक लोग वेद विहित यज्ञ,हवन,जाप,दान,धर्म आदि शुभ कार्यों में संलग्न रहेंगे जिससे सामाज में धर्म परायणता बढ़ेगी तथा जनता में सुख, शांति और कल्याण की भावना पनपेगी। उच्च वर्ग के श्रेष्ठ एवं राजा लोग बड़े-बड़े भव्य एवं दिव्य उत्सव व समारोहों के आयोजनों में निरत रहेंगे। भारत-चीन, अमरीका-ईरान, रूस-अमरीका अथवा इजरायल-ईरान आदि परस्पर विरोधी देशों के मध्य अनेकों शान्ति वार्ताएं आयोजित होंगी।समाज के राजा लोग तथा अन्य उच्च स्तरीय साम्भ्रान्त लोग सुन्दर घर, भूमि, वाहन तथा अन्य भौतिक सुख संसाधनों से सम्पन्न रहेंगे। सरकार की ओर से तकनीकी, खेल, योग, न्याय, विज्ञान, भारतीय ज्ञान परम्परा आदि विविध शैक्षणिक क्षेत्रों में योजनाबद्ध रूप से पर्याप्त सुधार किए जाएंगे। किसानों

एवं कृषि से सम्बन्धित व्यवसाय करने वाले व्यापारियों को अच्छी मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। सोना, चांदी, तांबा, कांस्य और पीतल आदि धातुओं तथा नीलम, पुखराज, माणिक, मूंगा, हीरा, पन्ना और मोती आदि रत्नों के मूल्यों में वृद्धि होगी। हल्दी, दालों तथा सब्जियों और फलों के मूल्यों में भी वृद्धि होगी। लोगों द्वारा समय समय पर राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक आदि यौगिक समागम कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। गौ दुग्ध, दहीं, मक्खन और घृत आदि के अच्छे उत्पादन से जनता सुखी तथा व्यवसायी लोग अधिक सम्पन्न, समृद्ध और प्रसन्न रहेंगे।

मंत्री पद का नेतृत्व क्रूर ग्रह मंगल को प्राप्त होने के कारण भारत देश सहित विश्व के अनेक देशों में सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध, तनावपूर्ण, अनिश्चित, असंतुलित एवं अशान्त रहेगा।विश्व के अनेक देशों के मध्य विद्रोह, उपद्रव, आतंकवाद, टकराव एवं प्रतिद्वन्दिता आदि की प्रवृत्तियां बढेंगी। अधिकांश राजनेता एवं अधिकारी लोग जनता को को अपने निरंकुश, उदंड, उच्छृंखल एवं मनमाने व्यवहार से दु:खी करेंगे। जनता में रक्त से सम्बंधित विकारजन्य विविध रोगों का प्रादुर्भाव होगा तथा काम, क्रोध, लोभ, ईष्या, उत्तेजना, आक्रामकता, और उदंडता, उच्छृंखलता और धन- लोलुपता आदि की प्रवृत्तियां बढेंगी।सामाज में चोरी, डकैती, खून-खराबा, रक्तपात, लूटमार, हिंसा, उपद्रव, व्यभिचार, बलात्कार, मारपीट, झगड़े, साम्प्रदायिक हिंसा, तनाव तथा साइबर ठगी, डकैती आदि की घटनाएं घटित होंगी। पृथ्वी के अनेक परस्पर विरोधी देशों की भौगोलिक सीमाओं तथा देश के कुछ क्षेत्रों विशेष में युद्ध, रक्तपात की स्थितियां निरन्तर बनी रहेंगी। रसयुक्त फलों, वनस्पतियों और फसलों का उत्पादन न्यून होने से उनके मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होने से जनता दु:खी एवं असंतुष्ट रहेगी। रसेश पद के नेतृत्व का अधिकार पाप ग्रह शनि को प्राप्त होने के कारण उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में कमी तथा उनके मूल्यों में आशातीत वृद्धि होने से सामान्य जनता असन्तुष्ट एवं दु:खी रहेगी। लोगों एवं परिवारों में परस्पर निरसता अर्थात् प्रेम भावना, स्नेह और सौहार्दपूर्ण वातावरण का आभाव रहेगा।देश के विभिन्न राज्यों में वैश्विक उष्णता एवं वायुमंडलीय विषमता के कारण वर्षा की अनियमितता से फसलों के उत्पादन में कमी तथा उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होने से सामान्य जनता दु:खी एवं परेशान रहेगी।

नव रौद्र नामक संवत् २०८३ में धान्येश पद का अधिकार सौम्य ग्रह बुध को प्राप्त होने से भारत देश के कुछ उत्तर क्षेत्रीय राज्यों में उपयोगी वर्षा की न्यूनता तथा कुछ राज्यों में पर्याप्त मात्रा में उपयोगी वर्षा होने से धान्यादि फसलों का उत्पादन अच्छी मात्रा में होगा।नव संवत् में फलेश चन्द्र होने से कुछ प्रदेशों में फल, फूल,धान्य फसलों की अच्छी पैदावार होगी। उपभोग्य एवं भौतिक सुख-संसाधनों तथा सुरक्षा एवं सुविधाओं के साधनों में वृद्धि होगी। दूरसंचार एवं वैश्वीकरण के संसाधनों, यन्त्रों, उपकरणों एवं उद्योगों आदि का नवीनीकरण एवं प्रयोग में अद्‌भुत प्रगति होगी। इसके साथ चन्द्र ग्रह को ही दुर्गेश पद के नेतृत्व का अधिकार प्राप्त होने से प्रशासक लोग अच्छे सौम्य व्यवहार से जनता की समस्याओं के समाधान तथा राज्य के सर्वविध विकास एवं सभी के सुखी व मंगलमय जीवन हेतु अच्छी व्यवस्थाओं को बनाने एवं उनके उपयोग में लगे रहेंगे।विश्व अनेक देशों एवं राज्यों में परस्पर एवं आन्तरिक युद्ध, तनाव एवं टकराव आदि विभत्स कार्यों के कारण भारी जन-धन की हानि भी होगी। विशेषत: रौद्र नामक संवत् होने से अनेक राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष एवं राजा तथा मन्त्री निर्दयतापूर्वक जन विरोधी निर्णय लेंगे जिससे जनता को पीड़ा,दु:ख एवं कष्ट होगा। पृथ्वी पर अनेक प्रकार के क्लिष्ट रोगों एवं प्राकृतिक आपदाओं अग्नि, जलप्रलय, भूकम्प, भूस्खलन आदि के कारण भयंकर जन -धन हानि संभावित है।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुंडली के अनुसार भविष्य

फल-विक्रम संवत् २०८३ का प्रवेश चैत्र मास की अमावस्या की समाप्ति १९ मार्च,२०२६ ई.को प्रातः ०६:५३ मिनट पर उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में अर्थात् मीन राशिस्थ चन्द्र के समय द्विस्वभाव संज्ञक मीन लग्न में होगा।नव संवत् में वर्ष लग्नेश गुरु की चतुर्थ भाव केन्द्र में शत्रु राशि में स्थिति तथा लग्न में सूर्य और शनि परस्पर विरोधी क्रूर ग्रहों की स्थिति होने से विश्व अथवा एशिया के किसी प्रमुख नेता की पदच्युति अथवा छत्र भंग योग सम्भव है। संवत् प्रवेश कुण्डली के द्वादश भाव में मंगल और राहु की क्रूरतम युति द्वारा अंगारक योग बनने से विश्व के अधिकतम देशों के मध्य निरन्तर परमाणु एवं विध्वंसक हथियारों के संग्रह की प्रतिस्पर्धा बनी रहेगी। किसी प्रतिष्ठित नेता द्वारा लिए गए विस्तारवादी एवं अनैतिक निर्णयों के कारण विश्व शांति के प्रयासों एवं व्यवस्था में व्यवधान समुपस्थित होगा तथा पश्चिमी एवं दक्षिणी एशियाई भाग के इजरायल, फिलीस्तीन, ईरान, लेबनान और पाकिस्तान आदि देशों के मध्य विध्वंसक युद्ध, अग्निकाण्ड, हिंसक आंदोलन, आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने की सम्भावनाएं हैं। गोचर में २अप्रैल,२०२६से१०मई,२०२६ तक लग्न में मंगल और शनि की युति होने से युद्ध, दुर्भिक्ष, अकाल, राज्यभंग, छत्रभंग, आकस्मिक अग्नि जनित दुर्घटनाओं, प्राकृतिक आपदाओं तथा गम्भीर रोगों से जन समुदाय की हानि तथा धान्य फसलों की न्यूनता तथा महंगाई से जनता दुखी और पीड़ित रहेगी। यथा -

भौमसौरीश्चैकराशौ द्वयो स्थिते।

दुर्भिक्षं राज्यभंगं च मेदिन्यामग्नितो भयम्॥

वर्ष प्रवेश कुण्डली के सप्तम भाव में कन्या राशि होने तथा उस पर क्रूरतम मंगल,शनि और सूर्य आदि की पूर्ण दृष्टि होने से वैश्विक पटल पर पश्चिम एशिया के देशों विशेषकर मुस्लिम देशों द्वारा युद्धजन्य घटनाओं के कारण उथल-पुथल बनी रहेगी। परन्तु विश्व में राजनीति एवं आर्थिक स्तर पर उत्पन्न तनाव एवं संघर्ष जन्य परिस्थितियों के बावजूद वैश्विक पटल पर भारत देश के संयम एवं धैर्य की प्रशंसा की जाएगी।

मीनलग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोन्नसंग्रहः।

मध्यदेशे धान्यनाशश्छत्रभंगःक्वचिद्भवेत्।

वर्ष प्रवेश मीन लग्न में होने से दक्षिणी राज्यों एवं क्षेत्रों में जनता सुखी रहेगी तथा लोग अन्न का संग्रह करेंगे। विश्व के कुछ राष्ट्रों एवं राज्यों के मध्य क्षेत्रों में धान्यादि फसलों की हानि तथा कहीं -कहीं छत्रभंग भी सम्भावित है।

नव रौद्र संवत् २०८३ में वर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न दोनों कुंडलियों में मीन राशिस्थ शनि ग्रह की स्थिति होने से सामान्य रूप से इस संवत् में सर्वत्र दुर्भिक्ष अकाल की स्थिति बनी रहेगी। जनता दुखी रहेगी तथा पशुओं की हानि होगी।अन्न- धान्यों आदि फसलों के विनाश तथा महंगाई से जनता दुखी रहेगी।यथा -

शनौ गते मीनराशौ दुर्भिक्षं च समं भवेत्।

मानवानां भवेत्पीडा पशूनां चैव नाशनं ।

महर्घं जायते सस्यं धान्यानां च क्षयं भवेत् ॥

नव संवत् के आरम्भ अर्थात् १९ मार्च, २०२६ से गुरु ग्रह मिथुन राशि में, १ जून, २०२६ से गुरु ग्रह कर्क राशि में तथा ३१ अक्टूबर, २०२६ को गुरु ग्रह सिंह राशि में प्रवेश करेंगे तथा वक्री गति से पुनः २४ जनवरी, २०२७ को कर्क राशि में गोचर करेंगे।इस प्रकार संवत् २०८३ में गुरु ग्रह मार्गी और वक्री गति से मिथुन, कर्क और सिंह तीन राशियों में संचार करेंगे।

संवत् २०८३ में गुरु ग्रह के मिथुन एवं कर्क राशि में संचरण करने से जनता को अनावृष्टि,प्रजा की हानि,दुर्भिक्ष,अकाल, भुखमरी , देशभंग , छत्रभंग, महंगाई आदि अशुभ फलों की प्राप्ति होगी तथा सिंह राशि में संचरण के समय में सुभिक्ष होगा ,अच्छी वर्षा होगी तथा प्रजा

सुखी और प्रसन्न रहेगी।

यथा –

अनावृष्टिः प्रजानाशो रौरवं मिथुने गुरौ।
कर्के गुरावनावृष्टिर्देशभंगो महर्घता ॥
सिंहे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजासुखम्।

जगत् लग्न कुंडली के आधार पर भविष्य फल –

जगत् लग्न कुंडली का प्रवेश १४ अप्रैल, २०२६ मंगलवार को प्रातः ०९:३१ बजे पर स्थिर संज्ञक वृष लग्न में होगा। संवत् २०८३ में जगत् लग्न कुंडली में लग्न पर किसी भी शुभ ग्रह की स्थिति, युति एवं दृष्टि न होने तथा भौम युत शनि ग्रह की पूर्ण दृष्टि होने से धन-धान्य आदि की अच्छी मात्रा में वृद्धि और समृद्धि न होने से समान्यतया यह वर्ष सम्पूर्ण विश्व के लिए पीड़ादायक, दुःखदायक, भयप्रद, दुर्भिक्ष-अकालदायक, अग्निकांड, आंधी-तूफान, प्राकृतिक आपदा प्रदायक, जलप्रलय,महामारी, आतंकवाद, उग्रवाद आदि अशुभ फलों को देने वाला सिद्ध होगा।लग्नेश शुक्र ग्रह की व्यय भाव उच्च के सूर्य के साथ स्थिति तथा एकादश (लाभ) भाव में धनेश और पंचमेश नीचस्थ बुध ग्रह के साथ अधिकतम क्रूर ग्रहों मंगल और शनि की युति है। अतः उपरोक्त ग्रह स्थिति के आधार पर नव संवत् २०८३ में विश्व के अधिकांश देशों की आन्तरिक सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक,राजनीतिक स्थिति अच्छी नहीं होगी। पश्चिम एशिया के देशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। विशेषकर अमेरिका, रूस, यूक्रेन, ईरान, ईराक, ग्रीस, सीरिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि विभिन्न देशों में आन्तरिक स्थितियां एवं परिस्थितियां तनावपूर्ण, अस्थिर, विक्षुब्ध, परेशानीदायक, पीड़ादायक, अशांतिपूर्ण एवं कष्टप्रद रहेंगी।

वर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न दोनों कुंडलियों में सामान्यतया सभी ग्रह राहु और केतु के मध्य में स्थित होने से वर्तमान संवत् खाड़ी एवं मुस्लिम देशों के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से अशुभ फलदायक सिद्ध होगा। कुछ देशों में शासन या सत्ता परिवर्तन भी संभावित है। युद्धोन्मुखी एवं विस्तारवादी विषयुक्त वातावरण के कारण सम्पूर्ण विश्व के समक्ष भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से अनिश्चितता और असमंजस की स्थितियां-परिस्थितियां उत्पन्न होंगी तथा देश एवं विश्व में बढ़ता आतंकवाद और उग्रवाद पर नियंत्रण रखना सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण होगा अतः ऐसी समस्याओं के समाधान हेतु बहुत से राष्ट्रों के सामूहिक प्रयास द्वारा वैश्विक स्तर पर कोई रणनीति बनाना निश्चित रूप से लाभकारी सिद्ध होगी। वैश्विक स्तर पर वस्तुओं की मांग व आयात और निर्यात में कमी होने से आर्थिक मंदी का वातावरण बनेगा। संवत् के सितंबर और अक्टूबर माह के मध्य सूर्य और शनि में परस्पर समसप्तक योग बनने से विश्व में परस्पर अनेक देशों के मध्य स्थल सेना एवं वायु सेना द्वारा युद्ध किया जा सकता है तथा खाद्य वस्तुओं के मूल्यों में भी अप्रत्याशित वृद्धि होगी।

जातक के जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत् लग्न का सामान्य फल-

१. प्रथम भाव में शरीर सुख
२. द्वितीय भाव में धनागम
३. तृतीयभाव में कुटुम्ब-वृद्धि व पारिवारिक सुख
४. चतुर्थ भाव में मित्र-सुख, बन्धुसुख
५. पञ्चम भाव में संतति सुख
६. षष्ठ भाव में शत्रु पराजय
७. सप्तम भाव में स्त्री सुख
८. अष्टम भाव में रोगभय, मृत्युभय
९. नवम भाव में धर्म-कर्म में प्रवृत्ति
१०. दशम भाव में धन, पद व सम्मान प्राप्ति

११. एकादश भाव में लाभ व सुख-साधनों की प्राप्ति
१२. द्वादश भाव में कष्ट व आर्थिक संकट

शनि पाया (पाद) विचार -

शनिदेव के राशि प्रवेश के समय यदि चन्द्रमा १, ६, ११भाव में हो तो स्वर्ण-पाद, यदि २, ५, ९ भाव में हो तो रजत -पाद, यदि ३, ७, १० भाव में हो ताम्र -पाद तथा यदि चन्द्र ४, ८, १२ भाव में हो तो लौह-पाद होता है।

शनि पाया फल विचार -

उपरोक्त पाया विचार के आधार पर नव संवत् २०८३ में मेषादि द्वादश राशियों पर सुवर्णादि पाया निम्न प्रकार से रहेगा। यथा -

१. मेष, सिंह तथा धनु राशियों पर लौह-पाद अशुभ फलदायक रहेगा।
२. मिथुन, कन्या तथा मकर राशियों पर ताम्र का पाया, यह शुभ फलदायक रहेगा।
३. वृष, तुला तथा मीन राशियों पर सुवर्ण -पाद मिश्रित फलदायक रहेगा।
४. कर्क, वृश्चिक तथा कुम्भ राशियों पर रजत-पाद शुभ फलदायक रहेगा

शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल-

गोचर में जब शनि जिस जातक की जन्मराशि से बारहवीं राशि में प्रवेश करता है तब तत्सम्बन्धी जातक को साढ़ेसाती प्रारम्भ होती है। शनि मध्यमगति से एक राशि में ढाई वर्ष रहता है। वास्तव में जब शनि जातक की राशि पर या उसकी राशि से अग्रिम या पृष्ठस्थ राशियों पर गोचरीय भ्रमण करता है तब जातक पर शनि का शुभ और अशुभ प्रभाव भारी मात्रा में पड़ता है। शनि मध्यममान से एक राशि में अढ़ाई वर्ष रहता है। इस प्रकार जातक की राशि और उसकी राशि से पृष्ठीय तथा अग्रिम निकटस्थ राशियों में शनि स्थिति का प्रभाव अधिकतम साढ़े सात वर्ष तक रहता है। शनि का साढ़ेसात वर्ष तक प्रभाव होने के कारण ही इसे शनि की साढ़ेसाती कहते हैं। संस्कृत में इसे बृहत्-कल्याणी, मराठी में बड़ी पनोति कहते हैं। जन्मराशि से गोचरीय भ्रमण में बारहवां शनि शिर पर, जन्मराशि का शनि हृदय या छाती पर तथा दूसरा शनि पांवों पर आया हुआ कहा जाता है। इन राशियों का शनि अत्यन्त दुष्ट एवं नीच लोगों से नाना प्रकार के कष्ट-पीड़ा एवं क्लेशदायक, पुत्र और पशुओं को पीड़ादायक, वाहनादि की हानि, रोग, मृत्यु, विदेशगमन, धन समृद्धि का विनाश, पति-पत्नी के परस्पर सुख का अभाव, राजभय, बन्धन और अन्यसुखों का अभाव करने वाला होता है।

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः ।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत् ॥

शनि ग्रह जब जिस जातक की जन्मराशि से चौथी या आठवीं राशि में गोचरीय भ्रमण से प्रवेश करता है तब तत्सम्बन्धी जातक को शनि की क्रमशः चतुर्थस्थ एवं अष्टमस्थ ढैय्या प्रारम्भ होती है। इस प्रकार की शनि स्थिति का अशुभ प्रभाव भी जातक पर भारी मात्रा में पड़ता है। संस्कृत में इसे लघुकल्याणी तथा गुजराती व मराठी में छोटी पनोति कहते हैं। राशि से चौथी एवं आठवीं राशि में गोचरीयभ्रमण करने वाला शनि व्याधि, रोग, कष्ट, दुःख, पीड़ा, परेशानी, मृत्यु, अग्नि और शस्त्रभय, प्रदेशगमन, क्लेश एवं चिन्ता तथा भाई-बन्धुओं के साथ विरोध उत्पन्न करने वाला होता है।

लघुकल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे,
व्याधिं बन्धुविरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥

शास्त्रों में तथा लोकव्यवहार में शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल बहुत ही दुःखदायक एवं अनिष्टकारी माना गया है परन्तु यह सत्य नहीं है। शनि जातक की जन्मकुण्डली में अपनी विशेष स्थिति, दृष्टि,

युति एवं अन्य ग्रहों से सम्बन्ध के आधार पर ही अच्छा और बुरा फल देता है।

जातक की जन्मकुण्डली में शनि और चन्द्रमा यदि पापयुक्त, पापदृष्ट या पापकर्त्री योग में न हो तथा शनि अपनी मित्रराशि, स्वराशि मूलत्रिकोण राशि या उच्चराशि का होकर प्रशस्त ३, ६, ११ भावों में स्थित हो तथा महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, गोचर एवं अन्य शुभ योगकारक ग्रहों के आधर पर श्रेष्ठ समय चल रहा हो तो साढ़ेसाती एवं ढैय्या का अशुभ एवं अनिष्टकारी प्रभाव या तो होता ही नहीं है या बिल्कुल न्यूनतम होता है। शनि केन्द्रेश, त्रिकोणेश आदि के आधार पर शुभ या राजयोग कारक होकर शुभ भावों में स्थित हो या उसका अन्य उच्चादि राशियों में स्थित राजयोग कारक, शुभ एवं मित्र ग्रहों के साथ शुभ सम्बन्ध हो तथा गोचर में भी शुभप्रभाव युक्त हो तो साढ़ेसाती या ढैय्या जातक को विपुल धन-धान्य, राजसी सुख एवं मान-सम्मान, ख्याति, पद-प्रतिष्ठा, वैभव सब कुछ प्रदान करने वाली होती है।

वि. संवत् २०८३ में शनिदेव मीन राशि के उत्तराभाद्रपद आरै रेवती नक्षत्र में संचार करेंगे। शनिदेव संवत् के प्रारम्भ अर्थात् २० मार्च, २०२६ ई. से मार्गी गति से, २६ जुलाई, २०२६ ई. से वक्री गति से तथा १० दिसम्बर, २०२६ ई. से मार्गी होकर रौद्र नामक संवत् की समाप्ति पर्यन्त मीन राशि में संचरण करेंगे

नव विक्रम सम्वत् २०८३ में मीन राशिस्थ शनिदेव के कारण कुम्भ, मीन और मेष राशि वाले जातक-जातिकाओं पर शनि की साढ़ेसाती तथा सिंह और धनु राशि वाले जातक-जातिकाओं पर शनि ढ़ैय्या का शुभाशुभ प्रभाव रहेगा। मीन राशिस्थ शनि-साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या फल विचार-

(क) नव विक्रम सम्वत् २०८३ में कुम्भ शशि वाले जातकों को साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

(ख) मीन राशि वालों को शनि साढ़ेसाती हृदय पर स्थित अर्थात् मध्यावस्था में होगी।

(ग) मेष राशि वालों को शनि साढ़ेसाती सिर पर चढ़ती हुई अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

गोचर में वक्री ग्रहों के फल के विषय में लिखा गया है-

"क्रूरा वक्रा महाक्रूराः, सौम्या वक्रा महाशुभाः॥"

अर्थात् शनि-भौमादि क्रूरग्रह वक्री होने पर महाक्रूर होने के कारण अधिकतम अशुभ फल तथा गुरु-शुक्र आदि सौम्य ग्रह वक्री होने पर महाशुभ होने के कारण अधिकतम शुभ फल देते हैं। यथा-

वक्रिणस्तु महावीर्याः शुभा राज्यप्रदा ग्रहाः।
पापा व्यसनिनां पुंसां कुर्वन्ति च वृथाटनम्॥

अर्थात् शुभ ग्रह वक्री होकर अति बलवान् हो जाते हैं तथा जातक को राज्य सुख देते हैं। इसके विपरीत पापग्रह वक्री होने पर जातक को व्यसनी (दुःखदाई) और वृथा (व्यर्थ) घूमने वाला (आवारा) बना देते हैं।

अतः नव संवत् २०८३ में जब शनि देव वक्री गति से संचरण करेंगे तब शनि के अशुभ प्रभाव से प्रभावित जातक और जातिकाओं को मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यापारिक, पारिवारिक आदि विविध प्रकार की समस्याओं, संकटों, दुःखों, कष्टों और पीड़ाओं से ग्रस्त और त्रस्त होना पड़ेगा तथा समाज में राजनैतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महंगाई, गंभीर रोग, संक्रमण रोग, महामारी, भय, दुःख, उपद्रव, हिंसक घटनाएं, आतंक, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, सूखा, भूकम्प, भूस्खलन, दुर्भिक्ष, अकाल आदि विविध प्रकार के प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनेगा।

परन्तु शनि साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के शुभाशुभ प्रभाव की मात्रा जातक की जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति पर निर्भर होती है। यदि

जन्मकुण्डली में शनि नीच राशि, शत्रुराशि, अस्त, वक्री, पापाक्रान्त, पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या का बुरा प्रभाव जातक पर अधिकतम होगा, इसके विपरीत यदि जन्मकुण्डली में शनि अपनी उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि, स्वराशि, मित्रराशि, मार्गी, शुभाक्रान्त, शुभग्रहों से युत या दृष्ट आदि शुभ स्थिति में हो तो शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या का अशुभ प्रभाव जातक पर नहीं पड़ेगा या न्यूनतम ही पड़ेगा किन्तु यदि शनि योगकारक आदि होकर षोडशवर्ग, अष्टकवर्ग एवं षड्बल आदि के आधार पर बली सिद्ध हो तो शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या में जातक को अप्रत्याशित सफलता और सम्पन्नता आदि अनेक शुभफलों की प्राप्ति होती है। जिन जातकों की जन्मकुण्डली में शनि पाप स्थिति या सम्बन्ध में होता है उन्हें शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या में मानसिक व्यथा, रोग-पीड़ा, दु:ख-कष्ट, गृह-क्लेश, चोर-भय, अग्निभय, जलभय, राजभय, राजदण्ड, पदच्युति एवं अवनति आदि अशुभफलों की प्राप्ति होती है।

गोचर में शनि ग्रह का सामान्य फल -

गोचर में शनि के परिवर्तन के आधार पर मेषादि द्वादश राशियों के जातकों को भिन्न-भिन्न शुभाशुभ फल की प्राप्ति होती है।

यदि गोचर में शनि किसी जातक की जन्मराशि अर्थात् जन्म राशि से प्रथम स्थान में हो तो मानसिक व्यथा एवं स्थान -हानि, द्वितीय में कलह -क्लेश, तृतीय में पराक्रम एवं सुख में वृद्धि, चतुर्थ में शत्रु वृद्धि, पंचम में सन्तान से पीड़ा, षष्ठ में सुख संसाधनों की वृद्धि,सप्तम में रोग व शत्रु -भय, अष्टम में दु:ख पीड़ा, नवम में सुख,दशम में निर्धनता, एकादश में धन-लाभ तथा द्वादश स्थान पर हो तो अनेक प्रकार के अनर्थो एवं अशुभ फलों की प्राप्ति होती है। यथा -

भृशं क्लेशं च शत्रुप्रवृद्धिं पुत्रसौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम्।
पीडा सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनुस्तनोति ।

शनि के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक सम्पन्न करने या करवाने से निश्चित रुप से लाभ होता है।

(१) शनिवासरी अमावस्या को सायंकाल में सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र जाप एवं स्तोत्र पाठ करना चाहिए।

(२) प्रत्येक शनिवार को सायंकाल में शनि के बीजमन्त्रों, पौराणिक मन्त्रों या वैदिक मन्त्रों का संकल्पपूर्वक जाप करना चाहिए।

(३) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ करना या सुनना चाहिए।

(४) शनिवार सायंकाल को पीपल वृक्ष के पास या शनि मन्दिर में तेल का दीपक जलाना चाहिए।

(५) प्रतिदिन या शनिवार को प्रातःकाल में भगवान शिव का पूजन करके, पीपल वृक्ष के समीप शनि स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्षमूल में लस्सी चढ़ानी चाहिए।

(६) शनिवार का व्रत रखना चाहिए।

(७) काले घोड़े की नाल या नाव के तल में लगी हुई कील से निर्मित अँगूठी या शनियन्त्र या नीलम रत्न जड़ित मुद्रिका को विधि पूर्वक शुभ मुहूर्त में निर्माण करवाकर शुभमुहूर्त में शनिवार को विधियुक्त पूजा करके धारण करना चाहिए।

(८) शनिवार को बन्दरों को गुड़ और चना खिलाना चाहिए।

(९) शनिवार को पक्षियों को सप्तधान्य डालना श्रेयस्कर है।

(१०) शनिवार को सप्तधान्यादि का या काले पदार्थों, काले वस्त्रों आदि का दान करना चाहिए।

(११) शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अधिकतम अशुभ फल की शान्ति के लिए बीज मन्त्रों, वैदिक मन्त्रों या महामृत्युञ्जय आदि मन्त्रों का पर्याप्त संख्या में जाप एवं हवन करना चाहिए।

(१२) छायापात्र दान, तुलादान, भूदान, स्वर्णदान आदि का दान करना चाहिए।

(१३) तेल में मुख देखकर उस तेल में उड़द की दाल के नानाविध मीठे और नमकीन पक्वान्न बनाकर गरीबों, मजदूरों, कुष्ठरोगियों आदि को खिलाने चाहिए, इसके अतिरिक्त काले कुत्ते, भैंसे या साँड आदि को खिलाना भी श्रेयस्कर रहेंगें।

शनि जन्य अरिष्ट दोषों के शमनार्थ प्रदत्त उपायों को किसी विशेष शुभ-मुहूर्त में शनिवार से प्रारम्भ करके प्रतिदिन या प्रत्येक शनिवार को करना चाहिए तथा विशेष उपायों को शनैश्चरी अमावस्या को करना या करवाना चाहिए। उपरोक्त किसी भी उपाय को करने से निश्चित रूप से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

आय-व्यय चक्र द्वारा शुभाशुभ फल -

संवत् में लाभ-हानि का ज्ञान करने हेतु आय-व्यय चक्र -

आय-व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

(सम्वत्सर २०८३ का राजा- गुरु)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	०८	१४	०८	११	१४	०८	१४	११	०५	०५	११
व्यय	०२	११	०८	०५	०२	०८	११	०२	०८	११	११	०८

आगामी सम्वत्सर में जातक से सम्बन्धित शुभाशुभ फल ज्ञात करने हेतु आय-व्यय बोधक चक्र में जातक की राशि के लाभ-हानि अंकों के योग में से एक घटाकर शेष को ८ से भाग दें। भाग देने पर यदि शेष १, २, ६, ७ बचे तो अभीष्ट सम्वत् में जातक को उत्तम लाभ होगा। शेष ३, ४, ५ या ८ हो तो लाभ से अधिक व्यय होने से परेशानियाँ बढ़ती हैं। अर्थात् शेष ०१ में लाभ, ०२ में सौख्य, ०३ में क्लेश, ०४ में रोग, ०५ में मिथ्या अपवाद, ०६ में सम्मान, ०७ में विजय, ०८ या ० में हानि समझनी चाहिए।

यथोक्तम् - **लाभव्ययौ समौ कृत्वा एकहीनं तु कारयेत्।**
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषाङ्के फलमादिशेत्॥
लाभं सौख्यं तथा क्लेशं रोगं लोकापवादनम्।
सम्मानं विजयं हानिं कथितं पूर्वसूरिभिः॥

राशि स्वामी के ध्रुवाङ्कों द्वारा संवत् २०८३ में लाभ-व्यय ज्ञान -

संवत् में जिस जातक से सम्बन्धित लाभ-व्यय ज्ञान अपेक्षित हो सर्वप्रथम उस जातक की राशि स्वामी के ध्रुवाङ्कों में अभीष्ट वर्ष के राजा के ध्रुवाङ्कों को जोड़ देते हैं। योगफल को ३ से गुणाकर, गुणनफल में ५ जोड़कर १५ से भाग देने पर जो शेष बचे वह लाभ होता है। लब्धि को ३ से गुणा करने पर गुणनफल में ५ जोड़ने तथा योगफल में १५ से भाग देने पर जो शेष रहे वह खर्च जानना चाहिए। सम्वत् २०८३ में मेषादि द्वादश राशियों के जातकों हेतु लाभ-हानि की मात्रा का समानुपातीय ज्ञान ध्रुवाङ्क चक्र द्वारा स्पष्ट है।

लाभ-हानि चक्र (ध्रुवाङ्कों के आधार पर)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	११	०५	०८	०२	०५	०८	०५	११	१४	०२	०२	१४
व्यय	०५	१४	११	११	०५	११	१४	०५	११	०८	०८	११

इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि - तिथौ शुभम् ।
यः श्रृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥

प्रो. विनोद कुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

विक्रम संवत् २०८३ सन् २०२६-२०२७ ई. में मेषादि द्वादश राशियों का मासिक-फल

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभ एवं अशुभ फल

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

मेष राशि के जातकों का इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, रक्त विकार की संभावनाएं बढ़ेंगी अकस्मात् चोट का भय बना रहेगा, सूर्य, मंगल, शनि ग्रहों से संबंधित द्रव्यों का दान करें, धन लाभ पारिवारिक सुख शांति समृद्धि, बंधु व मित्र जनों का सहयोग मिलता रहेगा, मातृ कष्ट, मानसिक अशांति, हृदय विकार की संभावनाएं बढ़ेंगी। संतान पक्ष से अशुभ फल प्राप्त होंगे, योजनाएं सफल नहीं हो पायेंगी, गृहस्थ सुख ठीक-ठाक रहेगा, भाग्य में वृद्धि होगी, धर्म-कर्म में प्रवृत्ति बढ़ेगी, कार्य क्षेत्र में बाधाएं उत्पन्न होंगी, पिता को कष्ट होगा, मास के अंत में विशेष खर्च की संभावनाएं बढ़ेंगी। मार्च 18, 19, 27, 28 अप्रैल 6, 7 अशुभ दिन रहेंगे।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि वाले जातकों का इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा, धन लाभ पारिवारिक सुख समृद्धि, मित्र, बंधु जनों का सहयोग मिलेगा, मातृ सुख, संतान पक्ष से शुभ सूचनाएं, योजनाओं में सफलता, परिवार में परेशानी, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में संघर्ष के उपरांत सफलता। मार्च 20, 21, 29, 30, 31 अप्रैल 8, 9 अशुभ दिन रहेंगे।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य के दृष्टि से उत्तम, धनलाभ में समस्यायें, परिवार में उलझनें, भातृसुख, पराक्रम एवं उत्साह बना रहेगा। मातृ सुख में समृद्धि, वंशपरंपरा से प्राप्त होने वाली संपत्ति के योग, संतान की चिंता, योजनाओं में सफलता, परिवार में समस्यायें, नेत्र व गुप्त रोगों की संभावना, नीच एवं दुष्ट प्रकृति के लोगों से अपमान एवं भय, भाग्य में संघर्ष के उपरांत सफलता, कार्य क्षेत्र में सामान्य सफलता, पिता के सुख में कमी। मार्च 15, 22, 23 अप्रैल 1, 2, 10, 11 अशुभ दिन रहेंगे।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि वाले जातकों का इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा लेकिन कष्ट भी बने रहेंगे, मंगल, राहु केतु से संबंधित ग्रहों के द्रव्यों का दान करें। धन लाभ पारिवारिक झमेले झगड़े, बंधुओं से विरोध, मातृ सुख मध्यम, संतान पक्ष से चिंतायें, योजनाओं में सफलता, परिवार में सुख समृद्धि मध्यम, भाग्य में वृद्धि, कार्य क्षेत्र में हानि के योग। मार्च 16, 17, 24, 25, 26 अप्रैल 3, 4, 5, 12, 13 और के दिन अशुभ रहेंगे।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि वाले जातकों का इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा, रोग व अकस्मात् दुर्घटनाओं से भय, पारिवारिक क्लेश बढ़ेगा, सूर्य और शनि ग्रहों से संबंधित द्रव्यों का दान करें, धन लाभ, पारिवारिक सुख समृद्धि, बंधुजनों में मत-मतांतर, माता के सुख में कमी, मानसिक चिंताएं बढ़ेंगी, संतान पक्ष से भी चिंताएं मिलेंगी। योजनाओं में असफलता मिलेगी, पारिवारिक समस्यायें बढ़ेंगी, भाग्य में बाधाएं उत्पन्न होंगी, कार्य क्षेत्र में संघर्ष बना रहेगा, किसी मिथ्या अपवाद से बचें रहें। मार्च 18, 19, 27 28 अप्रैल के 6, 7 अशुभ दिन रहेंगे।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि वाले जातकों का इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा, धन लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, बंधु सुख में कमी आएगी मातृ सुख सामान्य रहेगा, मित्रों से मेल जोल बढ़ेगा, संतान पक्ष चिंतित करेगा, योजनाएं असफल होंगी, पत्नी कष्ट होगा, भाग्य साथ देगा और कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। मार्च 20, 21, 29, 30 अप्रैल 8, 9 के दिन आपके लिए अशुभ रहेंगे।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। असंगति से दूर रहें, धनलाभ में वृद्धि, घरेलु झगड़ों एवं झंझटों से दूर रहें, बंधुजनों से मेल

होगा, आपका उत्साह और पराक्रम बना रहेगा, मातृ एवं संतान की ओर से कष्ट प्राप्त होगा, मित्रों से व्यवहार में कटुता रहेगी, परिवार की चिंता से चिंतित रहेंगे, भाग्य प्रबल है परंतु कार्य क्षेत्र में सावधानी की आवश्यकता है। मार्च 15, 22, 23 अप्रैल 1, 2, 10, 11 के दिन आपके लिए अशुभ रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि वाले जातकों का इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, मंगल ग्रह से संबंधित द्रव्यों का दान करें, धनधान्य की संभावनाएं बढ़ेंगी। पारिवारिक सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, भ्रातृसुख ठीक रहेगा, मातृ सुख मध्यम रहेगा, संतान पक्ष से चिंताएं मिलेंगी, योजनाओं में बाधाएं उत्पन्न होंगी, पत्नी सुख की प्राप्ति होगी, आपका भाग्य प्रबल रहेगा, कार्य क्षेत्र में लगातार संघर्ष से सफलता मिलती रहेगी। मार्च 16, 17, 24, 25, 26 अप्रैल 3, 4, 5, 12 13 के दिन आपके लिए अशुभ रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि के जातकों का इस मास में स्वास्थ ठीक नहीं रहेगा, गुरु ग्रह से संबंधित द्रव्यों का दान करें। पारिवारिक मतभेद बढ़ेंगे, धन लाभ के क्षेत्र में बाधाएं उत्पन्न होंगी, नेत्र एवं वाणी में विकार पैदा होगा, बंधु सुख मध्यम रहेगा, मातृ कष्ट होगा, हृदय रोग होने की संभावनाएं बढ़ेंगी, संतान पक्ष से चिंतायें मिलेंगी, योजनाएं असफल होंगी, पत्नी सुख मध्यम रहेगा, गुप्त रोग एवं भाग्य में संघर्ष बना रहेगा, कार्य क्षेत्र में लाभ होगा। मार्च 18, 19, 27, 28 अप्रैल 6, 7 के दिन आपके लिए अशुभ रहेंगे।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक रहेगा, रोग व चोट का भय बना रहेगा, उदर विकार होगा। सूर्य, शनि, राहु, मंगल ग्रह के द्रव्यों का दान करें। कार्य क्षेत्र में धन लाभ और विशेष खर्च, बंधु विवाद, मित्रों से सहयोग, मातृ कष्ट, संतान पक्ष से चिंतित, योजनाएं सफल होंगी। गृहस्थ की चिंता से चिंतित रहेंगे, भाग्य ठीक रहेगा, कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। मार्च 20, 21, 29, 30 अप्रैल 8, 9 के दिन आपके लिए अशुभ रहेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुंभ राशि वाले जातकों के लिए इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। शनि और बुध ग्रह के द्रव्यों का दान करें, धन लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, वृथा व्यय से बचें, पारिवारिक झगड़े झमेलों से बचें, बंधु सुख और हानि दोनों ही होंगे, मित्रों से अकस्मात् अपवाद भय की संभावनाएं बनेंगी, मातृ कष्ट होगा, संतान पक्ष से शुभ संकेत मिलेंगे, योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ की चिंता से चिंतित रहेंगे, भाग्य व कार्य क्षेत्र में संघर्ष बना रहेगा, मार्च 15, 22, 23 अप्रैल 1, 2, 10, 11 के दिन आपके लिए अशुभ रहेंगे।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि के जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास अशुभ रहेगा, अचानक चोट का भय बना रहेगा, सूर्य, शनि ग्रह के द्रव्यों का दान करें। धन लाभ में वृद्धि होगी, पारिवारिक सुख समृद्धि में समस्यायें का सामना करना पड़ेगा, भ्रातृ सुख ठीक रहेगा, मातृ सुख एवं अपने स्वजनों से सौहार्द में वृद्धि होगी, संतान पक्ष से चिंताएं बनी रहेंगी, योजनाएं मध्यम फल देंगी, गृहस्थ में परेशानियां आयेंगी, भाग्य कमजोर रहेगा, कार्य क्षेत्र में संघर्ष के उपरांत प्रगति होगी। मार्च 16, 17, 24, 25, 26 अप्रैल 3, 4, 5, 12, 13 के दिवस आपके लिए अशुभ रहेंगे।

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

मेष राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास खराब रहेगा परंतु आत्म बल बना रहेगा, धन लाभ के क्षेत्र में सामान्य स्थिति रहेगी, योजनाएं सफल होंगी, संतान पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी परंतु मानसिक चिंताएं बनी रहेंगी, भाग्य प्रबल परंतु कार्य क्षेत्र में संघर्ष बना रहेगा। अप्रैल 15, 16, 17, 24, 25, में 3, 4, 5, 13 अशुभ दिन रहेंगे

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं रहेगा, आंखों में विकार होना संभव है। बंधु जनों में मतभेद पैदा होंगे परंतु तालमेल बना रहेगा,

धन के क्षेत्र में एवं परिवार में विवाद उत्पन्न होंगे, मित्रों में समानता रहेगी, संतान पक्ष में सुख के लिए चिंताएं बनेंगी, गृहस्थ सुख ठीक-ठाक रहेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र उत्तम रहेगा, धर्म में रुचि बढ़ेगी। अप्रैल 18, 19, 26, 27 मई 6, 7 अशुभ दिन रहेंगे।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि वाले जातकों का इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, मानसिक चिंताएं बनी रहेंगी, शीत विकार जैसे कफ आदि का आधिक्य रहेगा, गुप्त रोगों से चिंताएं बढ़ेंगी। नेत्रों में कष्ट होगा, धन की प्राप्ति के बाद हानि होगी, बंधु सुख ठीक रहेगा, संतान पक्ष से शुभ सूचनाएं प्राप्त होंगी। गृहस्थ सुख में लाभ मिलेगा, भाग्य मध्यम फल प्रदान करेगा, कार्य क्षेत्र में संघर्ष बना रहेगा । अप्रैल 15, 16, 17, 24, 25, मई 3, 4, 5, 13 अशुभ दिन रहेंगे।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

यह मास आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं रहेगा, मानसिक चिंताएं शीत विकार, गुप्त रोग और नेत्रों में कष्ट बढ़ेगा, धन की प्राप्ति के बाद व्यय होगा, बन्धुओं से सुख की प्राप्ति होगी, मातृ सुख मध्यम रहेगा, मित्रों से शुभ सूचनाएं प्राप्त होंगी। आपका गृहस्थ जीवन सामान्य रहेगा, भाग्य से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा, कार्य क्षेत्र से कुछ शुभ समाचार प्राप्त होंगे। अप्रैल 22, 23 में 1, 2, 11, 12 दिन आपके लिए अशुभ रहेंगे।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

यह मास आपके लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा, परंतु उदर विकार बढ़ेगा, धन लाभ मध्यम रहेगा, बंधु सुख सामान्य रहेंगे, मातृ सुख में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे, मित्रों में मत मतान्तर दृष्टिगोचर होगा, संतति पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। योजनाएं आपकी सफल होंगी परंतु गृहस्थ में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, मन व्यथित रहेगा, गुप्त रोगों की संभावनाएं बढ़ेंगी। भाग्य साथ नहीं देगा, कार्य क्षेत्र मध्यम रहेगा। अप्रैल 15, 16, 17, 24, 25 मई 3, 4, 5, 13 अशुभ दिन रहेंगे।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं रहेगा, धन की प्राप्ति के उपरांत व्यय अधिक होगा, उत्साह में न्युणता आएगी, मित्रों के पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे, संतान पक्ष से चिंताएं मिलेंगी, आपके द्वारा बनाई गई योजनाएं सफल नहीं हो पाएंगी, गृहस्थ की चिंता से चिंतित रहेंगे, नेत्रों एवं मूत्र विकार की संभावनाएं बढ़ेंगी, भाग्य आपका मध्यम रहेगा, कार्य क्षेत्र में लाभ होने की संभावनाएं बढ़ेंगी। अप्रैल 18, 19, 26, 27मई 6, 7 अशुभ दिन रहेंगे।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि के जातकों के लिए इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा, धन एवं परिवार में सुख की कमी प्राप्त होगी, पराक्रम और उत्साह में वृद्धि होगी, बंधुजनों से लाभ प्राप्त होगा, माता एवं संतान पक्ष से चिंताएं व्यथित करेंगी। योजनाएं असफल रहेंगी परंतु शत्रु और रोग कमजोर पड़ेंगे, गृहस्थ सुख में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, भाग्य और कार्य क्षेत्र उत्तम रहेगा। अप्रैल 20, 21, 28, 29, 30 मई 8, 9, 10 अशुभ दिन रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

इस मास में आपका स्वास्थ्य खराब रहेगा, संतान पक्ष से अशुभ समाचार प्राप्त होंगे, धन के क्षेत्र में स्थिति मजबूत बनेगी, परिवार की ओर से सुख एवं समृद्धि की संभावनाएं बढ़ेंगी, उत्साह में वृद्धि होगी, माता पक्ष की चिंताएं बढ़ेंगी, योजनाएं असफल होंगी, शत्रु एवं रोग कमजोर पड़ेंगे, पत्नी की चिंता से चिंतित रहेंगे, भाग्य ठीक रहेगा, कार्य क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलताएं प्राप्त होंगी, अप्रैल 22, 23 मई 1, 2, 11, 12 अशुभ दिन रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा। धन की प्राप्ति होगी और व्यय भी होगा, बंधुजनों के विरोध का सामना करना पड़ेगा, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, संतान पक्ष से शुभ सूचनाएं प्राप्त होंगी। आपकी योजनाएं सफल होंगी, शत्रु कमजोर पड़ेंगे, परंतु सतर्क रहने की आवश्यकता है, पत्नी की ओर से चिंताएं चिंतित करेंगी, गुप्त रोग प्रभाव बढ़ाएंगे, भाग्य संघर्षमय रहेगा, कार्यक्षेत्र में सफलताएं प्राप्त होंगी। अप्रैल 15, 16, 17, 24, 25 मई 3, 4, 5, 13 अशुभ दिन रहेंगे।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। धन प्राप्ति होने के बाद व्यय होगा, बंधुजनों से विरोध का सामना करना पड़ेगा, संतान पक्ष से शुभ सूचनाएं प्राप्त होंगी, योजनाएं सफल रहेंगी, शत्रु एवं रोग शांत रहेंगे परन्तु सावधानी की आवश्यकता रहेगी, पत्नी पक्ष से चिंताएं चिंतित करेंगी, गुप्त रोग बढ़ेंगे, भाग्य में संघर्ष और कार्य क्षेत्र में सफलताएं प्राप्त होंगी। अप्रैल 18, 19, 26, 27 मई 6, 7 अशुभ दिन रहेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुम्भ राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक नहीं रहेगा, क्रोध में वृद्धि होगी, अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे, पराक्रम एवं उत्साह में न्युणता मिलेगी, बन्धु सुख एवं संतान पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, परन्तु चिंताएं बनी रहेंगी, गृहस्थ में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, गुप्त रोगों का प्रभाव बढ़ेगा, भाग्य सामान्य रहेगा, कार्य क्षेत्र में अनवरत संघर्ष बना रहेगा। अप्रैल 20, 21, 28, 29, 30 मई 8, 9, 10 अशुभ दिन रहेंगे।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक नहीं रहेगा, क्रोध में वृद्धि होगी, नेत्रों में विकार बढ़ेगा, मातृ पक्ष से शुभ सूचनाएं प्राप्त होंगी, मित्रों से लाभ मिलेगा, संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, आपको योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी, शत्रु हतप्रभ रहेंगे, स्त्री पक्ष से कष्ट मिलेगा, भाग्य मध्यम रहेगा और आपको कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। अप्रैल 22, 23, मई 1, 2 अशुभ दिन रहेंगे।

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि वालों के लिए शुभ एवं अशुभ फल ।

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ ।

यह मास मेष राशि वालों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहेगा परंतु क्रोध में वृद्धि होगी धन के क्षेत्र में लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी इसी के साथ धन व्यय में भी लगाम लगेगी बंधु एवं बांधवों से सुख की प्राप्ति होगी मित्रों के साथ व्यवहार में वृद्धि होगी संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी । आपकी योजनाएं सफल नहीं हो पाएंगी गृहस्थ सुख में वृद्धि होगी, रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ेगी । आपके भाग्य में इस माह समस्यायें रहेंगी कार्य क्षेत्र में स्थिरता नहीं बनेगी। मई 21, 22, 30, 31, जून 1, 9, 10, के दिन अशुभ रहेंगे।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि वालों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहने वाला है किंतु सिर में पीड़ा बढ़ेगी। धन-धान्य में लाभ होगा। पारिवारिक संबंध अच्छे रहेंगे, मित्रों से लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, संतान सुख मध्यम रहेगा आपकी योजनाएं सफल होंगी, परंतु गृहस्थ में कुछ परेशानियां बढ़ेंगी, भाग्य एवं आपका कार्य क्षेत्र ठीक रहेगा और आपका व्यय शुभ कार्यों में खर्च होने वाला होगा। मई 15, 16, 23, 24, जून 2, 3, 11, 12 के दिन अशुभ रहेंगे।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि वालों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहने वाला है परंतु चिंताएं बनी रहेंगी, धन एवं संपत्ति में वृद्धि होगी, पारिवारिक सुख की प्राप्ति होगी, पराक्रम और उत्साह बना रहेगा। मातृ पक्ष से मध्यम सुख की प्राप्ति, संतान की ओर से शुभ संकेत, आपकी योजनाएं सफल होंगी, स्त्री सुख की प्राप्ति होगी और पति सुख में भी वृद्धि होगी। आपका भाग्य प्रबल रहेगा कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी। मई 17, 18, 25, 26, 27 जून 4, 5, 6, 13, 14 के दिन अशुभ रहेंगे।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि वालों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ ठीक रहने वाला है। धन की प्राप्ति के उपरांत हानि होने की संभावनाएं बनेंगी। पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि रहेगी, मातृ पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, मित्रों से लाभ होगा, संतान पक्ष से शुभ समाचार मिलेंगे, आपकी योजनाएं सफल होंगी, स्त्री एवं पति सुख की प्राप्ति होगी, रोगों से भय बना रहेगा परंतु आपका भाग्य प्रबल रहेगा, धर्म के क्षेत्र में आपकी रुचि बढ़ेगी और कार्य क्षेत्र में मन लगेगा। जिससे आपको कार्यक्षेत्र में विशेष लाभ की प्राप्ति होगी । मई 19, 20, 28, 29, जून 7, 8, के दिन अशुभ रहेंगे।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि वालों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से उदर में समस्या एवं वात संबंधी रोगों में वृद्धि, धन और संपत्ति में वृद्धि होगी, पारिवारिक सुख प्राप्त होगा, बंधु एवं मित्र लोगों से आपका मेल बढ़ेगा, संतान सुख में वृद्धि होगी, आप नई-नई योजनाओं का निर्माण करेंगे परन्तु शत्रुओं का भय बना रहेगा और इसी के साथ रोग में भी कुछ संभावनाएं बढ़ेंगी गृहस्थ सुख में समस्यायें होंगी। परंतु भाग्य, धर्म के क्षेत्र में विशेष रूप से वृद्धि होगी। मई 21, 22, 30, 31 जून 1, 9, 10 के दिन अशुभ रहेंगे।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि वालों के लिए इस माह स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभ होगा धन एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी आपको पराक्रम और उत्साह में वृद्धि देखने को मिलेगी बंधु एवं मित्र जनों का सहयोग प्राप्त होगा। संतान सुख में वृद्धि होगी स्त्री कष्ट बढ़ेगा मन अशांत रहेगा भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में कुछ संभावनाएं बढ़ेंगी और अंततः लाभ की प्राप्ति होगी परंतु मास के अंत में अत्यधिक व्यय होने की स्थिति बनेगी। मई 15, 16, 23, 24 जून 2, 3, 11, 12 के दिन अशुभ रहेंगे।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

राशि वालों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह उत्तम रहेगा, धन के क्षेत्र में लाभ होगा, पारिवारिक एवं बंधुजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा मातृ पक्ष से कुछ मानसिक कष्ट की प्राप्ति होगी, संतान पक्ष से भी चिंतित रहेंगे, आपकी योजनाएं असफल होंगी और शत्रु भी कमजोर पड़ेंगे, रोग ठीक होगा, स्त्री सुख में वृद्धि होगी, आपका भाग्य ठीक रहेगा धर्म के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी परंतु अस्थिरता अनवरत बनी रहेगी, लेकिन फिर भी कार्य क्षेत्र में प्रगति दृष्टिगोचर होगी। मई 17, 18, 25, 26, 27, जून 4, 5, 6, 13, 14 के दिन अशुभ रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि वालों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से अति उत्तम रहने वाला है। धन के क्षेत्र में लाभ होगा। पारिवारिक सुख एवं समृद्धि की संभावनाएं बढ़ेगी। आपका उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा। बंधु एवं बान्धवों से सुख की प्राप्ति होगी। मातृ पक्ष से कष्ट मिलेगा। संतान पक्ष से भी चिन्ताएं बढ़ेंगी आपकी योजनाओं में रुकावटें आने के कारण सफल नहीं हो पायेंगी। शत्रुओं से भय बराबर बना रहेगा गृहस्थ सुख में कष्ट की प्राप्ति होगी और भाग्य में भी कमी मिलेगी। परंतु कार्य क्षेत्र में सफलताएं बनी रहेगी। मई 19, 20, 28, 29 जून 7, 8 के दिन अशुभ रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि वालों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह अति उत्तम रहेगा धन के क्षेत्र में वृद्धि होगी, बंधु -बांधवों एवं मित्रों से सहयोग की प्राप्ति होगी, पराक्रम और उत्साह अनवरत बना रहेगा संतान पक्ष से शुभ सूचनायें प्राप्त होंगी। आपकी योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। शत्रु आपसे कोसों दूर रहेंगे। गृहस्थ सुख में भी वृद्धि होगी परंतु भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। मई 21, 22, 30, 31 जून 1, 9, 10 के दिन अशुभ रहेंगे।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

राशि वालों के लिए यह मास अति उत्तम रहेगा परंतु धनागम के क्षेत्र में समस्यायें बढ़ेंगी, मित्रों एवं बंधुजनों से विरोध का सामना करना पड़ेगा, मातृ पक्ष एवं मित्र पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, संतान पक्ष मध्यम फल देने वाला होगा, आपकी योजनाएं सफल होंगी, शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। परंतु रोगों का भय बना रहेगा, भाग्य में वृद्धि होने से लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, कार्य क्षेत्र में अस्थिरता होने के उपरांत भी लाभ की संभावनाएं बनेगी। मई 15, 16, 23, 24, जून 2, 3, 11, 12 के दिन अशुभ रहेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुंभ राशि वाले जातकों के लिए यह मास सेहत एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से उदर में विकार नेत्रों में रोग और वात विकार की संभावनाएं अत्यधिक रहेंगी, धन की प्राप्ति होने के उपरान्त अत्यधिक व्यय होगा, पारिवारिक सुख में भी कमी आयेगी, उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा, बंधु एवं मित्र जनों से कार्य क्षेत्र में सहयोग मिलेगा। संतान पक्ष

से सुख की प्राप्ति, योजनाओं में लाभ, योजनाएं सफल होंगी। शत्रु भयभीत रहेंगे, परंतु गृहस्थ में चिंताएं बनी रहेंगी, आपका भाग्य एवं कार्य क्षेत्र प्रबल रहेगा, और धन लाभ के क्षेत्र में भी वृद्धि होगी। मई 17, 18, 25, 26, 27, जून 4, 5, 6, 13, 14 के दिन अशुभ रहेंगे।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि वालों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से परेशानियों एवं चिताओं से भरा रहेगा, धन के क्षेत्र में लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, परिवार एवं बंधु जनों से लाभ की प्राप्ति होगी, संतान सुख ठीक रहेगा, आपके द्वारा बनाई गई योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। शत्रु भयभीत रहेंगे, गृहस्थ एवं स्त्री पक्ष से अनवरत चिन्ताओं का सामना करना होगा। भाग्य एवं कार्य क्षेत्र आपका ठीक रहेगा और अकस्मात् धन लाभ की प्राप्ति होगी। मई 19, 20, 28, 29, जून 7, 8 के दिन अशुभ रहेंगे।

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि वालों के लिए शुभ एवं अशुभ फल।

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

मेष राशि वाले जातक इस मास स्वास्थ्य का लाभ ले सकेंगे, धन का लाभ होकर भी धन हानि होने का भय बना रहेगा। गृहसुख की प्राप्ति होगी, पराक्रम एवं उत्साह में लाभ होगा, बंधुओं से सुख की प्राप्ति, मित्रों में असहजता, मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी। परंतु संतति पक्ष से शुभ फल मिलेंगे, आपको योजनाओं में लाभ होगा। स्त्री कष्ट होने की संभावना रहेगी, भाग्य में वृद्धि होगी धर्म और कर्म में अत्यधिक रुचि बढ़ेगी कार्य क्षेत्र में बाधाएं उत्पन्न होंगी मन अशांत एवं अत्यधिक व्यय होगा। जून 17, 18, 19, 27, 28, जुलाई 7, 8, 15 के दिन अशुभ रहेंगे।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि वाले जातकों का इस मास स्वास्थ्य मध्यम रहेगा, धन लाभ की संभावनाएं बनेंगी, किंतु अनावश्यक खर्च बढ़ेगा बंधु सुख सामान्य रहेगा, मानसिक अशान्ति बढ़ेगी, संतान पक्ष से मध्यम फल मिलेगा, योजनाएं सफलता प्राप्त करेंगी, स्त्री सुख एवं पति सुख में वृद्धि होगी, भाग्य प्रबल होगा, कार्य क्षेत्र में भविष्य उज्जवल बनेगा, धर्म और कर्म में अत्यधिक रुचि बढ़ेगी, अच्छे कार्यों में व्यय होगा। जून 20, 21, 29, 30, जुलाई 1, 9, 10 के दिन अशुभ रहेंगे।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि वालों के लिए इस मास स्वास्थ्य में लाभ मिलेगा और धन लाभ की स्थिति बनेगी। परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। मातृ सुख की प्राप्ति होगी। मित्रों से लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी। संतान पक्ष से सुख की संभावनाएं मध्यम रहेंगी, योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी इस महीने शत्रु कमजोर पड़ेंगे। स्त्री सुख एवं पति सुख की प्राप्ति होगी, भाग्य में वृद्धि होगी, कारोबार कार्य क्षेत्र में प्रगति की संभावनाएं बनेंगी, आय में वृद्धि के संकेत मिलेंगे। जून 22, 23, जुलाई 2 के दिन अशुभ रहेंगे।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि वालों का इस मास स्वास्थ्य ठीक रहेगा परन्तु मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, धन की प्राप्ति होने के उपरान्त भी धन के व्यय होने की संभावनाएं अत्यधिक बढ़ेंगी। परंतु उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी मातृ पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। मित्रों से सहायता प्राप्त होगी। संतति पक्ष से शुभ सूचनायें प्राप्त होंगी, योजनाओं में सफलता की प्राप्ति होगी इस कालखंड में शत्रु कमजोर पड़ेंगे, पति सुख एवं स्त्री सुख में वृद्धि होगी, गुप्त रोगों का भय बना रहेगा। भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में प्रगति की स्थिति बनेगी। जून 15, 16, 24, 25, 26, जुलाई 4, 5, 6, 13, 14 के दिन अशुभ रहेंगे।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि वालों का इस महीने स्वास्थ्य की दृष्टि से मध्यम, धन लाभ की प्राप्ति, पारिवारिक सुख समृद्धि बनी रहेगी, मातृ पक्ष से सुख की संभावनाएं बढ़ेंगी मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। संतान पक्ष सुख समृद्धि से युक्त होगा। योजनाएं सफलता प्राप्त करेंगी। गृहस्थ में समस्यायें बढ़ेंगी। रोगों से भय होगा। भाग्योदय होगा, धर्म कर्म के कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी और कार्य क्षेत्र में लाभ की संभावनाएं बनेंगी। जून 17, 18, 19, 27, 28 जुलाई 7, 8, 15 के दिन अशुभ रहेंगे।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि वालों के लिए इस महीने में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सामाजिक क्षेत्र में प्रभाव बढ़ेगा। धन एवं संपत्ति से लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी, उत्साह बना रहेगा। मित्रों के द्वारा सहयोग मिलता रहेगा, संतान पक्ष की तरफ से किसी प्रकार की हानि नहीं होगी। योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। शत्रु आपके कमजोर पड़ेंगे। गृहस्थ में लड़ाई झगड़ों में कुछ वृद्धि देखने को मिलेगी। आपका भाग्य एवं कार्यक्षेत्र में पहले की अपेक्षा प्रगति की स्थिति बनेगी। धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी और आय के साधनों में अच्छे स्रोत बनकर सामने आएंगे। जून 20, 21, 29, 30 जुलाई 1, 9, 10 के दिन अशुभ रहेंगे।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि वालों के लिए इस महीने में स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष लाभ होगा, धन की प्राप्ति होने के उपरांत धन के व्यय होने की संभावनाएं बढ़ेंगी, पारिवारिक सुख समृद्धि एवं धन का लाभ बना रहेगा। मित्रगण एवं संबंधी सहयोग करते रहेंगे परंतु संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, आपकी योजनाएं असफलता का सामना करेंगी, दुर्घटना का भय बना रहेगा, शत्रु कमजोर रहेंगे, गृहस्थ में कलह की वृद्धि होगी। भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। परंतु मानसिक चिंतायें लगातार बनी रहेंगी। जून 22, 23, जुलाई 2, 3, 11, 12 के दिन अशुभ रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि वालों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहेगा, धन एवं संपत्ति के विषय में लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी। पारिवारिक सुख समृद्धि में वृद्धि होगी बंधु व मित्र गणों से सहयोग प्राप्त होगा मातृकष्ट एवं शत्रुओं से भय बना रहेगा, स्त्री सुख एवं पति सुख की प्राप्ति होगी । नेत्रों में कष्ट होगा शीत रोग का भय बना रहेगा । भाग्य में रुकावटें आती रहेंगी कार्य क्षेत्र में विशेष वृद्धि होगी तथा लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी । जून 15, 16, 24, 25, 26, जुलाई 4, 5, 6, 13, 14 के दिन अशुभ रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि वालों के लिए इस महीने स्वास्थ्य की दृष्टि से खराब होने की संभावनाएं बनेंगी परंतु धन के क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी पारिवारिक बंधु जनों से सुख की प्राप्ति होगी, मित्रों से मिलन होगा, मातृ पक्ष से कष्ट बढ़ेगा, संतान पक्ष से शुभ संकेत मिलेंगे, आपकी योजनाएं सफल होंगी परंतु गृहस्थ में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा मानसिक चिंताएं बढ़ेंगी भाग्य में वृद्धि होगी और कार्य क्षेत्र में प्रगति बनी रहेगी। जून 17, 18, 19, 27, 28, जुलाई 7, 15 के दिन अशुभ रहेंगे।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि वालों के लिए इस महीने में स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य रहेगा, धन की दृष्टि से लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी परन्तु अनावश्यक व्यय होगा पारिवारिक मतभेद उभर कर आएंगे, बंधु जनों से भय बना रहेगा परन्तु उत्साह में वृद्धि होगी, मातृ पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, मित्र जनों से सहयोग मिलेगा, संतान पक्ष से शुभ संकेत मिलेंगे, योजनाएं सफल होंगी शत्रु आपके कमजोर पड़ेंगे, रोगों से छुटकारा मिलेगा परन्तु गृहस्थ में कलह का कारण बना रहेगा, रोगों से भय की संभावनाएं बढ़ेंगी, भाग्य में सुख की प्राप्ति होगी, और कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। जून 20, 21, 29, 30, जुलाई 1, 9, 10 के दिन अशुभ रहेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुंभ राशि वालों के लिए इस महीने में सिर व नेत्रों में कष्ट से पीड़ा का सामना करना पड़ेगा। उदर विकार बढ़ेंगे, धन की प्राप्ति होगी, परंतु हानि का भी भय बना रहेगा। गृहस्थ में कलह बढ़ेगी उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, बंधु सुख की प्राप्ति होगी, संतान पक्ष से चिंता अनवरत सताती रहेगी, योजनाओं में किंचित् लाभ होने की संभावना बनेगी, गृहस्थ की चिंता बनी रहेगी, भाग्य मध्यम रहेगा, कार्य क्षेत्र में विशेष प्रगति दृष्टिगोचर होगी । जून 22, 23, जुलाई 2, 3, 11, 12 के दिन अशुभ रहेंगे।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि वालों के लिए इस महीने में विशेष रूप से सिर में कष्ट होने की

संभावना, शिरोवेदना धन एवं संपत्ति का लाभ होगा। पारिवारिक सुख समृद्धि में वृद्धि होगी। बान्धवो व मित्र जनों से सहयोग की प्राप्ति होगी, मातृ सुख मध्यम मिलेगा, संतान पक्ष से सुख की संभावनाएं बढ़ेंगी, परंतु चिंताएं बनी रहेंगी, गृहस्थ में कलह का कारण बना रहेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में सफलता मिलती रहेगी, धर्म एवं कार्यक्षेत्र में रुचि की वृद्धि होगी। जून 15, 16, 24, 25, 26, जुलाई 4, 5, 6, 31, 14 के दिन अशुभ रहेंगे।

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभ एवं अशुभ फल।

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ ।

मेष राशि के जातकों के लिए इस महीने में स्वास्थ्य लाभ की प्राप्ति होगी धन लाभ होने के उपरांत हानि होने का भय बना रहेगा परंतु उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी मातृ पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी बंधु पक्ष से एवं मित्र जनों से सहयोग मिलता रहेगा संतान पक्ष से मध्यम सुख की प्राप्ति, आपके द्वारा योजनाएं सफलता चूमेंगी गृहस्थ सुख की प्राप्ति होगी, भाग्य प्रबल रहेगा, धर्म एवं कर्म में अत्यधिक प्रवृत्ति बढ़ेगी, कार्यक्षेत्र में उलझने पैदा होंगी परंतु मन शांत, विशेष लाभ होने की संभावनाएं बनेंगी। जुलाई 24, 25, अगस्त 3, 4, 11, 12, के दिन अशुभ रहेंगे।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि के जातकों के लिए इस महीने में स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष सावधानियां रखनी होंगी अन्यथा समस्यायें बढ़ेंगी वीपी जैसी समस्याएं बढ़ेंगी परंतु धन एवं संपत्ति में लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी पारिवारिक सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, बंधु एवं मित्र जनों से सहयोग की प्राप्ति होगी, संतान पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, आपकी योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ में सुख का लाभ मिलेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति होगी, धार्मिक कार्यों में मन लगा रहेगा । जुलाई 17, 18, 26, 27, 28, अगस्त 5, 6, 13, 14, के दिन अशुभ रहेंगे।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि वालों के लिए इस महीने में स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष लाभ की प्राप्ति होगी, धन लाभ की संभावनाएं बनेगी, पारिवारिक व मित्र जनों से सुख की वृद्धि होगी, उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा, संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, योजनाओं में असफलता की प्राप्ति होगी, गृहस्थ सुख में अत्यधिक लाभ नहीं होगा परंतु भाग्य एवं धर्म का क्षेत्र ठीक रहेगा, कार्य क्षेत्र में समस्यायें का सामना करना पड़ेगा और अत्यधिक संघर्ष के उपरांत लाभ की प्राप्ति होगी। जुलाई 19, 20, 29, 30, अगस्त 7, 8, 15, 16, के दिन अशुभ रहेंगे।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि के जातकों के लिए इस महीने स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक लाभ रहेगा आपके प्रभाव का क्षेत्र बढ़ेगा, धन एवं संपदा में विशेष लाभ की प्राप्ति होगी, बन्धु एवं मित्र गणों से सुख के क्षेत्र में वृद्धि होगी, संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे, आपकी योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ में समस्यायें बढ़ेंगी, गुप्त रोगों का भी भय बना रहेगा, भाग्य के क्षेत्र में मध्यम फल प्राप्त होंगे परंतु अंततः सफलता आपका मार्ग चूमेगी, कार्य क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति की संभावनाएं बनेंगी। जुलाई 21, 22, 23, 31, अगस्त 1, 2, 9, 10, के दिन अशुभ रहेंगे।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि वालों के लिए इस महीने में स्वास्थ्य उत्तम बना रहेगा, धन के क्षेत्र में लाभ होने की संभावनाएं बढ़ेंगी, पारिवारिक सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, भातृ कष्ट बढ़ेगा, और संतान पक्ष से अशुभ समाचार प्राप्त होंगे, योजनाओं में हानि होगी शत्रुओं का भय बना रहेगा रोगों में वृद्धि होगी स्त्री एवं पति सुख में परस्पर समस्यायें का सामना करना होगा, मानसिक चिंताएं बढ़ेंगी यदि भाग्य आपका साथ दे तो कार्यक्षेत्र में स्थिरता बनेगी, महीने के अंत में लाभ के योग बनेंगे। जुलाई 24, 25 अगस्त 3, 4, 11, 12, के दिन अशुभ रहेंगे।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य में लाभ होगा, धन लाभ की प्राप्ति होगी परिवार में भी वृद्धि होगी नेत्रों में रोग होने की संभावनाएं बढ़ेंगी, मानसिक विकार

रहेगा, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, भ्रातृ सुख में वृद्धि होगी संतान पक्ष से शुभ सूचनाऐं प्राप्त होंगी, आपकी योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी, स्त्री कष्ट एवं पति कष्ट अनवरत बना रहेगा, भाग्य निर्बल होगा, कार्य क्षेत्र में सफलताएं आपका मार्ग चूमेंगी। जुलाई 17, 18, 26, 27, 28 अगस्त 5, 6, 13, 14, के दिन अशुभ रहेंगे।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना उत्तम रहेगा, धन लाभ के योग बनेंगे, पारिवारिक सुख समृद्धि माध्यम बनी रहेगी, बंधु एवं मित्र जनों से सुख की प्राप्ति होगी, पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी, मंत्र व संतान कष्ट की प्राप्ति होगी, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा योजनाओं में विघ्न बाधाएं आती रहेंगी, स्त्री एवं पति कष्ट बना रहेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। जुलाई 19, 20, 29, 30, अगस्त 7, 8, 15, 16, के दिन अशुभ रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा, धन एवं संपत्ति के क्षेत्र में लाभ की संभावना बढ़ेगी, परिवार में सुख एवं समृद्धि की वृद्धि होगी, बन्धु एवं मित्रों से सुख की वृद्धि होगी, उत्साह और पराक्रम में वृद्धि बनी रहेगी, मातृ कष्ट एवं मित्रों से लाभ की संभावनाएं कम होगी, संतान पक्ष से चिंता बढ़ेगी परंतु शुभ कार्यों में स्थिति बनी रहेगी, गृहस्थ में समस्यायें का सामना करना पड़ेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में विशेष प्रगति उत्तरोत्तर होती रहेगी। जुलाई 21, 22, 23, 31, अगस्त 1, 2, 9, 10, के दिन अशुभ रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि वाले जातकों के लिए इस महीने में स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यधिक कष्ट बढ़ेगा परंतु धन लाभ होगा, बंधु एवं मित्र जनों से सहयोग की प्राप्ति होगी, मातृ पक्ष से कष्ट होगा, संतान पक्ष से चिंता बनी रहेगी, आपकी योजनाएं असफल रहेंगी, शत्रु एवं रोग आपको भयभीत करेंगे, गृहस्थ सुख में समृद्धि बनी रहेगी परंतु भाग्य साथ नहीं देगा कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी। जुलाई 24, 25, अगस्त 3, 4, 11, 12, के दिन अशुभ रहेंगे।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि वाले जातकों के लिए इस महीने स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष लाभ होगा, धन एवं परिवार सुख में हानि होगी, बंधु जन एवं मित्र जनों से सहयोग प्राप्त होगा, संतान पक्ष से मध्यम सुख की प्राप्ति होगी, योजनाएं सफलता चुमेंगी गृहस्थ में समस्यायें बढ़ेंगी, नेत्रों में विकार पैदा होगा, मूत्र रोगों की संभावनाएं बढ़ेंगी, कफ एवं धातु विकार में वृद्धि होगी, भाग्य में स्थिरता नहीं बनेगी परंतु सफलताएं मिलती रहेंगी, कार्य क्षेत्र मध्यम रहेगा और लाभ के स्रोत बने रहेंगे। जुलाई 17, 18, 26, 27, 28, अगस्त 5, 6, 13, 14, के दिन अशुभ रहेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुंभ राशि वाले जातकों के लिए इस महीने में शारीरिक दृष्टि से रक्त विकार की संभावनाएं बढ़ेगी उदर विकार होगा, नेत्रों में कष्ट होगा अनावश्यक व्यय होगा, उत्सव एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, बंधु एवं मित्र जनों से सुख की प्राप्ति होगी, मातृ पक्ष से कष्ट होगा एवं माता को भी कष्ट की संभावनाएं बनेंगी, संतान पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, आप योजनाओं में सफलता प्राप्त करेंगे, शत्रु कमजोर पड़ेंगे रोगों से छुटकारा मिलेगा गृहस्थ में कलह बनी रहेगी, भाग्य मध्यम रहेंगा, कार्य क्षेत्र में विशेष लाभ होने की संभावनाएं बनेगी। जुलाई 19, 20, 29, 30, अगस्त 7, 8, 15, 16, के दिन अशुभ रहेंगे।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि वाले जातकों के लिए इस माह में विशेष रूप से सिर में पीड़ा होगी और धन लाभ की प्राप्ति होगी, खर्च विशेष रूप से बढ़ेगा, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि रहेगी, भातृ सुख मध्यम रहेगा, मातृ पक्ष व मित्र जनों से सौहार्द की प्राप्ति होगी, संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, आप जो योजनाएं बना रहे हैं उनमें कुछ में लाभ मिलेगा कुछ में हानि, गृहस्थ सुख माध्यम रहेगा, मानसिक चिंताएं बढ़ेंगी, भाग्य साथ देगा कार्यक्षेत्र में सफलता आपका मार्ग चूमेंगी। जुलाई 21, 22, 23, 31, अगस्त 1, 2, 9, 10, के दिन अशुभ रहेंगे।

भाद्रपद में प्रत्येक राशि वाले जातकों के लिए शुभ एवं अशुभ फल

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ ।

मेष राशि वाले जातकों को यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से मध्यम रहेगा, धन के क्षेत्र में बाधाएं पैदा होंगी, घरेलू समस्यायें बढ़ेगी, उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा ,बंधु एवं मित्रों से सुख मध्यम मिलेगा, मातृ पक्ष से सुख की प्राप्ति में बाधाएं बनी रहेंगी, परंतु संतान पक्ष शुभ रहेगा, आपकी योजनाएं सफल होंगी, नेत्रों में विकार बढ़ेगा, गृहस्थ में समस्यायें का सामना करना पड़ेगा, भाग्य प्रबल रहेगा, धार्मिक कार्यों में मन लगेगा, कार्य क्षेत्र में बाधाएं उत्पन्न होंगी, और मान सम्मान में हानि होगी । अगस्त 20, 21, 22, 30, 31, दिसम्बर 8, 9, अशुभ दिन है।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि वाले जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं रहेगा, धन की प्राप्ति होगी, परंतु हानि भी होगी, मातृ पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, मित्रों से सहयोग मिलेगा, संतान पक्ष से मध्यम लाभ होगा, योजनाएं सफलता चूमेंगी, गृहस्थ सुख में लाभ होगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति होगी, पितृ कष्ट की संभावनाएं बढ़ेंगी। अगस्त 23, 24 सितम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ दिन है।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि वाले जातकों को इस महीने में स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक लाभ होगा परन्तु अत्यधिक क्रोध बढ़ेगा, धन एवं संपत्ति के क्षेत्र में लाभ होगा। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी बंधुजनों से सहयोग प्राप्त होगा, उत्साह एवं पराक्रम बढ़ेगा, मातृ पक्ष में कष्ट होगा, संतान सुख में न्यूनता आएगी। योजनाओं में बाधाएं उत्पन्न होंगी, गृहस्थ सुख में वृद्धि होगी। भाग्य प्रबल बना रहेगा कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी मान एवं सम्मान में विशेष लाभ की प्राप्ति होगी। अगस्त 26, 26, 27, सितम्बर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ दिन है।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि वाले जातकों को इस महीने में स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभ की प्राप्ति होगी। धन के क्षेत्र में वृद्धि होगी परन्तु अनावश्यक बाधाएं भी होंगी, बंधु एवं मित्रों में मध्यम सुख की प्राप्ति होगी, संतान पक्ष से अशुभ सूचना प्राप्त होगी, योजनाएं असफल होंगी, गृहस्थ सुख में वृद्धि होगी, रोग में वृद्धि होगी एवं अपमान में भय बना रहेगा, भाग्य में प्रगति प्रबल होगी किंतु कार्य क्षेत्र में बधाएं उत्पन्न होती रहेंगी। जिसके कारण परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। अगस्त 19, 19, 28, 29, सितम्बर 6, 7, 14, 15, 16 अशुभ दिन है।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि के जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम, लाभ क्षेत्र में प्रभाव बढ़ेगा, परंतु धन में हानि होगी, घर में कलह की वृद्धि होगी, बंधुजनों में मतभेद देखने को मिलेगा, मातृ सुख की प्राप्ति होगी, संतान सुख में न्यूनता आएगी, योजनाओं में संघर्ष के कारण लाभ की प्राप्ति होगी, गृहस्थ की चिंता बनी रहेगी। रोगों एवं दुर्घटनाओं से भय बना रहेगा। भाग्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी, परन्तु कार्य क्षेत्र में बाधाएं उत्पन्न होंगी, नेत्रों में निश्चित रूप से विकार होने की संभावनाएं बनेंगी। अगस्त 20, 21, 22, 30, 31, सितम्बर 8, 9, अशुभ दिन हैं।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि के जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना उत्तम रहेगा, धन हानि के योग बनेंगे, घर में लड़ाई झगड़ा एवं कलह बढ़ेगी, बंधुओं एवं मित्र जनों से सहयोग की प्राप्ति होगी, मातृ सुख व संतान सुख की प्राप्ति होगी, योजनाएं सफल रहेंगी, गृहस्थ की परेशानियां बढ़ेंगी, भाग्य कमजोर होगा कार्य क्षेत्र में वृद्धि की संभावनाएं बनेंगी, महीने के अंत में कष्ट की प्राप्ति होगी। अगस्त 23, 24, सितम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ दिन हैं।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि के जातकों के लिए इस माह में स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष

ध्यान देने की आवश्यकता रहेगी, धन की प्राप्ति होने के उपरान्त धन के व्यय होने की संभावनाएं अत्यधिक बनेंगी, पारिवारिक सुख में मध्यम फल की प्राप्ति होगी, बंधु सुख ठीक रहेगा, उत्साह एवं पराक्रम में अभूतपूर्व वृद्धि होगी, मातृ सुख व संतान सुख में हानि की संभावनाएं बनेंगी। योजनाएं असफल होंगी, बुद्धि एवं विवेक के क्षेत्र में हानि होगी, मातृ सुख में लाभ होगा, भाग्य भवन के अनुसार भाग्य प्रबल रहेगा, कार्य क्षेत्र ठीक रहेंगा, लेकिन संघर्ष बना रहेगा, आय के स्रोत अच्छे बनेंगे । अगस्त 25, 26, 27, सितम्बर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ दिन हैं।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना ठीक नहीं रहेगा, अर्थात् इस महीने में कष्ट की संभावनाएं ज्यादा बढ़ेंगी, रक्त एवं पित्त विकार भी होगा। धन एवं संपत्ति के क्षेत्र में लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी, उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा। बंधु एवं मित्र जनों से सहयोग की प्राप्ति होगी । माता को कष्ट होगा संतान पक्ष एवं संतान सुख की प्राप्ति होगी। चिन्ताएं लगातार बनी रहेगी, योजनाओं का फल मध्यम रहेगा। गृहस्थ चिंता से चिंतित रहेंगे, रोगों का भय बना रहेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में उत्तरोत्तर लाभ की संभावनाएं बनेंगी, मान एवं सम्मान की दृष्टि से सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी । अगस्त 18, 19, 28, 29, सितम्बर 6, 7, 14, 15, 16 अशुभ दिन हैं।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि वाले जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यधिक समस्यायें वाला रहेगा, लेकिन उपचार के उपरांत लाभ मिलेगा, धन लाभ की प्राप्ति होगी, बन्धुओं से विवाद होने की संभावनाएं बढ़ेंगी, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। मातृ सुख मध्यम मिलने वाला है सन्तान सुख सामान्य रहेगा, योजनाएं सफलता चूमेंगी, गृहस्थ में समस्यायें का सामना करना पड़ेगा। भाग्य में वृद्धि होगी। धार्मिक क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी परन्तु कार्य क्षेत्र में बाधाएं उत्पन्न होंगी। अगस्त 20, 21, 22, 30, 31, सितम्बर 8, 9, अशुभ दिन हैं।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि वाले जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहेगा, उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा। धन लाभ की प्राप्ति होगी परन्तु हानि भी होगी, पारिवारिक कलह बढ़ेगी, बन्धुओं से सुख की प्राप्ति होगी। मातृ कष्ट होगा, संतान पक्ष से चिंताएं लगातार बनी रहेंगी, योजनाऐं असफल रहेंगी, शत्रु पक्ष कमजोर पड़ेगा, रोग ठीक होंगे, गृहस्थ सुख की प्राप्ति होगी, भाग्य मध्यम रहेगा, कार्य क्षेत्र में बधाएं, मान एवं सम्मान में और सामाजिक प्रतिष्ठा में हानि होगी। अगस्त 23, 24, सितम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ दिन हैं।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुंभ राशि वाले जातकों के लिए इस महीने में स्वास्थ्य खराब रहने की संभावनाएं बनेंगी, सिर एवं नेत्रों में विकार पैदा होगा, धन लाभ की प्राप्ति होगी, परन्तु अत्यधिक व्यय होगा, पारिवारिक कलह एवं तनाव बना रहेगा, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, बंधु सुख की प्राप्ति होगी, मातृ पक्ष एवं माता को पीड़ा होगी, संतान पक्ष से चिंताएं बनी रहेंगी, योजनाओं में सफलता नहीं प्राप्त कर सकेंगे, गृहस्थ सामान्य रहेगा, परंतु चिंताएं बनी रहेंगी, नेत्रों में विकार होगा। मूत्र आदि रोगों में वृद्धि होगी, भाग्य निर्बल पड़ा रहेगा, कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी, परंतु दुर्घटनाओं से भय लगातार बना रहेगा। अगस्त 25, 26, 27, सितम्बर 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ दिन हैं।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि वाले जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यधिक परेशानियों वाला रहेगा, परस्पर कलह एवं क्रोध बढ़ेगा, पारिवारिक सुख में मध्यम फल मिलेगा, धनागम के बाद हानि होने की संभावनाएं बढ़ेंगी, बन्धुओं में परस्पर विरोध, अपमान का भय तथा मातृ सुख मध्यम फल देने वाला रहेगा, संतान पक्ष से शुभ सूचनाएं प्राप्त होंगी, योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। शत्रु कमजोर पड़ेंगे रोग ठीक होंगे परंतु स्वास्थ्य की दृष्टि से सतर्क रहें। गृहस्थ में कष्ट की संभावनाएं बढ़ेंगी, भाग्य मध्यम रहेगा, कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी, सामाजिक प्रतिष्ठा में अपमान का भय अनवरत बना रहेगा। अगस्त 18, 19, 28, 29, सितम्बर 6, 7, 14, 15 अशुभ दिन हैं।

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभ एवं अशुभ फल

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

मेष राशि के जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से मध्यम रहने वाला है, धन एवं संपत्ति में लाभ होगा और इसी के साथ ही अनावश्यक व्यय भी होगा, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, परिवार सुख शांति बनी रहेगी, बंधु जनों से सहयोग प्राप्त होगा परंतु मित्रों से किसी प्रकार की इच्छा ना रखें, सुख में प्रगति होगी परन्तु संतान पक्ष से चिंता मिलेगी, योजनाएं भी असफल होंगी, गृहस्थ सुख में लाभ होगा अकस्मात् रोग का भय होगा, भाग्य साथ देगा सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी धार्मिक कार्यों में मन लगेगा परंतु कार्य क्षेत्र में बाधायें उत्पन्न होती रहेंगी। सितम्बर 17, 18, 26, 27, 28, अक्टूबर 5, 6, 14, 15 अशुभ दिन हैं।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि के जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा, धन की प्राप्ति के उपरान्त धन का व्यय होगा, पारिवारिक विवाद बढ़ेंगे, बंधु जनों में मत मतान्तर रहेगा, मातृ सुख में लाभ होगा, संतान पक्ष से शुभ समाचार मिलेंगे, योजनाएं सफलता प्राप्त करेंगी, गृहस्थ की चिंताएं लगातार बनी रहेंगी, भाग्य एवं धर्म तथा कार्य क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति होगी कर्म क्षेत्र में और पिता के संबंधों में मत मतान्तर पैदा होंगे। सितम्बर 19, 20, 21, 29, 30, अक्टूबर 7, 8, 16, अशुभ दिन हैं।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि वाले जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा परन्तु मानसिक तनाव में वृद्धि होगी, धन लाभ हो करके हानि होगी, पारिवारिक सुख समृद्धि में भी न्यूनता बढ़ेंगी परन्तु उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी बन्धु एवं मित्रजनों से सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे, आपकी योजनाएं सफलता का मार्ग चूमेंगी, गृहस्थ अच्छा रहेगा परन्तु मध्य में तनाव की स्थिति भी बनी रहेगी, धर्म भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में विशेष लाभ होगा, सामाजिक प्रतिष्ठा में सम्मान बढ़ेगा धार्मिक कार्यों में भी प्रवृत्ति बढ़ेगी। सितम्बर 20, 23 अक्टूबर 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ दिन हैं।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि वाले जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल नहीं रहेगा धन का अनावश्यक व्यय होगा, परिवार में मतमतांतर बढ़ेंगे पराक्रम में तथा उत्साह में वृद्धि होगी, भाई के द्वारा, माता के द्वारा, मित्रों के द्वारा, विशेष लाभ की प्राप्ति होगी, धार्मिक यात्राओं का योग बनेगा परंतु संतान पक्ष से चिंताएं बनी रहेंगी, आपकी योजनाएं कहीं ना कहीं बाधित होंगी, शत्रु एवं रोग का नाश होगा, गृहस्थ सुख में अच्छे संकेत मिलेंगे परंतु अचानक रोग मान एवं सम्मान में भय उत्पन्न होगा भाग्य प्रबल रहेगा परंतु बनते हुए कार्यों में अकस्मात् विघ्न पैदा होगा, धार्मिक कार्यों में रुचि बनी रहेगी। सितम्बर 17, 18, 26, 27, 28, अक्टूबर 5, 6, 14, 15 अशुभ दिन हैं।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना वात विकार उदर रोग को देने वाला होगा, धन के क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी, पारिवारिक सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, बन्धु जनों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा, माता को कष्ट होगा, मित्रों से सहयोग प्राप्त नहीं होगा, संतान पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी, गृहस्थ में कलह बनी रहेगी, अचानक रोग बढ़ेंगे, सामाजिक प्रतिष्ठा में अपमान का भय व्याप्त रहेगा, भाग्य में लाभ होगा, कार्य क्षेत्र में विशेष प्रगति एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सितम्बर 17, 18, 26, 27, 28, अक्टूबर 5, 6, 14, 15 अशुभ दिन हैं।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि के जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा, धन के क्षेत्र में परिवार के क्षेत्र में सुख शांति समृद्धि बनी रहेगी, मातृ सुख मित्रजन बन्धुवर से सहयोग प्राप्त होगा, संतान पक्ष से सुख मिलेगा योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ में समस्यायें का सामना होगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में अकस्मात् विशेष लाभ की प्राप्ति होगी और कहीं ना कहीं स्थान परिवर्तन के योग भी बनेंगे। सितम्बर 19, 20, 21, 29, 30, अक्टूबर 7, 8, 16, अशुभ दिन हैं।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि के जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा धन की प्राप्ति होने के उपरांत अनावश्यक व्यय होने की स्थिति बनेगी बंधु जनों एवं मित्रों से मिलन होगा आपके उत्साह में और पराक्रम में वृद्धि होगी, मातृ सुख एवं संतान सुख में न्यूनता रहेगी, योजनाओं में बाधाएँ पैदा हो सकती हैं परंतु गृहस्थ सुख ठीक रहेगा, भाग्य में उतार चढ़ाव देखने को मिलेंगे, कार्य क्षेत्र में परिवर्तन की संभावनाएं बनेंगी। सितम्बर 22, 23, अक्टूबर 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ दिन हैं।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि वाले जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं रहेगा, अच्छा होगा मानसिक तनाव को दूर करने के लिए चन्द्रमा और इसके साथ-साथ रक्त विकार के लिए मंगल ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करें, धन एवं सम्पत्ति में अकस्मात् लाभ की संभावनाएं बनेंगी, पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी, बंधु एवं मित्रों द्वारा सुख की प्राप्ति होगी, उत्साह एवं पराक्रम बढ़ेंगे, मातृ कष्ट होगा, संतान पक्ष से समृद्धि मिलेगी, योजनाओं के फल में अवरोध पैदा होगा गृहस्थ सुख में वृद्धि होगी, रक्त एवं पित्त विकार में वृद्धि होगी, अकस्मात् दुर्घटना का भय बना रहेगा, धार्मिक कार्यों में रुचि होने के कारण भाग्य ठीक रहेगा और कर्म क्षेत्र में लाभ की संभावनाएं बनेंगी। सितम्बर 24, 25, अक्टूबर 3, 4, 12, 13 अशुभ दिन हैं।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि के जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह उत्तम रहेगा, धन के क्षेत्र में वृद्धि होगी, पारिवारिक सुख एवं समृद्धि में वृद्धि होगी, बंधु जनों से विरोध का सामना करना पड़ेगा, मातृ कष्ट होगा, संतान पक्ष से बहुत अधिक सहयोग प्राप्त नहीं होगा, योजनाएं भी सामान्य फल को देने वाली होंगी, गृहस्थ में लड़ाई झगड़ा रहेगा परंतु भाग्य प्रबल रहने से कार्य क्षेत्र में प्रगति एवं मान और सम्मान में वृद्धि होगी, अकस्मात् रोगों से भय रहेगा। सितम्बर 17, 18, 26, 27, 28, अक्टूबर 5, 6, 14, 15 अशुभ दिन हैं।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि वाले जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा, धन की प्राप्ति होगी और इसी के साथ व्यय होगा, पारिवारिक सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, बन्धु सुख तथा मित्रों से सहयोग की प्राप्ति नहीं होगी, परन्तु गृहस्थ में सफलताएं मिलेंगी, अकस्मात् रोगों की भी उत्पत्ति होगी, भाग्य प्रबल रहेगा, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, कर्म क्षेत्र में कार्य के प्रति उत्साह क्षेत्र में रहेगा और सामाजिक क्षेत्र में सम्मान भी प्राप्त होगा। सितम्बर 19, 20, 21, 29, 30, अक्टूबर 7, 8, 16 अशुभ दिन हैं।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुम्भ राशि वाले जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से उदर विकार नेत्र पीड़ा को देने वाला रहेगा, अनावश्यक खर्च बढ़ेगा, धन के क्षेत्र में वृद्धि होगी और अकस्मात् व्यय भी होगा, उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा, मातृ सुख की प्राप्ति होगी, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा परंतु संतान पक्ष से चिंता बनी रहेगी, आपकी योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, मान एवं सम्मान के क्षेत्र में हानि होगी, रोगों का भय बना रहेगा, भाग्य कुछ ठीक रहेगा, कर्म क्षेत्र में अचानक मन नहीं लगेगा जिससे कार्य में हानि होने की संभावनाएं बनेगी। सितम्बर 22, 23, अक्टूबर 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ दिन हैं।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि के जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम है, अचानक नेत्र एवं सिर में रोग बढ़ेंगे, धन के क्षेत्र में मध्यम लाभ होगा, पारिवारिक सुख भी माध्यम मिलेगा, बन्धु जन एवं मित्र जनों से सहयोग प्राप्त होगा, मातृ सुख मध्यम रहेगा, संतान सुख ठीक-ठाक प्राप्त होगा, अकस्मात् चिन्ताएं बढ़ेंगी, गृहस्थ में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, भाग्य कमजोर परन्तु धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, कार्य क्षेत्र में लाभ के साथ-साथ सामाजिक मान सम्मान में प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सितम्बर 24, 25, अक्टूबर 3, 4, 12, 13 अशुभ दिन हैं।

कार्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभ एवं अशुभ फल

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

मेष राशि के जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं रहेगा, मानसिक अशांति बनी रहेगी, धन लाभ में वृद्धि होगी, पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा, बंधु सुख सामान्य रहेगा, मित्रों से सहयोग की प्राप्ति नहीं होगी, सामाजिक प्रतिष्ठा में भय बना रहेगा, संतान पक्ष से चिंता प्राप्त होगी, योजनाएं सफल नहीं होगी, गृहस्थ में समस्यायें का सामना करना पड़ेगा, भाग्य ठीक नहीं रहेगा, परन्तु कार्यक्षेत्र में भी बाधाएँ उत्पन्न होती रहेंगी। अक्टूबर 24, 25 नवम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ दिन हैं।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि के जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह मध्यम रहेगा, धन के क्षेत्र में आय के स्रोत मध्यम बनेंगे, बन्धुओं से विरोध रहेगा, मित्रों से सहयोग की प्राप्ति नहीं होगी, मातृ कष्ट बढ़ेगा, सन्तान पक्ष से सामान्य सुख की प्राप्ति होगी, योजनाएं मध्यम फल देने वाली होंगी, गृहस्थ में लड़ाई झगड़ा बढ़ेगा, अकस्मात् रोगों का आगमन होगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में परिवर्तन के योग बनेंगे, पितृ कष्ट भी होगा और कार्य क्षेत्र में बाधाएं भी उत्पन्न होगी। अक्टूबर 17, 18, 26, 27, नवम्बर 3, 4, 13, 14 अशुभ दिन हैं।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि के जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह मध्यम फल को देने वाला होगा, धन लाभ के क्षेत्र में धन की प्राप्ति होते-होते रह जाएगी, उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा, भाई पक्ष से चिंताएं मिलेंगी, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा, संतान पक्ष से भी चिंताएं बनी रहेंगी, स्त्री सुख ठीक रहेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में अकस्मात् लाभ की प्राप्ति होगी। अक्टूबर 19, 20, 28, 29, नवम्बर 5, 6, 7, 15 अशुभ दिन हैं।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि के जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह चिन्ताओं को देने वाला रहेगा, रक्त पित्त विकार जैसी समस्याएं आएंगी, धन के क्षेत्र में अनावश्यक व्यय होगा, घरेलू लड़ाई झगड़ा बढ़ेगा, बन्धुओं से मध्यम सुख की प्राप्ति होगी, मातृ सुख में भी माध्यम फल की प्राप्ति होगी, संतान पक्ष से अच्छे संकेत नहीं मिलेंगे, योजनाओं में बाधा उत्पन्न होगी, गृहस्थ सुख सामान्य रहेगा, परन्तु मत-मतान्तर होते रहेंगे भाग्य में बाधाएँ आती रहेंगी, कार्य क्षेत्र में अकस्मात् हानि के योग बनेंगे। अक्टूबर 21, 22, 23, 30, 31, नवम्बर 8, 9 अशुभ दिन हैं।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि के जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम नहीं रहेगा, उदर विकार पैदा होगा और नेत्रों में कष्ट होगा, धन लाभ के क्षेत्र में मध्यम फल की प्राप्ति होगी, पारिवारिक सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, बन्धुओं से विरोध होगा, मित्रों से सहयोग की प्राप्ति नहीं होगी, मातृ सुख मध्यम रहेगा, संतान पक्ष से चिंताएं बनी रहेगी, योजनाएं मध्यम फल को देने वाली होंगी अंततोगत्वा सफलता प्राप्त होगी, गृहस्थ में समस्यायें का सामना करना पड़ेगा, गुप्त रोगों का भय बना रहेगा, भाग्य में बाधाएँ उत्पन्न होती रहेगी धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, कार्यक्षेत्र मध्यम रहेगा, पिता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। अक्टूबर 24, 25 नवम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ दिन हैं।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि के जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहने वाला है, नेत्रों में कष्ट होगा और वाणी में भी दोष आएगा, धन के क्षेत्र में अच्छा योग नहीं है, घरेलू लड़ाई झगड़ों से भय के प्रति चिंता रहेगी और उत्साह एवं पराक्रम में भी हानि होगी, मातृ सुख उत्तम रहेगा, मित्रों से तालमेल बना रहेगा, संतान सुख कुछ ठीक रहेंगा, चिन्ताएं बनी रहेगी, गृहस्थ में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, भाग्य एवं कर्म क्षेत्र में सामान्य रहेगा, मास के अंत में हानि होगी। अक्टूबर 17, 18, 26, 27, नवम्बर 3, 4, 13, 14 अशुभ दिन हैं।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि के जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा, अकस्मात् बल एवं तेज में हानि संभव होगी, धन के क्षेत्र में अकस्मात् हानि होने की

संभावनाएं बढ़ेंगी, घरेलू लड़ाई झगड़ा बढ़ेगा, बन्धुओं से सुख की प्राप्ति होंगी, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि बनी रहेगी, मातृ सुख मध्यम रहेगा, संतान पक्ष से अशुभ सूचनाएँ प्राप्त होंगी, योजनाएं सफल नहीं हो पाएंगी, गृहस्थ में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, भाग्य क्षेत्र में मध्यम फल रहेंगे, कार्य क्षेत्र के उपरान्त विशेष लाभ की प्राप्ति होगी। अक्टूबर 19, 20, 28, 29, नवम्बर 5, 6, 7, 15 अशुभ दिन हैं।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि वालों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक नहीं रहेगा, धन लाभ की प्राप्ति होगी, पारिवारिक सुख समृद्धि बनी रहेगी, बन्धु एवं मित्रजनों से सहयोग प्राप्त होगा, मातृ कष्ट होगा, सन्तान के से चिन्ताएँ बनी रहेंगी लेकिन परस्पर अनुकूलता भी रहेगी गृहस्थ सुख में मध्यम फल प्राप्त होगा, भाग्य ठीक रहेगा, कार्यक्षेत्र में संघर्ष होगा, माह के अंत में विशेष व्यय अनावश्यक रूप से होगा। अक्टूबर 1, 21, 22, 23, 30, 31, नवम्बर 8, 9 अशुभ दिन हैं।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहेगा, अचानक लाभ की संभावनाएं बनेंगी, सज्जनों के साथ सम्बन्ध बनाएँ रखें, धन लाभ के योग बनेंगे, पारिवारिक सुख समृद्धि ठीक रहेंगी, बन्धुओं से विरोध की संभावनाएं बढ़ेंगी, मातृ कष्ट होगा, संतान पक्ष से अशुभ समाचार प्राप्त होंगे, योजनाओं में बाधाएँ उत्पन्न होंगी, गृहस्थ सुख मध्यम रहेगा, अकस्मात् रोगों का भय बना रहेगा, भाग्य में संघर्ष रहेगा और कार्य क्षेत्र मध्यम रहेगा। अक्टूबर 24, 25 नवम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ दिन हैं।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि के जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह ठीक रहेगा, अचानक धन हानि के योग बनेंगे, पारिवारिक लड़ाई झगड़ों से बचें, बन्धु सुख ठीक रहेगा, मित्रों से सहयोग की प्राप्ति नहीं होगी, संतान सुख भी मध्यम रहेगा, योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ में लड़ाई झगड़ा बढ़ेगा, और अचानक गुप्त रोगों का भय भी बना रहेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में परिवर्तन के योग संभव हैं और इसके साथ-साथ उन्नति भी होगी। अक्टूबर 17, 19, 26, 27, नवम्बर 3, 4, 13, 14 अशुभ दिन हैं।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुंभ राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं रहेगा, वात-विकार बढ़ेंगे, धन लाभ होकर हानि होगी, भाई पक्ष से चिन्ताएं मिलेंगी, पराक्रम में और उत्साह में हानि होगी, मातृ सुख मध्यम रहेगा, संतान सुख की प्राप्ति होगी, योजनाएं सामान्य रूप से सफल होती रहेंगी, धन की वृद्धि होगी, पारिवारिक मत-मतान्तर बढ़ेंगे, भाग्य में बाधाएं आयेंगे कार्यक्षेत्र में अकस्मात् धन हानि होने की संभावनाएं बनेंगी। अक्टूबर 19, 20, 28, 29, नवम्बर 5, 6, 7, 15 अशुभ दिन हैं।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि वाले जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से अति उत्तम रहने वाला है, धन लाभ कम होगा, बन्धुओं से मध्यम सुख की प्राप्ति होगी, परन्तु मित्रजनों से सहयोग प्राप्त होगा, सन्तान पक्ष से चिंता बनी रहेगी, गृहस्थ में परेशानियां बढ़ेंगी अचानक दुर्घटना का योग बनेगा, सावधान रहें भाग्य में बनते कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होगी, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, और कार्य क्षेत्र में लाभ की संभावनाएं भी बनेंगी। अक्टूबर 21, 22, 23, 30, 31, नवम्बर 8, 9, अशुभ दिन हैं।

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभ एवं अशुभ फल

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

मेष राशि के जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह ठीक रहेगा, धन प्राप्ति के क्षेत्र में बाधाएँ उत्पन्न होंगी, बन्धु सुख ठीक रहेगा, घरेलू लड़ाई झगड़े बढ़ेंगे मातृ सुख ठीक रहेगा, मित्रों की सहायता प्राप्त होगी, संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, योजनाओं में संघर्ष होगा, गृहस्थ में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, भाग्य प्रबल रहेगा परन्तु कार्यक्षेत्र में हानि के योग बनेंगे। नवम्बर 20, 21, 28, 29, 30, दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ दिन हैं।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह महीना अत्यंत खराब रहेगा, धन की प्राप्ति के क्षेत्र में अस्थिरता बनी रहेगी, परिवार में सुख समृद्धि बनी रहेगी, बन्धु सुख मध्यम रहेगा, सन्तान पक्ष ठीक रहेगा, योजनाएं मध्यम फल को देने वाली होंगी गृहस्थ सुख ठीक रहेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में तरक्की होगी, पिता को कष्ट होगा, इसलिए थोड़ा ध्यान देने की आवश्यकता रहेगी। नवम्बर 22, 23, दिसम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ दिन हैं।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह उत्तम रहेगा, धन लाभ होगा, घरेलू लोगों से लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, हिम्मत उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा, बन्धु सुख ठीक रहेगा, मातृ सुख मध्यम रहेगा, शत्रु भयभीत रहेंगे, पति सुख ठीक रहेगा, सज्जन लोगों से मेल जोड़ बढ़ेगा, भाग्य का क्षेत्र प्रबल रहेगा और आपके कार्य क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति होगी। नवम्बर 16, 17, 24, 25, दिसम्बर 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ दिन हैं।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि के जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा, धन लाभ होगा, पारिवारिक जनों में मतभेद पैदा होगा, बन्धुओं में विरोध पैदा होगा, संतान पक्ष ठीक रहेगा, योजनाएं सफलता चूमेंगी, गृहस्थ का सुख ठीक रहेगा, भाग्य एवं बनते हुए कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होंगी, कार्य क्षेत्र ठीक रहेगा। नवम्बर 18, 19, 26, 27, दिसम्बर 5, 6, 15 अशुभ दिन हैं।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि में उत्पन्न जातकों के लिए यह महीना स्वास्थ्य की दृष्टि से मध्यम रहेगा, उच्च रक्तचाप एवं रक्त विकार की संभावनाएं अत्यधिक बढ़ेंगी, धन के क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी, परन्तु लाभ के साथ-साथ हानि का भी योग बनेगा, बन्धु सुख में कमी आएगी, आपके उत्साह एवं पराक्रम में हानि होगी, मातृ सुख ठीक रहेगा, सज्जनों से मेलजोल बढ़ेगा, स्त्री सुख एवं पति सुख में समस्यायें का सामना करना पड़ेगा, अचानक रोग एवं दुर्घटना से भय बना रहेगा, भाग्य के क्षेत्र में संघर्ष से लाभ होगा, कार्यक्षेत्र मध्यम रहेगा। नवम्बर 20, 21, 28, 29, 30, दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ दिन हैं।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि में उत्पन्न जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक रहेगा किंतु स्वास्थ्य के प्रति चिंता बनी रहेगी, अपने मन के अनुकूल धन का लाभ नहीं होगा, आपके पराक्रम और उत्साह की हानि होगी, बन्धु सुख की कमी होगी, मातृ पीड़ा होगी, अपने स्वजनों से मत मतान्तर बढ़ेंगे, संतान पक्ष मध्यम रहेगा, योजना सामान्य बनी रहेगी, गृहस्थ में चिंताएं और ज्यादा बढ़ेगी, भाग्य में बाधाएँ आयेंगी कार्य क्षेत्र में परिवर्तन के योग निश्चित रूप से बनेंगे। नवम्बर 22, 23, दिसम्बर 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ दिन हैं।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि तुला राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास खराब रहेगा, धन एवं संपत्ति लाभ के योग बनेंगे, पारिवारिक सुख समृद्धि ठीक रहेगी, आपके उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, मातृ एवं संतान सुख में कमी आएगी, स्त्री सुख एवं पति सुख ठीक रहेगा, भाग्य में बाधाएँ रहेंगी, कार्य क्षेत्र में उन्नति के योग बनेंगे। नवम्बर 16, 17, 24, 25, दिसम्बर 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ दिन हैं।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहेगा, आप का बल एवं वर्चस्व बना रहेगा, धन लाभ एवं संपत्ति के क्षेत्र में विशेष लाभ की प्राप्ति होगी, पारिवारिक सुख समृद्धि ठीक रहेगी, बन्धु एवं मित्र जनों से सहयोग प्राप्त होगा, मातृ कष्ट होगा, संतान पक्ष से चिंता रहेगी योजनाएं मध्यम फल को देने वाली होंगी, शत्रु कमजोर पड़ेंगे, गृहस्थ में मत-मतान्तर बना रहेगा, भाग्य क्षेत्र उज्जवल होगा, कार्य क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति होगी। नवम्बर 18, 19, 26, 27, दिसम्बर 5, 6, 15 अशुभ दिन हैं।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास बहुत ठीक रहेगा, स्वास्थ्य ठीक रहेगा, लाभ की प्राप्ति होगी, पारिवारिक समृद्धि बनी रहेगी, बन्धुओं का विरोध भी मिलेगा, मातृ कष्ट भी होगा, संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे, योजनाएं सफलता चुमेगी, स्त्री सुख एवं पति सुख ठीक रहेगा, भाग्य प्रबल रहेगा किंतु अस्थिरता बनी रहेगी, कार्य क्षेत्र में लाभ परंतु संघर्ष भी अनवरत बना रहेगा। नवम्बर 20, 21, 28, 29, 30, दिसम्बर 7, 8, 9 अशुभ दिन हैं।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि वाले जातकों के लिए यह मास मध्यम रहेगा, धन लाभ होकर के हानि होगी, पारिवारिक कलह लड़ाई झगड़ा बढ़ेगा, बन्धु एवं मित्र जनों से विरोध का सामना करना पड़ेगा, मातृ कष्ट होगा संतान पक्ष से चिन्ताएं बढ़ेगी, योजनाएं भी असफल होंगी, गृहस्थ के सुख में वृद्धि होगी, अचानक रोग का भय होगा, रक्त वात-विकार बढ़ेगा, भाग्य में बाधाएँ रहेंगी, कार्य क्षेत्र में संघर्ष अनावरत बना रहेगा। नवम्बर 22, 23, दिसम्बर 1, 2, 10, 11 अशुभ दिन हैं।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुम्भ राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास बहुत खराब रहेगा, उदर विकार एवं वात-विकार होगा, नेत्रों में कष्ट होगा, वाणी में विकार होगा, अनावश्यक खर्च बढ़ेगा, पारिवारिक मतभेद बढ़ेंगे, पराक्रम में वृद्धि होगी, मातृ कष्ट होगा, मित्रों से सहायता नहीं मिलेगी, संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे, योजनाएं सफलता चुमेंगी, गृहस्थ की समस्यायें बढ़ेंगी, भाग्य कमजोर होगा, किंतु लाभ के अवसर लगातार बने रहेंगे, कार्य क्षेत्र में विशेष लाभ होगा और प्रभाव क्षेत्र भी आपका बढ़ेगा। नवम्बर 16, 17, 24, 25, दिसम्बर 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ दिन हैं।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास खराब रहेगा, शनि ग्रह की शान्ति के लिए काली वस्तुओं या काला वस्त्र इत्यादि का दान करें, मंगल के लिए लाल वस्तुएं और लाल द्रव्य धान्य का दान करें, धन लाभ में अस्थिरता बनी रहेगी, पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा, उत्साह एवं पराक्रम में हानि होगी, बान्धवों द्वारा विरोध होगा, मातृ सुख ठीक रहेगा, मित्रों से सहायता प्राप्त होगी, संतान पक्ष ठीक रहेगा, योजनाएं भी सफलता चूमेंगी, शत्रु कमजोर पड़ेंगे, रोग की समाप्ति होगी, गृहस्थ की चिंता बनी रहेगी, भाग्य प्रबल रहेगा, कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी और मास के अंत में हानि योग होने की संभावना है और यात्राओं से भी कष्ट का भय होगा। नवम्बर 18, 19, 26, 27, दिसम्बर 5, 6, 15 अशुभ दिन हैं।

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभ एवं अशुभ फल।

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

मेष राशि के जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक रहेगा आपका व्यक्तित्व बढ़ेगा, और धन के क्षेत्र में वृद्धि होगी, पारिवारिक सुख संपत्ति ठीक रहेगी, बन्धु जनों का विरोध झेलना पड़ेगा, मातृ सुख मध्यम रहेगा, संतान पक्ष से शुभ संकेत प्राप्त होंगे, योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी, गृहस्थ सुख का लाभ मिलेगा, भाग्य प्रबल होगा, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, पिता को कष्ट भय होने की संभावना बनी रहेगी, कार्य क्षेत्र में हानि के योग बनेंगे। दिसम्बर 17, 18, 19, 26, 27, जनवरी 4, 5 अशुभ दिन हैं।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

वृष राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से मध्यम रहेगा, धन लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा, बन्धु सुख मिलेगा, उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा, संतान पक्ष से शुभ सूचनाऐं प्राप्त होंगी, योजनाएं आपने जो निर्धारित की है उनका माध्यम फल मिलेगा, परन्तु अचानक गृहस्थ सुख में लाभ मिलेगा, अचानक रोग भय से पीड़ित रहेंगे, भाग्य एवं कार्य के क्षेत्र में लाभ प्राप्त होगा। दिसम्बर 20, 21, 28, 29, जनवरी 6, 7, 8 अशुभ दिन है।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि के जातकों के लिए यह माह स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है, धन की प्राप्ति होने के बाद अनावश्यक व्यय होगा, घर परिवार में लड़ाई झगड़ा, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, मातृ कष्ट होगा, मित्रों से सहायता प्राप्त नहीं होगी, संतान पक्ष से शुभ सूचनाएं मिलेगी, आपकी योजनाएं सफलता चुमेंगी, स्त्री कष्ट, पति कष्ट निश्चित रूप से होगा, अकस्मात् रोग भय की संभावना बनेगी, भाग्य क्षेत्र शुभ रहेगा, धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति बढ़ेगी, कार्य क्षेत्र में परिवर्तन की संभावनाएं बनेगी। दिसम्बर 22, 23, 30, 31, जनवरी 9, 10 अशुभ दिन है।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक नहीं रहेगा, इसलिए चंद्रमा की प्रसन्नता के लिए और केतु ग्रह को शांत करने के लिए दान करें, धन के क्षेत्र में स्थिरता प्राप्त होगी, बन्धु व मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा, मातृ सुख ठीक रहेगा, भूमि भवन में लाभ होगा, संतान पक्ष से शुभ सूचनाएं प्राप्त होंगी, योजनाएं आपकी सफल होंगी, शत्रु कमजोर पड़ेंगे, रोगों से मुक्ति मिलेगी, स्त्री कष्ट एवं पति कष्ट होगा, कफ एवं धातु विकार के कारण स्वास्थ्य में कष्ट होगा, शारीरिक कष्ट होगा, भाग्य में अस्थिरता बनी रहेगी, कार्य क्षेत्र में उन्नति के योग बन रहे हैं, भाग्य के क्षेत्र में विशेष वृद्धि होगी। दिसम्बर 16, 24, 25, जनवरी 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ दिन है।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक रहेगा, परन्तु क्रोध बना रहेगा, धन लाभ की प्राप्ति होगी, परिवार का सहयोग प्राप्त होगा, बन्धु व मित्रों से सहायता मिलेगी, मातृ सुख रहेगा, संतति पक्ष से भी शुभ सूचनाएं प्राप्त होंगी, योजनाएं आपकी सफलता चूमेंगी, गृहस्थ सुख में अकस्मात् चिंता का कारण बनेगा और अकस्मात् रोगों का भय, चोट का भय भाग्य क्षेत्र में प्रगति निरंतर बनी रहेगी, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। दिसम्बर 17, 18, 19, 26, 27, जनवरी 4, 5 अशुभ दिन है।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक रहेगा, धन एवं आय के साधन बढ़ेंगे, पारिवारिक सुख संपत्ति ठीक रहेगी, बन्धु सुख में कमी आएगी, मातृ सुख मध्यम रहेगा, धन संपत्ति भूमि भवन से लाभ होगा, संतान पक्ष से चिंताएं मिलेंगी, योजनाओं में बाधाएँ आयेंगी, गृहस्थ में परेशानी बढ़ेगी, रोग आदि पर खर्च बढ़ेंगा, भाग्य में समस्यायें बनी रहेंगी, धार्मिक कार्यों में रुचि बनी रहेगी, कार्य क्षेत्र मध्यम रहेगा, मास के अंत में लाभ होने की संभावना बनेगी। दिसम्बर 20, 21, 28, 29, जनवरी 6, 7, 8 अशुभ दिन है।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहेगा, धन लाभ होगा, परिवार में सौहार्द एवं प्रेम प्यार का वातावरण बनेगा, बंधुओ से सुख की प्राप्ति होगी, पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी, मातृ कष्ट होगा, मित्र जनों से सहायता नहीं मिलेगी, संतति पक्ष से भी चिंताएं बनी रहेंगी, योजनाओं में बाधाएँ उत्पन्न होगी, गृहस्थ सुख ठीक रहेगा, भाग्य मध्यम रहेगा, कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होने की संभावनाएं बनेगी। दिसम्बर 22, 23, 30, 31, जनवरी 7, 9, 10 अशुभ दिन है।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहेगा, धन के क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी, पारिवारिक संपत्ति में वृद्धि होगी, भातृ पक्ष से चिन्ताएँ मिलेंगी, मातृ सुख ठीक रहेगा, अपने स्वजनों से लाभ की प्राप्ति होगी, गृहस्थ सुख मध्यम रहेगा, भाग्य शुभ रहेगा, कार्य क्षेत्र में विशेष लाभ की प्राप्ति होगी। दिसम्बर 16, 24, 25, जनवरी 1, 2, 3, 10, 11, 12, 13 अशुभ दिन है।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक रहेगा, मानसिक बल में वृद्धि होगी, व्यर्थ के खर्च होंगे, परिवार में मतभेद पैदा होंगे, बन्धु सुख मध्यम रहेगा, मातृ सुख ठीक रहेगा, संतान पक्ष से शुभ सूचनाएं प्राप्त होंगी, योजनाओं

में सफलता मिलेगी, गृहस्थ की चिंता बढ़ेगी, अचानक कष्ट होगा परन्तु भाग्य अनुकूल रहेगा, कार्य क्षेत्र में बाधाएँ उत्पन्न होंगी, मास के अंत में लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी। दिसम्बर 17, 18, 19, 26, 27, जनवरी 4, 5 अशुभ दिन है।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक नहीं रहेगा, वात एवं पित्त विकारों में वृद्धि होगी, धन लाभ के क्षेत्र में लाभ होगा, पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा, बन्धु व मित्रों से मत-मतान्तर बढ़ेंगे, संतति पक्ष शुभ सूचनाएं देंगे, योजना के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, गृहस्थ सुख में परेशानी उत्पन्न होगी, रक्त-पित्त विकार भाग्य एवं कार्य क्षेत्र शुभ रहेगा। दिसम्बर 20, 22, 24, 26, जनवरी 5, 7, 9 अशुभ दिन है।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुंभ राशि के जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से चिंता का कारण बनेगा, अनावश्यक खर्च होंगे, परिवार में मतभेद पैदा होंगे, बन्धु सुख मिलेगा, मातृ सुख की प्राप्ति होगी, मित्र जनों से सहयोग और संतान पक्ष शुभ रहेगा, शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे, गृहस्थ ठीक रहेगा, भाग्य व कार्य क्षेत्र में प्रगति बनेगी, और धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी । दिसम्बर 16, 17, 25, 29, जनवरी 1, 3, 5, 7, 9, 11 अशुभ दिन है।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि वाले जातकों के लिए इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा, शनि एवं मंगल ग्रह का दान करें, धन की प्राप्ति में स्थिरता बनेगी, पारिवारिक सुख बन्धु सुख मध्यम रहेगा, मातृ सुख की प्राप्ति होगी, मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा और संतान पक्ष में चिंताएं बनी रहेगी, योजनाओं में बाधाएँ उत्पन्न होंगी, गृहस्थ में परेशानी उत्पन्न होगी, अचानक संपत्ति लाभ होने की संभावनाएं बनेंगी, भाग्य एवं कर्म क्षेत्र में अस्थिरता के बाद भी लाभ की प्राप्ति होगी। दिसम्बर 16, 24, 25, जनवरी 1, 3, 5, 11, 12, 14 अशुभ दिन है।

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभ एवं अशुभ फल

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा, आपका सामाजिक क्षेत्र में प्रभाव बना रहेगा, धन लाभ की स्थिति में मध्यम, घरेलू सुखों की प्राप्ति होगी, बन्धु वर्ग से सुख की अनुभूति होगी, मातृ कष्ट रहेगा, मानसिक अशांति बढ़ेगी, संतान पक्ष से शुभ संकेत प्राप्त होंगे, योजनाओं से लाभ मिलेगा, गृहस्थ सुख मध्यम रहेगा, भाग्य प्रबल रहेगा, कार्य क्षेत्र में अस्थिरता एवं अशांति रहेगी, मास के अंत में विशेष खर्च होने की संभावना है। जनवरी 14, 15, 22, 23, 31, फरवरी 1, 10, 11 अशुभ दिन है।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

इस मास में स्वास्थ्य आपका उत्तम बना रहेगा, धन लाभ मध्यम रहेगा, परिवार में मतान्तर बने रहेंगे, आपके उत्साह एवं धैर्य की में वृद्धि होगी, बंधु वर्ग से चिंताएं मिलेंगी, मातृ पक्ष से मध्यम सुख, मित्रों से मेल बढ़ेगा, संतान पक्ष से मध्यम फल, योजनाएं मध्यम रहेंगी, गृहस्थ सुख ठीक रहेगा, भाग्य साथ देगा, कार्य क्षेत्र में लाभ के योग बनेंगे। जनवरी 16, 17, 24, 25, फरवरी 2, 3, 4, 12 अशुभ दिन है।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, धन लाभ का क्षेत्र मध्यम रहेगा, रक्त विकार एवं वात विकार में वृद्धि होगी, व्यय भी अधिक रहेगा, पारिवारिक संबंधों में मत-मतान्तर बढ़ेंगे, मानसिक अशांति बढ़ेगी, बन्धु वर्ग में विरोध होगा, आपके उत्साह और पराक्रम में हानि होगी, मातृ कष्ट, मित्रों से मत-मतान्तर, संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, योजनाओं में बाधाएं उत्पन्न होंगी, गृहस्थ सुख ठीक रहेगा, अचानक रोग एवं दुर्घटना का भय बनेगा, भाग्य साथ देगा, कार्य क्षेत्र में सफलताएं प्राप्त होंगी। जनवरी 18, 19, 26, 27, 28, फरवरी 5, 6, 7 अशुभ दिन है।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

स्वास्थ्य खराब रहेगा, वात एवं कफ रोगों में वृद्धि होगी, धन लाभ की प्राप्ति के उपरान्त अनावश्यक हानि होगी, पारिवारिक सुख मध्यम रहेंगे, भ्रातृ पक्ष से चिंताएं बनी

रहेंगी, मातृ सुख की प्राप्ति होगी, मित्रों का सहयोग मिलता रहेगा, गृहस्थ में समस्यायें बढ़ेंगी, अचानक रोग बढेंगे, भाग्य में परिवर्तन देखने को मिलेगा, कार्यक्षेत्र में लाभ की संभावनाएं बनेंगी। जनवरी 20, 21, 28, 29, 30, फरवरी 8, 9 अशुभ दिन है।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

स्वास्थ्य से संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी, रक्त विकार एवं क्रोध में वृद्धि होगी, धन का अनावश्यक व्यय होगा, परिवार में मतभेद बढ़ेंगे, भ्रातृ सुख एवं मैत्री सुख ठीक रहेगा, भूमि एवं भवन में लाभ होगा, संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे, आपकी योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी, ऋण में वृद्धि होगी, गृहस्थ में समस्यायें और चिन्ताएं बनी रहेंगी, अचानक दुर्घटना का भय परंतु भाग्य प्रबल रहेगा, कार्य क्षेत्र में उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा। जनवरी 14, 15, 22, 23, 31, फरवरी 1, 10, 11 अशुभ दिन है।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा परंतु फिर भी चमड़ी से संबंधित रोगों के लिए हरी वस्तुओं का दान करते रहें, धन लाभ होगा, परिवार में सुख और समृद्धि का उदय होगा बंधु सुख मध्यम रहेगा, मातृ सुख भी मध्यम रहेगा, संतान पक्ष से चिंताएं मिलेंगी, अकस्मात् उदर विकार की संभावनाएं बनेंगी, गृहस्थ की चिंताएं बढ़ेंगी, रोगों पर खर्च होगा, भाग्य ठीक रहेगा, कार्य क्षेत्र में संघर्ष के उपरांत लाभ की प्राप्ति होगी। जनवरी 16, 17, 24, 25, फरवरी 2, 3, 4, 12 अशुभ दिन है।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा, धन लाभ होगा, पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी, भ्रातृ सुख में लाभ होगा, आपका उत्साह एवं पराक्रम बढ़ेगा, माता पक्ष से दुःखों के पहाड़ गिरेंगे, बंधु सुख मध्यम रहेगा, संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, योजनाओं में बाधाएं उत्पन्न होंगी, गृहस्थ सुख ठीक रहेगा, भाग्य मध्यम रहेगा, कार्य क्षेत्र में बधाएं उत्पन्न होंगी। जनवरी 18, 19, 26, 27, 28, फरवरी 5, 6, 7 अशुभ दिन है।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी, उत्साह एवं धैर्य में वृद्धि होगी, परंतु बंधुओं में विवाद उत्पन्न होगा, माता के सुख में वृद्धि होगी, संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, शनि एवं मंगल ग्रह से संबंधित वस्तुओं का दान करें। गृहस्थ सुख ठीक रहेगा, योजनाओं में बधाएं उत्पन्न होंगी, भाग्य मध्यम रहेगा, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। जनवरी 20, 21, 29, 30, फरवरी 8, 9 अशुभ दिन है।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

स्वास्थ्य ठीक रहेगा, नेत्र एवं वाक् दोष में वृद्धि होगी, अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे, पारिवारिक उलझनें झमेलों में वृद्धि होगी, माता को कष्ट का भय बना रहेगा, संतान पक्ष से शुभ संकेत मिलेंगे, योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ में समस्यायें बढ़ेंगी, अकस्मात् रोग भय सताएगा, भाग्य ठीक रहेगा, परंतु योजनाओं में असफलताएं मिलेंगी और कार्य क्षेत्र में संघर्ष अनवरत बना रहेगा। जनवरी 14, 15, 22, 23, 31, फरवरी 1, 5, 10, 11 अशुभ दिन है।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, रक्त एवं वात विकार में वृद्धि होगी, मानसिक शांति के लिए सूर्य एवं राहु तथा मंगल ग्रहों से संबंधित वस्तुओं का दान करें, धन के क्षेत्र में वृद्धि होगी, बंधु वर्ग से विरोध मिलेगा, माता को कष्ट होगा, मित्रों से मतमतांतर बढ़ेंगे, संतान पक्ष से शुभ संकेत मिलेंगे, योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ में समस्यायें बढ़ेंगी, भाग्य कमजोर होगा, कार्य क्षेत्र में सफलताएं मिलेंगी। जनवरी 16, 17, 24, 28, फरवरी 1, 3, 4, 12 अशुभ दिन है।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

स्वास्थ्य खराब होने की संभावना बढ़ेगी, शनि, चंद्रमा एवं मंगल ग्रहों से संबंधित वस्तुओं का दान करें, अनावश्यक खर्च बढ़ेगा, परिवार में मतभेद होंगे, बन्धु पक्ष से शुभ समाचार मिलेंगे, माता पक्ष से शुभ संकेतों की प्राप्ति होगी, मित्रों से लाभ, संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, योजनाओं में असफलता मिलेगी, गृहस्थ में समस्यायें बढ़ेंगी, भाग्य व कार्य क्षेत्र में कुछ अच्छा होगा, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। जनवरी 18, 19, 20, 26, 27, 29, फरवरी 5, 6, 7 अशुभ दिन है।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

स्वास्थ्य खराब रहेगा, धन लाभ के उपरान्त अनावश्यक हानि होगी, पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा, भाई पक्ष से शुभ संकेत प्राप्त होंगे, उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा, माता पक्ष से मध्यम सुख, संतान पक्ष से चिंताएं बढ़ेंगी, शत्रु एवं रोग शांत रहेंगे सावधान रहने की आवश्यकता है। गृहस्थ सुखों में परेशानियां बढ़ेंगी, भाग्य प्रबल रहेगा, कार्य क्षेत्र में संघर्ष बढ़ेगा। जनवरी 20, 21, 28, 29, 30, फरवरी 8, 9, 11 अशुभ दिन है।

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ ।

स्वास्थ्य में लाभ होगा, धन के क्षेत्र में लाभ की संभावनाएं, पारिवारिक सुख में वृद्धि बन्धु एवं मित्र जनों से लाभ, मातृ सुख ठीक रहेगा, संतान पक्ष से मध्यम सुख की संभावनाएं, योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ सुख ठीक रहेगा, आपका भाग्य प्रबल रहेगा, पिता को मानसिक कष्ट होगा एवं भय बना रहेगा, कार्य क्षेत्र में बाधाएं उत्पन्न होंगी। फरवरी 19, 20, 27, 28, मार्च 1, 9, 10, 11 अशुभ दिन है।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, धन लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, पारिवारिक सदस्यों से लाभ होगा, भाई पक्ष से चिंताएं मिलेंगी, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, माता पक्ष ठीक रहेगा, भूमि भवन से लाभ होगा, संतान पक्ष से शुभ संकेत मिलेंगे, योजनाएं सफल होंगी, स्त्री सुख भाग्य व कार्य क्षेत्र में विशेष लाभ होगा। फरवरी 13, 14, 21, 22, मार्च 23, 12, 13 अशुभ दिन है।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

स्वास्थ्य की स्थिति ठीक रहेगी, आय एवं व्यय एक समान दर से चलेगा, पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा, भाई पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, मातृ पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। भूमि, भवन, वाहन आदि की प्राप्ति होगी, मित्रों से लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, संतान पक्ष से सुख की प्राप्ति होगी, योजनाएं सफल होंगी, गृहस्थ सुख ठीक रहेगा, गुप्त रोगों का भय बना रहेगा, भाग्य एवं कर्म क्षेत्र में लाभ के योग बनेंगे, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। फरवरी 15, 16, 23, 24, मार्च 4, 5, 6, 14 अशुभ दिन है।

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि वाले जातकों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा, धन लाभ के उपरान्त हानि होने की संभावनाएं ज्यादा रहेंगी, परिवार में मतभेद बना रहेगा, बंधु विवाद रहेगा, माता के पक्ष से कष्ट एवं दुःख की प्राप्ति होगी, मित्रों में मतभेद पैदा होंगे, संतान पक्ष से सुख एवं समृद्धि प्राप्त होगी, योजनाएं सफल होंगी, स्त्री को कष्ट होगा, अकस्मात् रोग का भय बनेगा, भाग्य प्रबल रहेगा, धर्म कार्य में रुचि बढ़ेगी, कार्य क्षेत्र में लाभ के संकेत मिलेंगे। फरवरी 17, 18, 25, 26, मार्च 7, 9, 11 अशुभ दिन है।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

सिंह राशि वाले जातकों के लिए सेहत एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास मध्यम रहेगा, क्रोध एवं रक्तचाप में वृद्धि होगी, धन लाभ होगा, पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा, बंधु सुख एवं मातृ सुख ठीक रहेगा, मित्रों से सहायता प्राप्त होगी, संतान पक्ष के सुख में कमी आएगी, योजनाओं में विघ्न बाधाएं बनी रहेंगी, गृहस्थ में समस्यायें आयेंगी, गुप्त रोग, चोट इत्यादि का भय बना रहेगा। शनि एवं मंगल ग्रह से संबंधित वस्तुओं का दान करें। भाग्य प्रबल है कार्य क्षेत्र में लाभ की संभावनाएं बनेंगी, माह के अंतिम सप्ताह में व्यय में वृद्धि होगी। फरवरी 19, 20, 27, 28, मार्च 1, 9, 10, 11 अशुभ दिन है।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं रहेगा, बुध ग्रह से संबंधित हरी वस्तुओं का दान करें, धन लाभ होगा, परिवार एवं मित्रों का सुख मध्यम रहेगा, बन्धु पक्ष से विरोध मिलेगा, मित्र जनों से सहायता प्राप्त होगी, मातृ सुख प्राप्त होगा, संतान पक्ष से चिंताएं मिलेंगी, योजनाओं में बाधाएं उत्पन्न होंगी,

शत्रु भय से भयभीत होंगे, ऋण की वृद्धि होगी, स्त्री कष्ट होगा, काफात्मक प्रकृति में वृद्धि होगी, भाग्य ठीक रहेगा, कार्य क्षेत्र में अस्थिरता बनी रहेगी। फरवरी 13, 14, 21, 22, मार्च 2, 3, 12 13 अशुभ दिन है।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

तुला राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास मध्यम रहेगा, धन लाभ के क्षेत्र में वृद्धि होगी, परिवार व बन्धु जनों का सहयोग प्राप्त होगा, मातृ व संतान पक्ष से कष्ट मिलेगा, योजनाएं असफल होंगी, गृहस्थ सुख ठीक-ठाक रहेगा, भाग्य में प्रबल वृद्धि होगी, कार्य क्षेत्र में प्रगति मिलेगी। फरवरी 15, 16, 23, 24, मार्च 4, 5, 6, 14 अशुभ दिन है।

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा, धन लाभ में वृद्धि होगी, घरेलु सुख ठीक रहेंगे, बंधुओं से विवाद होगा, मातृ कष्ट एवं संतान पक्ष से सुख की चिंता बनी रहेगी, शनि ग्रह से संबंधित द्रव्यों का दान करें, स्त्री सुख में वृद्धि होगी, परन्तु भाग्य में अस्थिरता के बाद लाभ की संभावनाएं बढ़ेंगी, कार्य क्षेत्र में भी लाभ बना रहेगा। फरवरी 17, 18, 25, 26, मार्च 7, 8, 9 अशुभ दिन है।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

धनु राशि वालों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं रहेगा, गुरु ग्रह से संबंधित पीले द्रव्यों का दान करें। धन लाभ होने के बाद धन हानि होगी, परिवार में मतभेद बनेंगे, नेत्र एवं वाणी में विकार, बंधन का भय, मातृ कष्ट, मित्रों से सहयोग, संतान पक्ष से शुभ समाचार मिलेंगे, योजनाओं में सफलता मिलेगी, स्त्री सुख ठीक रहेगा, भाग्य में वृद्धि होगी, कार्य क्षेत्र में संघर्ष बना रहेगा। फरवरी 19, 20, 27, 28, मार्च 1, 9, 10, 11 अशुभ दिन है।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर राशि वाले जातकों के लिए यह मास उदर विकार एवं वात रोग से पीडित करेगा, धन लाभ होगा, परन्तु अत्यधिक खर्च होगा, परिवार में मतभेद बने रहेंगे, बन्धु सुख ठीक रहेगा, उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि होगी, मातृ कष्ट, मित्रों से सहयोग मिलेगा, संतान पक्ष से चिंताएं मिलेंगी, योजनाओं में बधाएं उत्पन्न होंगी, स्त्री सुख ठीक रहेगा, चिंताएं बढ़ेंगी, राहु एवं केतु से संबंधित द्रव्यों का दान करें, रक्त, पित्त विकार बढ़ेगा, भाग्य में मध्यम फल मिलेगा, कार्य क्षेत्र में अस्थिरता बनी रहेगी। फरवरी 13, 14, 21, 22, मार्च 2, 3, 12, 13 अशुभ दिन है।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

कुम्भ राशि वाले जातकों के लिए यह मास स्वास्थ्य की दृष्टि से खराब रहेगा रक्त-वात- पित्त विकारों में वृद्धि होगी, अनावश्यक खर्च होगा, घरेलु विवाद बढ़ेंगे, बन्धुओं से सहयोग मिलेगा, मातृ सुख ठीक रहेगा, संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे, योजनाओं में लाभ होगा, गृहस्थ की चिंता बनी रहेगी, रोग भय भी बना रहेगा, भाग्य एवं कार्य क्षेत्र में संघर्ष के उपरांत सफलताएं मिलेंगी, शनि एवं सूर्य ग्रह से संबंधित द्रव्यों का दान करें लाभ की प्राप्ति होगी। फरवरी 15, 16, 23, 24, मार्च 4, 6, 8, 9, 11 अशुभ दिन है।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि वाले जातकों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास ठीक नहीं रहेगा, धन लाभ की प्राप्ति होगी और उसके बाद हानि होना भी संभव है, परिवार में मतभेद बने रहेंगे, बन्धुओं से सहयोग की प्राप्ति होगी, मातृ कष्ट होगा, संतान पक्ष से सुख मिलेगा, योजनाएं मध्यम फल देने वाली होंगी, गृहस्थ की चिंता बनी रहेगी, भाग्य में कमी रहेगी, कार्य क्षेत्र में सफलता की संभावनाएं बनी रहेंगी। फरवरी 17, 18, 25, 26, मार्च 7, 8, 9, 11 अशुभ दिन है।

डॉ. रत्न लाल
सह-आचर्य, ज्योतिष विभाग

विक्रम सम्वत् २०८३, ईसवीय सन् २०२६ - २७ व्रत, पर्व एवं उत्सव

चैत्र शुक्ल पक्ष (दि. १९ मार्च से ०२ अप्रैल २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**१९ मार्च**	गुरु	प्रतिपदा क्षय, वासन्तिक नवरात्र प्रा., घटस्थापन, गुड़ी पड़वा, युगादि, भारतीय नववर्षारम्भ, रामायण पाठ प्रा., कल्पादि, रौद्र चान्द्र सम्वत्सर प्रा.।
द्वितीया	**२० मार्च**	शुक्र	चन्द्रदर्शन, सिन्धारा, झूलेलाल जयन्ती।
तृतीय	**२१ मार्च**	शनि	गणगौरी तृतीया, मत्स्य जयन्ती (अपराह्नकाल), मन्वादि, ईद-उल-फितर ।
चतुर्थी	**२२ मार्च**	रवि	विनायक चतुर्थी
षष्ठी	**२४ मार्च**	मंगल	स्कन्द षष्ठी (सायंकाल), यमुना छठ, रोहिणी व्रत।
सप्तमी	**२५ मार्च**	बुध	महानिशा पूजा।
अष्टमी	**२६ मार्च**	गुरु	महाष्टमी, दुर्गाष्टमी, मेला मनसा देवी, मेला बाहुफोर्ट जम्मू, सन्धि पूजा, ओली जैन प्रा., श्री रामावतार (मध्याह्नकाल), श्री रामनवमी व्रत (स्मा.) श्रीतारा जयन्ती।
नवमी	**२७ मार्च**	शुक्र	श्री राम नवमी व्रत (वै.), महानवमी, रामायण पाठ समा., नवरात्र समा.।
दशमी	**२८ मार्च**	शनि	नवरात्र व्रत पारणा।
एकादशी	**२९ मार्च**	रवि	कामदा एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी	**३० मार्च**	सोम	सोम प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी
त्रयोदशी	**३१ मार्च**	मंगल	महावीर जयन्ती, तीर्थंकर महावीर जन्मकल्याणक ।
चतुर्दशी	**०१ अप्रैल**	बुध	पूर्णिमा व्रत, मन्वादि, सिद्धाचल यात्रा, उत्कल दिवस।
पूर्णिमा	**०२ अप्रैल**	गुरु	हनुमज्जयन्ती (दाक्षिणात्य), सत्यव्रत, ओली जैन समा., वैशाख स्नान प्रा.।

वैशाख कृष्ण पक्ष (दि. ०३ अप्रैल से १७ अप्रैल २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**०३ अप्रैल**	शुक्र	गुड फ्राइडे।
तृतीया	**०५ अप्रैल**	रवि	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२२:०४)
षष्ठी	**०८ अप्रैल**	बुध	कोकिला षष्ठी (अपराह्न व्यापिनी)
सप्त./अष्टमी	**०९ अप्रैल**	गुरु	शर्करा सप्तमी, शीतलासप्तमी, कालाष्टमी।
एकादशी	**१३ अप्रैल**	सोम	वरुथिनी एकादशी व्रत (स्मा.वै.), वल्लभाचार्य जयन्ती।
द्वादशी	**१४ अप्रैल**	मंगल	मेष संक्रान्ति ०९:३२, सं. पुण्यकाल ०९:३२ से १५:५६ तक, वैशाखी, आर्यभट जयन्ती, अम्बेडकर जयन्ती, वरूथिनी एकादशी व्रत (नि.)।
त्रयोदशी	**१५ अप्रैल**	बुध	हिमाचल दिवस, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि।
अमावस्या	**१७ अप्रैल**	शुक्र	अमावस्या।

वैशाख शुक्ल पक्ष (दि. १८ अप्रैल से ०१ मई २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**१८ अप्रैल**	शनि	चन्द्रदर्शन।
द्वितीया	**१९ अप्रैल**	रवि	परशुरामावतार (प्रदोषकाल), मातङ्गी जयन्ती (प्रदोष काल)।
तृतीया	**२० अप्रैल**	सोम	अक्षय तृतीया, त्रेतायुगादि, बद्री केदार यात्रा, विनायक चतुर्थी, रोहिणी व्रत।
पंचमी	**२१ अप्रैल**	मंगल	आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती, सूरदास जयन्ती।
षष्ठी	**२२ अप्रैल**	बुध	रामानुजाचार्य जयन्ती, पृथ्वी दिवस।
सप्तमी	**२३ अप्रैल**	गुरु	गंगोत्पत्ति, गंगा सप्तमी (मध्याह्न)।
अष्टमी	**२४ अप्रैल**	शुक्र	दुर्गाष्टमी (मध्याह्न व्यापिनी), बगलामुखी जयन्ती।
नवमी	**२५ अप्रैल**	शनि	सीता नवमी, जानकी नवमी, मैथिली दिवस।
एकादशी	**२७ अप्रैल**	सोम	मोहिनी एकादशी व्रत (स.)।

विक्रम सम्वत् २०८३, ईसवीय सन् २०२६ - २७ व्रत, पर्व एवं उत्सव

वैशाख शुक्ल पक्ष (दि. १८ अप्रैल से ०१ मई २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
त्रयोदशी	**२९ अप्रैल**	बुध	प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**३० अप्रैल**	गुरु	नृसिंह जयन्ती (प्रदोष काल), श्री छिन्नमस्ता जयन्ती।
पूर्णिमा	**०१ मई**	शुक्र	पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, कूर्म जयन्ती (मध्याह्न काल), बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती (उदयकाल), वैशाख स्नान समा., श्रमिक दिवस।

प्र. ज्येष्ठ (शुद्ध) कृष्ण पक्ष (दि. ०२ मई से १६ मई २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**०२ मई**	शनि	नारद जयन्ती।
चतुर्थी	**०५ मई**	मंगल	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२२:४९)।
सप्तमी	**०९ मई**	शनि	भानु सप्तमी, कालाष्टमी।
एकादशी	**१३ मई**	बुध	अपरा एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी	**१४ मई**	गुरु	प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	**१५ मई**	शुक्र	वृष संक्रान्ति ०६:२२, सं.पुण्यकाल (सूर्योदय से ०९:३४ तक), मास शिवरात्रि।
अमावस्या	**१६ मई**	शनि	भावुका अमावस्या, वट सावित्री व्रत, शनैश्चरी अमावस्या।

प्र. अधिक ज्येष्ठ (अशुद्ध) शुक्ल पक्ष (दि. १७ मई से ३१ मई २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**१७ मई**	रवि	रोहिणी व्रत, काशी दशाश्वमेध स्नान प्रा.।
द्वितीया	**१८ मई**	सोम	चन्द्र दर्शन।
चतुर्थी	**२० मई**	बुध	विनायक चतुर्थी।
अष्टमी	**२३ मई**	शनि	दुर्गाष्टमी।

प्र. अधिक ज्येष्ठ (अशुद्ध) शुक्ल पक्ष (दि. १७ मई से ३१ मई २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
दशमी	**२५ मई**	सोम	गंगा दशहरा।
एकादशी	**२७ मई**	बुध	कमला एकादशी (स.), ईद-उल-जुहा (बकरीद)।
द्वादशी	**२८ मई**	गुरु	प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**३० मई**	शनि	पूर्णिमा व्रत।
पूर्णिमा	**३१ मई**	रवि	सत्यव्रत, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस, प्रथम ज्येष्ठ पूर्णिमा स्नान दानादि।

द्वि. अधिक ज्येष्ठ (अशुद्ध) कृष्ण पक्ष (दि. ०१ जून से १५ जून २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
तृतीया	**०३ जून**	बुध	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२२:११)।
पंचमी	**०५ जून**	शुक्र	विश्व पर्यावरण दिवस।
सप्तमी	**०७ जून**	रवि	भानु सप्तमी।
अष्टमी	**०८ जून**	सोम	कालाष्टमी।
एकादशी	**११ जून**	गुरु	कमला एकादशी व्रत (स्मा.+वै.)।
द्वादशी	**१२ जून**	शुक्र	प्रदोष व्रत, कमला एकादश व्रत (नि.)।
त्रयोदशी	**१३ जून**	शनि	मासशिवरात्रि।
चतुर्दशी	**१४ जून**	रवि	अमावस्या श्राद्धादि, रोहिणी व्रत।
अमावस्या	**१५ जून**	सोम	सोमवती अमावस्या स्नानादि, मिथुन संक्रान्ति १२:५३, सं. पुण्यकाल १२:५३ से सूर्यास्त तक।

द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (दि. १६ जून से २९ जून २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वितीया	**१६ जून**	मंगल	चन्द्रदर्शन।
तृतीया	**१७ जून**	बुध	रम्भा तृतीया, महाराणा प्रताप जयन्ती (उदयकाल व्यापिनी)।

विक्रम सम्वत् २०८३, ईसवीय सन् २०२६ - २७ व्रत, पर्व एवं उत्सव

द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (दि. १६ जून से २९ जून २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
चतुर्थी	**१८ जून**	गुरु	विनायक चतुर्थी।
पंचमी	**१९ जून**	शुक्र	श्रुत पञ्चमी प्राकृत दिवस।
षष्ठी	**२० जून**	शनि	अरण्य षष्ठी (सप्तमी विद्धा), विन्ध्यवासिनी पूजा।
सप्तमी	**२१ जून**	रवि	वर्ष का सबसे बड़ा दिन, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस।
अष्टमी	**२२ जून**	सोम	दुर्गाष्टमी, मेला क्षीरभवानी (काश्मीर), श्री धूमावती जयन्ती।
दशमी	**२४ जून**	बुध	रामेश्वर प्रतिष्ठा दर्शन एवं पूजन।
एकादशी	**२५ जून**	गुरु	निर्जला एकादशी व्रत (स.), गायत्री जयन्ती।
द्वादशी	**२६ जून**	शुक्र	मोहर्रम।
त्रयोदशी	**२७ जून**	शनि	शनि प्रदोष व्रत।
पूर्णिमा	**२९ जून**	सोम	पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, वट पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत (दाक्षिणात्य), कबीरदास जयन्ती, मन्वादि (वैवस्वत)।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष (दि. ३० जून से १४ जुलाई २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
तृतीया	**०३ जुलाई**	शुक्र	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२१:५०)।
सप्तमी	**०७ जुलाई**	मंगल	भानु सप्तमी, कालाष्टमी।
एकादशी	**१० जुलाई**	शुक्र	योगिनी एकादशी व्रत (स्मा.)।
द्वादशी	**११ जुलाई**	शनि	योगिनी एकादशी व्रत (वै.), रोहिणी व्रत।
त्रयोदशी	**१२ जुलाई**	रवि	मास शिवरात्रि।
अमावस्या	**१४ जुलाई**	मंगल	भौमवती अमावस्या।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष (दि. १५ जुलाई से २९ जुलाई २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**१५ जुलाई**	बुध	गुप्त नवरात्र प्रा., भगवान श्रीजगन्नाथ नवयौवन दर्शन, चन्द्रदर्शन, **गुरु अस्त १९:२१**
द्वितीया	**१६ जुलाई**	गुरु	श्री जगन्नाथ रथयात्रा, मनोरथ द्वितीया, कर्क संक्रान्ति २३:३९, सं. पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर।
तृतीया	**१७ जुलाई**	शुक्र	विनायक चतुर्थी
षष्ठी	**१९ जुलाई**	रवि	कुसुम्बा षष्ठी, कुमार षष्ठी।
सप्तमी	**२० जुलाई**	सोम	शीतला सप्तमी।
अष्टमी	**२१ जुलाई**	मंगल	दुर्गाष्टमी, शीतलाष्टमी, ओली जैन प्रा.।
नवमी	**२२ जुलाई**	बुध	भड्डुली नवमी।
नवमी	**२३ जुलाई**	गुरु	गुप्त नवरात्र समा.।
दशमी	**२४ जुलाई**	शुक्र	गुप्त नवरात्र पारणा, भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा परावर्तन।
एकादशी	**२५ जुलाई**	शनि	देवशयनी एकादशी व्रत (स.), चातुर्मास्यारम्भ।
द्वादशी	**२६ जुलाई**	रवि	वासुदेव द्वादशी, प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	**२७ जुलाई**	सोम	जया पार्वती व्रत प्रा.।
चतुर्दशी	**२८ जुलाई**	मंगल	पूर्णिमा व्रत, शिवशयनोत्सव।
पूर्णिमा	**२९ जुलाई**	बुध	सत्यव्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा, सन्यासियों का चातुर्मास्यारम्भ, कोकिला व्रत, ओली जैन समा., पवन परीक्षा।

श्रावण कृष्ण पक्ष (दि. ३० जुलाई से १२ अगस्त २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**३० जुलाई**	शुक्र	हिण्डोले प्रा. (व्रजमण्डल), अशून्य शयन व्रत।

विक्रम सम्वत् २०८३ , ईसवीय सन् २०२६ - २७ व्रत, पर्व एवं उत्सव

श्रावण कृष्ण पक्ष (दि. ३० जुलाई से १२ अगस्त २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
चतुर्थी	**०२ अगस्त**	रवि	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२१:२१), जया पार्वती व्रत समा.।
पंचमी	**०३ अगस्त**	सोम	श्रावण सोमवार व्रत, नाग पञ्चमी (बंगाल, बिहार)।
षष्ठी	**०४ अगस्त**	मंगल	मंगलागौरी व्रत।
सप्तमी	**०५ अगस्त**	बुध	भानु सप्तमी, शीतला सप्तमी, कालाष्टमी।
अष्टमी	**०६ अगस्त**	गुरु	शीतलाष्टमी।
नवमी	**०७ अगस्त**	शुक्र	रोहिणी व्रत।
एकादशी	**०९ अगस्त**	रवि	कामिका एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी	**१० अगस्त**	सोम	श्रावण सोमवार व्रत, सोम प्रदोष व्रत **गुरु उदय ०५:५१**
चतुर्दशी	**११ अगस्त**	मंगल	मंगला गौरी व्रत, मास शिवरात्रि।
अमावस्या	**१२ अगस्त**	बुध	हरियाली अमावस्या।

श्रावण शुक्ल पक्ष (दि. १३ अगस्त से २८ अगस्त २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वितीया	**१४ अगस्त**	शुक्र	चन्द्रदर्शन, सिंधारा।
तृतीया	**१५ अगस्त**	शनि	हरियाली तीज, मधुश्रवा तृतीया, स्वर्ण गौरी व्रत, स्वतन्त्रता दिवस।
चतुर्थी	**१६ अगस्त**	रवि	विनायक चतुर्थी, दूर्वागणपति व्रत।
पंचमी	**१७ अगस्त**	सोम	श्रावण सोमवार व्रत, सिंह संक्रान्ति ०७:५८, सं. पुण्यकाल सूर्योदय से ११:१० तक, नाग पञ्चमी, ऋग्यजुहिरण्यकेशी श्रावणी उपाकर्म, कल्कि जयन्ती (सायंकाल)।
षष्ठी	**१८ अगस्त**	मंगल	मंगला गौरी व्रत, वर्ण षष्ठी।
सप्तमी	**१९ अगस्त**	बुध	शीतला सप्तमी, भानु सप्तमी, तुलसीदास जयन्ती।

श्रावण शुक्ल पक्ष (दि. १३ अगस्त से २८ अगस्त २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
अष्टमी	**२० अगस्त**	गुरु	दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयना देवी, मेला ज्वाला देवी, मेला चिन्तपूर्णी।
एकादशी	**२३ अगस्त**	रवि	पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (स्मा.वै.)।
द्वादशी	**२४ अगस्त**	सोम	श्रावण सोमवार व्रत, पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (नि.)।
द्वादशी	**२५ अगस्त**	मंगल	मंगला गौरी व्रत, भौम प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	**२६ अगस्त**	बुध	पेगम्बर मुहम्मद जन्मदिन, ओणम।
चतुर्दशी	**२७ अगस्त**	गुरु	पूर्णिमा व्रत।
पूर्णिमा	**२८ अगस्त**	शुक्र	सत्यव्रत, रक्षाबन्धन, हयग्रीवावतार, अमरनाथ दर्शन, हिण्डोले समा. (व्रजमण्डल), श्रावणी उपाकर्म, संस्कृत दिवस, श्रावणी पूर्णिमा।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष (दि. २९ अगस्त से ११ सितम्बर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा/द्वितीया	**२९ अगस्त**	शनि	अशून्य शयन व्रत।
तृतीया	**३१ अगस्त**	सोम	कज्जली तृतीया, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२०:२५), बहुला चतुर्थी।
षष्ठी	**०२ सितम्बर**	बुध	बलराम जयन्ती, हल षष्ठी, चन्दन षष्ठी, चम्पा षष्ठी।
अष्टमी	**०४ सितम्बर**	शुक्र	श्री कृष्ण जयन्ती (निशीथ काल), कालाष्टमी, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत, श्री महाकाली जयन्ती (निशीथ काल), रोहिणी व्रत।
नवमी	**०५ सितम्बर**	शनि	गोगा नवमी, गोकुलोत्सव, शिक्षक दिवस।
एकादशी	**०७ सितम्बर**	सोम	अजा एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी	**०८ सितम्बर**	मंगल	भौम प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	**०९ सितम्बर**	बुध	पर्यूषण पर्वारम्भ, मासशिवरात्रि, डाकिनी चतुर्दशी।

विक्रम सम्वत् २०८३ , ईसवीय सन् २०२६ - २७ व्रत, पर्व एवं उत्सव

भाद्रपद कृष्ण पक्ष (दि. २९ अगस्त से ११ सितम्बर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
चतुर्दशी	**१० सितम्बर**	गुरु	अमावस्या श्राद्धादि।
अमावस्या	**११ सितम्बर**	शुक्र	अमावस्या स्नानादि, कुशोत्पाटिनी अमावस्या।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष (दि. १२ सितम्बर से २६ सितम्बर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**१२ सितम्बर**	शनि	चन्द्रदर्शन।
द्वितीया	**१३ सितम्बर**	रवि	वराह जयन्ती (अपराह्नकाल)।
तृतीया/ चतुर्थी	**१४ सितम्बर**	सोम	हरतालिका तीज, सामवेदियों का उपाकर्म, कलङ्क चतुर्थी, पत्थर चौथ, चन्द्र दर्शन निषेध, चन्द्रास्त २०:०६, सिद्धि विनायक चतुर्थी व्रत, गणेश जन्मोत्सव, हिन्दी दिवस।
चतुर्थी	**१५ सितम्बर**	मंगल	जैन सम्वत्सरी चतुर्थी पक्ष, ऋषि पञ्चमी।
पंचमी	**१६ सितम्बर**	बुध	स्कन्द षष्ठी, बलदेव छठ, लोलार्क षष्ठी, ललिता षष्ठी, मेला देवछठ (व्रजमण्डल), स्वामी कार्तिकेय दर्शन, जैन सम्वत्सरी पञ्चमी पक्ष, उत्कलीय नवान्न भक्षण।
षष्ठी	**१७ सितम्बर**	गुरु	कन्या संक्रान्ति ०७:५२, सं. पुण्यकाल ०७:५२ से १४:१६ तक, सूर्य षष्ठी।
अष्टमी	**१९ सितम्बर**	शनि	राधाष्टमी, महालक्ष्मी व्रतारम्भ, दूर्वाष्टमी (व्रत निषेध)।
नवमी	**२० सितम्बर**	रवि	श्री चन्द्र नवमी, अदुःख नवमी, मेला श्री रामदेव जी (राज.)।
एकादशी	**२२ सितम्बर**	मंगल	पार्श्वपरिवर्तिनी एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी	**२३ सितम्बर**	बुध	वामन जयन्ती (मध्याह्नकाल), श्री भुवनेश्वरी जयन्ती।
त्रयोदशी	**२४ सितम्बर**	गुरु	प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**२५ सितम्बर**	शुक्र	अनन्त चतुर्दशी, गणपति विसर्जन।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष (दि. १२ सितम्बर से २६ सितम्बर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
पूर्णिमा	**२६ सितम्बर**	शनि	पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, महालयारम्भ, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा, पूर्णिमा श्राद्ध, अगस्त अर्घ्य दान।

आश्विन कृष्ण पक्ष (दि. २७ सितम्बर से १० अक्टूबर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**२७ सितम्बर**	रवि	प्रतिपदा श्राद्ध, अशून्य शयन व्रत।
द्वितीया	**२८ सितम्बर**	सोम	द्वितीया श्राद्ध।
तृतीया	**२९ सितम्बर**	मंगल	तृतीया श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (१९:३५)।
चतुर्थी	**३० सितम्बर**	बुध	चतुर्थी श्राद्ध।
पंचमी	**०१ अक्टूबर**	गुरु	पंचमी श्राद्ध, षष्ठी श्राद्ध १२:३५ बाद, रोहिणी व्रत।
षष्ठी	**०२ अक्टूबर**	शुक्र	सप्तमी श्राद्ध, गाँधी जयन्ती, श्री लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती।
सप्तमी/ अष्टमी	**०३ अक्टूबर**	शनि	महालक्ष्मी व्रत, कालाष्टमी, जीमूतवाहन व्रत, जीवित पुत्रिका व्रत, अष्टमी श्राद्ध।
नवमी	**०४ अक्टूबर**	रवि	सधवा नवमी, मातृ नवमी, नवमी श्राद्ध, अन्वष्टका श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत पारणा।
दशमी	**०५ अक्टूबर**	सोम	दशमी श्राद्ध।
एकादशी	**०६ अक्टूबर**	मंगल	इन्दिरा एकादशी व्रत (स्मा.+वै.) एकादशी श्राद्ध।
द्वादशी	**०७ अक्टूबर**	बुध	द्वादशी श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (नि.)।
त्रयोदशी	**०८ अक्टूबर**	गुरु	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध, मास शिवरात्रि।
चतुर्दशी	**०९ अक्टूबर**	शुक्र	चतुर्दशी श्राद्ध, विष-शस्त्रादि से हतों का श्राद्ध।

विक्रम सम्वत् २०८३, ईसवीय सन् २०२६ - २७ व्रत, पर्व एवं उत्सव

आश्विन कृष्ण पक्ष (दि. २७ सितम्बर से १० अक्टूबर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
अमावस्या	**१० अक्टूबर**	शनि	अमावस्या श्राद्ध, सर्वपितृ अमावस्या, सर्वपितृ विसर्जन, पितृपक्ष समा.।

आश्विन शुक्ल पक्ष (दि. ११ अक्टूबर से २६ अक्टूबर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**११ अक्टूबर**	**रवि**	मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा., घट स्थापन, महाराजा अग्रसेन जयन्ती।
द्वितीया	**१२ अक्टूबर**	सोम	चन्द्रदर्शन। **शुक्रास्त १७:५१, १२ अक्टूबर**
चतुर्थी	**१४ अक्टूबर**	बुध	विनायक चतुर्थी।
पंचमी	**१५ अक्टूबर**	गुरु	उपाङ्ग ललिता व्रत (सायंकाल व्यापिनी)
षष्ठी	**१६ अक्टूबर**	शुक्र	बिल्वाभिमन्त्रण सायं (ज्येष्ठा नक्षत्र में)।
सप्तमी	**१७ अक्टूबर**	शनि	तुला संक्रान्ति १९:५१, सं. पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर, सरस्वती आवाहन (मूल नक्षत्र में), पत्रिका प्रवेश।
सप्तमी/अष्टमी	**१८ अक्टूबर**	रवि	महानिशीथ पूजन, महानिशा पूजा।
अष्टमी	**१९ अक्टूबर**	सोम	दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत, ओली जैन प्रा., सन्धि पूजा, सरस्वती बलिदान।
नवमी	**२० अक्टूबर**	मंगल	महानवमी व्रत, त्रिशूलिनी पूजा, सरस्वती विसर्जन।
दशमी	**२१ अक्टूबर**	बुध	अपराजिता पूजा, विजयादशमी, शस्त्र पूजा, सीमोल्लंघन, नवरात्र पारणा, शमी पूजा, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ स्थापना दिवस।
एकादशी	**२२ अक्टूबर**	गुरु	पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), मेला भरत मिलाप, मध्वाचार्य जयन्ती।
द्वादशी	**२३ अक्टूबर**	शुक्र	पद्मनाभ द्वादशी, प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**२५ अक्टूबर**	रवि	कोजागर व्रत, रास महोत्सव, लक्ष्मी पूजन, कोजागरी पूर्णिमा, शरद् पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत।

आश्विन शुक्ल पक्ष (दि. ११ अक्टूबर से २६ अक्टूबर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
पूर्णिमा	**२६ अक्टूबर**	सोम	सत्यव्रत, वाल्मीकि जयन्ती, मीराबाई जयन्ती, ओली जैन समा., कार्तिक स्नान प्रा.।

कार्तिक कृष्ण पक्ष (दि. २७ अक्टूबर से ०९ अक्टूबर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**२७ अक्टूबर**	मंगल	अशून्य शयन व्रत।
तृतीया	**२८ अक्टूबर**	बुध	रोहिणी व्रत। **शुक्रोदय ३०:३३**
चतुर्थी	**२९ अक्टूबर**	गुरु	करक चतुर्थी, करवा चौथ, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय १९:५५, रोहिणी व्रत।
सप्तमी/ अष्टमी	**०१ नवम्बर**	रवि	अहोई अष्टमी, कालाष्टमी, राधा कुण्ड स्नान रात्रि समाप्ति पर अरुणोदय में।
एकादशी	**०५ नवम्बर**	गुरु	रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी
द्वादशी	**०६ नवम्बर**	शुक्र	धनतेरस, धन्वन्तरि जयन्ती, प्रदोष व्रत, यमदीप दान।
त्रयोदशी	**०७ नवम्बर**	शनि	मास शिवरात्रि, हनुमज्जयन्ती, नरक निवारण चतुर्दशी, रुप चौदस, अभ्यङ्ग स्नान ।
चतुर्दशी/ अमावस्या	**०८ नवम्बर**	रवि	दीपावली, महालक्ष्मी पूजन, केदारगौरी व्रत, कमला जयन्ती (प्रदोषकाल), श्री महाकाली पूजा, उल्का भ्रमण, दारिद्रय निसारण।
अमावस्या	**०९ नवम्बर**	सोम	सोमवती अमावस्या, महावीर निर्वाण दिवस, दयानन्द निर्वाण दिवस, आद्य शङ्कराचार्य निर्वाण दिवस, विद्यापीठ संस्थापक कुलपति डॉ. मण्डन मिश्र निर्वाण दिवस, कार्तिकी अमावस्या स्नान दानादि।

कार्तिक शुक्ल पक्ष (दि. १० नवम्बर से २४ नवम्बर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**१० नवम्बर**	मंगल	गोवर्द्धन पूजा, अन्नकूट, विश्वकर्मा पूजा।

विक्रम सम्वत् २०८३, ईसवीय सन् २०२६ - २७ व्रत, पर्व एवं उत्सव

कार्तिक शुक्ल पक्ष (दि. १० नवम्बर से २४ नवम्बर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वितीया	**११ नवम्बर**	बुध	चन्द्र दर्शन, भातृ द्वितीया, यम द्वितीया, चित्रगुप्त पूजन, यमुना स्नान (मथुरा)।
चतुर्थी	**१३ नवम्बर**	शुक्र	विनायक चतुर्थी, छठ व्रत नहाई खाई।
पंचमी	**१४ नवम्बर**	शनि	लाभ पञ्चमी, ज्ञान पञ्चमी, पाण्डव पञ्चमी, बाल दिवस, खरना छठ व्रत।
षष्ठी	**१५ नवम्बर**	रवि	सायंकालीन अर्घ्य दान, प्रतिहार षष्ठी व्रत, छठ पूजा, सूर्य षष्ठी।
सप्तमी	**१६ नवम्बर**	सोम	प्रातः कालीन सूर्यार्घ्यदान, छठ व्रत पारणा, वृश्चिक संक्रान्ति १९:४२, सं. पुण्यकाल दिनार्धोत्तर।
अष्टमी	**१७ नवम्बर**	मंगल	ओली जैन प्रा., दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, मेला गोचारण (मथुरा)।
नवमी	**१८ नवम्बर**	बुध	अक्षय नवमी, सत्य युगादि, कूष्माण्ड नवमी, मथुरा परिक्रमा।
दशमी	**१९ नवम्बर**	गुरु	मेला कंस (मथुरा)।
दशमी/ एकादशी	**२० नवम्बर**	शुक्र	भीष्म पञ्चक प्रा., प्रबोधिनी/देवोत्थान एकादशी व्रत (स्मा.)।
द्वादशी	**२१ नवम्बर**	शनि	तुलसी विवाह, प्रबोधिनी/देवोत्थान एकादशी व्रत (वै.), कालिदास जयन्ती, चातुर्मास्य समाप्त (सन्यासी), मन्वादि।
त्रयोदशी	**२२ नवम्बर**	रवि	प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**२३ नवम्बर**	सोम	वैकुण्ठ चतुर्दशी, मणिकर्णिका स्नान, काशी विश्वनाथ स्थापना दिवस।
पूर्णिमा	**२४ नवम्बर**	मंगल	पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, देव दीपावली, भीष्म पञ्चक समा., पुष्कर स्नान, गुरु नानक जयन्ती, मेला गढ़गंगा (मुक्तेश्वर), मेला हरिहर क्षेत्र, ओली जैन समा., कार्तिक स्नान समा., मन्वादि, त्रिपुरोत्सव (सायंकाल)।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (दि. २५ नवम्बर से ०८ दिसम्बर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**२५ नवम्बर**	बुध	रोहिणी व्रत।
चतुर्थी	**२७ नवम्बर**	शुक्र	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:०१ ।
अष्टमी	**०१ दिसम्बर**	मंगल	कालाष्टमी, कालभैरव जयन्ती।
एकादशी	**०४ दिसम्बर**	शुक्र	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.)।
त्रयोदशी	**०६ दिसम्बर**	रवि	प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**०७ दिसम्बर**	सोम	मास शिवरात्रि।
अमावस्या	**०८ दिसम्बर**	मंगल	अमावस्या।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (दि. ०९ दिसम्बर से २३ दिसम्बर २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**१० दिसम्बर**	गुरु	चन्द्रदर्शन।
चतुर्थी	**१३ दिसम्बर**	रवि	विनायक चतुर्थी।
पंचमी	**१४ दिसम्बर**	सोम	श्री सीताराम विवाहोत्सव, विवाह पंचमी, नाग पञ्चमी (दाक्षिणात्य), स्वामी हरिदास जयन्ती, रामदास जयन्ती, बाबू बैजनाथ जयन्ती।
षष्ठी	**१५ दिसम्बर**	मंगल	स्कन्द षष्ठी।
सप्तमी	**१६ दिसम्बर**	बुध	धनु संक्रान्ति १०:२५, सं. पुण्यकाल १०:२५ से १६:४८
अष्टमी	**१७ दिसम्बर**	गुरु	दुर्गाष्टमी।
एकादशी	**२० दिसम्बर**	रवि	मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), मौनी एकादशी (जैन), गीता जयन्ती।
द्वादशी	**२१ दिसम्बर**	सोम	मत्स्य द्वादशी, सोम प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	**२२ दिसम्बर**	मंगल	वर्ष का सबसे छोटा दिवस, रोहिणी व्रत।
चतुर्दशी/ पूर्णिमा	**२३ दिसम्बर**	बुध	दत्तात्रेय जयन्ती (प्रदोषकाल), पिशाचमोचन श्राद्ध, सत्यव्रत, पं. मदनमोहन मालवीय जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, त्रिपुर भैरवी जयन्ती (प्रदोष व्यपिनी)।

विक्रम सम्वत् २०८३, ईसवीय सन् २०२६ - २७ व्रत, पर्व एवं उत्सव

पौष कृष्ण पक्ष (दि. २४ दिसम्बर २०२६ से ०७ जनवरी २०२७ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वितीया	**२५ दिसम्बर**	शुक्र	क्रिसमस दिवस, ईसामसीह जयन्ती।
तृतीया/चतुर्थी	**२६ दिसम्बर**	शनि	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:११
सप्तमी	**३० दिसम्बर**	बुध	कालाष्टमी।
नवमी	**०१ जनवरी**	शुक्र	आंग्ल नववर्षारम्भ।
एकादशी	**०३ जनवरी**	रवि	सफला एकादशी व्रत (स.)।
त्रयोदशी	**०५ जनवरी**	मंगल	भौम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि।
अमावस्या	**०७ जनवरी**	गुरु	अमावस्या।

पौष शुक्ल पक्ष (दि. ०८ जनवरी से २२ जनवरी २०२७ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वितीया	**०९ जनवरी**	शनि	चन्द्रदर्शन।
तृतीया	**११ जनवरी**	सोम	विनायक चतुर्थी।
चतुर्थी	**१२ जनवरी**	मंगल	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, युवा दिवस।
पंचमी	**१३ जनवरी**	बुध	लोहड़ी (पंजाब)।
षष्ठी	**१४ जनवरी**	गुरु	मकर संक्रान्ति २१:१०, सं. पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर से सूर्यास्त, पोंगल।
अष्टमी	**१६ जनवरी**	शनि	दुर्गाष्टमी।
दशमी	**१८ जनवरी**	सोम	रोहिणी व्रत।
एकादशी	**१९ जनवरी**	मंगल	पुत्रदा एकादशी व्रत (स.)।
त्रयोदशी	**२० जनवरी**	बुध	प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**२१ जनवरी**	गुरु	पूर्णिमा व्रत।
पूर्णिमा	**२२ जनवरी**	शुक्र	सत्यव्रत, शाकम्भरी जयन्ती, माघ स्नान प्रा.।

माघ कृष्ण पक्ष (दि. २३ जनवरी से ०६ फरवरी २०२७ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**२३ जनवरी**	शनि	सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती।
तृतीया/ चतुर्थी	**२५ जनवरी**	सोम	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:१३, संकष्ट चतुर्थी, सकट चौथ, गणेशावातर, हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्य दिवस।
चतुर्थी	**२६ जनवरी**	मंगल	भारतीय गणतंत्र दिवस।
अष्टमी	**२९ जनवरी**	शुक्र	कालाष्टमी।
एकादशी	**०२ फरवरी**	मंगल	षट्तिला एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी	**०३ फरवरी**	बुध	प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	**०४ फरवरी**	गुरु	मास शिवरात्रि।
अमावस्या	**०६ फरवरी**	शनि	मौनी अमावस्या, यम तर्पण, प्रयाग स्नान।

माघ शुक्ल पक्ष (दि. ०७ फरवरी से २० फरवरी २०२७ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**०७ फरवरी**	रवि	गुप्त (शिशिर) नवरात्र प्रा.।
द्वितीया	**०८ फरवरी**	सोम	चन्द्रदर्शन।
चतुर्थी	**१० फरवरी**	बुध	विनायक चतुर्थी, तिल चतुर्थी।
पञ्चमी	**११ फरवरी**	गुरु	वसनत पञ्चमी, श्री पञ्चमी, सरस्वती पूजन।
षष्ठी	**१२ फरवरी**	शुक्र	स्कन्द षष्ठी।
सप्तमी	**१३ फरवरी**	शनि	कुम्भ संक्रान्ति १०:०९, सं. पुण्यकाल सूर्योदय से १०:०९ तक, रथ सप्तमी, भानु सप्तमी, अचला सप्तमी।
अष्टमी	**१४ फरवरी**	रवि	भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, मन्वादि।
नवमी	**१५ फरवरी**	सोम	गुप्त (शिशिर) नवरात्र समा., रोहिणी व्रत।
एकादशी	**१७ फरवरी**	बुध	जया एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी	**१८ फरवरी**	गुरु	भीष्म द्वादशी, तिल द्वादशी, प्रदोष व्रत, मरु महोत्सव जैसलमेर राज. (प्रा.)।

विक्रम सम्वत् २०८३ , ईसवीय सन् २०२६ - २७ व्रत, पर्व एवं उत्सव

माघ शुक्ल पक्ष (दि. ०७ फरवरी से २० फरवरी २०२७ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
चतु./पूर्णिमा	**२० फरवरी**	शनि	माघी पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, गुरु रविदास जयन्ती, मरु महोत्सव (समा.), माघ स्नान समा., श्री ललिता जयन्ती, महाकवि माघ जयन्ती।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष (दि. २१ फरवरी से ०८ मार्च २०२७ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
तृतीया	**२३ फरवरी**	मंगल	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:५८, अर्घ्यदान २१:४९ के बाद।
सप्तमी	**२७ फरवरी**	शनि	कालाष्टमी।
दशमी	**०२ मार्च**	मंगल	महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती।
एकादशी	**०४ मार्च**	बुध	विजया एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी	**०५ मार्च**	शुक्र	प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	**०६ मार्च**	शनि	महाशिवरात्रि व्रत।
चतुर्दशी	**०७ मार्च**	रवि	महाशिवरात्रि व्रत पारणा।
अमावस्या	**०८ मार्च**	सोम	सोमवती अमावस्या, युगादि अमावस्या।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष (दि. ०९ मार्च से २२ मार्च २०२७ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वितीया	**१० मार्च**	बुध	चन्द्रदर्शन, फुलैरा दोज, रामकृष्ण परमहंस जयन्ती।
चतुर्थी	**१२ मार्च**	शुक्र	विनायक चतुर्थी।
षष्ठी	**१४ मार्च**	रवि	रोहिणी व्रत।
सप्तमी	**१५ मार्च**	सोम	मीन संक्रान्ति ०७:००, सं. पुण्यकाल ०७:०० से १३:२४ तक, दुर्गाष्टमी।
अष्टमी	**१६ मार्च**	मंगल	ओली जैन प्रा., होलाष्टक प्रा.।
एकादशी	**१८ मार्च**	गुरु	आमलकी (रङ्गभरी) एकादशी व्रत (स्मा.+वै.)।
द्वादशी	**१९ मार्च**	शुक्र	आमलकी (रङ्गभरी) एकादशी व्रत (नि.), गोविन्द द्वादशी।
त्रयोदशी	**२० मार्च**	शनि	शनि प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**२१ मार्च**	रवि	पूर्णिमा व्रत।
पूर्णिमा	**२२ मार्च**	सोम	होलाष्टक समा., सत्यव्रत, चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, ओली जैन समा., मन्वादि, होलिका दहन भद्रोपरान्त २९:१५ से ३०:२८ तक।

चैत्र कृष्ण पक्ष (दि. २३ मार्च से ०६ अप्रैल २०२७ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**२३ मार्च**	मंगल	आम्रकलिका प्राशन, वसन्तोत्सव, धुलैण्डी, धूलिवन्दन।
तृतीया	**२५ मार्च**	गुरु	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:४४ ।
चतुर्थी	**२६ मार्च**	शुक्र	गुड फ्राईडे।
पंचमी	**२७ मार्च**	शनि	रंग पंचमी, मेला नवचण्डी प्रा. (मेरठ)।
षष्ठी	**२८ मार्च**	रवि	एकनाथ षष्ठी।
सप्तमी	**२९ मार्च**	सोम	कालाष्टमी।
अष्टमी	**३० मार्च**	मंगल	शीतलाष्टमी, बासोडा, मेला नवचण्डी, समा. (मेरठ)।
नवमी	**३१ मार्च**	बुध	तीर्थंकर ऋषभदेव जन्म कल्याणक।
दशमी	**०१ अप्रैल**	रवि	उत्कल दिवस।
एकादशी	**०२ अप्रैल**	सोम	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.वै.)
द्वादशी	**०३ अप्रैल**	मंगल	पापमोचिनी एकादशी व्रत (नि.)।
त्रयोदशी	**०४ अप्रैल**	रवि	प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**०५ अप्रैल**	सोम	मासशिवरात्रि।
अमावस्या	**०६ अप्रैल**	मंगल	भौमवती अमावस्या, मेला (पृथूदक पेह्वा) हरियाणा, वि.संवत् २०८३ समा.।

प्रो. सुशील कुमार, आचार्य, ज्योतिष–विभाग

विक्रम संवत् २०८३ के वर्गीकृत व्रत, पर्वों की सूची

।। विनायक चतुर्थी व्रत।।

चैत्र	शु.	चतुर्थी	२२ मार्च २०२६ ई.
वैशाख	शु.	”	२० अप्रैल ”
ज्येष्ठ (अ.)	शु.	”	२० मई ”
ज्येष्ठ (शु.)	शु.	”	१८ जून ”
आषाढ़	शु.	”	१७ जुलाई ”
श्रावण	शु.	”	१६ अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	”	१४ सितम्बर ”
आश्विन	शु.	”	१४ अक्टूबर ”
कार्तिक	शु.	”	१३ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	शु.	”	१३ दिसम्बर ”
पौष	शु.	”	११ जनवरी २०२७ ई.
माघ	शु.	”	१० फरवरी ”
फाल्गुन	शु.	”	१२ मार्च ”

।। संकष्ट चतुर्थी व्रत ।।

वैशाख	कृ.	चतुर्थी	०५ अप्रैल २०२६ ई.
ज्येष्ठ (शु.)	कृ.	”	०५ मई ”
ज्येष्ठ (अ.)	कृ.	”	०३ जून ”
आषाढ़	कृ.	”	०३ जुलाई ”
श्रावण	कृ.	”	०२ अगस्त ”
भाद्रपद	कृ.	”	३१ अगस्त ”
आश्विन	कृ.	”	२९ सितम्बर ”
कार्तिक	कृ.	”	२९ अक्टूबर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	”	२७ नवम्बर ”
पौष	कृ.	”	२६ दिसम्बर ”
माघ	कृ.	”	२५ जनवरी २०२७ ई.
फाल्गुन	कृ.	”	२३ फरवरी ”
चैत्र	कृ.	”	२५ मार्च ”

।। दुर्गाष्टमी व्रत ।।

चैत्र	शु.	अष्टमी	२६ मार्च २०२६ ई.
वैशाख	शु.	”	२४ अप्रैल ”
ज्येष्ठ (अ.)	शु.	”	२३ मई ”
ज्येष्ठ (शु.)	शु.	”	२२ जून ”
आषाढ़	शु.	”	२१ जुलाई ”
श्रावण	शु.	”	२० अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	”	१९ सितम्बर ”
आश्विन	शु.	”	१९ अक्टूबर ”
कार्तिक	शु.	”	१७ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	शु.	”	१७ दिसम्बर ”
पौष	शु.	”	१६ जनवरी २०२७ई.
माघ	शु.	”	१४ फरवरी ”
फाल्गुन	शु.	”	१५ मार्च ”

।। कालाष्टमी व्रत ।।

वैशाख	कृ.	अष्टमी	०९ अप्रैल २०२६ ई.
ज्येष्ठ (शु.)	कृ.	”	०९ मई ”
ज्येष्ठ (अ.)	कृ.	”	०८ जून ”
आषाढ़	कृ.	”	०७ जुलाई ”
श्रावण	कृ.	”	०५ अगस्त ”
भाद्रपद	कृ.	”	०४ सितम्बर ”
आश्विन	कृ.	”	०३ अक्टूबर ”
कार्तिक	कृ.	”	०१ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	”	०१ दिसम्बर ”
पौष	कृ.	”	३० दिसम्बर ”
माघ	कृ.	”	२९ जनवरी २०२७ई.
फाल्गुन	कृ.	”	२७ फरवरी ”
चैत्र	कृ.	”	२९ मार्च ”

।। एकादशी व्रत ।।

चैत्र	शु.	कामदा	२९ मार्च २०२६ ई.
वैशाख	कृ.	वरुथिनी (स्मा.वै.)	१३ अप्रैल ”
वैशाख	कृ.	वरुथिनी (नि.)	१४ अप्रैल ”
वैशाख	शु.	मोहिनी	२७ अप्रैल ”
ज्येष्ठ (शु.)	कृ.	अपरा	१३ मई ”
ज्येष्ठ (अ.)	शु.	कमला	२७ मई ”
ज्येष्ठ (अ.)	कृ.	कमला (स्मा.वै.)	११ जून ”
ज्येष्ठ (अ.)	कृ.	कमला (नि.)	१२ जून ”
ज्येष्ठ (शु.)	शु.	निर्जला	२५ जून ”
आषाढ़	कृ.	योगिनी (स्मा.)	१० जुलाई ”
आषाढ़	कृ.	योगिनी (वै.)	११ जुलाई ”
आषाढ़	शु.	देवशयनी	२५ जुलाई ”
श्रावण	कृ.	कामिका	०९ अगस्त ”
श्रावण	शु.	पुत्रदा (पवित्रा) (स्मा.वै.)	२३ अगस्त ”
श्रावण	शु.	पुत्रदा (पवित्रा)(नि.)	२४ अगस्त ”
भाद्रपद	कृ.	अजा	०७ सितम्बर ”
भाद्रपद	शु.	पार्श्वपरिवर्तिनी	२२ सितम्बर ”
आश्विन	कृ.	इन्दिरा (स्मा.वै.)	०६ अक्टूबर ”
आश्विन	कृ.	इन्दिरा (नि.)	०७ अक्टूबर ”
आश्विन	शु.	पापांकुशा	२२ अक्टूबर ”
कार्तिक	कृ.	रमा	०५ नवम्बर ”
कार्तिक	शु.	देवोत्थान (स्मा.)	२० नवम्बर ”
कार्तिक	शु.	देवोत्थान (वै.)	२१ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	उत्पन्ना	०४ दिसम्बर ”
मार्गशीर्ष	शु.	मोक्षदा	२० दिसम्बर ”
पौष	कृ.	सफला	०३ जनवरी २०२७ ई.
पौष	शु.	पुत्रदा	१९ जनवरी ”
माघ	कृ.	षट्तिला	०२ फरवरी २०२७ई.
माघ	शु.	जया	१७ फरवरी ”
फाल्गुन	कृ.	विजया	०४ मार्च ”
फाल्गुन	शु.	आमलकी (स्मा.वै.) (रङ्गभरी)	१८ मार्च ”
फाल्गुन	शु.	आमलकी (नि.) (रङ्गभरी)	१९ मार्च ”
चैत्र	कृ.	पापमोचिनी (स्मा.वै.)	०२ अप्रैल ”
चैत्र	कृ.	पापमोचिनी (नि.)	०३ अप्रैल ”

।। प्रदोष व्रत ।।

चैत्र	शु.	त्रयोदशी	३० मार्च २०२६ ई.
वैशाख	कृ.	”	१५ अप्रैल ”
वैशाख	शु.	”	२९ अप्रैल ”
ज्येष्ठ (शु.)	कृ.	”	१४ मई ”
ज्येष्ठ (अ.)	शु.	”	२८ मई ”
ज्येष्ठ (अ.)	कृ.	”	१२ जून ”
ज्येष्ठ (शु.)	शु.	”	२७ जून ”
आषाढ़	कृ.	”	१२ जुलाई ”
आषाढ़	शु.	”	२६ जुलाई ”
श्रावण	कृ.	”	१० अगस्त ”
श्रावण	शु.	”	२५ अगस्त ”
भाद्रपद	कृ.	”	०८ सितम्बर ”
भाद्रपद	शु.	”	२४ सितम्बर ”
आश्विन	कृ.	”	०८ अक्टूबर ”
आश्विन	शु.	”	२३ अक्टूबर ”
कार्तिक	कृ.	”	०६ नवम्बर ”
कार्तिक	शु.	”	२२ नवम्बर ”

विक्रम संवत् २०८३ के वर्गीकृत व्रत, पर्वों की सूची

मार्गशीर्ष	कृ.	त्रयोदशी	०६ दिसम्बर २०२६ ई.
मार्गशीर्ष	शु.	”	२१ दिसम्बर ”
पौष	कृ.	”	०५ जनवरी २०२७ ई.
पौष	शु.	”	२० जनवरी ”
माघ	कृ.	”	०३ फरवरी ”
माघ	शु.	”	१८ फरवरी ”
फाल्गुन	कृ.	”	०५ मार्च ”
फाल्गुन	शु.	”	२० मार्च ”
चैत्र	कृ.	”	०४ अप्रैल ”

।। मास शिवरात्रि ।।

वैशाख	कृ.	चतुर्दशी	१५ अप्रैल २०२६ ई.
ज्येष्ठ (शु.)	कृ.	”	१५ मई ”
ज्येष्ठ (अ.)	कृ.	”	१३ जून ”
आषाढ़	कृ.	”	१२ जुलाई ”
श्रावण	कृ.	”	११ अगस्त ”
भाद्रपद	कृ.	”	०९ सितम्बर ”
आश्विन	कृ.	”	०८ अक्टूबर ”
कार्तिक	कृ.	”	०७ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	”	०७ दिसम्बर ”
पौष	कृ.	”	०५ जनवरी २०२७ ई.
माघ	कृ.	”	०४ फरवरी ”
फाल्गुन	कृ.	”	०६ मार्च ”
चैत्र	कृ.	”	०५ अप्रैल ”

।। अमावस्या श्राद्धादि ।।

वैशाख	कृ.	अमावस्या	१७ अप्रैल २०२६ ई.
ज्येष्ठ (शु.)	कृ.	अमावस्या	१६ मई २०२६ ई.
ज्येष्ठ (अ.)	कृ.	”	१४ जून ”
आषाढ़	कृ.	”	१४ जुलाई ”
श्रावण	कृ.	”	१२ अगस्त ”
भाद्रपद	कृ.	”	१० सितम्बर ”
आश्विन	कृ.	”	१० अक्टूबर ”
कार्तिक	कृ.	”	०८ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	”	०८ दिसम्बर ”
पौष	कृ.	”	०७जनवरी२०२७ई.
माघ	कृ.	”	०६ फरवरी ”
फाल्गुन	कृ.	”	०८ मार्च ”
चैत्र	कृ.	”	०६ अप्रैल ”

।। सत्यनारायण व्रत ।।

चैत्र	शु.	पूर्णिमा	०२ अप्रैल २०२६ ई.
वैशाख	शु.	”	०१ मई ”
ज्येष्ठ (अ.)	शु.	”	३१ मई ”
ज्येष्ठ (शु.)	शु.	”	२९ जून ”
आषाढ़	शु.	”	२९ जुलाई ”
श्रावण	शु.	”	२८ अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	”	२६ सितम्बर ”
आश्विन	शु.	”	२६ अक्टूबर ”
कार्तिक	शु.	”	२४ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	शु.	”	२३ दिसम्बर ”
पौष	शु.	”	२२जनवरी २०२७ ई.
माघ	शु.	”	२० फरवरी ”
फाल्गुन	शु.	”	२२ मार्च ”

।। पूर्णिमा व्रत ।।

चैत्र	शु.	पूर्णिमा	०१ अप्रैल २०२६ ई.
वैशाख	शु.	”	०१ मई ”
ज्येष्ठ (अ.)	शु.	”	३० मई ”
ज्येष्ठ (शु.)	शु.	”	२९ जून ”
आषाढ़	शु.	”	२८ जुलाई ”
श्रावण	शु.	”	२७ अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	”	२६ सितम्बर ”
आश्विन	शु.	”	२५ अक्टूबर ”
कार्तिक	शु.	”	२४ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	शु.	”	२३ दिसम्बर ”
पौष	शु.	”	२१ जनवरी २०२७ ई.
माघ	शु.	”	२० फरवरी ”
फाल्गुन	शु.	”	२१ मार्च ”

।। संक्रान्तियों का पुण्यकाल ।।

मेष	१४ अप्रैल २०२६ ई.	०९:३२से १५:५६ तक
वृष	१५ मई ”	सूर्योदय से ०९:३४ तक
मिथुन	१५ जून ”	१२:५३ तक
कर्क	१६ जुलाई ”	से सूर्यास्त मध्याह्नोत्तर
सिंह	१७ अगस्त ”	सूर्योदय से ११:१० तक
कन्या	१७ सितम्बर ”	०७:५२ से १४:१६ तक
तुला	१७ अक्टूबर ”	मध्याह्नोत्तर
वृश्चिक	१६ नवम्बर ”	दिनार्धोत्तर
धनु	१६ दिसम्बर ”	१०:२५ से १६:४८ तक
मकर	१४ जनवरी २०२७ ई.	मध्याह्नोत्तर से सूर्यास्त तक
कुम्भ	१३ फरवरी ”	सूर्योदय से १०:०९ तक
मीन	१५ मार्च ”	०७:०० से १३:२४ तक

।। दशावतार जयन्तियाँ ।।

श्री मत्स्य जय.	चैत्र शु.३	२१ मार्च २०२६ ई.
श्री राम जय.	चैत्र शु.९	२६ मार्च ”
श्री परशुराम जय.	वै.शु. ३	१९ अप्रैल ”
श्री नृसिंह जय.	वै.शु. १४	३० अप्रैल ”
श्री बुद्ध जय.	वै.शु. १५	०१ मई ”
श्री कूर्म जय.	वै.शु. १५	०१ मई ”
श्री कल्कि जय.	श्रा.शु. ६	१७ अगस्त ”
श्री कृष्ण जय.	भा.कृ. ८	०४ सितम्बर ”
श्री वाराह जय.	भा.शु. ३	१३ सितम्बर ”
श्री वामन जय.	भा.शु.१२	२३ सितम्बर ”

।। दशमहाविद्या जयन्तियाँ।।

श्री तारा	चै.शु. ९	२६ मार्च २०२६ ई.
श्री मातंगी	वै.शु. ३	१९ अप्रैल ”
श्री बगलामुखी	वै.शु. ८	२४ अप्रैल ”
श्री छिन्नमस्तका	वै.शु. १४	३० अप्रैल ”
श्री धूमावती	ज्ये.शु. ८	२२ जून ”
श्री काली	भाद्र.कृ. ८	०४सितम्बर”
श्री भुवनेश्वरी	भाद्र.शु. १२	२३ सितम्बर”
श्री कमला	कार्ति.कृ.३०	०८ नवम्बर ”
श्री त्रिपुरभैरवी	मार्ग शु.१५	२३ दिसम्बर”
श्री ललिता	माघ शु.१५	२० फरवरी २०२७ ई.

प्रो. सुशील कुमार
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार (भा. स्टैं.टा.) विक्रम संवत् २०८३

।। निरयण सूर्य संक्रमण (राशिचार)।।

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
१४.०४.२०२६	मंगल	मेष	०९:३२
१५.०५.२०२६	शुक्र	वृष	०६:२२
१५.०६.२०२६	सोम	मिथुन	१२:५३
१६.०६.२०२६	गुरु	कर्क	२३:३९
१७.०८.२०२६	सोम	सिंह	०७:५८
१७.०९.२०२६	गुरु	कन्या	०७:५३
१७.१०.२०२६	शनि	तुला	१९:५१
१६.११.२०२६	सोम	वृश्चिक	१९:४३
१६.१२.२०२६	बुध	धनु	१०:२५
१४.०१.२०२७	गुरु	मकर	२१:१०
१३.०२.२०२७	शनि	कुम्भ	१०:०९
१५.०३.२०२७	सोम	मीन	०७:००

॥ मंगल राशिचार ॥

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
०२.०४.२०२६	गुरु	मीन	१५:२९
११.०५.२०२६	सोम	मेष	१२:३८
२०.०६.२०२६	शनि	वृष	२३:५९
०२.०८.२०२६	रवि	मिथुन	२२:५१
१८.०९.२०२६	शुक्र	कर्क	१६:३५
१२.११.२०२६	गुरु	सिंह	२०:१८
०९.०३.२०२७	मंगल	सिंह (व)	२४:१३

॥ बुध राशिचार ॥

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
१०.०४.२०२६	शुक्र	मीन	२५:१६
३०.०४.२०२६	गुरु	मेष	०६:५२
१४.०५.२०२६	गुरु	वृष	२४:३२
२९.०५.२०२६	शुक्र	मिथुन	११:१२
२२.०६.२०२६	सोम	कर्क	१५:३०
०७.०७.२०२६	मंगल	कर्क (व)	१०:४६
०५.०८.२०२६	बुध	कर्क	१९:५४
२२.०८.२०२६	शनि	सिंह	१९:३२
०७.०९.२०२६	सोम	कन्या	१३:३३
२६.०९.२०२६	शनि	तुला	१२:३८
०२.१२.२०२६	बुध	वृश्चिक	१७:२७
२२.१२.२०२६	मंगल	धनु	०७:३९
०९.०१.२०२७	शनि	मकर	२४:३७
२७.०१.२०२७	बुध	कुम्भ	२७:३४
२३.०२.२०२७	मंगल	कुम्भ	२८:४०
११.०३.२०२७	गुरु	कुम्भ	२९:०७
०५.०४.२०२७	सोम	मीन	१६:१६

॥ गुरु राशिचार ॥

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
०१.०६.२०२६	सोम	कर्क	२५:४९
३१.१०.२०२६	शनि	सिंह	१२:०१
२४.०१.२०२७	रवि	सिंह (व)	२५:३२

॥ शुक्र राशिचार ॥

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
२५.०३.२०२६	बुध	मेष	२९:०९
१९.०४.२०२६	रवि	वृष	१५:४७
१४.०५.२०२६	गुरु	मिथुन	१०:५३
०८.०६.२०२६	सोम	कर्क	१७:४३
०४.०७.२०२६	शनि	सिंह	१९:१४
०१.०८.२०२६	शनि	कन्या	०९:२८
०२.०९.२०२६	बुध	तुला	१३:४४
०६.११.२०२६	शुक्र	तुला (व)	२५:०४
२२.११.२०२६	रवि	तुला	१७:२१
०१.०१.२०२७	शुक्र	वृश्चिक	२३:२३
२९.०१.२०२७	शुक्र	धनु	१८:४१
२४.०२.२०२७	बुध	मकर	१५:१६
२१.०३.२०२७	रवि	कुम्भ	१८:५१

॥ शनि राशिचार ॥

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय

वर्षभर शनि मीन राशि में संचार करेगा।

॥ राहु राशिचार ॥

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
०५.१२.२०२६	शनि	कुम्भ	२२:३२

॥ केतु राशिचार ॥

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
०५.१२.२०२६	शनि	सिंह	२२:३३

॥ सायन सूर्य संक्रमण (राशिचार)॥

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
२०.०३.२०२६	शुक्र	मेष	२०:१४
२०.०४.२०२६	सोम	वृष	०७:०७
२१.०५.२०२६	गुरु	मिथुन	०६:०५
२१.०६.२०२६	रवि	कर्क	१३:५३
२२.०७.२०२६	बुध	सिंह	२४:४१
२३.०८.२०२६	रवि	कन्या	०७:४७
२२.०९.२०२६	मंगल	तुला	२९:३३
२३.१०.२०२६	शुक्र	वृश्चिक	१५:०६
२२.११.२०२६	रवि	धनु	१२:५१
२१.१२.२०२६	सोम	मकर	२६:०७
२०.०१.२०२७	बुध	कुम्भ	१२:५७
१८.०२.२०२७	गुरु	मीन	२७:०१
२०.०३.२०२७	शनि	मेष	२५:५२

॥ सूर्य नक्षत्रचार ॥

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
३१.०३.२०२६	मंगल	रेवती	२०:१०
१४.०४.२०२६	मंगल	अश्वि.	०९.३२
२७.०४.२०२६	सोम	भरणी	२५:१८
११.०५.२०२६	सोम	कृत्ति.	१९:३१
२५.०५.२०२६	सोम	रोहि.	१५:३७
०८.०६.२०२६	सोम	मृग.	१३:३३
२२.०६.२०२६	सोम	आर्द्रा	१२:२६
०६.०७.२०२६	सोम	पुन.	१२:०३
२०:०७.२०२६	सोम	पुष्य	११:२८
०३.०८.२०२६	सोम	आश्ले.	१०:२४
१७:०८.२०२६	सोम	मघा	०७:५८
३०:०८.२०२६	रवि	पू.फा.	२७:५९
१३.०९.२०२६	रवि	उ.फा.	२१:४८
२७.०९.२०२६	रवि	हस्त	१३:१९
१०.१०.२०२६	शनि	चित्रा	२६:२०
२४.१०.२०२६	शनि	स्वा.	१२:५०
०६.११.२०२६	शुक्र	विशा.	२१:०३
१९.११.२०२६	गुरु	अनु.	२७:०४

ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार (भा. स्टैं.टा.) विक्रम संवत् २०८३

०३.१२.२०२६	गुरु	ज्येष्ठा	०७:२८
१६.१२.२०२६	बुध	मूल	१०:२५
२९.१२.२०२६	मंगल	पू.षा.	१२:४४
११.०१.२०२७	सोम	उ.षा.	१४:३९
२४.०१.२०२७	रवि	श्रवण	१७:००
०६.०२.२०२७	शनि	धनि.	२०:०८
१९.०२.२०२७	शुक्र	शत.	२४:३७
०५.०३.२०२७	शुक्र	पू.भा.	०६:५७
१८.०३.२०२७	गुरु	उ.भा.	१५:२०
३१.०३.२०२७	बुध	रेवती	२६:१३

।। मंगल नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
२०.०३.२०२६	शुक्र	पू.भा.	२१:२१
०६.०४.२०२६	सोम	उ.भा.	२१:५६
२३.०४.२०२६	गुरु	रेवती	२६:२२
११.०५.२०२६	सोम	अश्वि.	१२:३८
२९.०५.२०२६	शुक्र	भरणी	०६:२५
१६.०६.२०२६	मंगल	कृत्ति.	०६:३२
०४.०७.२०२६	शनि	रोहि.	२३:५४
२३.०७.२०२६	गुरु	मृग.	२७:२१
१२.०८.२०२६	बुध	आर्द्रा	२२:३४
०२.०९.२०२६	बुध	पुन.	१३:१६
२३.०९.२०२६	बुध	पुष्य	२९:४१
१७.१०.२०२६	शनि	आश्ले.	१२:४६
१२.११.२०२६	गुरु	मघा	२०:१८
१९.१२.२०२६	शनि	पू.फा.	१०:२०
३१.०१.२०२७	रवि	पू.फा.(व)	१६:०७
०९.०३.२०२७	मंगल	मघा(व)	२४:१३

।। बुध नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
०१.०४.२०२६	बुध	पू.भा.	२०:१२
१३.०४.२०२६	सोम	उ.भा.	१४:२२
२२.०४.२०२६	बुध	रेवती	१३:३७
३०.०४.२०२६	गुरु	अश्वि.	०६:५२
०६.०५.२०२६	बुध	भरणी	२७:५९
१३.०५.२०२६	बुध	कृत्ति.	११:४५
१९.०५.२०२६	मंगल	रोहि.	१४:३४
२५.०५.२०२६	सोम	मृग.	२३:४७
०२.०६.२०२६	मंगल	आर्द्रा	०६:११
११.०६.२०२६	गुरु	पुन.	११:२६
०८.०८.२०२६	शनि	पुष्य	०७:२०
१५.०८.२०२६	शनि	आश्ले.	२६:१७
२२.०८.२०२६	शनि	मघा	१९:३२
२९.०८.२०२६	शनि	पू.फा.	१२:५६
०५.०९.२०२६	शनि	उ.फा.	१६:२९
१३.०९.२०२६	रवि	हस्त	१०:४५
२१.०९.२०२६	सोम	चित्रा	२२:४३
०१.१०.२०२६	गुरु	स्वाति	०९:२९
१२.१०.२०२६	सोम	विशा.	१८:४२
०२.११.२०२६	सोम	विशा.(व)	२९:५९
२५.११.२०२६	बुध	विशा.	१३:४१
०४.१२.२०२६	शुक्र	अनु.	२३:१७
१३.१२.२०२६	रवि	ज्ये.	१७:१८
२२.१२.२०२६	मंगल	मूल	०७:३९
३०.१२.२०२६	बुध	पू.षा.	१८:३१
०७.०१.२०२७	गुरु	उ.षा.	२४:०९
१५.०१.२०२७	शुक्र	श्रव.	२४:०५
२३.०१.२०२७	शनि	धनि.	२२:४९
०१.०२.२०२७	सोम	शत.	२४:५८
१७.०२.२०२७	बुध	शत. (व)	२२:१२
१९.०३.२०२७	शुक्र	शत.	११:५६
२९.०३.२०२७	सोम	पू.भा.	२५:०३

।। गुरु नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
१८.०६.२०२६	गुरु	पुष्य	२१:०१
१८.०८.२०२६	मंगल	आश्ले.	२७:११
३१.१०.२०२६	शनि	मघा	१२:०१
२४.०१.२०२७	रवि	मघा (व)	२५:३२

।। शुक्र नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
२५.०३.२०२६	बुध	अश्वि.	२९:०९
०५.०४.२०२६	रवि	भरणी	२४:५९
१६.०४.२०२६	गुरु	कृत्ति.	२२:१४
२७.०४.२०२६	सोम	रोहि.	२१:०३
०८.०५.२०२६	शुक्र	मृग.	२१:४७
१९.०५.२०२६	मंगल	आर्द्रा	२४:३२
३१.०५.२०२६	रवि	पुन.	०५:४७
११.०६.२०२६	गुरु	पुष्य	१४:०६
२२.०६.२०२६	सोम	आश्ले.	२६:०८
०४.०७.२०२६	शनि	मघा	१९:१४
१६.०७.२०२६	गुरु	पू.फा.	१९:०७
२८.०७.२०२६	मंगल	उ.फा.	२८:५२
११.०८.२०२६	मंगल	हस्त	०६:२८
२५.०८.२०२६	मंगल	चित्रा	१२:४९
११.०९.२०२६	शुक्र	स्वाति	२३:१०
२३.१०.२०२६	शुक्र	स्वाति(व)	२७:२२
०५.१२.२०२६	शनि	स्वाति	२२:५९
२२.१२.२०२६	मंगल	विशा.	१३:५४
०४:०१.२०२७	सोम	अनु.	३०:०३
१७.०१.२०२७	रवि	ज्ये.	१९:२१
२९.०१.२०२७	शुक्र	मूल	१८:४१
१०.०२.२०२७	बुध	पू.षा.	०९:३७
२१.०२.२०२७	रवि	उ.षा.	१९:२५
०४.०३.२०२७	गुरु	श्रव.	२५:३९
१५.०३.२०२७	सोम	धनि.	२९:३१
२७.०३.२०२७	शनि	शत.	०७:५१

।। शनि नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
१७.०५.२०२६	रवि	रेवती	१४:३७
०९.१०.२०२६	शुक्र	रेवती (व)	२०:५२
०८.०२.२०२७	सोम	रेवती	०७:५१

।। राहु नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
०१.०८.२०२६	शनि	शत	२७:१३

।। केतु नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
२९.०३.२०२६	रवि	पू.फा.	०७:५४
०५.१२.२०२६	शनि	मघा	२२:३३

ग्रहों के वक्रत्व-मार्गत्व एवं उदयास्त (भा. स्टैं.टा.) विक्रम संवत् २०८३

।। ग्रहों का वक्रत्व - मार्गत्व ।।

दिनाङ्क	ग्रह	प्रा. समय	गति
१०.०१.२०२७	मंगल	१८:२९	वक्री
०१.०४.२०२७	मंगल	१९:३८	मार्गी
२०.०३.२०२६	बुध	२५:०३	मार्गी
२९.०६.२०२६	बुध	२३:०६	वक्री
२३.०७.२०२६	बुध	२८:२८	मार्गी
२४.१०.२०२६	बुध	१२:४२	वक्री
१३.११.२०२६	बुध	२१:२४	मार्गी
०९.०२.२०२७	बुध	२३:०६	वक्री
०३.०३.२०२७	बुध	१८:०२	मार्गी
१२.१२.२०२६	गुरु	३०:२६	वक्री
०३.१०.२०२६	शुक्र	१२:४६	वक्री
१३.११.२०२६	शुक्र	२९:५७	मार्गी
२६.०७.२०२६	शनि	२५:२६	वक्री
१०.१२.२०२६	शनि	२९:०१	मार्गी

।। ग्रहों का उदयास्त ।।

दिनाङ्क	ग्रह	स्थिति	प्रा. समय
१७.०४.२०२६	मंगल	उदय	२५:५२
२९.०४.२०२६	बुध	अस्त	०६:५४
२२.०५.२०२६	बुध	उदय	२९:२४
०२.०७.२०२६	बुध	अस्त	१४:३३
२२.०७.२०२६	बुध	उदय	०९:३८
१८.०८.२०२६	बुध	अस्त	०८:४५
१३.०९.२०२६	बुध	उदय	२६:५२
२७.१०.२०२६	बुध	अस्त	०६:४९
०९.११.२०२६	बुध	उदय	२४:४३
१३.१२.२०२६	बुध	अस्त	२२:२०
१८.०१.२०२७	बुध	उदय	१०:०५
१२.०२.२०२७	बुध	अस्त	३०:४८
२४.०२.२०२७	बुध	उदय	१९:३७
१५.०७.२०२६	गुरु	अस्त	१९:२१
१०.०८.२०२६	गुरु	उदय	०५:५१
१३.१०.२०२६	शुक्र	अस्त	१७:५१
२८.१०.२०२६	शुक्र	उदय	३०:३३
१७.०४.२०२६	शनि	उदय	१३:५९
२४.०३.२०२७	शनि	अस्त	२३:५५

प्रो. सुशील कुमार, आचार्य, ज्योतिष विभाग

सर्वार्थसिद्धियोग विक्रम सम्वत् २०८३, ईशवीय सन् २०२६-२७

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
मार्च १९	गुरु	२८:०४	३०:३०	मई २४	रवि	२६:५१	२९:३०	अगस्त ०४	मंगल	२१:५४	२९:४८	अक्टूबर २५	रवि	१९:२२	३०:३३
२०	शुक्र	०६:३०	२६:२८	२७	बुध	०५:२९	०५:५७	०८	शनि	०५:५०	१६:५१	२७	मंगल	१५:३९	३०:३४
२३	सोम	२०:५०	३०:२५	जून ०५	शुक्र	०५:२७	२९:२७	१६	रवि	०५:५५	२७:५१	२८	बुध	०६:३४	१३:२६
२५	बुध	०६:२३	१७:३३	०६	शनि	०५:२७	०६:०३	२०	गुरु	०९:०८	२९:५७	नवम्बर ०१	रवि	०६:३७	२८:३१
२६	गुरु	१६:१९	३०:२१	०९	मंगल	०९:३९	२९:२७	२१	शुक्र	०५:५७	११:५३	०७	शनि	२९:५२	३०:४२
२७	शुक्र	०६:२१	१५:२४	११	गुरु	०५:२७	०८:१६	२३	रवि	०५:५८	१७:४५	११	बुध	०६:४२	११:३८
अप्रैल ०१	बुध	१६:१७	३०:१४	१२	शुक्र	०५:२७	०६:२८	३०	रवि	०६:०२	२७:४५	१५	रवि	०६:४५	२३:२९
०४	शनि	०६:१२	२१:३५	१३	शनि	२५:१७	२९:२७	सितम्बर ०१	मंगल	०६:०३	२६:४२	१६	सोम	०६:४९	२६:१७
०६	सोम	०६:१०	२६:५६	१५	सोम	०५:२७	१९:०८	०२	बुध	२५:४२	३०:०४	२२	रवि	०६:५३	२८:१६
११	शनि	१३:४०	३०:०३	१८	गुरु	०५:२७	११:३२	०७	सोम	१८:१४	३०:०६	२४	मंगल	०६:५५	२३:२५
१६	गुरु	१३:५९	२९:५८	२१	रवि	०९:३१	२९:२८	०८	मंगल	१६:३९	३०:०७	२५	बुध	०६:५६	२०:३६
१७	शुक्र	०५:५८	१२:०२	२६	शुक्र	१९:१६	२९:२९	१३	रवि	०६:०९	१३:०७	२७	शुक्र	१५:०८	३०:५८
२०	सोम	०५:५५	२६:०८	२८	रवि	०५:०९	२९:३०	१६	बुध	१७:२२	३०:११	२९	रवि	०६:५९	११:००
२३	गुरु	०५:५२	२०:५७	जुलाई ०३	शुक्र	०५:३१	११:४७	१७	गुरु	०६:११	१९:५४	दिसम्बर ०५	शनि	११:४९	३१:०४
२९	बुध	०५:४६	२४:१६	०७	मंगल	०५:३३	१६:२४	२०	रवि	२८:३५	३०:१३	०७	सोम	१५:४८	३१:०६
मई ०४	सोम	०५:४३	०९:५८	०९	गुरु	०५:३४	१४:५६	२७	रवि	०६:१६	११:०८	१२	शनि	३०:१२	३१:०९
०८	शुक्र	२१:२०	२९:३८	११	शनि	११:०३	२९:३५	२९	मंगल	०६:१७	०९:०३	१४	सोम	०७:१०	०९:१२
०९	शनि	०५:३८	२५:२५	१३	सोम	०५:३६	०५:४२	अक्टूबर ०४	रवि	२४:१४	३०:२०	१८	शुक्र	१६:१०	३१:१३
१२	मंगल	२५:१७	२९:३६	१९	रवि	०५:३९	१८:१२	०५	सोम	०६:२०	२३:०९	२०	रवि	०७:१३	१४:५५
१४	गुरु	०५:३५	२२:३४	२३	गुरु	२५:४३	२९:४२	०६	मंगल	०६:२१	२२:१७	२२	मंगल	०७:१४	१०:४५
१५	शुक्र	०५:३४	२०:१५	२४	शुक्र	०५:४२	२८:३६	१४	बुध	०६:२५	२८:०३	२३	बुध	०७:१५	०७:५६
१८	सोम	०५:३३	११:३२	२६	रवि	०७:३५	२९:४३	१८	रवि	१२:४९	३०:२८	२४	गुरु	२५:४७	३१:१६
२१	गुरु	०५:३१	२६:४९	अगस्त ०२	रवि	२१:३७	२९:४७	१९	सोम	१५:३९	३०:२९	२५	शुक्र	०७:१६	२०:५०
												३०	बुध	१५:३७	३१:१८

सर्वार्थसिद्धियोग विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क २०२७ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
जनवरी ०२	शनि	०७:१८	१९:१९
०४	सोम	०७:१९	२४:१५
०९	शनि	१२:१६	३१:१९
१४	गुरु	२३:१९	३१:१९
१५	शुक्र	०७:१९	३१:१६
१८	सोम	२१:०५	३१:१९
२०	बुध	०७:१८	१६:१७
२१	गुरु	१३:२४	३१:१८
२२	शुक्र	०७:१८	१०:२५
२७	बुध	०७:१६	२३:५६
फरवरी ०५	शुक्र	१८:३२	३१:११
०६	शनि	०७:११	२१:१९
०९	मंगल	२७:४०	३१:०८
११	गुरु	०७:०७	२९:४२
१२	शुक्र	०७:०६	२९:५६
१५	सोम	०७:०४	२७:२६
१८	गुरु	०७:०१	२१:०६
२४	बुध	०६:५६	०९:३९
मार्च ०५	शुक्र	०६:४६	२८:२१
०९	मंगल	०९:५८	३०:४१
११	गुरु	०६:४०	११:२०
१२	शुक्र	०६:३९	११:२२
१५	सोम	०६:३५	०९:२६
१८	गुरु	०६:३२	२७:२१

दिनाङ्क २०२७ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
२१	रवि	२२:०६	३०:२७
२६	शुक्र	२०:३६	३०:२१
२८	रवि	२४:३२	३०:१९
अप्रैल ०२	शुक्र	०६:१५	१२:१६
०६	मंगल	०६:१०	१८:२३

गुरुपुष्ययोग
विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अप्रैल २३	गुरु	२०:५७	२९:५२
मई २१	गुरु	०५:३२	२६:४९
जून १८	गुरु	०५:२७	११:३२
२०२७ ई.			
फरवरी १८	गुरु	२१:०५	३१:०१
मार्च १८	गुरु	०६:३२	२७:२०

रविपुष्ययोग
विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अक्टूबर ०४	रवि	२४:१३	३०:२०
नवम्बर ०१	रवि	०६:३७	२८:३१
२९	रवि	०६:५९	१०:५९

द्विपुष्करयोग विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
मार्च २४	मंगल	१९:०५	३०:२४
जून ०६	शनि	२६:४१	२९:२७
जून ०७	रवि	०५:२७	०७:५६
अगस्त ०९	रवि	११:०५	१४:४३
अक्टूबर ११	रवि	२१:३१	२२:३२
दिसम्बर ०५	शनि	०७:०४	११:४९
२०२७ ई.			
जनवरी १९	मंगल	१८:५४	२८:४१
फरवरी ०७	रवि	२३:२७	२३:४८
मार्च २३	मंगल	१९:४९	३०:२५
अप्रैल ०३	शनि	०६:१३	१४:४१

त्रिपुष्करयोग
विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अप्रैल १४	मंगल	१६:०६	२४:१३
१९	रवि	०७:१०	१०:५०
२८	मंगल	०५:४७	१८:५२
मई ०२	शनि	२४:५०	२९:४३

त्रिपुष्करयोग विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
०३	रवि	०५:४३	०७:१०
जून १६	मंगल	१६:१२	२४:५३
२१	रवि	०९:३१	१५:२१
जुलाई ११	शनि	०५:३५	११:०३
अगस्त २५	मंगल	०६:००	०६:२१
२९	शनि	०९:५७	२७:४२
सितम्बर १२	शनि	०७:४६	१२:५५
अक्टूबर २७	मंगल	१५:३९	२८:०७
३१	शनि	१६:५८	२९:४०
दिसम्बर २९	मंगल	१५:४२	२९:१७
२०२७ ई.			
जनवरी ०३	रवि	१६:०८	२१:३६
०९	शनि	०७:१९	१२:१५
फरवरी २७	शनि	०६:५३	११:३८

सिद्धियोग विक्रम सम्वत् २०८३, ईश्वीय सन् २०२६ – २७

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
मार्च २१	शनि	२३:५६	३०:२७	मई २३	शनि	२८:२७	२९:३०	अगस्त १५	शनि	१७:२९	२९:५५	नवम्बर २९	गुरु	२०:१०	३०:३६
२३	सोम	१८:३९	३०:२५	२७	बुध	०६:२२	२९:२९	१९	बुध	०५:५६	१९:२०	३०	शुक्र	१९:२५	३०:३७
२५	बुध	०६:२३	१३:५०	३०	शनि	०५:२६	११:५८	२५	मंगल	०६:२१	३०:००	०७	शनि	१०:४८	३०:४२
३१	मंगल	०६:१६	०६:५६	जून ०२	मंगल	१९:०१	२९:२७	२७	गुरु	०९:०९	३०:०१	११	बुध	०६:४५	१५:५३
अप्रैल ०२	गुरु	०६:१४	०७:४२	०४	गुरु	२३:३०	२९:२७	२८	शुक्र	०९:४८	३०:०१	१७	मंगल	०६:४९	३०:०५
०३	शुक्र	०६:१३	०८:४२	०५	शुक्र	२५:२०	२९:२७	सितम्बर०२	बुध	२८:२६	३०:०४	१९	गुरु	०७:०६	३०:५३
०८	बुध	१९:४९	३०:०६	१३	शनि	१६:०८	२९:२७	०५	शनि	०६:०५	२१:४५	२०	शुक्र	०७:१५	३०:३१
११	शनि	०६:०४	२४:३८	१६	मंगल	२४:५३	२९:२७	०८	मंगल	१४:४३	३०:०७	२५	बुध	१६:५०	३०:५७
१४	मंगल	२४:१३	३०:००	१८	गुरु	१८:५९	२९:२७	१०	गुरु	१०:३४	३०:०८	दिसम्बर ०१	मंगल	०७:००	२३:१४
१६	गुरु	२०:१२	३०:०१	१९	शुक्र	१७:००	२९:२८	११	शुक्र	०८:५७	३०:०८	०३	गुरु	०७:०२	२३:०४
१७	शुक्र	१७:२२	२९:५७	२७	शनि	२४:४४	२९:३०	१९	शनि	१५:२७	३०:१२	०४	शुक्र	०७:०३	२३:४५
२२	बुध	२२:५०	२९:५२	जुलाई ०१	बुध	०७:३८	२९:३१	२३	बुध	०६:१४	२२:५०	१२	शनि	१४:०६	३१:०९
२५	शनि	०५:५०	१८:२८	०४	शनि	०५:३२	१२:४०	२९	मंगल	०६:१७	१७:१०	१६	बुध	०७:१०	२२:४६
२८	मंगल	१८:५२	२९:४६	०७	मंगल	१३:२५	२९:३४	अक्टूबर ०१	गुरु	०६:१८	१२:३५	२२	मंगल	०७:१४	१४:२४
३०	गुरु	२१:१३	२९:४५	०९	गुरु	१०:३८	२९:३५	०२	शुक्र	०६:१८	१०:१५	२६	शनि	२०:०५	३१:१६
मई ०१	शुक्र	२२:५२	२९:४५	१०	शुक्र	०८:१६	२९:२३	०३	शनि	२९:५२	३०:१९	३०	बुध	०७:१७	१२:३७
०७	गुरु	०५:४०	१०:१४	१५	बुध	११:५१	२९:३७	०७	बुध	०६:२१	२३:१७	२०२७ ई.			
०८	शुक्र	०५:३९	१२:२१	२१	मंगल	०५:४०	२९:१७	१३	मंगल	०६:२५	२३:२७	जनवरी ०५	मंगल	०७:१९	२०:३९
१३	बुध	१३:३०	२९:३५	२३	गुरु	०७:०४	२९:४२	१५	गुरु	०६:२६	२७:२५	०८	शुक्र	७:१९	२८:३३
१९	मंगल	०५:३३	१४:१९	२४	शुक्र	०९:१३	२९:४२	१६	शुक्र	०६:२६	२९:५४	०७	गुरु	०७:१९	२५:५४
२१	गुरु	०५:३१	०८:२७	अगस्त ०१	शनि	२३:०७	२९:४७	२४	शनि	१३:३७	३०:३२	१६	शनि	१३:४३	३१:१९
२२	शुक्र	०५:३१	०६:२५	०५	बुध	०५:४८	२०:४३	२७	मंगल	२८:०७	३०:३४	१९	मंगल	२८:४१	३१:१८

सिद्धियोग विक्रम सम्वत् २०८३				अमृतयोग विक्रम सम्वत् २०८३, ईश्वीय सन् २०२६-२७											
दिनाङ्क २०२७ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
जनवरी २१	गुरु	२१:३०	३१:१८	मार्च २२	रवि	२१:१७	३०:२६	मई १५	शुक्र	०८:३१	२९:११	जुलाई १३	सोम	१८:५०	२९:३६
२२	शुक्र	१७:४७	३१:१७	२३	सोम	०६:२६	१८:३९	१६	शनि	२५:३१	२९:३४	१५	बुध	०५:३७	११:५१
२७	बुध	२७:५३	३१:१७	२४	मंगल	१६:०८	३०:२४	२४	रवि	२८:३१	२९:३०	१६	गुरु	०८:५३	२९:३८
३०	शनि	०७:१५	३०:३३	२६	गुरु	०६:२२	११:४९	२५	सोम	०५:३०	२९:११	१७	शुक्र	०६:२८	२८:४३
फरवरी ०३	बुध	०७:१३	१३:५०	२७	शुक्र	०६:१२	१०:०७	२७	बुध	०५:२९	०६:२२	१८	शनि	२७:४२	२९:३९
०९	मंगल	०७:०९	२६:२०	२८	शनि	०८:४६	३०:१९	२८	गुरु	०७:५७	२९:२८	२५	शनि	०५:४२	११:३४
११	गुरु	०७:०७	२७:१८	अप्रैल ०६	सोम	१४:११	३०:०९	२९	शुक्र	०९:५९	२९:२८	२९	बुध	२०:०५	२९:४५
१२	शुक्र	०७:०६	२६:५९	०८	बुध	०६:०७	१९:०२	३१	रवि	०५:२८	१४:१५	अगस्त ०२	रवि	२३:१५	२९:४७
१७	बुध	१७:३२	३१:०१	०९	गुरु	२१:२०	३०:०५	जून ०२	मंगल	०५:२७	१९:०१	०३	सोम	०५:४७	२२:५४
२०	शनि	०७:००	०८:००	१०	शुक्र	२३:१६	३०:०४	०६	शनि	०५:२७	२६:४१	०४	मंगल	२२:०३	२९:४८
२३	मंगल	०६:५७	२१:४९	१२	रवि	०६:०३	२५:१७	१०	बुध	२४:५८	२९:२७	०६	गुरु	०५:४९	१८:५३
२५	गुरु	०६:५५	२०:१८	१४	मंगल	०६:०१	२४:१३	१४	रवि	१२:२०	२९:२७	०७	शुक्र	०५:५०	१६:३७
२६	शुक्र	०६:५४	२०:४३	१८	शनि	०५:५७	१४:११	१५	सोम	०५:२७	०८:२४	०८	शनि	१३:५९	२९:५१
मार्च ०६	शनि	१२:०३	३०:४४	२०	सोम	२८:१५	२९:५४	१६	मंगल	०५:२७	२४:५३	१२	बुध	२३:०६	२९:५३
१०	बुध	०६:४१	१५:५३	२२	बुध	०५:५३	२२:५०	२०	शनि	०५:२८	१५:४७	१६	रवि	१६:५३	२९:५५
१६	मंगल	०६:३४	०८:५५	२३	गुरु	२०:४९	२९:५१	२४	बुध	१८:१३	२९:२९	१७	सोम	०५:५५	१७:००
२०	शनि	२०:४५	३०:२८	२४	शुक्र	१९:२१	२९:५०	२८	रवि	२७:०७	२९:३०	१८	मंगल	१७:५१	२९:५६
२४	बुध	०६:२५	१३:१४	२६	रवि	०५:४९	१८:०७	२९	सोम	०५:३०	२९:३०	२०	गुरु	०५:५७	२१:१९
३०	मंगल	०६:१८	१९:४०	२८	मंगल	०५:४७	१८:५२	जुलाई ०१	बुध	०५:३१	०७:३८	२१	शुक्र	०५:५७	२३:३६
अप्रैल ०१	गुरु	०६:१६	२४:४५	मई ०२	शनि	१५:२५	२९:३६	०२	गुरु	०९:३८	२९:३२	२२	शनि	२६:००	२९:५८
०२	शुक्र	०६:१५	२६:५२	११	सोम	१५:२५	२९:३६	०३	शुक्र	११:२१	२९:३२	२५	मंगल	०५:५९	०६:२१
				१३	बुध	०५:३६	१३:३१	०५	रवि	०५:३२	१३:३१	२९	शनि	०६:०१	०९:५७
				१४	गुरु	११:२१	२९:३४	०७	मंगल	०५:३३	१३:२५				

अमृतयोग विक्रम सम्वत् २०८३, ईश्वीय सन् २०२६-२७

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
सितम्बर०२	बुध	०६:१२	२८:२६	अक्टूबर२७	मंगल	०७:०२	२८:०७	दिसम्बर२३	बुध	३०:५७	३१:१५	फरवरी ०६	शनि	२१:२६	३१:१०
०३	गुरु	२६:२५	३०:०४	३१	शनि	०६:३६	१६:५७	२७	रवि	१७:१३	३१:१७	१५	सोम	२२:४४	३१:०३
०४	शुक्र	२४:१४	३०:०५	नवम्बर ०४	बुध	११:०३	३०:४०	२८	सोम	०७:१७	१४:५८	१७	बुध	०७:०२	१७:३२
०६	रवि	०६:०५	१९:२९	०८	रवि	११:२८	३०:४३	२९	मंगल	१३:२५	३१:१७	१८	गुरु	१४:२७	३१:०१
०८	मंगल	०६:०६	१४:४३	०९	सोम	०६:४३	१२:३१	३१	गुरु	०७:१९	१२:३२	१९	शुक्र	११:१४	३१:००
१२	शनि	०६:०८	०७:४७	१०	मंगल	१४:००	३०:४५	२०२७ ई.				२०	शनि	२८:५३	३०:५९
१६	बुध	०९:००	३०:११	१२	गुरु	०६:४५	१८:१०	जनवरी ०१	शुक्र	०७:१९	१३:१०	मार्च ०१	सोम	२६:०७	३०:५०
२०	रवि	१७:५२	३०:१३	१३	शुक्र	०६:४६	२०:४३	०२	शनि	१४:२४	३१:१९	०३	बुध	०६:४९	३०:४९
२१	सोम	०६:१३	२०:०१	१४	शनि	२३:२४	३०:४५	१३	बुध	१३:०१	३१:१९	०७	रवि	१३:४६	३०:४३
२२	मंगल	२१:४४	३०:१४	२३	सोम	२३:४३	३०:५५	१७	रवि	१२:२७	३१:१९	०८	सोम	०६:४३	१४:५९
२४	गुरु	०६:१४	२३:१९	२५	बुध	०६:५६	१६:५०	१८	सोम	०७:१९	१०:२७	०९	मंगल	१५:४०	३०:४१
२५	शुक्र	०६:१५	२३:०७	२६	गुरु	१३:१५	३०:५७	१९	मंगल	०७:४९	२८:४१	११	गुरु	०६:४०	१५:३८
२६	शनि	२२:१९	३०:१६	२७	शुक्र	०९:४८	३०:४३	२३	शनि	०७:१७	१४:१३	१२	शुक्र	०६:३९	१४:५७
अक्टूबर०४	रवि	२७:५४	३०:२०	२८	शनि	२७:५७	३०:५९	२५	सोम	३०:००	३१:१६	१३	शनि	१३:५५	३०:३७
०५	सोम	०६:२०	२६:०८	दिसम्बर०७	सोम	२८:१२	३१:०६	२७	बुध	०७:१६	२७:५४	१७	बुध	२८:२२	३०:३२
०६	मंगल	२४:३५	३०:१९	०९	बुध	०७:०६	३१:०७	२८	गुरु	२८:०३	३१:१५	२१	रवि	१८:२२	३०:२७
०८	गुरु	०६:२२	२२:१६	१३	रवि	१६:४८	३१:०७	२९	शुक्र	२८:५८	३१:१५	२२	सोम	०६:२७	१६:१३
०९	शुक्र	०६:२२	२१:३६	१४	सोम	०७:०७	१९:१६	३१	रवि	०७:१४	३१:१४	२३	मंगल	१४:४८	३०:२५
१०	शनि	२१:२०	३०:२३	१५	मंगल	२१:२०	३१:११	फरवरी ०१	सोम	०७:१४	०८:४१	२५	गुरु	०६:२४	१२:३८
२१	बुध	१४:१२	३०:२०	१७	गुरु	०७:१२	२३:२६	०२	मंगल	११:१०	३१:१२	२६	शुक्र	०६:२३	१२:४४
२५	रवि	११:५६	३०:३३	१८	शुक्र	०७:१२	२३:१४	०४	गुरु	०७:१२	१६:३१	२७	शनि	१३:४३	३०:२०
२६	सोम	०६:३३	०९:४१	१९	शनि	२२:०९	३१:१३	०५	शुक्र	०७:११	१९:०५	अप्रैल ०५	सोम	२९:४१	३०:१०

रवियोग विक्रम सम्वत् २०८३, ईश्वीय सन् २०२६-२७

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
मार्च २१	शनि	२४:३८	३०:२७	मई २०	बुध	२८:१२	२९:३१	जुलाई ०७	मंगल	०५:३३	१६:२४	सितम्बर ०२	बुध	२५:४३	३०:०४
२२	रवि	०६:२७	२२:४३	२१	गुरु	०५:३१	२६:४९	१६	गुरु	१९:५३	२९:३८	०३	गुरु	०६:०४	२४:२९
२३	सोम	२०:५०	३०:२५	२३	शनि	२६:०९	२९:३०	१७	शुक्र	०५:३८	१८:३५	१३	रवि	१३:०७	२१:४७
२४	मंगल	०६:२५	१९:०५	२४	रवि	०५:३०	२९:३०	१८	शनि	१८:०१	२९:३९	१४	सोम	१३:५५	३०:१०
२६	गुरु	१६:१९	३०:२१	२५	सोम	०५:३०	२९:३०	१९	रवि	०५:३९	१८:१२	१५	मंगल	०६:१०	१५:२१
२७	शुक्र	०६:२१	३०:२०	२६	मंगल	०५:३०	२९:२९	२०	सोम	११:२८	१९:१०	१६	बुध	१७:२२	३०:११
२८	शनि	०६:२०	१४:५१	२७	बुध	०५:२९	०५:५७	२२	बुध	२३:०४	२९:४१	१७	गुरु	०६:११	१९:५३
३०	सोम	१४:४८	३०:१६	२९	शुक्र	१०:३८	२९:२८	२३	गुरु	०५:४१	२९:४२	१९	शनि	२५:४३	३०:१३
३१	मंगल	०६:१६	१५:२१	३०	शनि	०५:२८	१३:२१	२४	शुक्र	०५:४२	२८:३६	२०	रवि	०६:१३	३०:१३
३१	मंगल	२०:०८	३०:१५	जून ०६	शनि	०६:३०	२९:२७	२७	सोम	१०:२९	२९:४४	२१	सोम	०६:१३	३०:१३
अप्रैल ०१	बुध	०६:१५	१६:१८	०७	रवि	०५:२७	०७:५६	२८	मंगल	०५:४४	१३:११	२२	मंगल	०६:१३	०७:०६
०८	बुध	५:५४	३०:०६	१७	बुध	१३:३७	२९:२७	अगस्त ०४	मंगल	२१:५४	२९:४९	२४	गुरु	१०:३५	३०:१५
०९	गुरु	०६:०६	०८:४८	१८	गुरु	०५:२७	११:३३	०५	बुध	०५:४९	२१:१८	२५	शुक्र	०६:१५	११:२२
१९	रवि	०४:३५	२६:०८	१९	शुक्र	१०:०७	२९:२८	१४	शुक्र	२७:४२	२९:५४	अक्टूबर ०१	गुरु	२८:२७	३०:१८
२१	मंगल	२३:५९	२९:५३	२०	शनि	०५:२८	०९:२६	१५	शनि	०५:५४	२७:२५	०२	शुक्र	०६:१८	२६:५५
२२	बुध	०५:५३	२२:१३	२२	सोम	१०:२३	१२:२५	१६	रवि	२७:५०	२९:५५	१३	मंगल	२५:४३	३०:२५
२४	शुक्र	२०:१५	२९:५०	२३	मंगल	११:५४	२९:२९	१७	सोम	०५:५५	०७:५८	१४	बुध	०६:२५	२८:०३
२५	शनि	०५:५०	२९:४९	२४	बुध	०५:२९	२९:२९	१७	सोम	२८:५८	२९:५६	१६	शुक्र	०६:४८	३०:२७
२६	रवि	०५:४९	२०:२७	२५	गुरु	०५:२९	१९:२९	१८	मंगल	०५:५६	२९:५६	१७	शनि	०६:२७	०९:४७
२९	बुध	२४:१६	२९:४५	२७	शनि	२२:११	२९:३०	१९	बुध	०५:५६	०६:४७	१९	सोम	१५:३९	३०:२८
३०	गुरु	०५:४५	२६:१७	२८	रवि	०५:३०	२५:०९	२१	शुक्र	११:५३	२९:५८	२०	मंगल	०६:२८	३०:२९
मई ०७	गुरु	१८:४६	२९:३८	जुलाई ०५	रवि	१५:१३	२९:३३	२२	शनि	०५:५८	१७:४५	२१	बुध	०६:२९	१९:४८
०८	शुक्र	०५:३८	२१:२०	०६	सोम	०५:३३	१२:०३	२४	सोम	२२:५१	३०:००	२३	शुक्र	२१:०३	३०:३१
१९	मंगल	०८:४१	२९:३२	०६	सोम	१६:०८	२९:३३	२५	मंगल	०६:५०	२४:४८	२४	शनि	०६:३१	१२:५०

रवियोग विक्रम सम्वत् २०८३, ईश्वीय सन् २०२६ – २७

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२७ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अक्टूबर २४	शनि	२०:३२	३०:३२	दिसम्बर २०	रवि	०७:१३	१४:५५	फरवरी १०	बुध	०७:०८	२८:५६
२५	रवि	०६:३२	१९:२२	२२	मंगल	१०:४५	३१:१५	११	गुरु	२९:४१	३१:०७
३१	शनि	०७:१२	२९:४०	२३	बुध	०७:१५	०७:५६	१२	शुक्र	०७:०७	२९:५६
नवम्बर १२	गुरु	१४:१९	३०:४६	२८	सोम	१६:३२	३१:१७	१४	रवि	२८:४६	३१:०४
१३	शुक्र	०६:४६	१७:१७	२९	मंगल	०७:१७	१२:४४	१५	सोम	०७:०४	३१:०३
१४	शनि	२०:२५	३०:४८	२९	मंगल	१५:४२	३१:१७	१६	मंगल	०७:०३	२५:३७
१५	रवि	०६:४८	२३:२९	३०	बुध	०७:१७	१५:३२	१८	गुरु	२१:०५	३१:०१
१७	मंगल	२८:३५	३०:५१	२०२७ ई.				१९	शुक्र	०७:०१	१८:३५
१८	बुध	०६:४१	३०:५२	जनवरी १०	रवि	१५:११	३१:१९	१९	शुक्र	२४:३७	३१:००
१९	गुरु	०६:५२	३०:५३	११	सोम	०७:१९	११:३९	२०	शनि	०७:००	१६:०७
२०	शुक्र	०६:५३	३०:५१	११	सोम	१७:५३	३१:१९	२६	शुक्र	१०:१३	३०:५३
२२	रवि	२८:१६	३०:५४	१२	मंगल	०७:१९	२०:१३	२७	शनि	०६:५३	११:३९
२३	सोम	०६:५४	२६:०२	१३	बुध	२२:०४	३१:१९	मार्च ११	गुरु	११:१९	३०:३९
२९	रवि	१०:५९	३१:००	१४	गुरु	०७:१९	२३:१८	१२	शुक्र	०६:३९	११:२२
३०	सोम	०७:००	०९:४२	१६	शनि	२३:३८	३१:१९	१३	शनि	११:०२	३०:३७
दिसम्बर ११	शुक्र	२७:०४	३१:०८	१७	रवि	०७:१९	३१:१९	१४	रवि	०६:३७	१०:२३
१२	शनि	०७:०८	३०:१२	१८	सोम	०७:१९	२२:०५	१६	मंगल	०८:१२	३०:३३
१४	सोम	०९:१२	३१:११	२०	बुध	१६:१७	३१:१८	१७	बुध	०६:३३	२९:०७
१५	मंगल	०७:११	११:५२	२१	गुरु	०७:१८	१३:२३	१८	गुरु	१८:२०	२७:२०
१६	बुध	१०:२५	१४:०२	२७	बुध	२३:५६	३१:१६	२०	शनि	२३:४४	३०:२८
१८	शुक्र	१६:१०	३१:१३	२८	गुरु	०७:१६	२४:३२	२१	रवि	०६:२८	२२:०६
१९	शनि	०७:१३	३१:१३	फरवरी ०९	मंगल	२७:४०	३१:०८	२७	शनि	२२:१४	३०:२०
								२८	रवि	०६:२०	२४:३१

अमृतसिद्धियोग विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
मार्च २०	शुक्र	०६:३०	२६:२८
अप्रैल १७	शुक्र	०५:५८	१२:०२
२०	सोम	२६:०८	२९:५४
२३	गुरु	२०:५७	२९:५१
मई १८	सोम	११:३२	२९:५१
२१	गुरु	०५:३१	२६:५०
जून १३	शनि	२५:१७	२९:२७
१५	सोम	०५:२७	१९:०८
१८	गुरु	०५:२७	११:३२
जुलाई ११	शनि	११:०३	२९:३५
१३	सोम	०५:३६	०५:४२
१९	रवि	१८:१२	२९:४०
अगस्त ०४	मंगल	२१:५४	२९:४८
०८	शनि	०५:५०	१६:५१
१६	रवि	०५:५५	२७:५१
सितम्बर ०१	मंगल	०६:०३	२६:४२
१३	रवि	०६:०९	१३:०७
१६	बुध	१७:२२	३०:११
२९	मंगल	०६:१७	०९:०३
अक्टूबर १४	बुध	०६:२५	२८:०३
नवम्बर ११	बुध	०६:४५	११:३८
दिसम्बर १८	शुक्र	१६:१०	३१:१३
२०२७ ई.			
जनवरी १५	शुक्र	०७:१९	२३:५१
फरवरी १५	सोम	२७:२६	३१:०३
१८	गुरु	२१:०६	३१:००
मार्च १५	सोम	०९:२६	३०:३४
१८	गुरु	०६:३२	२७:२१

विक्रम सम्वत् २०८३ ईश्वीय सन् २०२६-२७ दैनिक राहुकाल सारिणी (नई दिल्ली), (भा. स्टैं. टा. घण्टा/मिनट)

अप्रैल २०२६				मई २०२६				जून २०२६			
दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति
१	बुध	१२:२५	१३:५८	१	शुक्र	१०:३९	१२:१८	१	सोम	०७:०८	०८:५२
२	गुरु	१३:५८	१५:३१	२	शनि	०८:५९	१०:३९	२	मंगल	१५:४६	१७:३०
३	शुक्र	१०:५१	१२:२४	३	रवि	१७:१६	१८:५६	३	बुध	१२:१९	१४:०३
४	शनि	०९:१७	१०:५०	४	सोम	०७:१९	०८:५९	४	गुरु	१४:०३	१५:४७
५	रवि	१७:०६	१८:४०	५	मंगल	१५:३७	१७:१७	५	शुक्र	१०:३६	१२:१९
६	सोम	०७:४२	०९:१५	६	बुध	१२:१८	१३:५८	६	शनि	०८:५२	१०:३६
७	मंगल	१५:३३	१७:०६	७	गुरु	१३:५८	१५:३८	७	रवि	१७:३२	१९:१५
८	बुध	१२:२४	१३:५८	८	शुक्र	१०:३७	१२:१८	८	सोम	०७:०८	०८:५२
९	गुरु	१३:५८	१५:३२	९	शनि	०८:५७	१०:३७	९	मंगल	१५:४८	१७:३२
१०	शुक्र	१०:४७	१२:२२	१०	रवि	१७:१९	१९:००	१०	बुध	१२:२०	१४:०४
११	शनि	०९:१२	१०:४७	११	सोम	०७:१५	०८:५६	११	गुरु	१४:०५	१५:४९
१२	रवि	१७:०८	१८:४४	१२	मंगल	१५:३९	१७:२०	१२	शुक्र	१०:३६	१२:२१
१३	सोम	०७:३५	०९:१०	१३	बुध	१२:१७	१३:५८	१३	शनि	०८:५२	१०:३७
१४	मंगल	१५:३३	१७:०९	१४	गुरु	१३:५९	१५:४०	१४	रवि	१७:३४	१९:१८
१५	बुध	१२:२१	१३:५७	१५	शुक्र	१०:३६	१२:१७	१५	सोम	०७:०८	०८:५३
१६	गुरु	१३:५७	१५:३३	१६	शनि	०८:५४	१०:३६	१६	मंगल	१५:५०	१७:३४
१७	शुक्र	१०:४४	१२:२१	१७	रवि	१७:२३	१९:०४	१७	बुध	१२:२२	१४:०६
१८	शनि	०९:०७	१०:४४	१८	सोम	०७:१२	०८:५४	१८	गुरु	१४:०६	१५:५१
१९	रवि	१७:११	१८:४८	१९	मंगल	१५:४१	१७:२३	१९	शुक्र	१०:३८	१२:२२
२०	सोम	०७:२९	०९:०६	२०	बुध	१२:१८	०१:००	२०	शनि	०८:५४	१०:३८
२१	मंगल	१५:३४	१७:११	२१	गुरु	१४:००	१५:४२	२१	रवि	१७:३६	१९:२०
२२	बुध	१२:२०	१३:५७	२२	शुक्र	१०:३५	१२:१८	२२	सोम	०७:१०	०८:५४
२३	गुरु	१३:५७	१५:३५	२३	शनि	०८:५३	१०:३५	२३	मंगल	१५:५२	१७:३६
२४	शुक्र	१०:४१	१२:१९	२४	रवि	१७:२६	१९:०८	२४	बुध	१२:२३	१४:०८
२५	शनि	०९:०३	१०:४१	२५	सोम	०७:१०	०८:५२	२५	गुरु	१४:०८	१५:५२
२६	रवि	१७:१३	१८:५२	२६	मंगल	१५:४४	१७:२७	२६	शुक्र	१०:३९	१२:२४
२७	सोम	०७:२४	०९:०२	२७	बुध	१२:१८	१४:०१	२७	शनि	०८:५५	१०:३९
२८	मंगल	१५:३६	१७:१४	२८	गुरु	१४:०१	१५:४४	२८	रवि	१७:३७	१९:२१
२९	बुध	१२:१८	१३:५७	२९	शुक्र	१०:३५	१२:१८	२९	सोम	०७:११	०८:५६
३०	गुरु	१३:५७	१५:३६	३०	शनि	०८:५२	१०:३५	३०	मंगल	१५:५३	१७:३७
				३१	रवि	१७:२९	१९:१२				

विक्रम सम्वत् २०८३ ईश्वीय सन् २०२६-२७ दैनिक राहुकाल सारिणी (नई दिल्ली), (भा. स्टैं. टा. घण्टा/मिनट)

जुलाई २०२६				अगस्त २०२६				सितम्बर २०२६			
दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति
१	बुध	१२:२५	१४:०९	१	शनि	०९:०५	१०:४६	१	मंगल	१५:३१	१७:०६
२	गुरु	१४:०९	१५:५३	२	रवि	१७:२९	१९:१०	२	बुध	१२:२०	१३:५५
३	शुक्र	१०:४१	१२:२५	३	सोम	०७:२५	०९:०६	३	गुरु	१३:५५	१५:२९
४	शनि	०८:५७	१०:४१	४	मंगल	१५:४७	१७:२८	४	शुक्र	१०:४५	१२:२०
५	रवि	१७:३७	१९:२१	५	बुध	१२:२७	१४:०७	५	शनि	०९:११	१०:४५
६	सोम	०७:१४	०८:५८	६	गुरु	१४:०६	१५:४७	६	रवि	१७:०१	१८:३५
७	मंगल	१५:५३	१७:३७	७	शुक्र	१०:४६	१२:२६	७	सोम	०७:३७	०९:११
८	बुध	१२:२६	१४:०९	८	शनि	०९:०७	१०:४६	८	मंगल	१५:२६	१६:५९
९	गुरु	१४:१०	१५:५३	९	रवि	१७:२५	१९:०४	९	बुध	१२:१८	१३:५१
१०	शुक्र	१०:४२	१२:२६	१०	सोम	०७:२८	०९:०७	१०	गुरु	१३:५१	१५:२४
११	शनि	०८:५९	१०:४३	११	मंगल	१५:४४	१७:२३	११	शुक्र	१०:४४	१२:१७
१२	रवि	१७:३६	१९:२०	१२	बुध	१२:२६	१४:०५	१२	शनि	०९:११	१०:४४
१३	सोम	०७:१६	०९:००	१३	गुरु	१४:०४	१५:४३	१३	रवि	१६:५४	१८:२७
१४	मंगल	१५:५३	१७:३६	१४	शुक्र	१०:४७	१२:२५	१४	सोम	०७:३९	०९:११
१५	बुध	१२:२७	१४:१०	१५	शनि	०९:०८	१०:४७	१५	मंगल	१५:२०	१६:५२
१६	गुरु	१४:१०	१५:५३	१६	रवि	१७:२०	१८:५८	१६	बुध	१२:१५	१३:४७
१७	शुक्र	१०:४४	१२:२७	१७	सोम	०७:३०	०९:०८	१७	गुरु	१३:४७	१५:१९
१८	शनि	०९:०१	१०:४४	१८	मंगल	१५:४०	१७:१८	१८	शुक्र	१०:४३	१२:१५
१९	रवि	१७:३५	१९:१८	१९	बुध	१२:२४	१४:०२	१९	शनि	०९:१२	१०:४३
२०	सोम	०७:१९	०९:०२	२०	गुरु	१४:०१	१५:३९	२०	रवि	१६:४८	१८:१९
२१	मंगल	१५:५२	१७:३४	२१	शुक्र	१०:४६	१२:२४	२१	सोम	०७:४१	०९:१२
२२	बुध	१२:२७	१४:०९	२२	शनि	०९:०९	१०:४६	२२	मंगल	१५:१५	१६:४६
२३	गुरु	१४:०९	१५:५१	२३	रवि	१७:१४	१८:५१	२३	बुध	१२:१३	१३:४४
२४	शुक्र	१०:४५	१२:२७	२४	सोम	०७:३३	०९:०९	२४	गुरु	१३:४३	१५:१३
२५	शनि	०९:०३	१०:४५	२५	मंगल	१५:३६	१७:१२	२५	शुक्र	१०:४२	१२:१२
२६	रवि	१७:३२	१९:१४	२६	बुध	१२:२२	१३:५९	२६	शनि	०९:१२	१०:४२
२७	सोम	०७:२२	०९:०४	२७	गुरु	१३:५८	१५:३४	२७	रवि	१६:४१	१८:१०
२८	मंगल	१५:५०	१७:३१	२८	शुक्र	१०:४६	१२:२२	२८	सोम	०७:४३	०९:१२
२९	बुध	१२:२७	१४:०८	२९	शनि	०९:१०	१०:४६	२९	मंगल	१५:०९	१६:३९
३०	गुरु	१४:०८	१५:४९	३०	रवि	१७:०८	१८:४३	३०	बुध	१२:११	१३:४०
३१	शुक्र	१०:४६	१२:२७	३१	सोम	०७:३५	०९:१०				

विक्रम सम्वत् २०८३ ईश्वीय सन् २०२६-२७ दैनिक राहुकाल सारिणी (नई दिल्ली), (भा. स्टैं. टा. घण्टा/मिनट)

अक्टूबर २०२६				नवम्बर २०२६				दिसम्बर २०२६			
दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति
१	गुरु	१३:३९	१५:०८	१	रवि	१६:१३	१७:३५	१	मंगल	१४:४६	१६:०४
२	शुक्र	१०:४१	१२:१०	२	सोम	०७:५७	०९:१९	२	बुध	१२:१०	१३:२८
३	शनि	०९:१३	१०:४१	३	मंगल	१४:४९	१६:११	३	गुरु	१३:२८	१४:४६
४	रवि	१६:३४	१८:०२	४	बुध	१२:०४	१३:२६	४	शुक्र	१०:५३	१२:११
५	सोम	०७:४५	०९:१३	५	गुरु	१३:२६	१४:४८	५	शनि	०९:३५	१०:५३
६	मंगल	१५:०४	१६:३२	६	शुक्र	१०:४३	१२:०४	६	रवि	१६:०५	१७:२२
७	बुध	१२:०९	१३:३६	७	शनि	०९:२१	१०:४३	७	सोम	०८:१९	०९:३७
८	गुरु	१३:३६	१५:०३	८	रवि	१६:०९	१७:३०	८	मंगल	१४:४७	१६:०५
९	शुक्र	१०:४१	१२:०८	९	सोम	०८:०१	०९:२२	९	बुध	१२:१३:	१३:३०
१०	शनि	०९:१४	१०:४१	१०	मंगल	१४:४७	१६:०८	१०	गुरु	१३:३१	१४:४८
११	रवि	१६:२८	१७:५४	११	बुध	१२:०५	१३:२६	११	शुक्र	१०:५६	१२:१४
१२	सोम	०७:४८	०९:१४	१२	गुरु	१३:२६	१४:४६	१२	शनि	०९:३९	१०:५७
१३	मंगल	१५:००	१६:२६	१३	शुक्र	१०:४४	१२:०५	१३	रवि	१६:०६	१७:२४
१४	बुध	१२:०७	१३:३३	१४	शनि	०९:२४	१०:४५	१४	सोम	०८:२३	०९:४१
१५	गुरु	१३:३२	१४:५८	१५	रवि	१६:०६	१७:२६	१५	मंगल	१४:५०	१६:०७
१६	शुक्र	१०:४१	१२:०६	१६	सोम	०८:०५	०९:२५	१६	बुध	१२:१६	१३:३३
१७	शनि	०९:१५	१०:४१	१७	मंगल	१४:४५	१६:०५	१७	गुरु	१३:३४	१४:५१
१८	रवि	१६:२२	१७:४७	१८	बुध	१२:०६	१३:२६	१८	शुक्र	११:००	१२:१७
१९	सोम	०७:५०	०९:१६	१९	गुरु	१३:२६	१४:४५	१९	शनि	०९:४३	११:००
२०	मंगल	१४:५५	१६:२०	२०	शुक्र	१०:४७	१२:०६	२०	रवि	१६:०९	१७:२६
२१	बुध	१२:०५	१३:३०	२१	शनि	०९:२८	१०:४७	२१	सोम	०८:२७	०९:४४
२२	गुरु	१३:३०	१४:५५	२२	रवि	१६:०४	१७:२४	२२	मंगल	१४:५३	१६:१०
२३	शुक्र	१०:४१	१२:०५	२३	सोम	०८:१०	०९:२९	२३	बुध	१२:१९	१३:३६
२४	शनि	०९:१६	१०:४१	२४	मंगल	१४:४५	१६:०४	२४	गुरु	१३:३७:	१४:५४
२५	रवि	१६:१७	१७:४१	२५	बुध	१२:०७	१३:२६	२५	शुक्र	११:०३	१२:२०
२६	सोम	०७:५३	०९:१७	२६	गुरु	१३:२७	१४:४५	२६	शनि	०९:४७	११:०४
२७	मंगल	१४:५२	१६:१६	२७	शुक्र	१०:४९	१२:०८	२७	रवि	१६:१३	१७:३०
२८	बुध	१२:०५	१३:२८	२८	शनि	०९:३१	१०:५०	२८	सोम	०८:३१	०९:४८
२९	गुरु	१३:२८	१४:५१	२९	रवि	१६:०४	१७:२२	२९	मंगल	१४:५७	१६:१४
३०	शुक्र	१०:४१	१२:०४	३०	सोम	०८:१४	०९:३३	३०	बुध	१२:२३	१३:४०
३१	शनि	०९:१९	१०:४१					३१	गुरु	१३:४१	१४:५८

विक्रम सम्वत् २०८३ ईश्वीय सन् २०२६-२७ दैनिक राहुकाल सारिणी (नई दिल्ली), (भा. स्टैं. टा. घण्टा/मिनट)

जनवरी २०२७				फरवरी २०२७				मार्च २०२७			
दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति
१	शुक्र	११:०७	१२:२४	१	सोम	०८:३२	०९:५३	१	सोम	०८:१५	०९:४१
२	शनि	०९:५०	११:०७	२	मंगल	१५:१६	१६:३७	२	मंगल	१५:२६	१६:५३
३	रवि	१६:१७	१७:३४	३	बुध	१२:३४	१३:५६	३	बुध	१२:३३	१४:००
४	सोम	०८:३३	०९:५०	४	गुरु	१३:५६	१५:१७	४	गुरु	१४:००	१५:२७
५	मंगल	१५:०१	१६:१८	५	शुक्र	११:१३	१२:३५	५	शुक्र	११:०६	१२:३३
६	बुध	१२:२६	१३:४४	६	शनि	०९:५२	११:१३	६	शनि	०९:३८:	११:०५
७	गुरु	१३:४४	१५:०२	७	रवि	१६:४०	१८:०२	७	रवि	१६:५५	१८:२२
८	शुक्र	११:०९	१२:२७	८	सोम	०८:२९	०९:५१	८	सोम	०८:०९	०९:३७
९	शनि	०९:५२	११:१०	९	मंगल	१५:१९	१६:४२	९	मंगल	१५:२८	१६:५६
१०	रवि	१६:२२	१७:३९	१०	बुध	१२:३५	१३:५७	१०	बुध	१२:३२	१४:००
११	सोम	०८:३४	०९:५२	११	गुरु	१३:५८	१५:२०	११	गुरु	१४:००	१५:२८
१२	मंगल	१५:०५	१६:२३	१२	शुक्र	११:१२	१२:३५	१२	शुक्र	११:०३	१२:३१
१३	बुध	१२:२९	१३:४७	१३	शनि	०९:४९	११:१२	१३	शनि	०९:३३	११:०२
१४	गुरु	१३:४८	१५:०६	१४	रवि	१६:४४	१८:०८	१४	रवि	१६:५७	१८:२६
१५	शुक्र	११:१२	१२:३०	१५	सोम	०८:२५	०९:४८	१५	सोम	०८:०३	०९:३२
१६	शनि	०९:५३	११:१२	१६	मंगल	१५:२२	१६:४६	१६	मंगल	१५:२९	१६:५८
१७	रवि	१६:२६	१७:४५	१७	बुध	१२:३५	१३:५९	१७	बुध	१२:३०	१३:५९
१८	सोम	०८:३५	०९:५४	१८	गुरु	१३:५९	१५:२३	१८	गुरु	१३:५९	१५:२९
१९	मंगल	१५:०९	१६:२८	१९	शुक्र	११:११	१२:३५	१९	शुक्र	१०:५९	१२:२९
२०	बुध	१२:३२	१३:५१	२०	शनि	०९:४६	११:१०	२०	शनि	०९:२८	१०:५९
२१	गुरु	१३:५१	१५:१०	२१	रवि	१६:४८	१८:१३	२१	रवि	१७:००	१८:३१
२२	शुक्र	११:१३	१२:३२	२२	सोम	०८:२०	०९:४५	२२	सोम	०७:५५	०९:२६
२३	शनि	०९:५४	११:१३	२३	मंगल	१५:२४	१६:४९	२३	मंगल	१५:३०	१७:०१
२४	रवि	१६:३१	१७:५१	२४	बुध	१२:३४	१३:५९	२४	बुध	१२:२७	१३:५९
२५	सोम	०८:३४	०९:५४	२५	गुरु	१३:५९	१५:२५	२५	गुरु	१३:५९	१५:३०
२६	मंगल	१५:१३	१६:३३	२६	शुक्र	११:०८	१२:३४	२६	शुक्र	१०:५५	१२:२७
२७	बुध	१२:३३	१३:५३	२७	शनि	०९:४२	११:०८	२७	शनि	०९:२३	१०:५५
२८	गुरु	१३:५४	१५:१४	२८	रवि	१६:५२	१८:१८	२८	रवि	१७:०३	१८:३५
२९	शुक्र	११:१४	१२:३४					२९	सोम	०७:४९	०९:२१
३०	शनि	०९:५३	११:१४					३०	मंगल	१५:३१	१७:०३
३१	रवि	१६:३६	१७:५७					३१	बुध	१२:२५	१३:५८

❁ क्रान्ति सारिणी ❁

दिनांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी	२३	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१७	१७
+	२	५७	५१	४५	३९	३२	२४	१७	९	००	५१	४१	३१	२१	१०	५९	४८	३६	२४	११	५८	४४	३०	१६	२	४७	३२	१६	००	४४	२७
फरवरी	१७	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	९	९	८	८	८	७	×	×
+	११	५३	३६	१८	००	४२	२३	५	४६	२६	७	४७	२७	७	४६	२६	५	४४	२२	१	३९	१८	५६	३४	११	४९	२७	४	५२	×	×
मार्च	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	३	३	३	२	२	१	१	१	०	+ ०	−०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४
+	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०	३६	१३	४९	२६	२	३८	१५	५१	२७	४	४१	१६	८	३१	५५	१९	४२	६	२९	५३	१६	४०	३
अप्रैल	४	४	५	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	×
	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	४०	२	२३	४४	५	२५	४६	६	२६	४६	६	२६	४५	४	२३	४१	×
मई	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१
−	०	१८	३६	५३	११	२८	४४	१	१७	३३	४९	४	१९	३४	४८	२	१६	२९	४३	५५	८	२०	३२	४३	५४	५	१५	२५	३५	४१	५३
जून	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२ ३	×
−	१	९	१७	२४	३१	३८	४४	४९	५५	०	४	८	१२	१५	१८	२०	२२	२४	२५	२६	२७	२७	२६	२५	२४	२२	२०	१८	१५	११	×
जुलाई	२३	२३	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८
−	८	४	५९	५४	४९	४३	३७	३१	२४	१६	९	१	५२	४३	३४	२५	१५	५	५४	४३	३२	२०	८	५६	४३	३०	१७	३	४९	३५	२०
अगस्त	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११	१०	१०	१०	९	९	९	८
−	५	५०	३५	१९	३	४७	३०	१३	५६	३९	२१	३	४५	२७	८	४०	३१	११	५२	३२	१३	५३	३२	१२	५१	३१	१०	४९	२७	६	४५
सितम्बर	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	३	३	३	२	२	१	१	१	०	−०	+०	०	०	१	१	१	२	२	×
−	२३	१	३९	१७	५५	३३	१०	४८	२५	८	४०	१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३५	१२	४९	२५	२	२१	४५	८	३१	५५	१८	४१	×
अक्टूबर	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४
+	५	२८	५१	१४	३८	१	२४	४७	९	३२	५५	१८	४०	३	२५	४७	९	३१	५३	१४	३६	५७	१८	३९	००	२१	४१	२	२२	४१	१
नवम्बर	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	×
+	२०	४०	५९	१७	३६	५४	१२	२९	४७	४	२१	३७	५३	९	२५	४०	५५	१०	२४	३८	५१	४	१७	३०	४२	५३	५	१५	२६	३६	×
दिसम्बर	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३
+	४६	५५	४	१२	२०	२८	३५	४१	४८	५३	५९	४	८	१२	१५	१८	२१	२३	२५	२६	२६	२७	२६	२६	२४	२३	२१	१८	१५	११	७

नोट : रवि क्रान्ति २१ मार्च से २२ सितम्बर तक उत्तरा (−) तथा २३ सितम्बर से २० मार्च तक दक्षिणा (+) होती है। क्रान्ति अंश और कला में हैं।

❁ चर सारिणी ❁

क्रान्त्यंश→	२		४		६		८		१०		१२		१४		१६		१८		२०		२२		२४	
अक्षांश ↓	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.
२	०	१७	०	३४	०	५०	१	०७	१	२४	१	४२	२	००	२	१८	२	३६	२	५४	३	१४	३	३४
४	०	३४	१	०७	१	४२	२	१५	२	५०	३	२४	४	००	४	३६	५	१२	५	५०	६	२९	७	०८
६	०	५०	१	४२	२	३२	३	२३	४	१५	५	०७	६	००	६	५४	७	५०	८	४६	९	४४	१०	४४
८	१	०७	२	१५	३	२३	४	३२	५	४१	६	५१	८	०२	९	१४	१०	२८	११	४४	१३	०१	१४	२१
९	१	१६	२	३२	३	४९	५	०६	६	२४	७	४३	९	०१	१०	२५	११	४८	१३	१३	१४	५१	१६	१०
१०	१	२४	२	४९	४	१४	५	४१	७	०८	८	३६	१०	०५	११	३६	१३	०८	१४	४३	१६	२०	१८	०१
११	१	३३	३	०७	४	४१	६	१६	७	५१	९	२८	११	०६	१२	४७	१४	२९	१६	१३	१८	००	१९	५२
१२	१	४२	३	२४	५	०७	६	५१	८	३६	१०	२१	१२	०९	१४	००	१५	५०	१७	४५	१९	४२	२१	४३
१३	१	५०	३	४२	५	३४	७	२६	९	२०	११	१५	१३	१२	१५	११	१७	१२	१९	१७	२१	२५	२३	३६
१४	२	००	४	००	६	००	८	०२	१०	०५	१२	०९	१४	१५	१६	२४	१८	३५	२०	५०	२३	०८	२५	३०
१५	२	०९	४	१८	६	२७	८	३८	१०	५०	१३	०४	१५	१९	१७	३८	१९	५९	२२	२३	२४	५२	२७	२४
१६	२	१८	४	३६	६	५४	९	१४	११	३६	१३	५९	१६	२४	१८	५२	२१	२३	२३	५८	२६	३७	२९	२०
१७	२	२६	४	५४	७	२२	९	५१	१२	२२	१४	५४	१७	२९	२०	०७	२२	४८	२५	३३	२८	२३	३१	१८
१८	२	३६	५	१२	७	५०	१०	२८	१३	०८	१५	५०	१८	३५	२१	२३	२४	१४	२७	१०	३०	१०	३३	१६
१९	२	४५	५	३१	८	१८	११	०६	१३	५५	१६	४७	१९	४२	२२	४०	२५	४२	२८	४८	३१	५९	३५	१६
२०	२	५४	५	५०	८	४६	११	४३	१४	४३	१७	४५	२०	५०	२३	५८	२७	१०	३०	२७	३३	४९	३७	१८
२१	३	०४	६	०९	९	१५	१२	२२	१५	३१	१८	४३	२१	५८	२५	१७	२८	४०	३२	०७	३५	४१	३९	४२
२२	३	१४	६	२८	९	४४	१३	०१	१६	२०	१९	४२	२३	०८	२६	३६	३०	१०	२२	४९	३७	३५	४१	२७
२३	३	२४	६	४८	१०	१४	१३	४१	१७	१०	२०	४२	२४	१८	२७	५७	३१	४३	३५	३३	३९	३०	४३	३४
२४	३	३४	७	०८	१०	४४	१४	२१	१८	०१	२१	४३	२५	३०	२९	२०	३३	१६	३७	१८	४१	२७	४५	४४
२५	३	४४	७	२८	११	१४	१५	०२	१८	५२	२२	४५	२६	४२	३०	४४	३४	५२	३९	०५	४३	२६	४७	५६
२६	३	५४	७	४९	११	४५	११	४३	१९	४४	२३	४८	२७	५६	३२	०९	३६	२८	४०	५४	४५	२८	५०	१०
२७	४	०४	८	१०	१२	१७	१६	२६	२०	३६	२४	५२	२९	१२	३३	३६	३८	०७	४२	४५	४७	३१	५२	२७
२८	४	१५	८	३१	१२	४९	१७	०९	२१	३१	२५	५७	३०	२८	३५	०५	३९	४८	४४	३८	४९	३७	५४	४७
२९	४	२६	८	५३	१३	२२	१७	५२	२२	२६	२७	०४	३१	४७	३६	३५	४१	३०	४६	३३	५१	४५	५७	०९
३०	४	३७	९	१५	१३	५५	१८	३७	२३	२२	२८	१२	३३	०६	३८	०७	४३	१५	४८	३१	५३	५७	५९	३५
३१	४	४९	९	३८	१४	२९	१९	२३	२४	२०	२९	२१	३४	२८	३९	४१	४५	०२	५०	३२	५६	१२	६२	०४
३३	५	१२	१०	२५	१५	३९	२०	५७	२६	१८	३१	४४	३७	१६	४२	५६	४८	४४	५४	४१	६०	५१	६७	०३
३५	५	३६	११	१४	१६	५३	२२	३७	२८	२२	३४	१४	४०	१३	४६	२०	५२	३६	५९	०४	६५	४४	७२	४०
४०	६	४३	१३	२७	२०	१४	२७	०५	३४	०२	४१	०६	४८	१८	५५	४१	६३	१७	७१	०८	७९	१६	८७	४५
४५	८	०१	१६	०२	२४	०८	३२	१८	४०	३७	४९	०५	४७	४५	६६	३९	७५	५०	८५	२२	९५	१९	१०५	४५
५०	९	३२	१९	०७	२८	४६	३८	३४	४८	३१	५८	४२	६९	०९	७९	५६	९१	०८	१०२	५०	११५	०८	१२८	११
५५	११	२६	२२	५६	३४	३२	४६	१९	५८	२०	७०	४१	८३	२६	९६	४२	११०	३५	१२५	१७	१४०	५८	१५७	५६
१३ ४'	१	४४	३	५४	५	५१	७	५०	९	५०	११	५१	१३	५४	१६	००	१८	०८	२०	१९	२२	३३	२४	५२
१८ ५५'	२	४५	५	३०	८	१५	११	०३	१३	५१	१६	४३	१९	३६	२२	३३	२५	३४	२८	४०	३१	५०	३५	०६
२२ ३४'	३	२०	५	४०	१०	०१	१३	२४	१६	४८	२०	१६	२३	४७	२७	२३	३१	०२	३४	४८	३८	४०	४२	३९
२८ ३८'	४	२२	८	४५	१३	१०	१७	३६	२२	०६	२६	४९	३१	१८	३६	०२	४०	३१	४५	५१	५०	५८	५६	१६

❁ वेलान्तर सारिणी ❁

दिनांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी	०३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३
–	३२	००	२८	४५	२२	४५	९	३४	०	२४	४८	११	३५	५७	१९	३९	००	१९	३८	५६	१४	३०	४७	०२	१७	३०	४३	५८	६	१६	२६
फरवरी	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	×	×
–	३०	४०	५०	५६	१	५	९	१२	१४	१५	१६	१५	१५	१३	११	८	४	०	५५	४९	४२	३४	२७	१९	१०	००	५१	४०	३४	×	×
मार्च	१२	१२	१२	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	८	८	८	७	७	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४
–	२९	१७	५	५२	३९	२५	११	५६	४१	२५	१०	५४	३८	२१	५	४८	३१	१३	५६	३८	२१	०३	४५	२७	९	५१	३३	१४	५६	३८	२०
अप्रैल	४	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	०	०	–०	+०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	×
–	२	४२	२६	८	५१	३४	१७	०	४३	२६	१०	५४	३८	२४	९	१४	२०	३३	४७	०	१३	२४	३६	४७	५८	८	१८	२७	३६	४४	×
मई	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२
+	५२	५९	६	१२	१८	२२	२७	३१	३५	३८	४०	४२	४३	४३	४३	४२	४१	३९	३७	३३	३०	२६	२२	१६	११	४	५८	५१	४४	३५	२७
जून	२	२	२	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	+०	–०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	×
+	१९	१०	०	५०	४०	२९	१९	७	५६	४४	३२	२०	८	१३	१७	३०	४३	५६	९	२२	३६	४९	२	१५	२८	४०	५३	६	१८	३०	×
जुलाई	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
–	४२	५३	४	१५	२६	३६	४६	५६	५	१३	२२	३०	३७	४४	५१	५७	२	७	१२	१६	२०	२३	२५	२६	२८	२८	२८	२७	२७	२५	२२
अगस्त	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०
–	१८	१४	१०	४	५९	५२	४६	३९	३१	२२	१३	३	५३	४२	३१	१९	७	५४	४१	२७	१३	५८	४३	१७	१२	५५	३८	२०	३	४५	२७
सितम्बर	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	१	८	८	८	९	९	९	×
+	०८	१९	३१	५१	१०	३०	५१	११	३२	५३	१४	३५	५६	१७	३८	०	२१	४२	३	२४	४६	०७	२८	४९	९	३०	५१	११	३१	५१	×
अक्टूबर	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
+	११	३०	४९	७	२६	४४	२	१९	३६	५२	८	२३	३८	५२	६	१९	३२	४३	५५	००	१६	२५	३४	४२	५०	५६	३	८	१३	१७	२०
नवम्बर	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	×
+	२२	२४	२५	२४	२४	२२	१९	१६	१२	६	००	५३	४६	२८	२८	१७	६	५४	४१	२७	१३	५७	४२	२५	८	४९	३०	१०	५०	२९	×
दिसम्बर	११	१०	१०	९	९	९	८	८	७	७	६	६	६	५	५	४	४	३	३	२	२	१	१	०	+०	–०	०	१	१	२	२
+	८	४५	२२	५८	३४	९	४४	१७	५१	२४	५७	२९	१	३२	०	३४	५	३६	३	३७	७	३७	७	३९	७	२९	५२	२२	५१	२०	४९

नोट : २६ दिसम्बर से १४ अप्रैल तक तथा १५ जून से ३१ अगस्त तक वेलान्तर ऋण (–) १५ अप्रैल से १४ जून तक तथा १ दिसम्बर तक वेलान्तर धन (+) होता है। वेलान्तर मिनट एवं सेकेण्ड में हैं।

❁ स्पष्टान्तर सारिणी ❁

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी (–)	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२७	२८	२८	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	२४	५६	१९	४६	१३	३९	०५	३०	५६	२०	४४	०८	३१	५३	१५	२६	५७	१७	३६	५५	१२	३०	४६	०२	१७	३१	४५	५७	०९	२०	३१
फरवरी (–)	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३३	३३		
	४०	४९	५७	०४	१०	१५	२०	२४	२७	२९	३०	३१	३०	२९	२८	२५	२२	१७	१३	०७	०१	५४	४६	३७	२६	१९	०८	५७	५०		
मार्च (–)	३३	३३	३३	३३	३२	३२	३२	३२	३१	३१	३१	३१	३०	३०	३०	२९	२९	२९	२९	२८	२८	२८	२७	२७	२७	२६	२६	२६	२६	२५	३५
	४६	३४	२१	०८	५४	४०	२६	११	५५	३९	२३	०६	४९	३२	१५	५७	३९	२०	०२	४४	२५	०६	४७	२८	०९	५०	३१	१२	५३	३४	१६
अप्रैल (–)	२४	२४	२४	२४	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१८	१८	
	५७	३८	२०	०२	४४	२७	०९	५२	३५	१९	५८	४३	२७	१२	५८	४३	३०	१६	०३	५१	३९	२७	१७	०६	५६	४७	३८	२९	२२	१४	
मई (+)	१८	१८	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	०८	०२	५६	५१	४७	४३	३९	३७	३५	३३	३२	३१	३१	३२	३३	३५	३७	४०	४३	४७	५१	५६	०१	०७	१३	१९	२६	३३	४१	४९	५८
जून (+)	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	
	०७	१६	२६	३५	४६	५६	०७	१७	२९	४०	५१	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२८	४०	५२	०४	१६	२९	४१	५२	०४	१६	२७	३८	
जुलाई (–)	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
	५०	००	११	२१	३१	४१	५१	००	०८	१७	२५	३३	४०	४७	५३	५९	०४	०९	१४	१८	२१	२४	२७	२९	३०	३१	३१	३१	३०	२९	२७
अगस्त (–)	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२६	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२५	२५	२५	२५	२५	२४	२४	२४	२४	२३	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२१	२१
	२४	२१	१७	१३	०८	०२	५६	४९	४२	३४	२५	१६	०६	५६	४५	३४	२२	०९	५६	४२	२८	१४	५८	४३	२७	१०	५३	३६	१८	५९	४१
सितम्बर (+)	२१	२१	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१८	१८	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११	
	२२	०२	४३	२३	०२	४२	२१	००	३८	१७	५५	३३	११	४९	२७	०५	४३	२०	५८	३६	१४	५१	२९	०८	४६	२४	०३	४२	२१	००	
अक्टूबर (+)	१०	१०	१०	०९	०९	०९	०८	०८	०८	०७	०७	०७	०७	०६	०६	०६	०६	०६	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४
	४०	२०	००	४१	२२	०४	४६	२८	११	५४	३८	२३	०८	५४	४०	२७	१४	०२	५१	४१	३१	२२	१३	०६	५९	५३	४८	४३	४०	३७	३५
नवम्बर (+)	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०८	०८	०८	०९	०९	०९	
	३३	३३	३४	३५	३७	४०	४४	४८	५४	००	०८	१६	२५	३४	४५	५६	०८	२१	३५	५०	०५	२१	३८	५५	१४	३२	५२	१२	३३	३५	
दिसम्बर (+)	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३
	१७	४०	०३	२७	५१	१६	४१	०७	३३	५९	२६	५३	२१	४९	१७	४५	१४	४२	११	४०	०९	३८	०७	३६	०५	३४	०३	३१	००	२८	५६

स्पष्टान्तर संस्कार का प्रयोग स्थानीय (लोकल) समय को मानक (स्टैण्डर्ड) में, तथा मानक समय को स्थानीय समय में बदलने के लिए किया जाता है। यदि स्पष्टान्तर ऋणात्मक (–) हो तो धन (+) और धनात्मक (+) हो तो ऋण (–) अर्थात् विपरीत संस्कार स्थानीय समय में करने से स्थानीय समय मानक समय में बदल जाता है। तथा मानक समय को स्थानीय समय में बदलने के लिए ऋण हो तो ऋण एवं धन हो तो धन यथावत् संस्कार किया जाता है। दिल्ली का स्पष्टान्तर सभी महीनों में ऋणात्मक (–) है।

ग्रहण-विवरण विक्रम संवत् २०८३

विक्रम संवत् २०८३ (२० मार्च २०२६ ई. से ०६ अप्रैल २०२७ ई. तक) वर्ष भर सम्पूर्ण विश्व में तीन ग्रहण घटित होंगे। तथा एक उपच्छाया चन्द्रग्रहण दृष्टिगोचर होंगे। विक्रम संवत् २०८३ में घटित होने वाले तीनों ग्रहण भारत में नहीं दिखाई देंगे। विक्रम संवत् २०८३ में घटित होने वाले तीन ग्रहणों में दो सूर्य ग्रहण और ए चन्द्रग्रहण होंगे। इन तीन ग्रहणों में एक भी ग्रहण भारत में दृष्टिगोचर नहीं होंगे। एक उपच्छाया या ग्रहण की भारत में अनुभूति होगी, जिसे शास्त्र में ग्रहण की संज्ञा नहीं दी है। १२ अगस्त २०२६ ई. श्रावण कृष्ण पक्ष बुधवार खग्रास सूर्य ग्रहण तथा २८ अगस्त २०२६ ई. श्रावण शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार खण्डग्रास चन्द्रग्रहण एवं ६ फरवरी, २०२७ ई. माघ कृष्ण अमावस्या शनिवार कंकण सूर्य ग्रहण भूखण्ड पर घटित होंगे परन्तु भारती में एक भी ग्रहण दृष्टिगोचर नहीं होंगे।

१. खग्रास सूर्यग्रहण (१२ अगस्त, २०२६ ई. बुधवार)
२. खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (२८ सितम्बर, २०२६ ई. शुक्रवार)
३. कंकण सूर्यग्रहण (०६ फरवरी २०२७ ई. शनिवार)

भारत में अदृश्य खग्रास सूर्यग्रहण (१२ अगस्त, २०२६ ई. बुधवार)

यह ग्रहण पश्चिमी उत्तर देशों में दिखाई देगा यथा– अफ्रिका के उत्तर–पश्चिम के देशों, यूरोप के अधित्तर देशों, कनाडा, रूस के उत्तरी–पूर्वी भूभाग के दृश्य होना ग्रहण का पूर्ण खग्रास स्वरूप पुर्तगाल के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र उत्तरी स्पेन, अटलांटिक महासागर, आईसलैण्ड महासागर, ग्रीनलैण्ड महासागर तथा अंटार्कटिक महासागर आदि भूभाग में दृष्टिगोचर होगा। भारत में नहीं दिखाई देगा।

खग्रास सूर्यग्रहण का भारतीय मानक समयानुसार विवरण इस प्रकार से है–

ग्रहण स्पर्श काल	–	**२१ बजकर ०४ मिनट (रात्रि)**
ग्रहण मध्यकाल	–	**२३ बजकर १५ मिनट (रात्रि)**
ग्रहण मोक्षकाल	–	**२५ बजकर २६ मिनट (रात्रि)**

भारत में अदृश्य खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (२८ अगस्त २०२६ ई. शुक्रवार) का विवरण –

यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण भारतीय मानक समयानुसार ०८ बजकर ०४ मिनट प्रातः काल से ११ बजकर 22 मिनट दोपहर तक जिस देश में रात्रि का समय होगा उन देशों में यह ग्रहण दिखाई देगा। सम्पूर्ण भारत में दृष्टिगोचर नहीं होगा। दृष्टिगोचर होने वाले देशों के नाम यथा– हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका अफ्रीका, अधिकतर यूरोप (शारजाह, सऊदी अरब, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान के दक्षिणी भूभाग) एशिया के इन देशों में यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण अवलोकित होगा।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का भारतीय मानक समयानुसार विवरण इस प्रकार है–

ग्रहण स्पर्श काल	–	**०८ बजकर ०४ मिनट (प्रातः)**
ग्रहण मध्यकाल	–	**०९ बजकर ४३ मिनट**
ग्रहण मोक्षकाल	–	**११ बजकर २२ मिनट**

भारत में अदृश्य कंकण सूर्यग्रहण (०६ फरवरी, २०२७ ई. शनिवार)–

यह कंकण सूर्य ग्रहण मध्य अफ्रीका के पश्चिमी तथा दक्षिणी

भूभाग, दक्षिणी अमेरिका तथ अंटार्कटिका में दृश्य होगा। इस ग्रहण की कंकणाकृति चिली, अर्जेन्टीना एवं अटलांटिक महासागर में दृष्टिगोचर होगी। भारत में यह ग्रहण नहीं दिखाई देगा।

कंकण सूर्यग्रहण का भारतीय मानक समयानुसार विवरण इस प्रकार है–

ग्रहण स्पर्श काल	–	**१८ बजकर २७ मिनट (सायं)**
ग्रहण मध्यकाल	–	**२९ बजकर ३१ मिनट**
ग्रहण मोक्षकाल	–	**२४ बजकर ३१ मिनट**

उपच्छाया चन्द्रग्रहण

विक्रम सवंत् २०८३ में माघ शुक्ल पूर्णिमा शनिवार तदनुसार २०/२१ फरवरी, २०२७ ई. के दिन उपच्छाया चन्द्रग्रहण भारत में अवलोकित होगा। वस्तुतः उपच्छाया अर्थात् पृथ्वी की छाया की प्रति छाया को उपच्छाया कहते है जब इस उपच्छाया में चन्द्र प्रवेश करता है तब चन्द्र क धवलता में धुन्धलापन आ जाता है इसी को उपच्छाया चन्द्रग्रहण कहते हैं परन्तु यह स्वाभाविक ग्रहण नहीं है। अतः शास्त्रकार इसे ग्रहण की संज्ञा नहीं दी है। इस कारण सूतक विचार एवं स्नान दानादि के माहात्म्य का विचार भी नहीं किया जाएगा।

उपच्छाया चन्द्रग्रहण का मानक समयानुसार विवरण इस प्रकार है –

ग्रहण स्पर्श काल	–	**०२ बजकर ४२ मिनट (रात्रि)**
ग्रहण मध्यकाल	–	**०४ बजकर ४३ मिनट**
ग्रहण मोक्षकाल	–	**०६ बजकर ४३ मिनट**

नोट – उपरोक्त किसी भी ग्रहण का सूतक, स्नान दानादि का विचार सम्पूर्ण भारत में नहीं किया जाएगा। ग्रहण के प्रभाव भारत (स्वच्छन्द) मुक्त है। अतः भारत का विकासीय भार बढ़ेगा जिस कारण दूसरे देशों पर अपने प्रभाव से प्रभावित करता रहेगा।

प्रो. फणीन्द्र कुमार चौधरी
आचार्य, ज्योतिष–विभाग

संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय विक्रम संवत् २०८३

चैत्रवासन्तिक नवरात्र एवं नवसंवत्सरारम्भ (दिनांक 19 मार्च, 2026 ई. गुरुवार)

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा में वासन्तिक नवरात्र का प्रारम्भ एवं कलश स्थापना की जाती है। चैत्रशुक्ल प्रतिपदा औदयिक ही ग्राह्मय है परन्तु क्षय होने के स्थिति मे प्रतिपदा यदि सूर्योदयकालव्यापिनी न हो तो अमायुक्ता प्रतिपदा में ही नवसंवत्सर और चैत्रनवरात्रारम्भ के शुभ कर्म घटस्थापन, कलश पूजन, संवत्सर पूजनादि करना चाहिएं यथोक्तम्–

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा सम्वत्सराम्भः तत्रौदयिकी ग्राह्या।
यत्र क्षयवशादमायुक्तैव लभ्यते, न द्वितीया युता, तत्र
अमाविद्धायामपि प्रतिपदि कलश स्थापनादि कार्यम् ॥
(तिथिचिन्तामणि)

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा उदयकालव्यापिनी प्राप्त न हो और अगले दिन प्रतिपदा तिथि का अभाव हो अथवा एक मुहूर्त्त से भी कम व्याप्त हो तो उस स्थिति में दर्शयुक्ता प्रतिपदा में ही नवरात्रारम्भ करना शास्त्रसम्मत होगा। यथोक्तम्

परदिने प्रतिपदोऽत्यन्तासत्त्वे ।
दर्शयुता पूर्वैव ग्राह्या ॥ (निर्णयसिंधु)

धर्मसिन्धुकार का भी यह मत है–

प्रतिपदो मुहूर्त्तन्यूनव्याप्तौ सूर्योदयास्पर्शे वा दर्शयुताऽपि ग्राह्या॥
(धर्मसिन्धु)

नवरात्रारम्भ मे प्रतिपदा यदि सूर्योदय के समय मुहूर्त से न्यून हो अथवा सूर्योदय के समय जिसका स्पर्श नहीं हो ऐसा प्रतिपदा दर्श से युक्त भी ग्रहण करनी चाहिए।

यद्यपि अमायुक्ता प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ का निषेध है। परन्तु यदि प्रतिपदा का क्षय हो तो पूर्व दिन अर्थात् अमायुता प्रतिपदा मे नवरात्रारम्भ करना चाहिए। यथोक्तम्–

अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने ।
मुहूर्त्तमात्रा कर्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता ॥ (देवीपुराण)

नवरसंवत्सरारम्भ चैत्रशुक्त उदयव्यापिनी प्रतिपदा को होता है। यदि प्रतिपदा दो दिन उदयकाल में व्याप्त हो तो पूर्व दिन और यदि प्रतिपदा तिथि दोनों दिन उदयकाल से व्याप्त न हो तो नवसंवत्सर का प्रारम्भ उसी दिन होगा। अतः जिस दिन चैत्र अमावस्या समाप्त हो रही है उसी दिन नवसंवम्सरारम्भ होगा ऐसा धर्मसिन्धुकार का मत है। यथोक्तम्–

तत्र चैत्रशुक्ल प्रतिपदि सम्वत्सराम्भ–

तत्रौदयिकी प्रतिपत् ग्राह्या ॥ दिनद्वये उदयव्याप्तौ
अव्याप्तौ वा पूर्वा। (धर्मसिन्धु)

चूँकि इस वर्ष अमावस्या की समाप्ति दिनांक 19 मार्च, 2026 ई. के 6 घ.–53मि. पर हो रही है। तद्पश्चात् प्रतिपदा का प्रारम्भ 6 घ. –53 मि. पर हो रहा है और प्रतिपदा की समाप्ति 28 घ.–52 मि. तक है। सूर्योदय काल में प्रतिपदा व्याप्त नहीं है। अतः प्रतिपदा के क्षय होने के कारण अमायुता प्रतिपदा में ही शास्त्रवचानुसार वासन्तिक नवरात्रारम्भ एवं नवसंवत्सराम्भ दिनांक 19 मार्च, 2026 गुरुवार को करना प्रशस्त होगा।

स्कन्दषष्ठी (दिनांक 24 मार्च 2026 ई., मंगलवार)

यह व्रत परिवार से सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिए किया जाता है। इस दिन भगवान कार्तिकेय की पूजा–अर्चना करने का विधान है। चैत्रशुक्ल पंचमी से विद्ध षष्ठी तिथि के दिन यह व्रत किया जाता है–

यथोक्तम्-

"षष्ठी स्कन्दव्रते पूर्वविद्धा ग्राह्या" (धर्मसिन्धु)

तदनुसार इस वर्ष यह व्रत दिनांक 24 मार्च, मंगलवार को करना शास्त्रसम्मत होगा।

श्री रामनवमी (दिनांक 27 मार्च 2026 ई., शुक्रवार)

सूर्यवंश में रामनवमी के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म हुआ था। यह दिन प्रत्येक हिन्दू के लिए पुण्यपर्व माना जाता है। भारतवर्ष में यह पर्व सर्वत्र आनन्दोल्लासपूर्वक मनाया जाता है। भगवान श्रीराम का जन्म पुनर्वसुनक्षत्र ये युत चैत्रशुक्ल नवमी के दिन हुआ था। यथोक्तम्-

चैत्रशुक्ल नवमी रामनवमी।

चैत्रशुक्लनवम्यां पुनर्वसुयुतायां मध्याह्ने श्रीरामजन्म श्रवणात्॥

(धर्मसिन्धु)

पुनर्वसुयुता नवमी में रामनवमी के व्रत करने का विशेष माहात्मय है। इस वर्ष दिनांक 27 मार्च को नवमी पुनर्वसु नक्षत्र ये युत है। अतः शास्त्रवचनानुसार 27 मार्च को रामनवमी का पर्व मनाना प्रशस्त होगा।

अनङ्ग त्रयोदशी (दिनांक 30 मार्च 2026 ई. सोमवार)

यह व्रत पूर्वविद्धा चैत्रशुक्ल त्रयोदशी को किया जाता है।

यथोक्तम् -

चैत्रशुक्ल त्रयोदश्यां अनङ्गपूजनव्रतम्।

तत्र त्रयोदशी पूर्वविद्धा ग्राह्या ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक 30 मार्च सोमवार को त्रयोदशी तिथि पूर्व विद्धा तथा प्रदोषव्यापिनी है। अतः इस दिन यह व्रत एवं पूजन करना शास्त्रोचित होगा।

श्री परशुरामजयन्ती (दिनांक 19 अप्रैल 2026 ई. रविवार)

वैशाखशुक्ल प्रदोषव्यापिनी तृतीया तिथि के दिन परशुराम जयन्ती मनाने का विधान है। यथोक्तम्-

इयं रात्रिप्रथमयामव्यापिनी ग्राह्या ।

वैशाखशुक्लतृतीयायां परशुरामोद्भवः ॥ (धर्मसिन्धु)

तदनुसार इस वर्ष दिनांक 19 अप्रैल रविवार को तृतीया तिथि प्रदोषकालव्यापिनी है, अतः इस दिन परशुराम जयन्ती मनाना शास्त्रोचित होगा।

अक्षय तृतीया (दिनांक 20 अप्रैल 2026 ई. सोमवार)

सूर्योदयकालव्यापिनी वैशाखशुक्ल तृतीया को 'अक्षय तृतीया' का पर्व मनाया जाता है। यह युगादि तिथि है। इस दिन जप, होम, पितृतर्पण दानादि करने का पुण्य 'अक्षय' रहता है। इस कारण यह दिन बहुत पवित्र माना गया है। यथोक्तम्-

वैशाखशुक्ल तृतीया अक्षयातृतीयोच्यते ।

इयं अक्षय्यतृतीयासंज्ञिका। अस्यां यत्किचिज्जपहोम-

पितृतर्पणदानादि क्रियते तत्सर्वमक्षयम् ॥ (धर्मसिन्धु)

उपरोक्त शास्त्रवचनानुसार इस वर्ष दिनांक 20 अप्रैल 2026 ई. सोमवार को अक्षयतृतीया का पर्व मनाना प्रशस्त होगा।

गंगा सप्तमी (दिनांक 23 अप्रैल 2026 ई. गुरुवार)

वैशाखशुक्ल मध्याह्नव्यापिनी सप्तमी तिथिको माँ गंगा की उत्पत्ति हुई थी। इस दिन माँ गंगा की विशेष पूजा एवं अर्चना करने का विधान है। यथोक्तम्-

वैशाखशुक्लसप्तम्यां गङ्गोत्पत्तिस्तस्यां ।

मध्याह्नव्यापिन्यां गङ्गापूजनं कार्यम् ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक 23 अप्रैल 2026 ई. को सप्तमी तिथि मध्याह्नव्यापिनी है। अतः इस दिन गंगा सप्तमी का पर्व मनाना शास्त्रसम्मत होगा।

गङ्गा दशहरा (दिनांक 25 मई, 2026 ई. सोमवार)

ज्येष्ठशुक्ल दशमी तिथि को पूर्वाह्न में पृथ्वी पर गङ्गा का अवतरण हुआ था। इसलिए पूर्वाह्नव्यापिनी दशमी तिथि के दिन 'गंगा दशहरा' मनाया जाता है। पूर्वाह्नव्यापिनी दशमी तिथि में निम्नांकित दस योगों में ये योग बाहुल्य हो उसी दिन यह पर्व मनाया जाता है। ये योग इस प्रकार है–

1. ज्येष्ठ मास 2. शुक्ल पक्ष 3. दशमी तिथि
4. बुधवार 5. हस्तनक्षत्र 6. व्यतिपातयोग
7. गरकरण 8. आनन्दयोग 9. कन्यास्थ चन्द्रमा
10. वृषराशिस्थ सूर्य यथोक्तम्–

ज्येष्ठशुक्लदशम्यां गंगावतारः ॥ इयं दशहरासंज्ञिका॥

अत्र दशयोगाः उक्ताः ॥

1. ज्येष्ठ मासि 2. सितेपक्षे 3. दशम्यां 4. बुध
5. हस्तयोः 6. व्यतिपाते 7. गरा 8. नन्दे
9. कन्याचन्द्रे 10. वृष रवौ इति।

तेन यस्मिनदिने कतिपययोगवती दशमी पूर्वाह्ने लभ्यते तत्र दशहरा व्रतं कार्यम् ॥

ज्योष्ठ मास यदि मलमास हो तो उसी मलमास में दशहरा मनाना चाहिए न कि शुद्ध ज्येष्ठ मास में। आचार्यो यही कथन है। यथोक्तम्–

ज्येष्ठे मलमासे सति तत्रैव दशहरा कार्या न तु शुद्धे।
(धर्मसिन्धु)

चूँकि इस वर्ष 'ज्येष्ठ' मास 'मल' मास है तथा दशहरा के निर्णायक योगों में 6 योग ज्येष्ठ मल मास में उपलब्ध है। अतः शास्त्रवचनानुसार दिनांक 25 मई 2026 ई. सोमवार को दशहरा का पर्व मनाना प्रशस्त होगा।

दूर्वाष्टमी व्रत (दिनांक 19 सितम्बर, 2026 ई. शनिवार)

वंशवृद्धि एवं सन्तान सुख की कामना से दूर्वाष्टमी का व्रत किया जाता है। यह व्रत भाद्रपदशुक्ल अष्टमी सिंहस्थ सूर्य के काल में किया जाता है। उस समय अगस्त्यतारा उदित नहीं होना चाहिए। कन्या के सूर्य में यह व्रत कदापि नहीं करना चाहिए। यथोक्तम्–

शुक्ले भाद्रपदे मासि दूर्वासंज्ञा तथाऽष्टमी ।
इदमगस्त्योदये कन्यार्के च न कार्यम् ।
सिंहार्क एव कर्तव्या न कन्यार्के कदाचन ॥ (निर्णयसिन्धु)

उक्त शास्त्रवचनानुसार इस वर्ष 19 सितम्बर को भाद्रपद मास में शुक्ल अष्टमी तिथि को कन्याराशि में सूर्य होने के कारण 'दूर्वाष्टमी' का व्रत नहीं होगा।

आश्विन कृष्ण पञ्चमी+षष्ठी श्राद्ध (दिनांक 1 अक्टूबर 2026 ई. गुरुवार)

आश्विन कृष्ण पक्ष में पितरों के निमित्त श्राद्ध किए जाते है। इसलिए इस पक्ष को 'पितृपक्ष' कहते है। मृत्यु की तिथि के अनुसार इस पक्ष में श्राद्ध करने का विधान है। यद्यपि पार्वणश्राद्ध अपराह्नव्यापिनी तिथि में करने की शास्त्राज्ञा है, किन्तु जब तिथि अपराह्नकाल में अल्पसमय के लिए व्याप्त हो तब अग्रिम दिन मध्याह्नकाल में श्राद्ध करना शास्त्रोचित होगा।

इस वर्ष आश्विन कृष्ण पक्ष की पञ्चमी तिथि 30 सितम्बर को 14घ.–55मि. से आरम्भ होकर अग्रिमदिन 1 अक्टूबर को 12घ.–35मि. तक व्याप्त है। चूँकि पञ्चमी तिथि 30 सितम्बर को 14घ.–55मि. के पश्चात् अल्प समय के लिए अपराह्न का स्पर्श कर रही है। ऐसी स्थिति में

अग्रिम दिनांक 1 अक्टूबर को 12घ.-35मि. तक पञ्चमी तिथि का श्राद्ध करना शास्त्रोचित होगा।

दिनांक 1 अक्टूबर को षष्ठी तिथि का प्रारम्भ 12घ.-35मि. के पश्चात हो रहा है, तथा षष्ठी तिथि पूर्ण अपराह्नव्यापिनी भी है। अतः इस दिन षष्ठी का श्राद्ध करना भी शास्त्रोचित होगा।

नोट- पञ्चमी श्राद्ध- 1 अक्टूबर 12घ.-35 मि. तक होगा

षष्ठी श्राद्ध - 1 अक्टूबर 12घ.-35 मि. के पश्चात् होगा

होलिका दहन (दिनांक 22 मार्च, 2027 ई. रविवार)

प्रदोषव्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भद्रारहित काल में होलिका दहन किया जाता है। यदि पूर्णिमा दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो अगले दिन (पूर्णिमा) ही होलिकादहन करना चाहिए। पहले दिन भद्रा का दोष हो। यदि दूसरे दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी न हो तो तथा पहले दिन पूर्णिमा भद्रा से दूषित है एवं दूसरे दिन पूर्णिमा सूर्योदय से साढ़े तीन प्रहर तक या उससे अधिक काल तक व्याप्त हो एवं अगले दिन प्रतिपदातिथि वृद्धि गामिनी हो अर्थात् प्रतिपदा का मान पूर्णिमा के मान से अधिक हो तो अगले दिन प्रदोषव्यापिनी प्रतिपदा में होलिका दहन करना चाहिए। यथोक्तम्-

"सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहिता ग्राह्या"॥
दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ परदिने प्रदोषैकदेशव्याप्तौ व परेव॥
पूर्वदिने भद्रादोषात्। परदिने प्रदोषस्पर्शाभावे
पूर्वदिने प्रदोषे भद्रासत्वे यदि पूर्णिमा सार्धत्रियामा
ततोधिका वा तत्परदिने च प्रतिपदवृद्धिगामिनी तदा परदिने
प्रतिपदि प्रदोषव्यापिन्यां होलिका। (धर्मसिन्धु)

भविष्योत्तर पुराणानुसार- यदि फाल्गुन पूर्णिमा साढ़े तीन प्रहर इससे अधिक काल को व्याप्त करें और प्रतिपदा वृद्धिगामिनी हो तब होलिका दहन सायाह्नव्यापिनी पूर्णिमा के काल में ही करना चाहिए। यथोक्तम्-

सार्धयामत्रयं वा स्यात् द्वितीयदिवसे यदा ।
प्रतिपदवर्धमाना तु तदा सा होलिका स्मृता ॥

धर्मसिन्धुकार के अनुसार दिन के समय होलिका दहन निषिद्ध है-

"दिवा होलिकादीपनं तु सर्वग्रन्थविरूद्धम्"

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार- होलिका दहन सायाह्नकाल में प्रशस्त माना गया है। यथोक्तम्

" होलिका पौर्णमासी तु सायाह्नव्यापिनी मता"॥

उपरोक्त शास्त्रवचनानुसार इस वर्ष फाल्गुन पूर्णिमा दिनांक 21 मार्च 2027 ई. को 18घ.-21मि. पर प्रारम्भ होकर दिनांक 22 मार्च 16घ.-23मि. तक व्याप्त रहेगी। 21 मार्च को भद्रा का प्रारम्भ 18 घ.-2मि. हो रहा है, जो कि 29घ.-15मि. तक व्याप्त है, अर्थात् सायंकाल से लेकर सम्पूर्ण रात्रि में भद्राव्याप्त है जबकि दिनांक 22 मार्च को पूर्णिमा तिथि सायाह्नकालव्यापिनी एवं भद्रारहिता है। अतः इस दिन निशामुख में होलिका दहन करना शास्त्रोचित होगा।

ज्येष्ठ अधिक मास-संवत् 2083 (दिनांक 17 मई 2026 से 15 जून 2026 ई. तक)

इस वर्ष विक्रम संवत् २०८३ में चान्द्र ज्येष्ठ मास 'अधिकमास' होगा। इस चान्द्र मास की कालावधि- 17 मई से 15 जून पर्यन्त रहेगी। शास्त्रानुसार जिस मास में सूर्य की संक्रान्ति नहीं होती है, उस मास को 'अधिक मास' कहते है। चान्द्रमास वह होता है, जिसमें सूर्य की संक्रान्ति होती है। इसलिए संक्रमण रहित मास को अधिक मास कहते हैं। यथोक्तम्-

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः"॥ (सिद्धान्तशिरोमणि)

ज्योतिषीयगणनानुसार एक सौरवर्ष में 365 दिन होते हैं जबकि एक चान्द्रवर्ष में 354 दिन होते है। सौर वर्ष एवं चान्द्रवर्ष तथा सौर मास एवं चान्द्रमास के मध्य सामञ्जस्य स्थापित करने के लिए आचार्यो द्वारा अधिक मास की व्यवस्था की गई है। इस प्रकार हर तीसरे वर्ष अधिक मास होने से व्रत एवं पर्वो को शास्त्रसम्मत समय पर सम्पन्न करने में सहायता मिलती है।

अधिकमास को मलमास भी कहा जाता है। इस मलमास में समस्त शुभ कर्म वर्णित है। यथोक्तम् –

दर्शद्वयमतिक्रम्य यथा सङ्क्रमते रविः ।
मलमासः सः विज्ञेयः सर्वकर्मसु गर्हितः ॥

(आचार्य चण्डेश्वर)

अधिक मास में कामना से किए जाने वाले कार्य वर्जित है। फल की आशा से मुक्त होकर सभी कार्य किए जा सकते है। शास्त्रों में अधिक मास बड़ा ही पवित्र माना गया है। इस मास में विष्णु की उपासना का विशेष महत्त्व है। इस मास में दानव्रत 'स्नानादि का फल 'अक्षय' है। इस अधिक मास में दानादि करने वाले इस लोक में सभी सुख प्राप्त करते है और अन्त में मोक्ष को प्राप्त करते है।

ज्येष्ठ अधिक मास का फल –

जब ज्येष्ठ अधिक मास होता है तो जगत में रोग से कष्ट होता है तथा यज्ञ और दानादि अधिक होते है। यथोक्तम्–

"रोगपीड़ा भवेज्ज्येष्ठे यज्ञदानादिकं बहु"।

अधिकमास में करणीय कर्म–

मनुस्मृति के अनुसार अधिक मास में तीर्थश्राद्ध, दर्श श्राद्ध, प्रेतश्राद्ध, सपिण्डीकरण, चन्द्रसूर्यग्रहणीय स्नान करना चाहिए। यथोक्तम्–

तीर्थश्राद्धं दर्शश्राद्धं प्रेतश्राद्धं सिपण्डनम् ।
चन्द्रसूर्यग्रहेण स्नानं मलमासे विधीयते ॥ (मनुस्मृति)

गर्भाधानादि संस्कार में, बालक के अन्नप्राशन समय में, गुरु शुक्र के अस्तत्व में मलमास जनित दोष नहीं होता है। क्योंकि इसमें काल की प्रधानता होने से उक्त कार्य मलमास में भी किए जा सकते है। यथोक्तम्–

गर्भाधानादिसंस्कारे तथान्नप्राशने शिशोः।
न तत्र गुरुशुक्रास्तमलमासादिदूषणम् ॥ (मुहूर्त्तगणपति)

अधिकमास में त्याज्यकर्म –

आचार्य गर्ग के अनुसार अधिक मास में अग्न्याधान प्रतिष्ठा, यज्ञ, दान व्रतादि, वेदव्रत, वृषोत्सर्ग, चूड़ाकर्म, व्रतबन्ध, देवतीर्थों में गमन, विवाह, अभिषेक और घर के काम गृहारम्भादि शुभ कार्य नहीं करने चाहिए। यथोक्तम्–

अग्न्याधेयं प्रतिष्ठां च यज्ञो दानव्रतानि च ।
वेदव्रतवृषोत्सर्गचूड़ाकरणमेखलाः ॥
गमनं देवतीर्थानां विवाहमभिषेचनम् ।
यानं च गृहकर्माणि मलमासे विवर्जयेत् ॥

प्रो. रश्मि चतुर्वेदी
आचार्या, ज्योतिष–विभाग

विवाह में अष्टकूट विचार एवं परिहार

विवाह शब्द से पाणिग्रहण संस्कार विशेष कहा गया है। अथवा विशेष रूप से जीवन का निर्वहन करना विवाह शब्द को इङ्गित करता है। भारतीय संस्कृति संस्कारों से परिपूर्ण हैं, विवाह षोडश संस्कारों में प्रमुख स्थान रखता है। चारों वर्णों के आधारगत ज्योतिषशास्त्र के दैवज्ञों एवं आचार्यों द्वारा आठ प्रकार के विवाहों के विषय में विचार किया है। यथा–

ब्राह्मो दैवस्तथा चाऽऽर्षः प्राजापत्यस्तथाऽऽसुरः ।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ (मनुस्मृति)

उपर्युक्त आठ प्रकार के विवाहों में प्रथम चार प्रकार के विवाहों को श्रेष्ठतम श्रेणी में रखा गया है। अन्तिम चार विवाह निम्न श्रेणी के अन्तर्गत हैं। प्रथम चार विवाहों में भी सर्वोत्कृष्ट एवं उत्तम श्रेणी में प्रथम विवाह ब्राह्म विवाह कहा गया है। यथा–

ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलङ्कृता ।
तज्जः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविंशतिम् ॥

(मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण)

विवाह वर्णयोग्य स्त्री –

जो सुन्दर एवं सदा पति के अनुकूल चलने वाली स्त्री, धर्म, अर्थ एवं काम इन तीनों वर्गों को प्रदान करती है और पति को सहयोग देकर तीन ऋणों से मुक्त कराती है इस प्रकार के गुणों के लिए विवाह में लग्न की प्रधानता होनी चाहिए। अर्थात् शास्त्रविहित शुभ मुहुर्त में विवाह होने पर स्त्री का स्वभाव और आचरण पवित्र होता है। इसलिए विवाह का विचार किया जाता है, क्योंकि पुत्र (सुसन्तति) सुन्दर स्वभाव और धर्म विवाहकालिक लग्न के अधीन होते हैं। यथा–

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः।
तस्माद्विवाहसमयः परिचिन्त्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः॥

मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो.१

विवाह आदि संस्कारों में जन्मराशि की प्रधानता –

विवाह एवं सर्वविध मङ्गलकार्यों तथा ग्रहगोचर का विचार करने हेतु जन्म राशि की प्रधानता रहती है। इसलिए सर्वविध कल्याण चाहने वालों को प्रत्येक संस्कार में जन्म राशि को ग्रहण करना चाहिए। हाँ यदि जन्मराशि अज्ञात हो तो नामराशि में मेलापकादि कार्य किये जा सकते हैं। यथा–

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहग्रोचरे ।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं च चिन्तयेत् ॥
कुर्यात् षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते ।
सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥

यदि नाम राशि से विवाह संस्कार अथवा अन्य संस्कार करवाना हो तो दोनों वर एवं कन्या का संस्कार के लिए नाम राशि का ही प्रयोग करना चाहिए। ऐसा नहीं कि वर की नाम राशि और कन्या की जन्मराशि ग्रहण की जाए अथवा वर की जन्मराशि और कन्या की नाम राशि से विवाह किया जाए यह विपरीत संस्कार नहीं करना चाहिए दोनों वर एवं कन्या की या तो नामराशि को अथवा जन्मराशि को ही ग्रहण करना चाहिए। यथा–

जन्मलग्नमिद्मङ्गमङ्गिनाम् मेनिरे मन इतीन्दुमन्दिरम् ।
सौहृदं हि मनसोर्न देहयोः मेलकस्तदयमिन्दुगेहयोः ॥

– विवाह वृन्दावन

जैसा कि कहा गया है कि– यदि वर की नाम राशि और कन्या की जन्म राशि अथवा कन्या की नाम राशि अथवा वर की जन्म राशि के अनुसार यदि विवाह मेलापक में विचार किया गया तो निश्चित रूप से दम्पति का निधन होगा। यथा–

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ॥

– विवाह वृन्दावन

वर कन्या मेलापक में विचार –

वर एवं कन्या के मिलान में अष्टकूटों का अहम् योगदान है। अष्टकूट का आधार पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। इसलिए सुयोग्य दैवज्ञों के पास जाकर कुण्डली मिलान करना चाहिए। अष्टकूट पूर्णरूप से वर एवं कन्या के कायिक, वाचिक एवं मानसिक तीनों का आधारभूत स्तम्भ है। इसलिए शास्त्रसम्मत विधि के अनुरूप विवाह मिलान करना चाहिए। इसलिए वर की कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट तथा नाड़ी इन आठ विषयों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। जैसे कि– वर्ण का एक अंक, वश्य के दो, तारा के तीन, योनि के चार, ग्रहमैत्री के पाँच, गणमैत्री के छः, भकूट के सात तथा नाड़ी के आठ अंक उत्तरोत्तर वृद्धि क्रम में ग्रहण करने चाहिए। इस प्रकार से इन सभी गुणों का योग ३६ होता है। यथा–

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रह मैत्रकम् ।
गणमैत्रं भकूटञ्च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥

– मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरणम्

गुण संख्या निर्धारण –

वर–कन्या की जन्म कुण्डली के मिलान में यदि सोलह गुणों से कम संख्या हो तो उसे निन्द्य कहा गया है अर्थात् विवाह नहीं किया जा सकता। २० गुण मिलने पर विवाह को मध्यम श्रेणी में रखा गया है। ३० गुण या ३० से अधिक गुण मिलने पर उत्तम प्रकार का मिलान कहा गया है। यथा –

गुणा षोडशभिर्न्यूना निन्द्या मध्यास्तु विशंतिः ।
श्रेष्ठास्त्रिंशद् गुणाः प्रोक्ताः परतस्तूत्तमोत्तमाः ॥

– मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरणम्

वर्ण विचार –

विवाह संस्कार में प्रायः वर एवं कन्या दोनों के मन एक हों इस हेतु से विचार किया जाता है। चन्द्रमा मन का कारक ग्रह है और जन्मराशि या नाम राशि में, राशि का नेतृत्व चन्द्रमा के द्वारा किया जाता है। अतः सर्वप्रथम राशियों की वर्णगत संज्ञा का बोध होना चाहिए। मीन, कर्क, वृश्चिक राशियाँ ब्राह्मण वर्ण। मेष, सिंह, धनु क्षत्रिय वर्ण। वृष, कन्या, मकर राशियाँ वैश्य वर्ण, मिथुन, तुला, कुम्भ राशियां शूद्र वर्ण की है। वर्णों में भी उत्तरोत्तर क्रम से वर के विषय में विचार किया जाता है। यथा यदि वर ब्राह्मण वर्ण का हो और कन्या क्षत्रिय वर्ण की हो तो श्रेष्ठ श्रेणी में है और दोनों वर एवं वधु का वर्ण एक हो तो वह भी श्रेष्ठ श्रेणी में होगा। इसलिए वर्ण विचार में वर का वर्ण उच्च होना चाहिए और कन्या का वर्ण हीन हो तो ऐसा विवाह मंगलकारी सिद्ध होता है। यथा–

द्विजा झषालिकर्कटास्ततो नृपा विशोऽङ्घ्रिजाः ।
वरस्य वर्णतोऽधिका वधूर्न शस्यते बुधैः ॥

– मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लोक– २२

अपि च – वर्णों की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए और भी प्रमाण दिये गये हैं। यथा–

वर्णज्येष्ठा तु या नारी वर्णहीनस्तु यः पुमान् ।
विवाहं यदि कुर्वीत तस्या भर्ता विनश्यति ॥

अपिच – **एको गुणः सदृग्वर्णेऽथवा वर्णोत्तमे वरे ।**
हीने वरेऽधिके शून्यं केऽप्याहुः सदृशे दलम् ॥

– ज्योर्तिनिबन्ध

		वर्ण गुणबोधाक सारणी				अन्यमतेन गुणबोधक सारणी			
		वरवर्ण				वरवर्ण			
		ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
कन्यावर्ण	ब्राह्मण	१	०	०	०	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१	१	१	१	१

वर्ण दोष का परिहार –

वर्ण दोष के परिहार से पूर्व हमें ग्रहों के वर्णों के विषय में जान लेना चाहिए। यथा– सूर्य का वर्ण क्षत्रिय, चन्द्रमा का वैश्य, मंगल का क्षत्रिय, बुध का शुद्र, गुरु और शुक्र का ब्राह्मण और शनि का वर्ण शूद्र है। वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है। लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या की राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्णदोष का परिहार हो जाता है।

वश्य कूट विचार एवं परिहार –

सिंह राशि को छोड़ कर मेष, वृष, कर्क, वृश्चिक, धनु का उत्तरार्ध मकर, कुम्भ तथा मीन राशियां मनुष्य राशियों के अधीन हैं। (मिथुन, कन्या, तुला एवं धनु का पूर्वार्ध) इन उपर्युक्त राशियों में जलचर राशियां कर्क, मकर, कुम्भ और मीन राशियां मनुष्य राशि के भक्ष्य भी है। वृश्चिक को छोड़ कर सभी राशियां मेष, वृष, मिथनु, कर्क, कन्या तुला, धनु, मकर, कुम्भ, मीन राशियां सिंह के वश्य है। इससे अधिक मनुष्य के परस्पर व्यवहार से जानना चाहिए। अतः वर के लिए यदि कन्या वश्य या भक्ष्य है तो श्रेष्ठ है। यथा–

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजास्तु भक्ष्याः ।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥

– मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरणम्, पृ.सं. ३३७ श्लो.–२३

वश्य गुण विचार –

वैरभक्ष्ये गुणाभावो द्वयोः सख्ये गुणद्वयम् ।
वश्यवैरे गुणस्त्वेको वश्यभक्ष्ये गुणार्धकः ॥

वश्य कूट में गुण विचार करते हुए यदि वर कन्या के वश्य कूट में परस्पर वैर–भक्ष्य का सम्बन्ध हो तो गुण का अभाव होता है। दोनों के वश्य कूट में सख्य सम्बन्ध हो तो दो गुण होते हैं, वश्य–वैर सम्बन्ध होने पर एक गुण और भक्ष्य–वश्य सम्बन्ध होने पर आधा गुण प्राप्त होता है।

वर	वर					
	२	द्विपद	चतुष्पद	जलचर	सिंह	वृश्चिक
कन्या	द्विपद	२	१	$\frac{१}{२}$	०	१
	चतुष्पद	१	२	१	०	१
	जलचर	$\frac{१}{२}$	१	२	१	१
	सिंह	०	०	१	२	०
	वृश्चिक	१	१	१	०	१

वश्य दोष परिहार -

वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष का परिहार हो जाता है।

ताराकूट विचार एवं परिहार -

ताराकूट विचार में वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गणना करें और कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गणना करें और जितनी संख्या आये उसे ९ से भाग देने पर यदि शेष ३, ५,७ शेष बचे तो तारा शुभ नहीं होती शेष, १,२,४,६,८,९ ताराएं होती है। यथा–

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥

– मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो. सं.–२४

ताराओं के नाम इस प्रकार से है – जैसा कि भीम नामक व्यक्ति के लिए तारा का विचार करेंगे तो इस प्रकार से होगा। यथा–

उत्तराषाढ़ा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनि, **विपत्ततारा** ।
धनिष्ठा, मृगशिरा, चित्रा, **प्रत्यरितारा** ।
पू.भा., पुनर्वसु विशाखा **वधतारा** ।

इन नक्षत्रों में कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। जन्म तारा कुछ कार्यों के लिए शुभ और कुछ कार्यों के लिए अशुभ कही गई है। उपनयन संस्कार में जन्मतारा शुभ और यात्रा में निषिद्ध मानी जाती है। अन्यत्र जन्म नक्षत्र को छोड़कर प्रायः शुभ होती है।

भीम नामक व्यक्ति के निम्नांकित चक्र में ताराएँ

जन्म	सम्पत	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा	उ.भा.	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

यथा–

जन्माख्यसम्पद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः ।
वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्ताराः नामसदृक्फलाः ॥

– मुहूर्तचिन्तामणि गोचरप्रकरण श्लो.–१२

तारा दोष परिहार – वर एवं कन्या के राशियों के स्वामियों की परस्पर मैत्री या नवांशेशों की मैत्री या एकता हो तो तारा दोष का परिहार होता है और अन्य कोई दूसरा परिहार नहीं है।

तारा गुण बोधक चक्र

	१	2	३	4	5	6	7	8	9
१	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
2	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
३	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$
4	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
5	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$
6	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
7	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$
8	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
9	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३

योनि कूट विचार एवं परिहार –

योनि विचार में जन्म नक्षत्रों के आधार पर योनि का विचार किया जाता है। प्रत्येक नक्षत्र की अलग योनि है, इसी योनि को आधार मानकर विवाह मेलापक में विचार किया जाता है। यथा–

अश्विनी और शतभिषा की अश्व योनि, स्वाती और हस्त नक्षत्र की कासर (भैंसा) योनि, धनिष्ठा एवं पू.भा. की सिंह योनि, भरणी तथा रेवती की हाथी योनि, पुष्य और कृत्तिका की मेष योनि, श्रवण एवं पू.षा. की वानर योनि, उ.षा. तथा अभिजित की नकुल योनि, रोहिणी एवं मृगशिरा की सर्प योनि, ज्येष्ठा एवं अनुराधा की मृग योनि, मूल एवं आर्द्रा की कुत्ता योनि, पुनर्वसु और आश्लेषा की मार्जर, योनि, मघा तथा पूर्वाफाल्गुनी की मूषक योनि, विशाखा–चित्रा की योनि व्याघ्र और उत्तराभाद्रपद व उत्तराफाल्गुनी की गौ योनि होती है।

एक–एक चरण में कही गई दो–दो योनियों में परस्पर वैर होता है। उन्हें विवाह में त्याग देना चाहिए। यथा प्रथम पाद में घोड़ा और भैंसा, द्वितीय पाद में सिंह एवं हाथी, तृतीय पाद में मेष और वानर, चौथे पाद में नकुल–सांप, पांचवें पाद में मृग एवं कुत्ता, छठे पाद में मार्जार और मूषक, सातवें पाद में व्याघ्र एवं गौ, का परस्पर महावैर होता है जो कि योनि विचार में निन्दित है। अर्थात् यदि योनि विचार में वर एवं वधु दोनों की योनियों में परस्पर महावैर है तो जीवन दुःखमय एवं परस्पर एक–दूसरे के प्रति वैर–विरोध की भावना रहेगी। इसलिए ऐसी योनि कूट की स्थिति में विवाह नहीं करना चाहिए। यथा–

अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यान्त्ययोः कुञ्जरः।
मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः
स्याद् वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः ॥
ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्ग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोऽदितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ।
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि च गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयो-
योनिः पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योस्त्यजेत् ॥

– मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो. सं.– २५–२६

योनि गुणबोधक चक्र

	अ. शत.	हस्त स्वा.	धनि. पू.भा.	भर. रेव.	पुष्य कृति.	श्रव. पू.षा.	पू.षा. अभि.	मृग. रोहि.	ज्ये. अनु.	मू. आ.	पुन. श्ले.	मघा पू.फा.	वि. चित्रा	उ.फा. उ.भा.
४	अश्व	महिष	सिंह	गज	मेष	कपि	नकु.	सर्प	मृग	श्वान	मार्जार	मूषक	व्याघ्र	गौ
अश्व.	४	०	१	२	३	२	२	१	३	२	३	३	१	३
महि.	०	४	१	३	३	२	२	२	२	२	२	२	१	३
सिंह	१	१	४	०	१	२	२	२	१	१	२	१	२	१
गज	२	२	०	४	२	२	२	२	२	२	३	२	१	२
मेष	३	३	१	२	४	०	३	१	३	२	३	२	१	३
कपि	२	२	२	२	०	४	२	१	२	२	२	२	१	२
नकु.	२	२	२	२	३	२	४	०	२	१	२	२	२	२
सर्प	१	२	२	२	१	१	०	४	१	१	१	१	२	१
मृग	२	२	१	२	३	२	२	१	४	०	२	२	१	२
खान	२	२	१	२	२	२	१	१	०	४	१	१	१	१
मार्जार	३	२	२	३	३	२	२	१	२	१	४	०	२	२
मूषक	३	२	१	२	२	२	२	१	२	१	०	४	२	२
व्याघ्र	१	१	२	१	१	१	२	२	१	१	२	२	४	०
गौ	३	३	१	२	३	२	२	१	२	१	२	२	०	४

योनिकूट के विषय में और भी कहा गया है यथा–

अष्टाविंशतिताराणां योनयस्तु चतुर्दश।
मैत्रं चैवातिमैत्रं च विवाहे नरयोषितोः ॥

महद्वैरे च वैरे च स्वभावे च यथाक्रमम् ।
मैत्रे चैवातिमैत्रे च खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥

– गुणविभागो दैवज्ञमनोहर २५–२६

योनिकूट विचार – भकूट एवं वश्यकूटों में से कोई एक भी शुभ हो तो योनिकूट का परिहार हो जाता है। यथा–

योनेरभावे नोद्वह्यः स तु कार्ये वियोगहा ।
राशिवश्यं च यद्यस्मि कारयेन्न तु दोषभाक् ॥

– गुणविभागो दैवज्ञमनोहर २५–२६

ग्रहमैत्री विचार –

सूर्य आत्माकारक ग्रह और चन्द्रमा मन का नेतृत्वकारक, मंगल बल का कारक, बुध वाणी का कारक ग्रह है गुरु एवं शुक्र दोनों ग्रह अध्यात्म एवं भौतिक सुख–संसाधनों के क्रमशः नेतृत्व कारक ग्रह हैं। और शनि सेवक है शरीर में दुःख का कारक है दुःख के उपरान्त ही सुख की अनुभूति होती है। अतः ग्रह मिलाप परमावश्यक बिन्दु है। वर एवं कन्या का परस्पर निस्वार्थ भावपूर्ण प्रेम बना रहे तो गृहस्थ आश्रम स्वतः ही ठीक रहता है इसलिए विवाह मेलापक में ग्रह मैत्री आवश्यक एवं प्रधान विषय है। सर्वप्रथम सूर्य ग्रह के साथ मैत्री के विषय में विचार करते हैं सूर्य के चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति ये तीनों मित्र है शुक्र और शनि शत्रु हैं बुध सम है।

चन्द्रमा के सूर्य एवं बुध मित्र है अन्य सभी ग्रह मंगल, गुरु, शुक्र, शनि सम है। चन्द्रमा के कोई भी ग्रह शत्रु नहीं है।

मंगल – मंगल ग्रह के सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति मित्र हैं। बुध शत्रु हैं, शुक्र एवं शनि सम है।

बुध – बुध ग्रह के शक्र एवं सूर्य मित्र हैं। चन्द्रमा शत्रु तथा मंगल, गुरु, शनि सम है।

बृहस्पति– बृहस्पति के सूर्य, मंगल एवं चन्द्रमा मित्र हैं। बुध और शुक्र शत्रु तथा शनि सम है।

शुक्र – शुक्र ग्रह के बुध और शनि मित्र, सूर्य और चन्द्रमा शत्रु एवं गुरु सम है।

शनि – शनि ग्रह के बुध एवं शुक्र मित्र है, चन्द्र, सूर्य तथा मंगल शत्रु गुरु सम है।

यथा–

शत्रु मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि रवेः।
तीक्ष्णांशुहिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः ।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्की समौ
मित्रे सूयसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे।
सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरे त्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी ।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरु सौरस्य चान्येऽरयः
तत्काले दशायबन्धुसहजस्वान्त्येषु मित्रं स्थिताः ॥

– भारतीय कुण्डली विज्ञान पृ.सं. ५३ कुण्डली विधान प्रकरण

ग्रह मैत्री बोधक ग्रह

	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	गुरु, मंगल चन्द्र	शनि, शुक्र	बुध
चन्द्र	सूर्य, बुध	राहु	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
बुध	सूर्य एवं शुक्र	चन्द्र	मंगल, गुरु, शनि
गुरु	रवि, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि

शुक्र	शनि, बुध	सूर्य, चन्द्र	मंगल, गुरु
शनि	शुक्र, बुध	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
राहु	शनि, बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु

ग्रह मैत्री गुणबोधक सारणी

५	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	१/२	१/२
मंगल	५	४	५	१/२	५	३	१/२
बुध	४	१	११	५	१/२	५	४
गुरु	५	४	५	१/२	५	१/२	३
शुक्र	०	१/२	३	५	१/२	५	५
शनि	०	१/२	१/२	४	३	५	५

गण कूट विचार -

मानव की मानसिक प्रकृति तीन भागों में विभाजित है वह चाहे सत्व, रज, तमात्मक हो या फिर देव, मनुष्य राक्षक की हो। इसी विषय को आधार मानकर गण कूट का विचार परमावश्यक हो जाता है। यथा- मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा एवं विशाखा इन नक्षत्रों का गण राक्षस है। तीनों पूर्वा एवं उत्तरा, (पू.फा., पू.षा., पू.भा, उ.फा., उ.षा., उ.भा.) रोहिणी, भरणी तथा आर्द्रा ये नौ नक्षत्र मनुष्य गण के हैं।

अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती, हस्त अश्विनी पुष्य ये नौ नक्षत्र देवगण के है। एक समान गण होने पर वर-वधु में प्रेम रहता है। देवगण एवं मनुष्यगण में मध्यम श्रेणी की मित्रता होती है। राक्षस एवं मनुष्य गण में मृत्यु होती है। देवता एवं राक्षस गण में वर-कन्या का विवाह हो तो परस्पर वैर बना रहता है। यथा-

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः
पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥
निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्यादमरमनुजयोः सामध्यमा सम्प्रदिष्टा।
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो दनुजबिबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र॥

-मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण २९-३०

गणकूट में गुणविभाग-

गणकूट के छः गुण वर एवं वधु के होते हैं। यदि कन्या देवगण की हो और वर मनुष्यगण का हो तो ४ गुण होंगे। वर राक्षस गण का और कन्या देवगण की हो तो २ गुण और कन्या राक्षस गण की और वर मनुष्य गण का हो तो १ गुण होता है। वर एवं वधु दोनों देवगण के हों या दोनों वर-वधु मनुष्यगण के हों या वर-वधु दोनों राक्षणगण के हों तो ६ गुण होंगे। यथा-

षड्गुणा गुणसादृश्ये पञ्च स्युः सुरमानुषे ।
नार्या देवो नरः पुंसश्चत्वारो वा गुणास्त्रयः ॥
देवराक्षसयोः शून्यं तथैव नररक्षसोः ।
पुंसो रक्षोगणो यत्र नार्या देवोऽथवा नरः ॥
गुणौ द्वौ क्रमतश्चैको गुणो ग्राह्योऽन्यथा न हि ॥

- दैवज्ञमनोहर गुणविभाग

गुण बोधक सारणी

वर / कन्या	अनु. पुन. पुष्य मृग. स्व. श्रव. रेव. अश्वि. हस्त.	३ पूर्वा., ३ उत्तरा., रोहि. भरणी, आर्द्रा	मघा., अश्वि., धनि., ज्ये., मूल, शत., कृ., चि., वि.
	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	५	६	०
राक्षस	१	०	६

अपिच– **मृत्युः षष्ठाष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।**
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥

– मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण

गणकूट परिहार –

सद्भकूटं योनिशुद्धिर्ग्रहसख्यं गुणत्रयम् ।
एष्वेकतमसद्भावे कन्या रक्षो गणाः शुभाः ॥

– ज्यातिर्निबन्ध

अपि च–

१. राशीशों या नवमाशेशों की मैत्री या एकता हो।
२. भकूट दोष न हो।
३. दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न–भिन्न हों।

भकूट विचार (राशिकूट) –

वर एवं कन्या की राशि यदि परस्पर छठी और आठवीं हो तो विवाह मृत्युकारक होता है। इसी प्रकार से नवमी एवं पाचवीं हो तो निर्धनता रहती है। अन्यत्र समसप्तक परस्पर यथा ५–११, ४–१० ये शुभ होते हैं।

समसप्तक, तृतीय–एकादश, चतुर्थ–दशम, षडषटक्, नवम–पंचम, और द्विर्द्वादश ये ६ प्रकार के भकूट कहे गये हैं। इसमें प्रथम तीन प्रकार के भकूटों को उत्तम माना गया है। शेष अन्तिम ०३ भकूटों को अशुभफलदायक कहा गया है। इन छः भकूटों में शुभ एवं अशुभ भेद से दो–दो भेद होते हैं। राशिस्वामियों की शत्रुता में अशुभ कूट और अन्य स्थिति में शुभ माना गया है। यथा–

१. समसप्तक – १–७, २–८, ३–९, ४–१०, ५–११, ६–१२ में कर्क–मकर एवं सिंह–कुम्भ को समसप्तक अशुभ एवं शेष शुभ है। यथा–

   “मृगः कुलीरेण घटेन सिंहः वैरप्रदः स्यात्समसप्तकत्वम्।”

२. चतुर्थदशम के – १–४, २–५, ३–६, ४–७, ५–८, ६–९, ७–१०, ८–११, ९–१२, १०–१, ११–२, तथा १२–३ ये कुल बारह भेद हैं इनमें १, ३, ५, ७, ९, ११ मैत्रीभाव एवं एकाधिपत्य होने के फलस्वरूप शुभ हैं। शेष अशुभ होते हैं।

३. तृतीयैकादश सभी भकूट शुभ एवं उत्तम माने गये हैं।

४. षडष्टक भी १२ प्रकार के होते हैं यथा– १–८, २–९, ३–१०, ४–११, ५–१२, ६–१, ७–२, ८–३, ९–४, १०–५, ११–६, १२–७ इनमें १, ३, ५, ७, ९, ११ वाला षडष्टक एकाधिपत्य एवं मित्र होने के फलस्वरूप उत्तम कहे गये हैं। २, ४, ६, ८, १०, १२ भेद के षडष्टक परस्पर शत्रु होने के फलस्वरूप अशुभ कहे गये हैं।

यथा– **वैरषट्काष्टकं मेषकन्ययोर्घटमीनयोः ।**
चापक्षयोर्नृयुक्कीटभयोर्घटकुलीरयोः ।
पञ्चास्यमृगयोर्जन्मराशेः प्रोक्तेऽशुभप्रदः ।
मित्रषष्ठाष्टकं कीटमेषयोर्वृषजूकयोः ॥
कर्किचापभयोर्मीनसिंहयोर्भृयुग्मयोः ।
कन्याकाकुम्भयोरन्यत्प्रयत्नादिह वर्जयेत् ॥

५. नव-पञ्चम भकूट के भी बारह भेद कहे गये हैं और परस्पर सभी मित्र हैं। उनमें ६ शुभ और ६ अशुभ कहे गये हैं। यथा-

मेषे च चापे, मकरे वृषे च, कुम्भे च युग्मे, झषकर्कटे च ।
कुम्भे तुलायां, झषकीटयोश्च शत्रुत्रिकोणे बहुदुःखहानिः ॥
मेषे च सिंहे वृषभे च कन्यके युग्मे घटे वृश्चिककर्कटे च ।
सिंहे च चापे, मकरे युवत्या, मित्रत्रिकोणे बहुपुत्रलाभः ॥

पुरुष की राशि से पांचवीं कन्या की राशि हो तो अशुभ होती है। और नवम राशि हो तो शुभ होती है।

६. द्विर्द्वादश के भी बारह भेद होते हें। मीनादि समराशि से दूसरी राशि उत्तम अर्थात् १२-१, २-३, ४-५, ६-७, ८-९, १०-११ मित्र अथवा एकाधिपत्य होने के कारण से शुभ कहा गया है। इसी प्रकार से मेषादि विषमराशियों में दूसरी राशि अर्थात् १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१०, ११-१२ हो तो अशुभ द्विर्द्वादश होते हैं। यथा-

द्विर्द्वादशं शुभं प्रोक्तं मीनादौ युग्मराशिषु ।
मेषादौ युग्मराशौ तु निधनत्वं न संशयः ॥

दुष्ट भकूट में गुणों का अभाव होता है, किन्तु यदि योनि मैत्री और अबलादूर हो तो ४ गुण होते हैं। योनि मैत्री एवं अबलादूर में से यदि एक ही हो तो १ गुण होता है। एक राशि में ७ गुण होते हैं, किन्तु एक चरण हो जाये तो शून्य गुण ही प्राप्त होता है। अच्छे भकूट में भी यदि नृदूर और राशिरिपुता हो तो ०६ गुण होते हैं। भिन्न राशि नक्षत्र एक (द्विर्द्वादश) हो तो ५ गुण होते हैं। अन्य भकूट में ०७ गुण होते हैं। यथा-

भकूट गुणबोधक चक्रम

७	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

दुष्ट भकूट का परिहार -

वर एवं कन्या दोनों के राशि स्वामियों की परस्पर मित्रता हो अथवा दोनों के नवमांश स्वामियों की मित्रता हो तो गण दोष नहीं होता है। उत्तम भकूट की अवस्था में ग्रहमैत्रीदोष होने पर नष्ट हो जाता है और यदि ग्रह मैत्री उत्तम हो तो भकूट का दोष नष्ट हो जाता है। यथा-

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद् गणानां न दोषः।
खेटारित्वं नाशयेत् सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ॥

-मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो.सं. ३३

नाडी कूट विचार-

अष्टकूटों में प्रधान विषय नाडी कूट है और इसी कूट के वर-वधु मिलान में सर्वाधिक अंक प्राप्त होते हैं। नाडी कूट के विषय में प्रायः भ्रान्ति बनी रहती है कि यह केवल बाह्मणों के लिए इसका दोष होता है जबकि यह ठीक नहीं है। शास्त्र के अनुसार जो राशियाँ ब्राह्मण वर्ण की है

उन सभी जातकों को यह दोष होगा जिनकी ब्राह्मण वर्ण की जन्म राशियां है। इसी प्रकार से क्षत्रिय वर्ण की राशि वालों को वर्णदोष होता है।

नाड़ी कूट तीन भागों में विभाजित है। जिसमें आदि नाड़ी, मध्य नाड़ी, एवं अन्त्य नाड़ी है। यह नक्षत्रों के आधार पर विभाजन किया गया है। यथा–

१. ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी–हस्त, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा और अश्विनी इन नौ नक्षत्रों की आदि नाड़ी है।

२. भरणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा उत्तराभाद्रपदा की मध्य नाड़ी है।

३. कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती नक्षत्रों की अन्त्य नाड़ी है।

वर एवं वधु की यदि एक नाड़ी हो जैसे यदि दोनों की आदि नाड़ी हो या दोनों की मध्यनाड़ी हो अथवा दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो अशुभ फलदायक होती है। और यदि दोनों की मध्यनाड़ी हो तो मृत्युदायक होती है।

नाड़ी गुणबोधक चक्र

नक्षत्र	आर्द्रा, पुन, उ.फा., हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शत., पू.भा., अश्वि.	भर.,मृग.,पु.,पू.फा., चित्रा, अनु.,पू.षा., धनि, उ.भा.,	कृ.रो.,आश्ले,मघा, स्वाती, विशा., उ.षा., श्रव., रेवती
८	आदि	मध्य	अन्त
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त	८	८	०

नाड़ी कूट परिहार–

१. वर एवं वधु दोनों की एक राशि हो और नक्षत्र भिन्न–भिन्न हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

२. वर एवं वधु दोनों का नक्षत्र एक हो किन्तु राशि भिन्न–भिन्न हो तो नाड़ी और गण का दोष नहीं होता है।

३. वर एवं वधु का नक्षत्र एक हो किन्तु चरण अलग–अलग हो तो भी नाड़ी एवं गण का दोष नहीं होता है। यहाँ पर नक्षत्र का मेल उत्तम कहा गया है।

४. यदि वर एवं वधु का एक ही नक्षत्र, एक ही चरण, हो तो विवाह उत्तम नहीं होता है। यथा–

“एकांशकलेऽपि समप्रभावान्न भर्तृभार्या व्यवहारसिद्धिः”।

५. यदि वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूसरा हो तो भी अशुभ होता है। यथा–

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ीदोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥

– मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो. सं. ३५

अपि च – **एकर्क्षे चैकराशौ च विवाहः प्राणहानिदः ।**

और भी महर्षि वशिष्ठ के मतानुसार–

दम्पत्योर्जन्मभे चैक्ये राशौ च निधनं तयोः ।
एकस्य च तथोद्वाहे किञ्चिद्भेदेऽपि वा न वा ॥

–महर्षि वशिष्ठ

– डॉ. रत्नलाल
सहाचार्य–ज्योतिष विभाग

चमत्कारिक यन्त्र-मन्त्र एवं तन्त्रों द्वारा कार्यसिद्धि

हमारे ऋषियों द्वारा जन समान्य के कष्टों को किस प्रकार से दूर किया जाए इसके लिए अनेकानेक प्रविधियों का उल्लेख हमारे ज्ञान के प्रमुख स्रोत वेद, दर्शन, पुराणादि ग्रन्थों में प्राप्त होता है। उन्होंने मानव कल्याण के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी दिव्य दृष्टि के द्वारा मन्त्र शक्ति को उद्घाटित किया। लोक जगत एवं पारलौकिक जीवन के क्षेत्र में किस प्रकार से मन्त्र साधना, यन्त्रों का निर्माण एवं तन्त्र के माध्यम से जनकल्याण किया जाए इस हेतु से असंख्य मन्त्रों को प्रदान किया। इसी क्रम में विद्यापीठ पञ्चाङ्ग के माध्यम से ज्योतिष विभाग भी अनवरत **अहर्निशं सेवामहे** की भावना के साथ जन-कल्याण के कार्यो को यत्र-तत्र-सर्वत्र किसी न किसी रूप में साकार करता रहा है। मन्त्रों की साधना के लिए शुभ मुहूर्त में गुरुमुख से मन्त्र प्राप्त करके सूर्य-चन्द्र ग्रहण काल, क्रान्ति साम्य या सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल में अथवा सर्वसिद्ध मुहूर्त्तों में विधि विधान, श्रद्धा पूर्वक साधना करने पर निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है इस विषय पर यह भी ध्यातव्य है कि यन्त्र निर्माण, तन्त्र साधना, एवं मन्त्र साधना के लिए कुछ विशेष पर्व भी है। जैसे दीपावली, महाशिवरात्रि, होली, विजय दशमी, अक्षय तृतीया आदि प्रसिद्ध रात्रियों में सिद्ध करके इनका चमत्कार आप देख सकते हैं। यन्त्र-तन्त्र एवं मन्त्रों के आधार पर ही दैवज्ञ अपनी विद्वता से जगत में यश को प्राप्त कर सकता है। यथा- **"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्"**

मन्त्र ऐसे दिव्य एवं आलौकिक शब्दों का संग्रह है जिसके बल पर दैवज्ञ अपनी दृढ़ इच्छा-शक्तिपूर्वक साधना करके अलौकिक कार्य कर सकते हैं। यथा-

मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः।
जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः ॥

मन्त्र शास्त्र के आधार पर वैदिक मन्त्रों को ब्रह्मा द्वारा शक्ति प्रदान की गई। तान्त्रिक मन्त्रों को भगवान शिव के द्वारा शक्ति सम्पन्न किया गया। इसी प्रकार से शाबर मन्त्रों में भी अद्भुत शक्ति है। कलियुग में भगवान शिव के अवतार शाबरनाथ द्वारा शाबर मन्त्रों को शक्ति सम्पन्न किया गया है। शाबर मन्त्र अर्थहीन लगते हैं परन्तु भगवान शिवजी के प्रताप से यह मन्त्र चमत्कारिक फल प्रदान करने वाले होते हैं।

विशेष - मन्त्र का पुरश्चरण करते समय गुप्त रखें। क्योंकि यदि प्रकट हो जाए तो पुरश्चरण का लाभ प्राप्त नहीं होता। **गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।**

मन्त्र सिद्धि के विषय में एक उद्धरण प्रसिद्ध है कि मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, दैवज्ञ, देवता, वैद्य एवं गुरु के सम्बन्ध में मनुष्य की जैसी भावना होगी उसी प्रकार से उसे फल की प्राप्ति होगी। यथा-

मन्त्र तीर्थे द्विजे दैवज्ञे भैषजे गुरौ ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी

1. भुवनेश्वरी - कर्णपिशाचिनी मन्त्र (अनुभूत प्रयोग)

मन्त्र- "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वरी वाग्वादिनी कर्णपिशाचिनी साधकाय सिद्धिदायै नमः।

गंगा, जमुना, नर्मदा या बहते जल में खड़ा होकर पाँच सौ बार इस मन्त्र का जाप करना चाहिए। जाप के उपरान्त दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्रह्मभोज करवायें। अद्योलिखित यन्त्र को 10,000 बार भूमि पर लिखें। बड़े से बड़े शासक प्रशासक भी वश में होंगे। आपके मुख से जो भी वचन निकलेगा वह सत्य होगा। इस मन्त्र साधना से भूत-भविष्य एवं वर्तमान के विषय में जान लेगा।

यन्त्र

ह्रीं ८	ह्रीं १	ह्रीं ६
ह्रीं ३	ह्रीं ५	ह्रीं ७
ह्रीं ४	ह्रीं ९	ह्रीं २

भूत-भविष्य ज्ञानार्थ कर्णपिशाचिनी मन्त्रसिद्धि-

ॐ रक्ते महारक्ते इडि विडि सुणिदे कर्णपिशाचिनी
आगच्छ भगवति सत्यं वदतु स्वाहा॥

इस मन्त्र का जाप कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से प्रारम्भ करें। किसी एकांत स्थान में या देवालय में दक्षिणदिशाभिमुख होकर सवा लाख जाप करें। दशांश होम, तर्पण एवं मार्जन, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा प्रदान करें। ऐसा करने के उपरान्त भूत-भविष्य एवं वर्तमान के विषय में कान में प्रत्यक्ष अनुभव होना प्रारम्भ होगा।

2. सर्वकार्यसिद्धि नृसिंह मन्त्र -

ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्य-मृत्यं नमाम्यहम् ॥

इस मन्त्र के जाप करने से व्यक्ति सर्वविध कष्टों से निवृत्ति प्राप्त कर सकता है। शारदातिलक में कहा गया है कि यह मन्त्र सर्वसिद्धिदायक, सर्वमनोरथ सिद्ध करने वाला एवं महामारी आदि से मुक्ति पाने के लिए प्रत्यक्ष फल प्रदान करने वाला है। इस मन्त्र का प्रातः तीन माला सूर्याभिमुख करने पर मनोवाञ्छित फल प्राप्त होता है।

लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रिये नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल ज्वल मां सर्वसम्पदं देहि देहि यमालक्ष्मीं नाशय-नाशय हुँ फट् स्वाहा॥

इस मन्त्र को जो प्राणी दीपावली, विजयदशमी, सूर्य एवं चन्द्रग्रहण में एक हजार आठ बार जप कर दशांश घृत आहुति से होम करता है तो ऐसे प्राणी की दरिद्रता का नाश होता है और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

पुत्र प्रदायक सरस्वती मन्त्र-

त्वं शक्तिस्त्वं स्वाहा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती ।
पतिं देहि, गृहं देहि, सुतं देहि मे, नमोऽस्तुते ॥

हे सरस्वती मां आप ही शक्ति स्वरूपा हो, आप ही शक्ति स्वरूपा सत्व रूप स्वाधा, स्वाहा, सावित्री आदि रूपों में विद्यमान हो। मुझको पति सुख, गृह सुख, एवं पुत्र सुख प्रदान करें। आपको मेरा नमस्कार है। उपर्युक्त मन्त्र पति/पत्नी द्वारा ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया से आरम्भ करके सवा लाख संख्या में करना चाहिए। पाठ का आरम्भ सरस्वती की प्रतिमा के सामने अखण्ड दीप जलाकर प्रारम्भ करना चाहिए। पाठोपरान्त कम से कम 108 आहुतियाँ देनी चाहिए अन्त में अपनी श्रद्धानुसार ब्राह्मण भोजन, दक्षिणा आदि देना चाहिए तथा कन्या पूजन करना कल्याणकारी सिद्ध होगा।

भविष्य कथन हेतु सुरकात्यायनी मन्त्र-प्रयोग-

"ॐ भ्रूं हुं फट्"

विधान - ऐसा देवस्थान जिसकी उपेक्षा की गई हो उस देवालय में बैठकर आठ हजार मन्त्रजाप करें। भगवती सुरकात्यायनी अट्टाहास करती हुई सपरिवार पूर्वक समक्ष आयेगी। भगवती को समक्ष आया देखकर जल में चन्दन मिलाकर अर्घ्य दें। इस प्रकार माता अनेकविध भोग्य पदार्थों को प्रदान करती है तथा भविष्य कथन में सामर्थ्य प्रदान करती है। अनुभूत प्रयोग है।

सभी रोगों से मुक्ति पाने का अनुभूत मंत्र-

ॐ मां भयात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्धय सर्वदा ।
शरीरारोग्यं में देहि देव देव नमोऽस्तुते ॥

इस मन्त्र को ग्रहण के समय या दीपावली की रात्रि में जाप करके सिद्ध कर लें। उसके उपरान्त पात्र में शुद्ध जल लेकर उस पात्र को हाथ से ढककर सात बार इस मंत्र का जाप विश्वास पूर्वक अभिमन्त्रित जल रोगी को पिला दें। लगभग 11 या 41 दिन लगातार पिलाने पर रोगी रोग से मुक्त हो जायेगा।

बालक को दृष्टिदोष से मुक्त कराने का साबर मन्त्र -

ॐ डायन मोर जादू बाण। चौंक उठे बालक के प्राण।
रोए बालक फक्का फाड़। चीखें मार करे चीत्कार।
दोहाई कामाक्षा देवी की, तुझे शंकर की आन।
ॐ नमः रूद्राय।
ॐ नमः कामाक्षादैव्यै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

कभी-कभी सोया हुआ बच्चा सोते-सोते बीच में चौंक कर उठता है। अकारण रोता है तो ऐसे में झाड़ू की तिल्ली लेकर बालक को उक्त मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ दें। उसके बाद तिल्ली को अग्नि में जला दें। बालक पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेगा।

भूत-प्रेत-पिशाच-निशाचर से मुक्ति हेतु अनुभूत मन्त्र प्रयोग-

विधि-निम्नलिखित मन्त्र दीपावली की रात्रि में 11 हजार बार जाप करने पर सिद्ध होता है। इसलिए 11 हजार जप करने के बाद दशांश हवन करें।

यदि घर पर हमेशा कलह, लड़ाई, झगड़ा बिना कारण भय, बाधा, धनहानि दरिद्रता, आतंक, भूतप्रेत, पिशाच की छाया, किसी के द्वारा घर पर अनिष्टकारक प्रयोग किया गया हो तो निम्न मन्त्र को शुभ समय में भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखकर मन्त्र का विधिवत् पूजन करके धूप-दीप करने के बाद दाईं भुजा में बाँधने पर या लाल कपड़े में बांध कर घर में शुद्धस्थान में रखने पर सर्वविधरूप से शान्तिलाभ होता है।

यदि घर के समस्त सदस्य-भूत-प्रेत-बाधा से ग्रसित हो तो घर पर निम्न मन्त्र का जाप करावें। दशांश हवन करावें। हवन पूर्ण होने पर खदिर की लकड़ी 8 लोहे की कींले, 8 पीली कौड़ी, 8 हल्दी की गांठे, डोडी वाले आठ लौंग लेकर निम्न मन्त्र के द्वारा अभिमन्त्रित करके आग्नेय कोण से प्रारम्भ करके आठों दिशाओं में एक हाथ का गड्ढा करके इन सब को उसमें गाढ़ देवें। ऐसा करने पर भूत-प्रेत से घर सुरक्षित रहता है।

मन्त्र-

"ॐ ह्रीं दुर्वृत्तानामशेषाणं बलहानिकरं परम् ।
रक्षो-भूत-पिशाचानां पठनादेव नाशनम् ह्रीं ॐ।।"

सर्वकार्य सिद्धि बत्तीसा यन्त्र-

इस मन्त्र को शुभमुहूर्त्त, दीपावली की रात्रि ग्रहण के समय या विजय दशमी को अनार की कलम एवं अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर सिद्ध कर लें। यन्त्र सिद्ध होने पर संसार के सभी मनोरथों को साधक प्राप्त कर सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

विधि- इस मन्त्र को हल्दी के द्वारा भोजपत्र पर लिखकर यन्त्र के नीचे अपनी इच्छा प्राप्ति लिखें रविवार को इस यन्त्र की रूई के साथ बत्ती बनाकर दीपक की लौं में जला दें और हल्दी की माला से **"ॐ ह्रीं हंसः"** इस मन्त्र का ग्यारह सौ बार जाप करें। इस प्रकार से सात रविवार करने वाला मनुष्य सभी दुःखों से मुक्त होकर मनोवाञ्छित फल को प्राप्त करके सुखी रहता है।

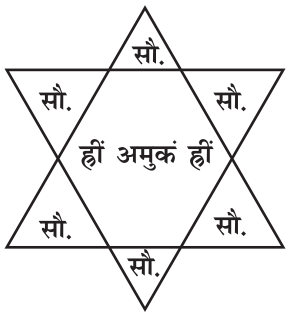
8	15	2	7
6	3	12	11
14	9	8	1
4	5	10	13
मनोकामना यहाँ पर लिखें			

सर्वसिद्ध आकर्षणा (वशीकरण) यन्त्र-

ॐ आकर्षय महादेवि अमुकं हि मम प्रियम् ।

ऐं त्रिपुरे देवदेवे तुभ्यं दास्यामि याचितम् ॥

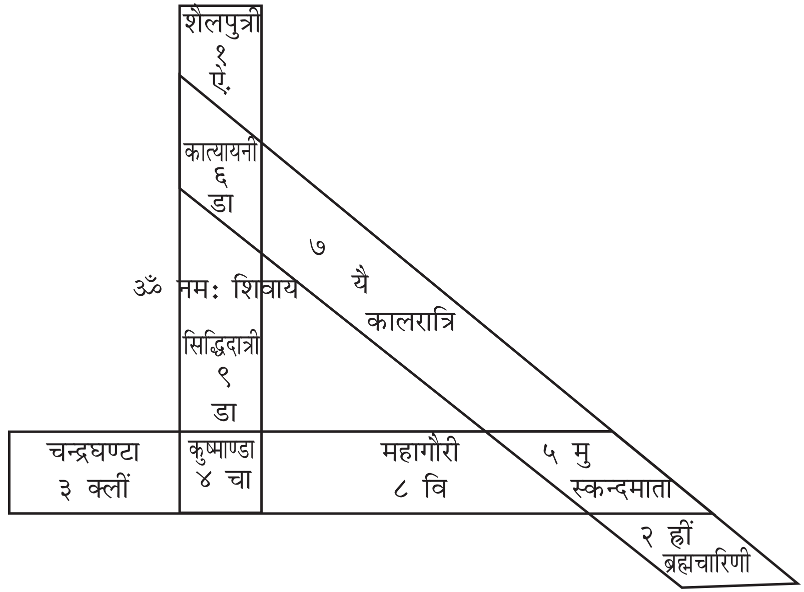
निम्न षट्कोण यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर पंचोपचार पूजन करके घी के कलश में स्थापित करें नित्य कलश का पूजन करें। प्रतिदिन भगवती का ध्यान करके जहाँ पर अमुकं लिखा है वहाँ पर जिसका वशीकरण करना है उसका नाम लिखें।?



विज्ञानप्रद 'सिद्ध बीसा यन्त्र'-

प्रयोगविधि – निम्न बीसा यन्त्र को सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, पूर्णमाशी के दिन गुरुवारी जब आये अथवा दीपावली की रात्रि को इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर अथवा अष्टगन्ध की स्याही से सोने की निब अथवा चमेली की कलम से एक अंक के क्रमानुसार 09 तक यन्त्रानुसार लिखें। तत्पश्चात् विधि पूर्वक यन्त्र का पूजन करें। रूद्राक्ष की माला से नौ दिन में 27000 नवार्ण मन्त्र का जप करें और यथाशक्ति यन्त्र में भरकर लाल धागे में पिरोकर धारण करने पर ज्योतिष, तन्त्र, ज्ञान-विज्ञान प्रदादि समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

नवार्ण मन्त्र – **"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।"**



कन्या का शीघ्र विवाह हेतु मन्त्र प्रयोग –

जिस कन्या का अशुभ ग्रहों के कारण अथवा आर्थिक संकट के कारण विवाह नहीं हो पा रहा हो उसको भगवान शंकर एवं पार्वती का चित्र सामने रख कर नित्य प्रति पूजन करें गमले में केले के पौधे को रोपकर उसमें 11 बार कलावा लपेट दें और उसकी पूजा करें। निम्न मन्त्र की तीन माला जाप करें। जाप के अनन्तर केले के पौधे की बारह बार प्रदक्षिणा करें ऐसा करने पर निश्चित रूप से विवाह होगा।

मन्त्र – **ॐ शं शंकराय सकलजन्मार्जित-पापविध्वंसनाय पुरुषार्थ चतुष्टयलाभाय च पति मे देहि कुरु-कुरु स्वाहा ।**

मुकदमे में विजय हेतु मन्त्र -

निम्न मन्त्र को दीपावली, ग्रहण के दिन यह सर्वसिद्धि योग में सिद्ध करके 21 बार विवाह के समय मन में स्मरण करें। तो व्यक्ति विवाद, शास्त्रार्थ, मुकदमा, प्रतियोगी परीक्षा जीत कर ही आयेगा और इसी के साथ नीचे दिये गये यन्त्र को चाँदी के पत्ते पर या भोजपत्र पर, रविपुष्य, गुरुपुष्य, सायन संक्रान्ति, दीपावली की रात्रि, विजयदशमी या ग्रहण के दिन खुदवाकर प्रतिष्ठित स्थान पर स्थापित करें तो कोर्ट-कचहरी आदि विषयों में विजय होने की प्रबल संभावना रहती है।

मन्त्र -

ॐ नीली-नीली, महानीली (शत्रु-पक्ष/जज का नाम) जीभि तालू सर्वखिली सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा।

592	599	2	7
6	3	596	595
598	593	8	1
4	5	594	597

- डॉ. रत्नलाल
सहाचार्य-ज्योतिष विभाग

हवन में अग्निवास विचार

सैका तिथिर्वारयुताकृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥

जिस दिन हवन करना हो उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़ कर १ जमा करें। फिर जोड़ को 4 द्वारा भाग दें। यदि शेष ० या ३ हो तो भूमि पर अग्नि का वास है। शेष १,२ बचें तो क्रमशः स्वर्ग व पाताल में वास है, जो क्रमशः प्राण व धन नाशक है। हवन में अग्नि का वास पृथ्वी पर होना सुख प्रद है। तिथि गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार गणना रविवार से करनी चाहिए।

हवन में ग्रह मुख विचार

सूर्यभात् त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिने। ३-३ नक्षत्रों के समूह में क्रमशः सूर्य, बुध, शुक्र, शनि चन्द्र, मंगल गुह राहु , केतु इन ग्रहों के मुख में आहुति होती है। शुभ ग्रह के मुख में आहुति शुभ व पापग्रह के मुख में आहुति होने से अशुभ होता है-

होमाहुति चक्र

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

विक्रम संवत् २०८३ के माङ्गलिक मुहूर्तों के लिए काल-शुद्धि

कालशुद्धि

सामान्यतया गुरु एवं शुक्र के अस्तकाल, श्राद्धपक्ष, भीष्मपञ्चक, होलिकाष्टक, पौषमास व चैत्रमास तथा अधिकमास में विवाहादि संस्कारों एवं अन्य माङ्गलिक कार्य के लिए वर्जित काल माना गया है। उपनयन संस्कार चैत्रमास में भी किया जाता है तथा पुरातन गृहप्रवेश गुरु-शुक्र के अस्तकाल में भी किया जा सकता है। इस वर्ष वि.सं. २०८३ के माङ्गलिक मुहूर्तों के सन्दर्भ में कालशुद्धि का विवरण निम्न है।

१. गुरु अस्त

विक्रम संवत् २०८३ आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा बुधवार से श्रावण कृष्ण त्रयोदशी सोमवार तदनुसार १५ जुलाई, २०२६ से १० अगस्त २०२६ तक गुर्वस्त रहेगा। गुर्वस्त से ३ दिन पूर्व में वृद्धावस्था तथा उदय के ३ दिन बाद बाल्यावस्था का समय माङ्गलिक कार्यों में वर्जित है।

२. शुक्र अस्त

इस वर्ष आश्विन शुक्ल ३ मंगलवार से कार्तिक कृष्ण ३ बुधवार तदनुसार १३ अक्टूबर, २०२६ से २८ अक्टूबर २०२६ तक शुक्रास्त रहेगा। उदय अस्त से ०३ दिन की वृद्धा व बाल्यावस्था का समय शुभकार्यों में वर्जित है।

३. श्राद्ध पक्ष

विक्रम संवत् २०८३ में श्राद्धपक्ष का समय दिनांक २६ सितम्बर, २०२६ से १० अक्टूबर, २०२६ तक रहेगा। इस कालावधि में माङ्गलिक कार्य वर्जित हैं।

४. भीष्मपञ्चक

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल ११ शुक्रवार से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा मङ्गलवार तदनुसार २० नवम्बर, २०२६ से २४ नवम्बर, २०२६ तक भीष्मपञ्चक रहेंगे जो माङ्गलिक कार्यों में त्याज्य हैं।

५. पौष सौर-मास

विक्रम संवत् २०८३ में १६ दिसम्बर २०२६ से १४ जनवरी २०२७ तक (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ०७ बुधवार से पौष शुक्ल पक्ष ०६ गुरुवार तक) सौर पौष मास का समय विवाहादि संस्कारों में वर्जित है।

६. होलिकाष्टक

विक्रम संवत् २०८३ दिनांक १६ मार्च, २०२७ से २२ मार्च २०२७ तक (फाल्गुन शुक्लाष्टमी से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तक) होलिकाष्टक के कारण शुभकार्य वर्जित रहेंगे।

७. चैत्र सौर-मास

विक्रम संवत् २०८३ वर्षारम्भ २० मार्च २०२६ से १३ अप्रैल २०२६ तक तथा दिनांक १५ मार्च, २०२७ से वर्षान्त तक चैत्र सौर मास का समय माङ्गलिक मुहूर्तों के लिए त्याज्य रहेगा।

८. अधिमास

विक्रम संवत् २०८३ ज्येष्ठ मास अधिक मास रहेगा। दिनांक १७ मई २०२६ से १५ जून २०२६ तक अधिकमास मांगलिक मुहुर्त्तों के लिए त्याज्य रहेगा।

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८३

१४ अप्रैल से १४ मई २०२६ तक वैशाख सौर मास

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
२०.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल३/४	सोम	रोहिणी	मिथुन	मेष	वृष	। । । । । । । ० । ।	९	दि. ल. १, श. दान, २, ३, ४
२१.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल ५	भौम	मृगशिरा	मिथुन	मेष	वृ./मि.	० । । । । । । ० । ।	९	दि. ल. १, श. दान, २, ३, ४, गोधू.
२९.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल १३	बुध	चित्रा*	मिथुन	मेष	कन्या	। । । । ० । । । । ।	९	ल. १०
३०.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल १४	गुरु	चित्रा*	मिथुन	मेष	क./तु.	। । । । ० । । । । ।	९	दि. ल. २, ३, ४
०५.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ०४	भौम	मूल	मिथुन	मेष	धनु	। । । ० । ० । ० । ।	७	ल. गोधूलि, १०, १२, श.म.दान
०६.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ०४	बुध	मूल	मिथुन	मेष	धनु	। । । ० । । । ० । ।	८	दि. ल. २ च. दान
०७.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ०५	गुरु	उ.षा.	मिथुन	मेष	ध./म.	। ० । । ० । । । । ।	८	ल. गोधूलि, १० गु. दान
०८.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ०६	शुक्र	उ.षा.	मिथुन	मेष	मकर	। ० । । ० । । । । ।	८	दि. ल. १, श. दान, २, ३ चं. दान
०८.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ०६	शुक्र	श्रवण*	मिथुन	मेष	मकर	० । । ० । । । । । ०	७	ल. १२, श. मं. दान, १ केतुवेध परिहार
०९.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ०७	शनि	श्रवण*	मिथुन	मेष	मकर	० । । ० । । । । । ०	७	दि. ल. १, श. मं. दान, २, ३, गोधूलि, केतुवेध परिहार
०९.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ०७	शनि	धनिष्ठा*	मिथुन	मेष	मकर	० । । । । ० ० । । ।	७	ल १२ श. मं. दान
१०.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ०८	रवि	धनिष्ठा*	मिथुन	मेष	म./कु.	० । । । । । ० । । ।	८	दि. ल. १, श. दान, २, ३, गोधूलि १०, (००/५०तक)
१४.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण १३	गुरु	रेवती	मिथुन	मेष	मीन	। । । । । ० । ० । ।	८	दि. ल. ३ (०७/४० से) ४

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८३

१६ जून से १५ जुलाई २०२६ तक आषाढ़ सौर मास

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
२२.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल ८	सोम	हस्त	कर्क	मिथुन	कन्या	० । । । । । । ० । ।	८	दि. ल. ७, गोधूलि, १, च. दान, २ मं. दान
२३.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल ९	भौम	हस्त	कर्क	मिथुन	कन्या	० । । । । । । ० । ।	८	दि. ल. ४
२३.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल ९	भौम	चित्रा*	कर्क	मिथुन	क./तु.	। । । । ० । । । । ।	९	दि. ल. ७, २, च. मं. दान
२४.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल १०	बुध	चित्रा*	कर्क	मिथुन	तुला	। । । । ० ० । । । ।	८	दि. ल. ३, ४
२४.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल १०	बुध	स्वाति	कर्क	मिथुन	तुला	। । । । । । । । । ।	१०	दि. ल. ७, च. दान, गोधूलि, १२ च. श. दान, २ मं.च.दान
२६.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल १२	शुक्र	अनुराधा	कर्क	मिथुन	वृश्चिक	० ० । । ० ० । । । ।	६	ल. १२ श. दान
२७.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल १३	शनि	अनुराधा	कर्क	मिथुन	वृश्चिक	० ० । । ० ० । । । ।	६	दि. ल. ४, ७
२९.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल १५	सोम	मूल	कर्क	मिथुन	धनु	। । । ० । ० । ० ० ।	६	ल. १२ श. दान, १ श. दान
०१.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०१	बुध	उ.षा.	कर्क	मिथुन	ध./म.	। । । । ० ० ० । । ।	७	दि. ल. ७, गोधूलि, १२ श. दान १
०२.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०२	गुरु	उ.षा.	कर्क	मिथुन	मकर	। । । । ० ० ० । । ।	७	दि. ल. ३, सू. च. दान
०२.०७.२०२७	आषाढ़ कृष्ण ०२	गुरु	श्रवण*	कर्क	मिथुन	मकर	। ० । ० ० । । । । ।	७	दि. ल. ७, केतुवेध परिहार, गोधूलि
०३.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०३	शुक्र	धनिष्ठा*	कर्क	मिथुन	म/कु.	। । । । ० ० ० ० । ।	६	दि. ल. ७, गोधूलि, १२ श. दान, १ श. दान
०७.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०७	भौम	उ.भा.	कर्क	मिथुन	मीन	। । । । । ० ० ० । ।	७	दि. ल. ३, ४
०८.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०८	बुध	अश्विनी*	कर्क	मिथुन	मेष	। । । । । ० ० ० । ।	७	ल. गोधूलि, १२ श. दान, १ च. श. दान
०९.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०९	गुरु	अश्विनी*	कर्क	मिथुन	मेष	। । । । । ० ० ० । ।	७	दि. ल. ३, ४

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८३

१५ अगस्त से १५ सितम्बर २०२६ तक भाद्रपद सौर मास (केवल हि.प्र., पञ्जाब एवं जम्मू काश्मीर)

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
२०.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल ०८	गुरु	अनुराधा	कर्क	सिंह	वृश्चिक	। । । । । । । ० । ।	९	दि. ल. ७, ८ च. दान, गोधूलि ३ मं. च. दान ४
२१.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल ०९	शुक्र	अनुराधा	कर्क	सिंह	वृश्चिक	। । । । । ० । ० । ।	८	दि. ल. ७, (११/५३ तक)
२२.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल १०	शनि	मूल	कर्क	सिंह	धनु	। । । । । । । ० । ०	८	गोधूलि, २ च. दान
२३.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल ११	रवि	मूल	कर्क	सिंह	धनु	। । । । । ० । ० । ।	८	दि. ल. ७, ८
२४.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल १२	सोम	उ.षा.	कर्क	सिंह	धनु	० । । । । । । । । ।	९	ल. १, श. दान, २ च. दान
२५.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल १३	भौम	उ.षा.	कर्क	सिंह	मकर	० । । । । । । । । ।	९	दि. ल. ७, ८
३०.०८.२०२६	भाद्रपद कृष्ण ०२	रवि	उ.भा.	कर्क	सिंह	मीन	। । । । । । । । । ।	१०	दि. ल. ७, च. दान, ८
०३.०९.२०२६	भाद्रपद कृष्ण ०७	गुरु	रोहिणी	कर्क	सिंह	वृष	० ० । । । । । ० । ।	७	ल. ३, मं. दान, ४
०४.०९.२०२६	भाद्रपद कृष्ण ०८	शुक्र	रोहिणी	कर्क	सिंह	वृष	० ० । । । ० । ० । ।	६	दि. ल. ७ च. दान, गोधूलि
०४.०९.२०२६	भाद्रपद कृष्ण ०८	शुक्र	मृगशीर्ष	कर्क	सिंह	वृष	। । । । । ० ० ० । ।	७	ल. २ च. दान, ३ मं. दान, ४
०५.०९.२०२६	भाद्रपद कृष्ण ०९	शनि	मृगशीर्ष	कर्क	सिंह	वृ./मि.	। । । । । । ० ० । ।	८	दि. ल. ७, ८, च. दान, गोधूलि
१२.०९.२०२६	भाद्रपद शुक्ल ०१	शनि	हस्त	कर्क	सिंह	कन्या	। । । । । । ० । । ।	९	ल. २ शु. दान, ३ म. दान, ४
१३.०९.२०२६	भाद्रपद शुक्ल ०१	रवि	हस्त	कर्क	सिंह	कन्या	। । । । । ० ० । । ।	८	दि. ल. ७, ८
१३.०९.२०२६	भाद्रपद शुक्ल ०२	रवि	चित्रा*	कर्क	सिंह	क./तु.	० । । । ० ० ० । । ।	६	ल. २, शु. दान, ३ मं. दान, ४
१४.०९.२०२६	भाद्रपद शुक्ल ०३	सोम	चित्रा*	कर्क	सिंह	तुला	० । । । ० । ० । । ।	७	दि. ल. ७, च. दान, ८

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८३

१५ अक्टूबर से १५ नवम्बर २०२६ तक कार्तिक सौर मास (केवल हि.प्र., पञ्जाब एवं जम्मू काश्मीर)

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
०३.११.२०२६	कार्तिक कृष्ण ०९	भौम	मघा	सिंह	तुला	सिंह	० । । ० । ० । । । ०	६	दि. ल. ७, ८, ९
०५.११.२०२६	कार्तिक कृष्ण ११	गुरु	उ.फा.	सिंह	तुला	सि./क.	। । । । । । । ० । ।	९	दि. ल. ७, ८, ९, गोधूलि, २, ३, ४
०७.११.२०२६	कार्तिक कृष्ण १३	शनि	चित्रा*	सिंह	तुला	क./तु.	। । ० । । ० ० । । ।	७	दि. ल. ७, ८, ९ (१०/८ तक)
१०.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल ०१	भौम	अनुराधा	सिंह	तुला	वृश्चिक	। । । । । । । । । ।	१०	दि. ल. ९, ३, ४ मं. दान
११.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल ०२	बुध	अनुराधा	सिंह	तुला	वृश्चिक	। । । । ० । । । । ।	९	दि. ल. ७, ८, च. दान, ९
१२.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल ०३	गुरु	मूल	सिंह	तुला	धनु	। । । । । । । । । ।	१०	ल. गोधूलि, ४, च. दान
१३.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल ०४	शुक्र	मूल	सिंह	तुला	धनु	। । । । ० । । । । ।	९	दि. ल. ७, ८, ९

१६ नवम्बर से १५ दिसम्बर २०२६ तक मार्गशीर्ष सौर मास

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि	लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
२५.११.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण १	बुध	रोहिणी	सिंह	वृश्चिक	वृष	० । । । ० ० । ० । ।	६	दि. ल. १०, १२ श. दान, ३
२५.११.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण १	बुध	मृगशिरा	सिंह	वृश्चिक	वृष	। । । । ० । ० । । ।	८	ल. ३, ५, म. दान, ७
२६.११.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण २	गुरु	मृगशिरा	सिंह	वृश्चिक	वृ./मि.	। । । । ० । ० । । ।	८	दि. ल. १२ श. दान, गोधूलि
०२.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ९	बुध	उ.फा.	सिंह	वृश्चिक	सिं./क.	० । । । । । । ० । ।	८	दि. ल. ९, गोधूलि, ३, ५ मं. दान
०३.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण १०	गुरु	उ.फा.	सिंह	वृश्चिक	कन्या	० । । । । । । ० । ।	८	दि. ल. ८, ९ (९/२४ तक)
०४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शुक्र	चित्रा*	सिंह	वृश्चिक	क./तु.	। । ० । । ० ० ० । ।	६	ल. गोधूलि, ३, बु, दान, ५

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८३

१६ नवम्बर से १५ दिसम्बर २०२६ तक मार्गशीर्ष सौर मास

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
०५.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण १२	शनि	चित्रा*	सिंह	वृश्चिक	तुला	। । ० । । । ० ० । ।	७	दि. ल. ८, ९
११.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल २	शुक्र	उ.षा.	सिंह	वृश्चिक	धनु	। । । । । । । । । ।	१०	ल. ७, गोधूलि, ५ मं. दान ७ (२७/२८ तक)
१२.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ३	शनि	उ.षा.	सिंह	वृश्चिक	ध./म.	। । । । । । । । । ।	१०	दि. ल. ८, ९, च. दान, १२, गु. श.दान
१४ जनवरी २०२७ से १३ फरवरी २०२७ तक माघ सौर मास									
१५.०१.२०२७	पौष शुक्ल ०७	शुक्र	रेवती	सिंह	मकर	मीन	। । । । । । । ० । ।	९	दि. ल. १२ च. श. दान १
१९.०१.२०२७	पौष शुक्ल १२	भौम	रोहिणी	सिंह	मकर	वृष	० । । । । । । । ० ०	७	दि. ल. १२ श. दान, १, ३
२४.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०२	रवि	मघा	सिंह	मकर	सिंह	। । ० । ० । । । । ।	८	दि. ल. १, ३, गोधूलि
२५.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०३	सोम	उ.फा.	सिंह	मकर	सिं/क	। । । । । ० । ० । ।	८	ल. ७ (२५/०३ से), ८, ९
२६.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०४	भौम	उ.फा.	सिंह	मकर	कन्या	। । । । । ० । ० । ।	८	दि. ल. १, ३, ५ म. दान, च. दान
२७.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०५	बुध	चित्रा*	सिंह	मकर	कन्या	० । । । । ० । । । ।	८	ल. ७, ८ (२७/४५ तक)
२८.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०६	गुरु	चित्रा*	सिंह	मकर	तुला	० । । । । ० । । । ।	८	दि. ल. ३, (१५/५० से) गोधूलि
३०.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०८	शनि	अनुराधा	सिंह	मकर	वृश्चिक	० । । । । । ० ० । ।	७	ल. ८ च. दान (२७/५५ से) ९
३१.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०९	रवि	अनुराधा	सिंह	मकर	वृश्चिक	० । । । । । ० ० । ।	७	दि. ल. १२ श. दान, १, गोधूलि
०२.०२.२०२७	माघ कृष्ण ११	भौम	मूल	सिंह	मकर	धनु	। । ० । । । । ० । ।	८	दि. ल. १ श. दान १६/१४ से मृत्युबाण
०९.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०३	भौम	उ.भा.	सिंह	मकर	मीन	। । । । । ० । । । ।	९	ल. ९
१०.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०४	बुध	उ.भा.	सिंह	मकर	मीन	। । । । । । । । । ।	१०	दि. ल. १२, १ च. श. दान, २ शु. दान

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८३

१४ फरवरी २०२७ से १४ मार्च २०२७ तक फाल्गुन सौर मास

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
१५.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०९	सोम	रोहिणी	कर्क	कुम्भ	वृष	० । । । । ० ० । । ।	७	दि. ल. १२, श. दान, १, २ च दान, ९
१६.०२.२०२७	माघ शुक्ल १०	भौम	मृगशिरा	कर्क	कुम्भ	वृ./मी.	। ० । । । । । ० । ।	८	दि. ल. १२ श. दान, १, २ च. दान, गोधूलि, ७
२४.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०४	बुध	चित्रा*	कर्क	कुम्भ	क./तु	। ० । । ० ० । ० । ०	५	दि. ल. २, गोधूलि, ७, ८, ९
२५.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०५	गुरु	चित्रा*	कर्क	कुम्भ	तुला	। ० । । ० ० । ० । ।	६	दि. ल. १२ श. च. दान
२७.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०७	शनि	अनुराधा	कर्क	कुम्भ	वृश्चिक	० । । । । । ० ० । ।	७	दि. ल. ३ च. दान, ७, ८ च. दान, ९ गु. दान
२८.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०८	रवि	अनुराधा	कर्क	कुम्भ	वृश्चिक	० । । । । । ० ० । ।	७	दि. ल. १२ श. दान, १ च. दान
०१.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०९	सोम	मूल	कर्क	कुम्भ	धनु	। । । । । । ० ० । ।	८	ल. ७, ८, ९ च. दान
०२.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण १०	भौम	मूल	कर्क	कुम्भ	धनु	। । । । । । ० ० । ।	८	दि ल. १२ श. दान, १, २ च. दान
०३.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ११	बुध	उ.षा.	कर्क	कुम्भ	ध./म.	। ० ० । । । ० ० । ।	६	ल. ७, ८, ९ च. दान
०४.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण १२	गुरु	उ.षा.	कर्क	कुम्भ	मकर	। ० ० । । । ० ० । ।	६	दि. ल. १२ श. दान
०९.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०१	मंगल	उ.भा	कर्क	कुम्भ	मीन	। । । । । ० । । । ।	९	दि. ल. २, ३ बु. दान, ८, ९
१०.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०२	बुध	उ.भा.	कर्क	कुम्भ	मीन	। । । । । । । । । ।	१०	दि. ल. १, २ (१०/५२ तक)
११.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०३	गुरु	अश्विनी*	कर्क	कुम्भ	मेष	। । । । । ० । । । ।	९	ल. ८, ९ (२७/२० तक)

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।
***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	दोष विवरण	दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
०८.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ११	गुरु	हस्त	शनिवेध	२१.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल ७	रवि	उ.फा.	शनिवेध
२५.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल ९	शनि	मघा	केतुयुति	२२.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल ८	सोम	उ.फा.	शनिवेध
२६.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल १०	रवि	मघा	केतुयुति	०४.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०४	शनि	धनिष्ठा	राहुयुति
२७.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल ११	सोम	उ.फा.	भौमवेध	०७.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०७	भौम	रेवती	शनियुति
२८.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल १२	भौम	उ.फा.	भौमवेध	०८.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०८	बुध	रेवती	शनियुति
२८.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल १२	भौम	हस्त	शनिवेध	११.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण १२	शनि	रोहिणी	भौमयुति
२९.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल १३	बुध	हस्त	शनिवेध	१२.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण १३	रवि	रोहिणी	भौमयुति
०१.०५.२०२६	वैशाख शुक्ल १५	शुक्र	स्वाति	शानिवेध	१८.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल ०६	भौम	स्वाति	मृत्युबाण
०३.०५.२०२६	प्र. ज्ये.कृष्ण ०२	रवि	अनुराधा	केतुवेध	१९.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल ०७	बुध	स्वाति	मृत्युबाण
०४.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ०३	सोम	अनुराधा	मृत्युबाण/केतुवेध	२५.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल १३	भौम	श्रावण	सूर्य/केतुवेध
१२.०५.२०२५	प्र. ज्ये. कृष्ण १०	भौम	उ.भा.	शनियुति	२६.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल १३	बुध	धनिष्ठा	राहुयुति
१३.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ११	बुध	उ.भा.	शनियुति, मृत्युबाण	३१.०८.२०२६	भाद्रपद कृष्ण ०३	सोम	रेवती	शनियुति
१३.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण ११	बुध	रेवती	मृत्युबाण	०१.०९.२०२६	भाद्रपद कृष्ण ०४	भौम	अश्विनी	सूर्यवेध
१४.०५.२०२६	प्र. ज्ये. कृष्ण १२	गुरु	अश्विनी	भौमयुति	१२.०९.२०२६	भाद्रपद कृष्ण ०१	शनि	उ.फा.	शनिवेध
१५.०४.२०२६	वैशाख कृष्ण १३	बुध	उ.भा.	भौमयुति	०६.११.२०२६	कार्तिक कृष्ण १२	शुक्र	हस्त	मृत्युबाण
१८.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल ०१	शनि	अश्विनी	सूर्ययुति	१४.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल ०५	शनि	उ.षा.	मृत्युबाण
१९.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल ५	शुक्र	मघा	केतुयुति	१५.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल ०६	रवि	उ.षा.	मासान्त
२०.०६.२०२६	द्वि. ज्ये. शुक्ल ६	शनि	मघा	केतुयुति	१५.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल ०६	रवि	श्रवण	मासान्त

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	दोष विवरण	दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
३०.११.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ०७	सोम	मघा	भौमयुति	२८.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०६	गुरु	स्वाति	भुजङ्गपात
०१.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ०८	भौम	मघा	भौमयुति	२९.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०७	शुक्र	स्वाति	भुजङ्गपात
०३.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण १०	गुरु	हस्त	शनिवेध	०३.०२.२०२७	माघ कृष्ण १२	बुध	मूल	मृत्युबाण
०४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शुक्र	हस्त	शनिवेध	०७.०२.२०२७	माघ कृष्ण ०१	रवि	धनिष्ठा	सूर्य/राहुयुति
०५.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण १२	शनि	स्वाति	शनिवेध/मृत्युबाण	११.०२.२०२७	माघ कृष्ण ०५	गुरु	रेवती	शनिवेध
०६.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण १३	रवि	स्वाति	शनिवेध	१२.०२.२०२७	माघ कृष्ण ०६	शुक्र	अश्विनी	मासान्त
०९.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल १	बुध	मूल	भुजंगपात	२०.०२.२०२७	माघ शुक्ल १५	शनि	मघा	भौमयुति/राहु
१०.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल २	गुरु	मूल	भुजंगपात	२१.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०१	रवि	मघा	भौमयुति
१३.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ४	रवि	श्रवण	भौमवेध	२२.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०२	सोम	उ.फा.	शनिवेध
१४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ५	सोम	श्रवण	भौमवेध	२३.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०३	भौम	उ.फा.	शनिवेध
१४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ६	सोम	धनिष्ठा	मृत्युबाण	२४.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०४	बुध	हस्त	भुजङ्गपात, मृत्युबाण
१५.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ७	भौम	धनिष्ठा	राहुयुति	२५.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०५	गुरु	स्वाति	सूर्यवेध
१५.०१.२०२७	पौष शुक्ल ०७	गुरु	अश्विनी	मृत्युबाण	२६.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०६	शुक्र	स्वाति	सूर्यवेध
१६.०१.२०२७	पौष शुक्ल ०८	शुक्र	अश्विनी	भौमवेध	०४.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ११	गुरु	श्रवण	मृत्युबाण
१९.०१.२०२७	पौष शुक्ल १२	भौम	मृगशिरा	सूर्यवेध	०५.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण १२	शुक्र	श्रवण*	भौमवेध
२०.०१.२०२७	पौष शुक्ल १३	बुध	मृगशिरा	सूर्यवेध	०६.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण १३	शनि	धनिष्ठा*	राहुयुति
२६.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०४	भौम	हस्त	शनिवेध	१०.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०२	बुध	रेवती	शनियुति
२७.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०५	बुध	हस्त	शनिवेध	११.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०३	गुरु	रेवती	शनियुति

द्विरागमन मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२३.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल ०७	गुरु	पुनर्वसु	ल. २, ३
२४.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल ०८	शुक	पुष्य	ल. २, (८:०१ बाद), ३
०१.०५.२०२६	वैशाख शुक्ल १५	शुक्र	स्वाति	ल. ३ (१०:०१ से) अभि.
०४.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ०३	सोम	अनुराधा	ल. २, ३ (८/५८) तक
०६.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ०५	बुध	मूल	ल. २ च. दान, ३
०८.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ६/७	शुक्र	उ.षा.	ल. २, ३, च. दान
१३.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ११	बुध	उ.भा.	ल. २, ३
१४.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण १२	गुरु	रेवती	ल. २, ३
२०.११.२०२६	कार्तिक शुल्क ११	शुक्र	उ.भा.	ल. २
२५.११.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ०१	बुध	रोहिणी	ल. २, ३
२६.११.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ०२	गुरु	मृगशिरा	ल. २ (१७/४७ तक)
०४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शुक्र	ह./चि.	ल. अभिजित, २, ३
१०.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ०२	गुरु	मूल	ल. २, शु.दान, ३ बु. दान
१४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ०५	सोम	श्र./ध.	ल. २, शु. दान
१८.०२.२०२७	माघ शुक्ल १२	गुरु	पुनर्वसु	ल. १२ श. दान, २
१९.०२.२०२७	माघ शुक्ल १३	शुक्र	पुष्य	ल. १२ श. दान
२५.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०५	गुरु	चि./स्वा.	ल. १२च.श.दान, २,३बु. दान
२६.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०६	शुक्र	स्वाति	ल. १२ श.च.दान
०४.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण११/१२	गुरु	उ.षा.	ल. १२ श. दान, २
०५.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण १२	शुक्र	श्रवण	ल. २
१०.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०२	बुध	उ.भा./रे.	ल. २, ३ बु.दान
११.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०३	गुरु	रेवती	ल.१२श.दान,२(१०/२९तक)

उपनयन मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२०.०३.२०२६	चैत्र शुक्ल ०२	शुक्र	रेवती	ल. २
२९.०३.२०२६	चैत्र शुक्ल ११	रवि	आश्ले.	ल. ३
०४.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ०३	सोम	अनुराधा	ल. २, बु. दान
०७.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ०५	गुरु	पू.षा.	ल. ३ शु. दान, अभिजित
१९.०६.२०२६	ज्येष्ठ शुक्ल ०५	शुक्र	आश्ले	ल. ३, सू. दान
२५.०६.२०२६	जयेष्ठ शुक्ल ११	गुरु	स्वाति	ल. ३ सू. दान (७/०९ तक)
०८.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०२	सोम	शत.	ल. अभिजित
११.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०५	गुरु	रेवती	लग्नाभाव
१८.०२.२०२७	माघ शुक्ल १२	गुरु	पुन.	ल. २, शु.दान, अभिजित
२२.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०२	सोम	पु.फा.	ल.२शु.दान(११/५४तक)
२५.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०५	गुरु	स्वाति	ल. २
१०.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०२	बुध	उ.भा.	ल. २

चूड़ाकर्म मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२३.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल ०७	गुरु	पुनर्वसु	ल. २, ३
२९.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल १३	बुध	हस्त	ल. २, ३
०४.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ०३	सोम	ज्येष्ठ	ल. ३, ९/५८ से
१४.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण १२	गुरु	रेवती	ल. २, ३
१७.०६.२०२६	ज्येष्ठ शुक्ल ०३	बुध	पुन./पुष्य.	ल. ३
२४.०६.२०२६	ज्येष्ठ शुक्ल ०७	बुध	चि./स्वा.	ल. ३
२५.०६.२०२६	ज्येष्ठ शुक्ल ११	गुरु	स्वाति	ल. ३

चूडाकर्म मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
१५.०१.२०२७	पौष शुक्ल ०७	शुक्र	रेवती	ल. ११, १२, श. दान
२०.०१.२०२७	पौष शुक्ल १३	बुध	मृगशिरा	ल. ११, १२, श. दान
११.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०५	गुरु	रेवती	ल. ११, १२ श. दान
१९.०२.२०२७	माघ शुक्ल १३	शुक्र	पुष्य	ल. ११, १२ श.दान, अभि.
२५.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०५	गुरु	चि./स्वा.	ल. ११, २
०५.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण १३	शुक्र	श्रवण	ल. २, अभिजित
११.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०३	गुरु	रेवती	ल. २

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२९.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल १३	बुध	हस्त	ल. २, ३
०१.०५.२०२६	वैशाख शुक्ल १५	शुक्र	स्वाति	ल. ३, अभिजित
०६.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ०५	बुध	मूल	ल. २ च.दान ७/५१ से
२४.०६.२०२६	ज्येष्ठ शुक्ल १०	बुध	चित्रा	ल. ३
०२.०७.२०२६	आषाढ़ कृष्ण ०२	गुरु	उ.षा./श्र.	ल. अभिजित, २
२०.०१.२०२७	पौष शुक्ल १३	बुध	मृगशिरा	ल. ११, १२
२२.०१.२०२७	पौष शुक्ल १५	शुक्र	पुनर्वसु	ल. ११, १२ श. दान (१०/२५ तक)
११.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०५	गुरु	रेवती	ल. ११, १२, श. दान, अभि.
१९.०२.२०२७	माघ शुक्ल १३	शुक्र	पुष्य	ल. ११, १२, श. दान
२२.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०२	सोम	उ.फा.	ल. अभिजित (११/५४से)
२५.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०५	गुरु	चि./स्वा.	ल. ११, २
१०.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०२	बुध	उ.भा./रे.	ल. ११, १२ श.दान, २

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२४.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल ०८	शुक्र	पुष्य	ल. २ (८:०१ बाद) के दान, ३ चक्रशुद्धि अभाव
०४.०५.२०२६	प्र. ज्येष्ठ कृष्ण ०३	सोम	अनुराधा	ल. ३ (१०:०० से) च.शु. दान, चक्रशुद्धि अभाव
०८.०५.२०२६	प्र. ज्येष्ठ कृष्ण ०६	शुक्र	उ.षा.	ल. २, के दान, अभिजित १२/२२ तक, च.शु.अभाव
१३.०५.२०२६	प्र. ज्येष्ठ कृष्ण ११	बुध	उ.भा.	ल. ३, चक्रशुद्धि
१४.०५.२०२६	प्र. ज्येष्ठ कृष्ण १२	गुरु	रेवती	ल. ३, चक्रशुद्धि
१८.०५.२०२६	प्र.अ.ज्ये. शुक्ल ०२	सोम	रोहिणी	ल. ३, चक्रशुद्धि अभाव
२१.०५.२०२६	प्र.अ.ज्ये. शुक्ल ०५	गुरु	पुष्य	ल. ३, चक्रशुद्धि
२५.०५.२०२६	प्र.अ.ज्ये. शुक्ल १०	सोम	उ.फा.	ल. ३, चक्रशुद्धि
२७.०५.२०२६	प्र.अ.ज्ये. शुक्ल ११	बुध	चित्रा	ल. ३, चक्रशुद्धि, च.दान
२८.०५.२०२६	प्र.अ.ज्ये. शुक्ल १२	गुरु	चि./स्वा.	ल. ३, चक्रशुद्धि
२९.०५.२०२६	प्र.अ.ज्ये. शुक्ल १३	शुक्र	स्वाति	ल. ३, चक्रशुद्धि
०६.०६.२०२६	द्वि.अ.ज्ये. कृष्ण ०६	शनि	धनिष्ठा	ल. ३, च.दान,च.शु.अभाव
०८.०६.२०२६	द्वि.अ.ज्ये. कृष्ण ०८	सोम	शतभिषा	ल. ३, चक्रशुद्धि अभाव
१०.०६.२०२६	द्वि.अ.ज्ये. कृष्ण १०	बुध	उ.भा./रे.	ल. ३, चक्रशुद्धि
११.०६.२०२६	द्वि.अ.ज्ये. कृष्ण ११	गुरु	रेवती	ल. ३, चक्रशुद्धि

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२४.०७.२०२६	आषाढ़ शुक्ल १०	शुक्र	अनुराधा	ल. ६, चक्रशुद्धि
३१.०७.२०२६	श्रावण कृष्ण ०२	शुक्र	धनिष्ठा	ल. ६, चक्रशुद्धि अभाव
०१.०८.२०२६	श्रावण कृष्ण ०३	शनि	शतभिषा	ल. ६, (१०/५३तक), च.शु.अ.
०३.०८.२०२६	श्रावण कृष्ण ०५	सोम	उ.भा.	ल. ६, चक्रशुद्धि अभाव
१५.०८.२०२६	श्रावण शुक्ल ०३	शनि	उ.फा.	ल. ६, चक्रशुद्धि अभाव
१९.१०.२०२६	आश्विन शुक्ल ०८	सोम	उ.षा.	ल. ११ (१५:३९ तक)च.शु.
२१.१०.२०२६	आश्विन शुक्ल १०	बुध	धनिष्ठा	ल. ११ चक्रशुद्धि
२२.१०.२०२६	आश्विन शुक्ल ११	गुरु	शतभिषा	ल. ११ (१४/४८ से)च.शु.
२४.१०.२०२६	आश्विन शुक्ल १३	शनि	उ.भा.	ल. ११ चक्रशुद्धि
०५.११.२०२६	कार्तिक कृष्ण ११	गुरु	उ.फा.	ल. ८, श.दान. चक्रशुद्धि
०७.११.२०२६	कार्तिक कृष्ण १३	शनि	चित्रा	ल. ८, श.दान, चक्रशुद्धि
११.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल ०२	बुध	अनुराधा	ल.८, श.दान, चक्र.शु.अ.
२०.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल ११	शुक्र	उ.भा.	ल. ८ रा.दान, चक्रशुद्धि
२१.११.२०२६	कार्तिक शुक्ल १२	शनि	रेवती	ल. ८, श.दान, चक्रशुद्धि
२८.११.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ०५	शनि	पुष्य	ल.११(१२/५०से)च.शु.अ.
०३.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण १०	गुरु	उ.फा.	ल. ८, चक्रशुद्धि

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
०४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शुक्र	चित्रा	ल. अभिजित, चक्रशुद्धि
०५.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण १२	शनि	चि./स्वा.	ल. ८,११, चक्रशुद्धि
१२.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ०३	शनि	उ.षा.	ल.८, ११, चक्रशुद्धि अभाव
१४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ०५	सोम	धनिष्ठा	ल. ११, चक्रशुद्धि
१५.०१.२०२७	पौष शुक्ल ०७	शुक्र	रेवती	ल. ११, चक्रशुद्धि
२०.०१.२०२७	पौष शुक्ल १३	बुध	मृगशिरा	ल. ११, चक्रशुद्धि
२९.०१.२०२७	माघ कृष्ण ०८	शुक्र	स्वाति	ल. ११, चक्रशुद्धि अभाव
०८.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०२	सोम	शतभिषा	ल. ११, चक्रशुद्धि अभाव
११.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०५	गुरु	रेवती	ल. ११, १२ चक्रशुद्धि अभाव
१९.०२.२०२७	माघ शुक्ल १३	शुक्र	पुष्य	ल. ११, १२, चक्रशुद्धि
२५.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०५	गुरु	चि./स्वा.	ल. ११, चक्रशुद्धि अभाव
२६.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०६	शुक्र	स्वाति	ल. ११. चक्रशुद्धि अभाव
०४.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ११/१२	गुरु	उ.षा.	ल. ११, १२ चक्रशुद्धि
०६.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण १३	शनि	धनिष्ठा	ल. ११, १२ चक्रशुद्धि
१०.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०२	बुध	उ.भा./रे.	ल. २, चक्रशुद्धि अभाव
११.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०३	गुरु	रेवती	ल. ११ च.शु. आभाव

गृहारम्भ मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२९.०४.२०२६	वैशाख शुक्ल १३	बुध	हस्त	ल. ३, शु. दान, चक्रशुद्धि
०१.०५.२०२६	वैशाख शुक्ल १५	शुक्र	स्वाति	ल.३ शु. दान(१०/०१से)च.शु.
०४.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ०३	सोम	अनुराधा	ल.३,शु.दान(९/५८)च.शु.
१३.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ११	बुध	उ.भा.	ल. ३, शु.दान,च.शु.अभाव
१४.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण १३	सोम	रेवती	ल. अभि., च.शु.अभाव
२६.११.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ०२	गुरु	मार्गशिरा	ल.२(१७/४७तक)च.शु.
२८.११.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ०५	शनि	पुष्य	ल. २, च. शु. अभाव
०४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शुक्र	ह./चि.	ल. ८, शु.दान, २, च.शु.अ.
१४.१२.२०२६	मार्गशीर्ष शुक्ल ०५	सोम	धनिष्ठा	ल. २, चक्रशुद्धि अभाव
१५.०१.२०२७	पौष शुक्ल ०७	शुक्र	रेवती	ल. १२, चक्रशुद्धि अभाव
२०.०१.२०२७	पौष शुक्ल १३	बुध	मृगशिरा	ल. १२, चक्रशुद्धि
०८.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०२	सोम	शतभिषा	ल. २, शु दान,च.शु.अभाव
११.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०५	गुरु	रेवती	ल. २, शु.दान,च.शु.अभाव
१९.०२.२०२७	माघ शुक्ल १३	शुक्र	पुष्य	ल. २, शु. दान, चक्रशुद्धि
२२.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०२	सोम	उ.फा.	ल. ८, चक्रशुद्धि
२५.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०५	गुरु	चित्रा	ल. २, चक्रशुद्धि
२७.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०७	शनि	अनुराधा	ल. २, (११/३९ से) च.शुद्धि
०४.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ११	गुरु	उ.षा.	ल. २, चक्रशुद्धि अभाव
०६.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ३१	शनि	धनिष्ठा	ल. २, (१२/०४तक) च.शु. अ.
१०.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०२	बुध	उ.भा.	ल. २, (१०/५२तक) च.शु. अ.
११.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०३	गुरु	रेवती	ल. २, (१२/२९तक) च.शु. अ.

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८३

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
०४.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ०३	सोम	अनुराधा	ल. ३, शु. दान., च.शु.अ.
०८.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण ०६	शुक्र	उ.षा.	ल. २, के. दान, अभिजित (१२/२२) चक्रशुद्धि अभाव
१४.०५.२०२६	ज्येष्ठ कृष्ण १२	गुरु	रेवती	ल. ३, चक्रशुद्धि
१५.०१.२०२७	पौष शुक्ल ०७	शुक्र	रेवती	ल. ११, चक्रशुद्धि
२०.०१.२०२७	पौष शुक्ल १३	बुध	मृग.	ल. ११, चक्रशुद्धि
११.०२.२०२७	माघ शुक्ल ०५	गुरु	रेवती	ल. ११, १२, च.शु. अभाव
२५.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०५	गुरु	चित्रा	ल. ११ के.चक्रशुद्धि अभाव
२७.०२.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ०७	शनि	अनुराधा	ल. २, मं दान (११/४० से) चक्रशुद्धि, अभाव
०४.०३.२०२७	फाल्गुन कृष्ण ११	गुरु	उ.षा.	ल. ११, १२ चक्रशुद्धि
१०.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०२	बुध	उ.भा.	ल. ११, २, च.शुद्धि अभाव
१०.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०२	बुध	रेवती	ल.२,अभि.चक्र.शु.अभाव
११.०३.२०२७	फाल्गुन शुक्ल ०३	गुरु	रेवती	ल. २, चक्रशुद्धि अभाव

माङ्गलिक मुहूर्त्तों के निर्णेता – प्रो. परमानन्द भारद्वाज, आचार्य ज्योतिष–विभाग

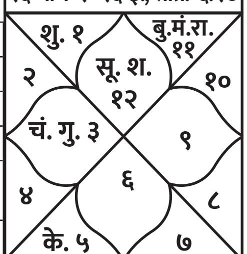
वि. सं. २०८३ , शाके १९४८, चैत्र शुक्ल पक्ष (दि. १९ मार्च से ०२ अप्रैल २०२६ ई.), उत्तरायण, दक्षिण/उत्तर गोल, वसन्त ऋतु, के. अहर्गण ५४६१, अयनांश २४°/१३'/३०''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
००	००	**१**	गु.	५५	५५	२८	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	**०**	०	मार्च. **१९**	मीन	प्रतिपदा क्षय, वासन्तिक नवरात्र प्रा., घटस्थापन (A)
२९	५६	**२**	शु.	५०	०२	२६	३१	रेव.	४९	५५	२६	२८	ब्र.	३९	२३	बा.	२३	०५	०६:३०	०६:२८	वैशा २९	**चैत्र ०७**	रम. ३०	**२०**	मेष २६:२८	मंगल पू.भा. में २१:२१, पञ्चक समा. २६:२८, (B)
३०	००	**३**	श.	४३	४३	२३	५७	अश्वि.	४५	२५	२४	३८	ऐं	३१	२३	तै.	१६	५७	०६:२८	०६:२९	३०	**०८**	०१	**२१**	मेष	गण्डमूल समा. २४:३८, मु. शव्वाल प्रा.,(C)
३०	०५	**४**	र.	३७	०५	२१	१७	भ.	४०	४०	२२	४३	वै.	२३	०५	व.	१०	२५	०६:२७	०६:२९	चैत्र ०१	**०९**	०२	**२२**	वृष २८:१४	भद्रा १०:३७ बजे से २१:१७ तक, (D) रौद्र नाम संवत्सर
३०	१०	**५**	सो.	३०	३३	१८	३९	कृ.	३६	००	२०	५०	वि.	१४	५०	ब.	०३	४८	०६:२६	०६:३०	०२	**१०**	०३	**२३**	वृष	
३०	१४	**६**	मं.	२४	१८	१६	०८	रो.	३१	४०	१९	०५	प्री. आ.	०६ ५९	४५ ०२	तै.	२४	१८	०६:२५	०६:३०	०३	**११**	०४	**२४**	मिथुन ३०:१७	स्कन्द षष्ठी (सायंकाल), यमुना छठ, रोहिणी व्रत।
३०	१८	**७**	बु.	१८	३८	१३	५०	मृ.	२७	५५	१७	३३	सो.	५१	५५	व.	१८	३८	०६:२३	०६:३१	०४	**१२**	०५	**२५**	मिथुन	भद्रा १३:५० बजे से २४:४७ तक, महानिशा पूजा।
३०	२२	**८**	गु.	१३	३७	११	४९	आ.	२४	५३	१६	१९	शो.	४५	२३	ब.	१३	३८	०६:२२	०६:३१	०५	**१३**	०६	**२६**	मिथुन	शुक्र अश्विनी मेष में २९:०९, (E)
३०	२७	**९**	शु.	०९	२५	१०	०७	पुन.	२२	३८	१५	२४	अति.	३९	३२	कौ.	०९	२५	०६:२१	०६:३२	०६	**१४**	०७	**२७**	कर्क ०९:३६	श्री राम नवमी व्रत (वै.), महानवमी, (F)
३०	३१	**१०**	श.	०६	०५	०८	४६	पु.	२१	१५	१४	५०	सु.	३४	२५	ग.	०६	०५	०६:२०	०६:३३	०७	**१५**	०८	**२८**	कर्क	गण्डमूल प्रा. १४:५०, भद्रा २०:१४ बजे से, (G)
३०	३५	**११**	र.	०३	४०	०७	४७	आश्ले.	२०	४८	१४	३८	धृ.	३०	००	वि.	०३	४०	०६:१९	०६:३३	०८	**१६**	०९	**२९**	सिंह १४:३८	भद्रा ०७:४७ बजे तक, केतु पू.फा. में ०७:५४, (H)
३०	४०	**१२**	सो.	०२	१०	०७	१०	म.	२१	१५	१४	४८	शू.	२६	२३	बा.	०२	१०	०६:१८	०६:३४	०९	**१७**	१०	**३०**	सिंह	गण्डमूल समा. १४:४८, सोम प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी
३०	४४	**१३**	मं.	०१	४०	०६	५६	पू.फा.	२२	४२	१५	२१	ग.	२३	३३	तै.	०१	४०	०६:१६	०६:३४	१०	**१८**	११	**३१**	कन्या २१:३३	सूर्य रेवती में २०:१०, महावीर जयन्ती, (I)
३०	४८	**१४**	बु.	०२	०८	०७	०६	उ.फा.	२५	०५	१६	१७	वृ.	२१	३०	व.	०२	०८	०६:१५	०६:३५	११	**१९**	१२	अप्रै. **०१**	कन्या	भद्रा ०७:०६ बजे से १९:२१ तक (J)
३०	५२	**१५**	गु.	०३	४०	०७	४२	ह.	२८	३३	१७	३९	ध्रु.	२०	१२	ब.	०३	४०	०६:१४	०६:३५	१२	**२०**	१३	**०२**	कन्या	मंगल मीन में १५:२९, हनुमज्जयन्ती (दाक्षिणात्य), (K)

(A) गुड़ी पड़वा, युगादि, भारतीय नववर्षारम्भ, रामायण पाठ प्रा., कल्पादि, रौद्र चान्द्र सम्वत्सर प्रा.। (B) बुध मार्गी २५:०३, चन्द्रदर्शन, सिन्धारा, झूलेलाल जयन्ती, सायन सूर्य मेष में 20:14, विषुवद् दिन, उत्तर गोल प्रा.। (C) गणगौरी तृतीया, मत्स्य जयन्ती (अपराह्णकाल), मन्वादि, ईद-उल-फितर । (D) राष्ट्रीय चैत्रारम्भ, विनायक चतुर्थी (E) महाष्टमी, दुर्गाष्टमी, मेला मनसा देवी, मेला बाहुफोर्ट जम्मू, सन्धि पूजा, ओली जैन प्रा., श्री रामावतार (मध्याह्नकाल), श्री रामनवमी व्रत (स्मा.) श्रीतारा जयन्ती। (F) रामायण पाठ समा., नवरात्र समा.। (G) नवरात्र व्रत पारणा। (H) कामदा एकादशी व्रत (स.)। (I) तीर्थंकर महावीर जन्मकल्याणक । (J) बुध पू.भा. में २०:१२, मंगल मार्गी १९:३८, पूर्णिमा व्रत, मन्वादि, सिद्धाचल यात्रा, उत्कल दिवस। (K) सत्यव्रत, ओली जैन समा., वैशाख स्नान प्रा.।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०२	१०	१०	०२	००	११	१०	०४
अं.	११	१४	२४	१५	२१	००	१०	१३	१३
क.	०९	१४	१३	३१	१३	०४	३४	२९	२९
वि.	२७	३०	२४	०४	०९	००	४५	४३	४३
गति	५९ ५१	८४८ ४६	४७ व. २३	२५ १२	०२ ४५	७४ ०७	०७ व. २९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.भा. ३ च.	आ. ३ च.	पू.भा. २ च.	शत. ३ च.	पुन. १ च.	अश्वि. १ च.	उ.भा. ३ च.	शत. ३ च.	पू.फा. १ च.

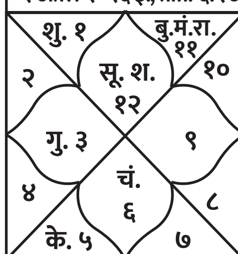
२६ मार्च २०२६ ई., प्रातः ६:२७



चैत्र शु. ८, गुरुवार

विक्रम संवत् २०८३ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार १० मार्च २०१६ ई. गुरुवार से 'रौद्र' नामक संवत्सर का प्रारम्भ हो रहा है। अतः नित्य एवं नैमित्तिक अनुष्ठान आदि के संकल्प में संवत्सर के अन्त तक इसका प्रयोग किया जायेगा रोद्रोऽतिरौद्रः क्षयकृत् प्रदिष्टः" रौद्र संवत्सर तथा प्रतिपदा का क्षय होने के कारण साम्प्रदायिक, आन्तकवादी, उग्रवादि घटनाओं एवं युद्धविभीषिका का रौद्ररूप देखने को मिलेगा। पश्चिमी देश व्यापारिक खींचतान के कारण महंगाई की मार से त्रस्त होंगे, किन्तु एशियाई देशों की एकजुटता के कारण इन देशों में मँहगाई का विशेष असर नहीं पड़ेगा।

०२ अप्रैल २०२६ ई., प्रातः ६:२७



चैत्र शु. १५, गुरुवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०५	१०	१०	०२	००	११	१०	०४
अं.	१८	१७	२९	२०	२१	०८	११	१३	१३
क.	०४	२८	४२	२२	३७	४१	२७	०७	१०
वि.	३५	२५	२०	४६	२९	४५	०६	२८	३९
गति	५९ ५६	७५६ ५४	४७ ४४	५३ १५	०५ २०	७३ ३३	०७ व. २२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	रेव. १ च.	हस्त. ३ च.	पू.भा. ३ च.	पू.भा. १ च.	पुन. १ च.	अश्वि. ३ च.	उ.भा. ३ च.	शत. २ च.	मघा. ४ च.

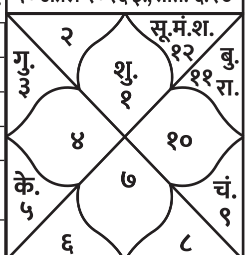
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, वैशाख कृष्ण पक्ष (दि. ०३ अप्रैल से १७ अप्रैल २०२६ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु के. अहर्गण ५४७५, अयनांश २४°/१३'/३२"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३०	५७	**१**	**शु.**	०६	१५	०८	४३	**चि.**	३३	००	१९	२५	**व्या.**	१९	४८	**कौ.**	०६	१३	०६:१३	०६:३६	चै. १३	**चै. २१**	श. १४	**अप्रै. ०३**	तुला ०६:२८	गुड फ्राइडे।
३१	०१	**२**	**श.**	०९	५३	१०	०९	**स्वा.**	३८	२८	२१	३५	**ह.**	२०	१२	**ग.**	०९	५३	०६:१२	०६:३६	१४	२२	१५	**०४**	तुला	भद्रा २३:०२ बजे से,
३१	०५	**३**	**र.**	१४	३३	१२	००	**वि.**	४४	५३	२४	०८	**व.**	२१	२३	**वि.**	१४	३३	०६:११	०६:३७	१५	२३	१६	**०५**	वृश्चिक १७:२८	भद्रा १२:०० बजे तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२२:०४) (A)
३१	०९	**४**	**सो.**	२०	०३	१४	११	**अनु.**	५१	५८	२६	५७	**सि.**	२३	०८	**बा.**	२०	००	०६:१०	०६:३७	१६	२४	१७	**०६**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. २६:५७, मंगल उ.भा. में २१:५६,
३१	१३	**५**	**मं.**	२६	०८	१६	३५	**ज्ये.**	५९	२५	२९	५४	**व्य.**	२५	२०	**तै.**	२६	०८	०६:०८	०६:३८	१७	२५	१८	**०७**	धनु २९:५४	
३१	१८	**६**	**बु.**	३४	१५	१९	४९	**मू.**	६०	००	–	–	**वरि.**	२७	३८	**व.**	३२	१७	०६:०७	०६:३९	१८	२६	१९	**०८**	धनु	भद्रा १९:०२ बजे से, कोकिला षष्ठी (अपराह्ण व्यापिनी)
३१	२२	**७**	**गु.**	३८	०५	२१	२०	**मू.**	०६	४५	०८	४८	**प.**	२९	४०	**वि.**	०५	१८	०६:०६	०६:३९	१९	२७	२०	**०९**	धनु	गण्डमूल समा. ०८:४८, भद्रा ०८:१३ बजे तक, (B)
३१	२६	**८**	**शु.**	४२	५८	२३	१६	**पू.षा.**	१३	२८	११	२८	**शि.**	३१	०३	**बा.**	१०	४०	०६:०५	०६:४०	२०	२८	२१	**१०**	मकर १८:०४	बुध मीन में २५:१६
३१	३०	**९**	**श.**	४६	२५	२४	३८	**उ.षा.**	१९	०१	१३	४०	**सि.**	३१	२७	**तै.**	१४	५५	०६:०४	०६:४०	२१	२९	२२	**११**	मकर	
३१	३४	**१०**	**र.**	४८	०५	२५	१७	**श्र.**	२२	५७	१५	१४	**सा**	३०	३३	**व.**	१७	३०	०६:०३	०६:४१	२२	३०	२३	**१२**	कुम्भ २७:४५	भद्रा १३:०३ बजे से २५:१७ बजे तक, पञ्चक प्रा. २७:४५,
३१	३८	**११**	**सो.**	४७	४७	२५	०९	**धनि.**	२५	०५	१६	०४	**शु.**	२८	०५	**ब.**	१८	१२	०६:०२	०६:४१	२३	३१	२४	**१३**	कुम्भ	बुध उ.भा. में १४:२२, वल्लभाचार्य जयन्ती। (C)
३१	४२	**१२**	**मं.**	४५	३०	२४	१३	**शत.**	२५	१२	१६	०६	**शु.**	२४	०५	**कौ.**	१६	५५	०६:०१	०६:४२	२४	वैशा. ०१	२५	**१४**	कुम्भ	सूर्य अश्विनी में ०९:३२, (D)
३१	४६	**१३**	**बु.**	४१	१७	२२	३१	**पू.भा.**	२३	२७	१५	२३	**ब्र.**	१८	३३	**ग.**	१३	३८	०६:००	०६:४२	२५	०२	२६	**१५**	मीन ०९:३७	भद्रा २२:३१ बजे से, हिमाचल दिवस, प्रदोष व्रत, (E)
३१	५०	**१४**	**गु.**	३५	३२	२०	१२	**उ.भा.**	२०	००	१३	५९	**ऐं**	११	३५	**वि.**	०८	३८	०५:५९	०६:४३	२६	०३	२७	**१६**	मीन	गण्डमूल प्रा. १३:५९, भद्रा ०९:२६ बजे तक, (F)
३१	५४	**३०**	**शु.**	२८	३०	१७	२२	**रे.**	१५	१०	१२	०२	**वै. वि.**	०३ ५४	३० २८	**च.**	०२	१०	०५:५८	०६:४४	२७	०४	२८	**१७**	मेष १२:०२	शनि उ.भा. में १५:०८ बजे, पञ्चक समा. १२:०२

(A)शुक्र भरणी में २४:५६, (B) शर्करा सप्तमी, शीतलासप्तमी, कालाष्टमी। (C) वरुथिनी एकादशी व्रत (स्मा.वै.)। (D) मेष संक्रान्ति ०९:३२, सं. पुण्यकाल ०९:३२ से १५:५६ तक, वैशाखी, आर्यभट जयन्ती, अम्बेडकर जयन्ती, वरूथिनी एकादशी व्रत (नि.)। (E) मास शिवरात्रि। (F) शुक्र कृतिका में २२:१४, (G) अमावस्या।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०८	११	१०	०२	००	११	१०	०४
अं.	२५	२४	०५	२९	२२	१८	१२	१२	१२
क.	५६	०८	५६	०१	१५	३१	२६	४२	४२
वि.	५७	४१	५३	०५	३२	१३	२३	०२	०२
गति	५८ २९	७२३ ५४	४७ ४४	७३ १५	०५ २०	७३ ३३	०७ २२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	रेव. ३ च.	पू.षा. ३ च.	उ.भा. १ च.	पू.भा. ३ च.	पुन. १ च.	भर. २ च.	उ.भा. ३ च.	शत. २ च.	म. ४ च.

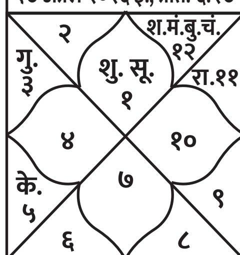
१० अप्रैल २०२६ ई., प्रातः ६:२७



वैशाख कृ. ८, शुक्रवार

इस मास में पाँच शुक्रवार हैं और मेष की संक्रान्ति मंगलवार को है, अतः प्रजा में सुखशान्ति बनी रहेगी शेयर बाजार में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का रुख रहेगा। जौ गेहूँ, चने आदि अन्न, हाथी दान्त, लाख, मोम, मजीठ, केसर, सिन्दूर के भाव तेज रहेंगे।

१७ अप्रैल २०२६ ई., प्रातः ६:२७



वैशाख कृ. ३०, शुक्रवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	११	११	११	०२	००	११	१०	०४
अं.	०२	२६	११	०८	२२	२७	१३	१२	१२
क.	४८	३५	२३	३०	५७	०५	१७	१९	१९
वि.	४४	४९	१२	०४	१३	०५	२५	४७	४७
गति	५८ ४४	७१८ अ. ५४	४६ ४४	८७ ५६	०६ २५	७३ १८	०७ १४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	अश्वि. १ च.	रेव. ३ च.	उ.भा. ३ च.	उ.भा. २ च.	पुन. १ च.	कृ. १ च.	उ.भा. ३ च.	शत. २ च.	म. ४ च.

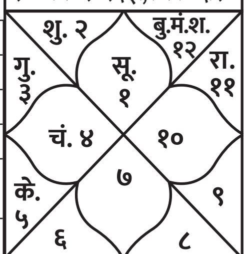
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, वैशाख शुक्ल पक्ष (दि. १८ अप्रैल से ०१ मई २०२६ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त/ग्रीष्म ऋतु, के. अहर्गण ५४९०, अयनांश २४°/१३'/३३"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३१	५८	१	श.	२०	३५	१४	११	अश्वि.	०९	२३	०९	४२	प्री.	४४	५८	ब.	२०	३५	०५:५७	०६:४४	चै. २८	वै. ०५	श. २९	अप्रै. १८	मेष	गण्डमूल समा. ०९:४२, मंगल उदय २५:५२, चन्द्रदर्शन।
३२	०२	२	र.	१२	१५	१०	५०	भ. कृ.	०३ ५६	०५ ३८	०७ २८	१० ३५	आयु.	३५	१५	कौ.	१२	१३	०५:५६	०६:४५	२९	०६	जि. ०१	१९	वृष १२:३१	शुक्र वृष में १५:४७, मु. जिल्काद प्रा., (A)
३२	०६	३ ४	सो.	०३ ५५	५३ ५०	०७ २८	२८ १५	रो.	५०	३२	२६	०८	सौ	२५	४०	ग.	०३	५३	०५:५५	०६:४५	३०	०७	०२	२०	वृष	भद्रा १७:५० से २८:१५ तक, अक्षय तृतीया, (B)
३२	१०	५	मं.	४८	३५	२५	२०	मृ.	४५	१०	२३	५८	शो.	१६	३३	ब	२२	०८	०५:४५	०६:४६	वै. ०१	०८	०३	२१	मिथुन १३:०१	राष्ट्रीय वैशाखारम्भ, सूरदास जयन्ती, (C)
३२	१४	६	बु.	४२	२३	२२	५०	आ.	४०	५०	२२	१३	अति.	०८	०८	कौ.	१५	२०	०५:५३	०६:४६	०२	०९	०४	२२	मिथुन	बुध रेवती में १३:३७, रामानुजाचार्य जयन्ती, पृथ्वी दिवस।
३२	१८	७	गु.	३७	२३	२०	४९	पुन.	३७	४३	२०	५७	सु. धृ.	०० ५४	३८ १०	ग.	०९	४५	०५:५२	०६:४७	०३	१०	०५	२३	कर्क १५:१३	भद्रा २०:५० से, गंगोत्पत्ति, गंगा सप्तमी (मध्याह्न),(D)
३२	२२	८	शु.	३३	४७	१९	२२	पु.	३५	५८	२०	१४	शू.	४८	५३	वि.	०५	२५	०५:५१	०६:४८	०४	११	०६	२४	कर्क	गण्डमूल प्रा. २०:१४, भद्रा ०८:०१ तक, (E)
३२	२६	९	श.	३१	३५	१८	२८	आश्ले.	३५	३८	२०	०५	ग.	४४	४३	बा.	०२	३३	०५: ५०	०६:४८	०५	१२	०७	२५	सिंह २०:०५	सीता नवमी, जानकी नवमी, मैथिली दिवस।
३२	२९	१०	र.	३०	४५	१८	०७	म.	३६	३५	२०	२७	वृ.	४१	३८	तै.	०१	०३	०५:४९	०६:४९	०६	१३	०८	२६	सिंह	गण्डमूल समा २०:२७,
३२	३३	११	सो.	३१	१०	१८	१६	पू.फा.	३८	४७	२१	१९	ध्रु.	३९	३०	व.	००	५०	०५:४८	०६:४९	०७	१४	०९	२७	कन्या २७:३६	भद्रा ०६:०८ से १८:१६ तक, शुक्र रोहिणी में २१:३०, (F)
३२	३७	१२	मं.	३२	४३	१८	५२	उ.फा.	४२	०२	२२	३६	व्या.	३८	१३	ब.	०१	५०	०५:४७	०६:५०	०८	१५	१०	२८	कन्या	
३२	४१	१३	बु.	३५	१५	१९	५२	ह.	४६	१५	२४	१६	ह.	३७	४७	कौ.	०३	५३	०५:४६	०६:५१	०९	१६	११	२९	कन्या	बुध अस्त ०६:५४, प्रदोष व्रत।
३२	४४	१४	गु.	३८	४०	२१	१३	चि.	५१	२०	२६	१७	व.	३७	५५	ग.	०६	५३	०५:४५	०६:५१	१०	१७	१२	३०	तुला १३:१४	भद्रा २१:१३ से, बुध मेष अश्विनी में ०६:५२, (G)
३२	४८	१५	शु.	४२	५३	२२	५३	स्वा.	५७	०८	२८	३५	सि.	३८	४३	वि.	१०	४३	०५:४४	०६:५२	११	१८	१३	मई ०१	तुला	भद्रा १०:०१ तक, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, (H)

(A) परशुरामावतार (प्रदोषकाल), मातङ्गी जयन्ती (प्रदोष काल)। (B) त्रेतायुगादि, बद्री केदार यात्रा, विनायक चतुर्थी, रोहिणी व्रत, सायन सूर्य वृष में ०७:०७, ग्रीष्म ऋतु प्रा.। (C) आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती (D) मङ्गल रेवती में २६:२२ (E) दुर्गाष्टमी (मध्याह्न व्यापिनी), बगलामुखी जयन्ती। (F) सूर्य भरणी में २५:१८, मोहिनी एकादशी व्रत (स.)। (G) नृसिंह जयन्ती (प्रदोष काल), श्री छिन्नमस्ता जयन्ती। (H) कूर्म जयन्ती (मध्याह्न काल), बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती (उदयकाल), वैशाख स्नान समा., श्रमिक दिवस।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	०३	११	११	०२	०१	११	१०	०४
अं.	०९	०८	१६	१९	२३	०५	१४	११	११
क.	३८	४८	४७	२७	४६	३७	०७	५७	५७
वि.	५५	३६	५३	३१	०८	००	१४	३१	३१
गति	५८ २९	८३६ ४४	४६ १६	९९ ०४	०७ २४	७२ ००	०७ ०२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	अश्वि. ३ च.	पुष्य २ च.	रेव. १ च.	रेव. १ च.	पुन. २ च.	कृति. ३ च.	उ.भा. ४ च.	शत. २ च.	म. ४ च.

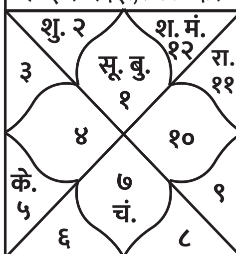
२४ अप्रैल २०२६ ई., प्रातः ०६:२७



वैशाख शु. ८, शुक्रवार

इस मास में मंगल-शनि की युति उनका राहु से द्विर्द्वादश तथा केतु से षडष्टक योग होने के कारण कश्मीर, पश्चिमी बंगाल, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, कम्बोज कन्नोज आदि स्थानों में उग्रवादी एवं आन्तकवादी घटनायें बढ़ेंगी अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि आपदा तथा यान-दुर्घटना से जन-धन हानि की सम्भावना है

०१ मई २०२६ ई., प्रातः ०६:२७



वैशाख शु. १५, शुक्रवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	०६	११	००	०२	०१	११	१०	०४
अं.	१६	०८	२२	०१	२४	१४	१४	११	११
क.	२७	४७	१०	४९	४१	०६	५५	३५	३५
वि.	२३	२८	३९	१४	३७	३७	२८	१६	१६
गति	५८ १४	७३२ ५३	४५ ५७	११२ ५५	०८ २७	७२ ३६	०६ ४४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	भर. १ च.	स्वा. १ च.	रेव. २ च.	अश्वि. १ च.	पुन. २ च.	रोहि. २ च.	उ.भा. ४ च.	शत. २ च.	म. ४ च.

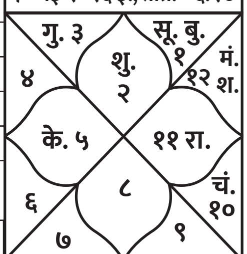
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, प्र. (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (दि. ०२ मई से १६ मई २०२६ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु, के. अहर्गण ५५०४, अयनांश २४°/१३'/३५''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३२	५१	१	श.	४७	४५	२४	५०	वि.	६०	००	-	-	व्य.	४०	०२	बा.	१५	१५	०५:४४	०६:५२	वै. १२	वै. १९	जि. १४	मई ०२	वृश्चिक २४:३०	नारद जयन्ती, वीणा दान।
३२	५५	२	र.	५३	१७	२७	०२	वि.	०३	३८	०७	१०	वरि.	४१	५३	तै.	२०	२७	०५:४३	०६:५३	१३	२०	१५	०३	वृश्चिक	
३२	५८	३	सो.	५९	१८	२९	२५	अनु.	१०	४०	०९	५८	प.	४४	०५	व.	२६	१५	०५:४२	०६:५४	१४	२१	१६	०४	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. ०९:५८, भद्रा १६:१२ से २९:२४ तक,
३३	०२	४	मं.	६०	००	-	-	ज्ये.	१८	०५	१२	५५	शि.	४६	२८	ब.	३२	२३	०५:४१	०६:५४	१५	२२	१७	०५	धनु १२:५५	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२२:४९)।
३३	०५	४	बु.	०५	२५	०७	५१	मू.	२५	३३	१५	५४	सि.	४८	४७	बा.	०५	२५	०५:४१	०६:५५	१६	२३	१८	०६	धनु	गण्डमूल समा. १५:५४, बुध भरणी में २७:५९
३३	०९	५	गु.	११	२५	१०	१४	पू.षा.	३२	४५	१८	४६	सा.	५०	४७	तै.	११	२५	०५:४०	०६:५५	१७	२४	१९	०७	मकर २५:२६	
३३	१२	६	शु.	१६	४८	१२	२२	उ.षा.	३९	१३	२१	२०	शु.	५२	०८	व.	१६	४८	०५:३९	०६:५६	१८	२५	२०	०८	मकर	भद्रा १२:२२ से २५:१७ तक, शुक्र मृगशिरा में २१:४७,
३३	१५	७	श.	२१	०२	१४	०३	श्र.	४४	२७	२३	२५	शु.	५२	२३	ब.	२१	०३	०५:३८	०६:५७	१९	२६	२१	०९	मकर	भानु सप्तमी, कालाष्टमी।
३३	१९	८	र.	२३	४२	१५	०७	ध.	४८	००	२४	५०	ब्र.	५१	१७	कौ.	२३	४२	०५:३८	०६:५७	२०	२७	२२	१०	कुम्भ १२:१३	पञ्चक प्रा. १२:१३,
३३	२२	९	सो.	२४	३०	१५	२५	शत.	४९	४०	२५	२९	ऐं.	४८	३८	ग.	२४	३०	०५:३७	०६:५८	२१	२८	२३	११	कुम्भ	भद्रा २७:१५ से, मंगल मेष में १२:३८, (A)
३३	२५	१०	मं.	२३	१२	१४	५३	पू.भा.	४९	१३	२५	१७	वै.	४४	१७	वि.	२३	१२	०५:३६	०६:५९	२२	२९	२४	१२	मीन १९:२५	भद्रा १४:५३ तक,
३३	२८	११	बु.	१९	४५	१३	३०	उ.भा.	४६	४३	२४	१७	वि.	३८	१७	बा.	१९	४५	०५:३६	०६:५९	२३	३०	२५	१३	मीन	गण्डमूल प्रा. २४:१७, बुध कृतिका में ११:४५, (B)
३३	३१	१२	गु.	१४	२५	११	२१	रे.	४२	२८	२२	३४	प्री.	३०	४५	तै.	१४	२५	०५:३५	०७:००	२४	३१	२६	१४	मेष २२:३४	शुक्र मिथुन में १०:५३, पञ्चक समा. २२:३४, प्रदोष व्रत, (C)
३३	३४	१३ १४	शु.	०७ ५९	२३ ०२	०८ २९	३२ ११	अ.	३६	४०	२०	१५	आ.	२१	५५	व.	०७	२३	०५:३५	०७:००	२५	ज्ये. ०१	२७	१५	मेष	गण्डमूल समा. २०:१५, भद्रा ०८:३२ से १८:५५ तक, (D)
३३	३७	३०	श.	४९	५३	२५	३१	भ.	२९	५०	१७	३०	सौ.	१२	१०	च.	२४	३३	०५:३४	०७:०१	२६	०२	२८	१६	वृष २२:४६	भावुका अमावस्या, वट सावित्री व्रत, शनैश्चरी अमावस्या।

(A) मंगल अश्विनी में १२:३८, सूर्य कृतिका में १९:३१ (B) अपरा एकादशी व्रत (स.)। (C) बुध वृष में १२:३२ (D) सूर्य वृष संक्रान्ति ०६:२२, सं.पुण्यकाल (सूर्योदय से १२:३४ तक), मास शिवरात्रि।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	०९	११	००	०२	०१	११	१०	०४
अं.	२५	२६	२९	१९	२६	२४	१५	११	११
क.	१०	५९	०२	४६	०१	५८	५४	०६	०६
वि.	२६	१६	४१	१०	३५	१९	३७	३९	३९
गति	५८ ०१	७५० ३१	४५ ३७	१२६ अं. ५९	०९ २०	७२ १३	०६ २४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	भर. ४ च.	धनि. २ च.	रेव. ४ च.	भर. २ च.	पुन. २ च.	मृग. १ च.	उ.भा. ४ च.	शत. २ च.	मघा ४ च.

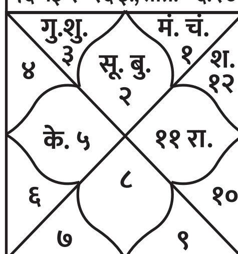
१० मई २०२६ ई., प्रात: ०६:२७



ज्येष्ठ कृ. ८, रविवार

इस मास में पाँच शनिवार तथा पाँच रविवार हैं और वृष की संक्रान्ति शुक्रवार को है, अतः प्रजा में रोग, भय तथा अशान्ति का वातावरण रहेगा। वर्षा की कमी, तूफान तक ओलावृष्टि से कृषकवर्ग चिन्तित रहेगा। गुड़, घी, रस वाले पदार्थों, सरसों, तिल, तैल में तेजी तथा गेहूँ, जौ, चना में मन्दी रहेगी। शेयर बाजार में तेजी का रुख रहेगा।

१६ मई २०२६ ई., प्रात: ०६:२७



ज्येष्ठ कृ. ३०, शनिवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	००	००	०१	०२	०२	११	१०	०४
अं.	००	१९	०३	०२	२६	०२	१६	१०	१०
क.	५८	४२	३५	४३	५९	१०	३१	४७	४७
वि.	०६	३०	२५	२४	४४	३३	५६	३५	३५
गति	५८ ५३	९०३ अं. ४२	४५ २०	१३१ अं. ०७	०९ ५६	७१ ५४	०६ ०६	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	कृति. २ च.	भर. २ च.	अश्वि. २ च.	कृति. २ च.	पुन. ३ च.	मृग. ३ च.	उ.भा. ४ च.	शत. २ च.	मघा ४ च.

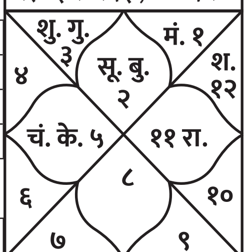
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, प्र. अधिक (अशुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (दि. १७ मई से ३१ मई २०२६ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु, के. अहर्गण ५५१९, अयनांश २४°/१३'/३७''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३३	४०	**१**	**र.**	४०	२०	२१	४१	**कृ.**	२२	३२	१४	३२	**शो. अति.**	०१ ५१	४५ ०८	**किं.**	१५	०८	०५:३३	०७:०२	वै. २७	**ज्ये. ०३**	जि. २९	**मई १७**	वृष	शनि रेवती में १४:३७, रोहिणी व्रत (A) ज्येष्ठ अधिकमास पुरुषोत्तम मास
३३	४३	**२**	**सो.**	३०	५०	१७	५३	**रो.**	१४	५८	११	३२	**सु.**	४०	३८	**बा.**	०५	३३	०५:३३	०७:०२	२८	**०४**	३०	**१८**	मिथुन २२:०४	राहु मीन में १९:३५, चन्द्र दर्शन।
३३	४५	**३**	**मं.**	२१	५५	१४	१९	**मृ.**	०७	५०	०८	४१	**धृ.**	३०	३८	**ग.**	२१	५५	०५:३३	०७:०३	२९	**०५**	जि. ०१	**१९**	मिथुन	भद्रा प्रा. २४:३९ से, बुध रोहिणी में १४:३५, (B)
३३	४८	**४**	**बु.**	१३	५८	११	०७	**आ. पुन.**	०१ ५६	४० ४०	०६ २८	१२ १२	**शू.**	२१	३३	**वि.**	१३	५८	०५:३२	०७:०३	३०	**०६**	०२	**२०**	कर्क २२:३९	भद्रा समा. ११:०७, विनायक चतुर्थी।
३३	५१	**५**	**गु.**	०७	१८	०८	२७	**पु.**	५३	१३	२६	४९	**ग.**	१३	३५	**बा.**	०७	१८	०५:३२	०७:०४	३१	**०७**	०३	**२१**	कर्क	गण्डमूल प्रा. २६:४९, सायन सूर्य मिथुन में ०६:०५
३३	५३	**६ ७**	**शु.**	०२ ५८	१५ ५५	०६ २९	२५ ०५	**आ.**	५१	३२	२६	०८	**वृ.**	०७	००	**तै.**	०२	१५	०५:३१	०७:०५	ज्ये. ०१	**०८**	०४	**२२**	सिंह २६:०८	भद्रा प्रा. २९:०५ से, राष्ट्रीय ज्येष्ठ प्रा.
३३	५६	**८**	**श.**	५७	२०	२८	२७	**म.**	५१	३५	२६	०९	**ध्रु. व्या.**	०१ ५८	४५ ००	**वि.**	२७	५५	०५:३१	०७:०५	०२	**०९**	०५	**२३**	सिंह	गण्डमूल समा. २६:०९, भद्रा समा. १६:४१, (C)
३३	५८	**९**	**र.**	५७	३२	२८	३१	**पू.फा.**	५३	२३	२६	५१	**ह.**	५५	३५	**बा.**	२७	१५	०५:३०	०७:०७	०३	**१०**	०६	**२४**	सिंह	
३४	००	**१०**	**सो.**	५९	१३	२९	११	**उ.फा.**	५६	३८	२८	०९	**व.**	५४	२३	**तै.**	२८	१२	०५:३०	०७:०६	०४	**११**	०७	**२५**	कन्या ०९:०७	सूर्य रोहिणी में १५:३८, बुध मृगशिरा में २३:४६, (D)
३४	०३	**११**	**मं.**	६०	००	–	–	**ह.**	६०	००	–	–	**सि.**	५४	१०	**व.**	३०	३३	०५:३०	०७:०७	०५	**१२**	०८	**२६**	कन्या	भद्रा प्रा. १७:४३ से,
३४	०५	**११**	**बु.**	०२	१३	०६	२२	**ह.**	०१	१०	०५	५७	**व्य.**	५४	५०	**वि.**	०२	१३	०५:२९	०७:०७	०६	**१३**	०९	**२७**	तुला १९:००	भद्रा समा. ०६:२२, कमला एकादशी (स.), (E)
३४	०७	**१२**	**गु.**	०६	१०	०७	५७	**चि.**	०६	३८	०८	०८	**वरि.**	५६	०५	**बा.**	०६	१०	०५:२९	०७:०८	०७	**१४**	१०	**२८**	तुला	प्रदोष व्रत।
३४	०९	**१३**	**शु.**	१०	५५	०९	५१	**स्वा.**	१२	५३	१०	३८	**परि.**	५७	४५	**तै.**	१०	५५	०५:२९	०७:०९	०८	**१५**	११	**२९**	तुला	बुध मिथुन में ११:१२, मंगल भरणी में ०६:२५,
३४	११	**१४**	**श.**	१६	१५	११	५८	**वि.**	१९	४०	१३	२०	**शि.**	५९	५०	**व.**	१६	१५	०५:२८	०७:०९	०९	**१६**	१२	**३०**	वृश्चिक ०६:३९	भद्रा ११:५८ से २५:०६ तक, पूर्णिमा व्रत।
३४	१३	**१५**	**र.**	२१	५७	१४	१५	**अनु.**	२६	५०	१६	१२	**सि.**	६०	००	**ब.**	२१	५७	०५:२८	०६:१०	१०	**१७**	१३	**३१**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. १६:१२, शुक्र पुनर्वसु में ०५:४७, (F)

(A) काशी दशाश्वमेध स्नान प्रा.। (B) मु. जिल्हेज प्रा., शुक्र आर्द्रा में २४:३२, (C) बुध उदय ०५:२४ बजे, दुर्गाष्टमी। (D) गंगा दशहरा। (E) ईद-उल-जुहा (बकरीद)। (F) सत्यव्रत, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस, प्रथम ज्येष्ठ पूर्णिमा स्नान दानादि।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०४	००	०१	०२	०२	११	१०	०४
अं.	०७	०२	०८	१७	२८	१०	१७	१०	१०
क.	४२	२५	५१	४७	११	३२	१२	२५	२५
वि.	३८	३३	२१	२२	५८	२१	५७	१९	१९
गति	५७ ४३	८०६ ३१	४४ ५९	१२४ अं. ४५	१० ३५	७१ ३०	०५ ४१	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	कृत्ति. ४ च.	म. १ च.	अश्वि. ३ च.	रोहि. ३ च.	पुन. ३ च.	आ. २ च.	रेव. १ च.	शत. २ च.	म. ४ च.

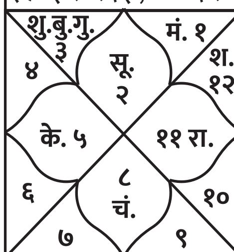
२३ मई २०२६ ई., प्रातः ६:२७



प्र. ज्येष्ठ शु. ८, शनिवार

इस मास में गुरु-शुक्र की युति तथा मंगल-शनि का द्विर्द्वादश योग होने के कारण राष्ट्रीय एवं अन्तरर्राष्ट्रीय स्तर राजनैतिक विद्वेष बढ़ेगा। विशेष रूप पर से युरोप एवं पश्चिमी देशों में युद्धविभीषिका विकराल रूप धारण करेगी। बुध का पश्चिम में उदय होने के कारण पश्चिमी प्रदेशों में तूफान, भूकम्प आदि आपदा से जन-धन की हानि होने की सम्भावना है। महाराष्ट्र एवं पश्चिमी बंगाल में राजनैतिक विद्वेष से आम जनता को परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

३१ मई २०२६ ई., प्रातः ६:२७



प्र. ज्येष्ठ शु. १५, रविवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०७	००	०२	०२	०२	११	१०	०४
अं.	१५	११	१४	०३	२९	२०	१७	०९	०९
क.	२३	५०	४९	१५	३९	०१	५६	५९	५९
वि.	२५	०६	१४	०६	३३	५९	०६	५३	५३
गति	५७ ३२	७०५ ५५	४४ ३३	१०४ १०	११ १३	७० ५८	०५ ०९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	रोहि. २ च.	अनु. ३ च.	भर. १ च.	मृग. ३ च.	पुन. ३ च.	आर्द्रा. ४ च.	रेव. १ च.	शत. १ च.	म. ३ च.

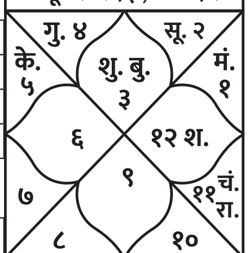
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, द्वि. अधिक (अशुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (दि. ०१ जून से १५ जून २०२६ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु, के. अहर्गण ५५३४, अयनांश २४°/१३'/४०''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३४	१५	१	सो.	२७	५३	१६	३७	ज्ये.	३४	१३	१९	०९	सि.	०२	०८	कौ.	२७	५३	०५:२८	०७:१०	ज्ये. ११	ज्ये. १८	जि. १४	जून ०१	धनु १९:०८	गुरु कर्क में २५:४९
३४	१७	२	मं.	३३	५३	११	०१	मू.	४१	३५	२२	०६	सा.	०४	३०	तै.	००	५३	०५:२८	०७:११	१२	१९	१५	०२	धनु	गण्डमूल समा. २२:०६, बुध आर्द्रा में ०६:११,
३४	१८	३	बु.	३९	४३	२१	२१	पू.षा.	४८	५०	२५	००	शु.	०६	५०	व.	०६	५०	०५:२८	०७:११	१३	२०	१६	०३	धनु	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२२:११), भद्रा ०८:१२ से २१:२१ तक।
३४	२०	४	गु.	४५	१०	२३	३१	उ.षा.	५५	३८	२७	४२	शु.	०९	००	ब.	१२	३३	०५:२७	०७:१२	१४	२१	१७	०४	मकर ०७:४२	
३४	२१	५	शु.	४९	४३	२५	२०	श्र.	६०	००	-	-	ब्र.	१०	३८	कौ.	१७	३५	०५:२७	०७:१२	१५	२२	१८	०५	मकर	विश्व पर्यावरण दिवस।
३४	२३	६	श.	५३	०५	२६	४१	श्र.	०१	३०	०६	०३	ऐं.	११	३३	ग.	२१	३५	०५:२७	०७:१३	१६	२३	१९	०६	कुम्भ १९:०४	भद्रा २६:४१ से, पञ्चक प्रा. १९:०४
३४	२४	७	र.	५४	५५	२७	२५	ध.	०६	१३	०७	५६	वै.	११	२८	वि.	२४	१२	०५:२७	०७:१३	१७	२४	२०	०७	कुम्भ	भद्रा १५:०८ तक, भानु सप्तमी।
३४	२५	८	सो.	५४	५५	२७	२५	शत.	०९	१८	०९	१०	वि.	१०	०२	बा.	२५	०८	०५:२७	०७:१३	१८	२५	२१	०८	मीन २७:३६	शुक्र कर्क में १७:४३, सूर्य मृगशिरा में १३:३३, (A)
३४	२७	९	मं.	५२	५०	२६	३५	पू.भा.	१०	३०	०९	३९	प्री.	०७	०८	तै.	२४	०८	०५:२७	०७:१४	१९	२६	२२	०९	मीन	
३४	२८	१०	बु.	४८	४७	२४	५८	उ.भा.	०९	४५	०९	२१	आ. सौ.	०२ ५६	३८ ३०	व.	२१	०३	०५:२७	०७:१४	२०	२७	२३	१०	मीन	गण्डमूल प्रा. ०९:२१, भद्रा १३:५२ से २४:५८ तक,
३४	२९	११	गु.	४२	५३	२२	३६	रे.	०७	०३	०८	१६	शो.	४८	५३	ब.	१६	०३	०५:२७	०७:१५	२१	२८	२४	११	मेष ०८:१६	बुध पुनर्वसु में ११:२६, शुक्र पुष्य में १४:०६, (B)
३४	३०	१२	शु.	३५	२५	१९	३७	अश्वि. भ.	०२ ५६	३३ ३५	०६ २८	२८ ०५	अति.	३९	५८	कौ.	०९	२०	०५:२७	०७:१५	२२	२९	२५	१२	मेष	गण्डमूल समा. ०६:२८, प्रदोष व्रत, (C)
३४	३०	१३	श.	२६	४२	१६	०८	कृ.	४९	३५	२५	१७	सु.	३०	०३	ग.	०१	१०	०५:२७	०७:१५	२३	३०	२६	१३	वृष ०९:२५	भद्रा १६:०८ से २६:१६ तक, मासशिवरात्रि।
३४	३१	१४	र.	१७	१२	१२	२०	रो.	४१	५८	२२	१४	धृ.	१९	३०	श.	१७	१२	०५:२७	०७:१६	२४	३१	२७	१४	वृष	अमावस्या श्राद्धादि, रोहिणी व्रत।
३४	३२	३०	सो.	०७	२३	०८	२४	मृग.	३४	१३	१९	०८	शू.	०८	४०	ना.	०७	२३	०५:२७	०७:१६	२५	आ. ०१	२८	१५	मिथुन ०८:४१	सूर्य मिथुन में १२:५३, (D)

(A) कालाष्टमी। (B) पञ्चक समा. ०८:१६, कमला एकादशी व्रत (स्मा.+वै.)। (C) कमला एकादशी व्रत (नि.)। (D) सोमवती अमावस्या स्नानादि, मिथुन संक्रान्ति १२:५३, सं. पुण्यकाल १२:५३ से सूर्यास्त तक।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	१०	००	०२	०३	०२	११	१०	०४
अं.	२३	१८	२०	१५	०१	२९	१८	०९	०९
क.	०३	३२	४३	५०	११	२७	३४	३४	३४
वि.	०२	५६	३५	२४	४५	०१	५२	२७	२७
गति	५७ २५	७६१ ०४	४४ ०६	८२ ०३	११ ४५	७० २२	०४ ३५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	रोहि. ४ च.	शत. ४ च.	भर. ३ च.	आ. ३ च.	पुन. ४ च.	पुन. ३ च.	रेव. १ च.	शत. १ च.	म. ३ च.

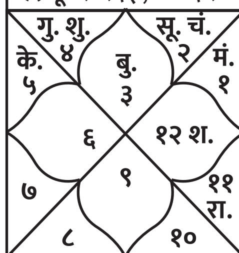
०८ जून २०२६ ई., प्रातः ६:२७



द्वि. ज्येष्ट कृ. ८, सोमवार

इस मास में पाँच सोमकार हैं तथा मिथुन की संक्रान्ति भी सोमवार को है, अतः सूत, सन, रेशम आदि के भाव तेज रहेंगे। वर्षा समयानुकूल उत्तम होने के कारण फसलों के अच्छा होने की सम्भावना है। साग-सब्जी आदि के भाव मन्दे तथा अन्न के भावों में घटाबढ़ी का रुख रहेगा।

१५ जून २०२६ ई., प्रातः ६:२७



द्वि. ज्येष्ठ कृ. ३०, सोमवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०१	००	०२	०३	०३	११	१०	०४
अं.	२९	२८	२५	२४	०२	०७	१९	०९	०९
क.	४४	३४	५०	१३	३५	३७	०४	१२	१२
वि.	३९	४३	४५	०६	४२	२२	४७	११	११
गति	५७ २१	९१८ अ. ५३	४३ ४२	६० १९	१२ ०९	६९ ४८	०४ ०२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	मृग. २ च.	मृग. २ च.	भर. ४ च.	पुन. २ च.	पुन. ४ च.	पुन. २ च.	रेव. १ च.	शत. १ च.	म. ३ च.

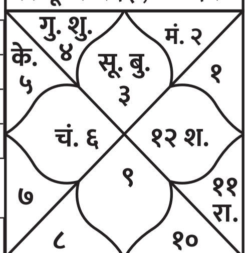
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (दि. १६ जून से २९ जून २०२६ ई.), उत्तरायण/दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म/वर्षा ऋतु, के. अहर्गण ५५४९, अयनांश २४°/१३'/४३"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
००	००	**१**	**सो.**	५७	४०	२८	३१	**०**	०	०	०	०	**ग.**	५८	००	**०**	०	०	०	०	**०**	**०**	०	**०**	०	
३४	३२	**२**	**मं.**	४८	३५	२४	५३	**आ.**	२६	५३	१६	१२	**वृ.**	४७	५०	**बा.**	२३	००	०५:२७	०७:१६	ज्येष्ठ २६	आषाढ़ **०२**	जि. २९	जून **१६**	मिथुन	मंगल कृत्तिका में ०९:३२, चन्द्रदर्शन।
३४	३३	**३**	**बु.**	४०	३०	२१	३९	**पुन.**	२०	२५	१३	३७	**ध्रु.**	३८	३०	**तै.**	१४	२३	०५:२७	०७:१७	२७	**०३**	मो. ०१	**१७**	कर्क ०८:१३	मु. मोहर्रम प्रा., रोहिणी व्रत, (A)
३४	३३	**४**	**गु.**	३३	५०	१८	५९	**पु.**	१५	१३	११	३२	**व्या.**	३०	२०	**व.**	०६	५८	०५:२७	०७:१७	२८	**०४**	०२	**१८**	कर्क	गण्डमूल प्रा. ११:३२, भद्रा ०८:१४ से १८:५९ तक, (B)
३४	३३	**५**	**शु.**	२८	५०	१७	००	**आ.**	११	३८	१०	०७	**ह.**	२३	३३	**ब.**	०१	०५	०५:२८	०७:१७	२९	**०५**	०३	**१९**	सिंह १०:०७	श्रुत पञ्चमी प्राकृत दिवस।
३४	३४	**६**	**श.**	२५	४८	१५	४७	**म.**	०९	५५	०९	२६	**व.**	१८	२०	**तै.**	२५	४८	०५:२८	०७:१७	३०	**०६**	०४	**२०**	सिंह	गण्डमूल समा. ०९:२६, मंगल वृष में २३:५९, (C)
३४	३४	**७**	**र.**	२४	४२	१५	२१	**पू.फा.**	१०	०८	०९	३१	**सि.**	१४	४३	**व.**	२४	४२	०५:२८	०७:१८	३१	**०७**	०५	**२१**	कन्या १५:४०	भद्रा १५:२१ से २७:२५ तक, (D)
३४	३४	**८**	**सो.**	२५	३०	१५	४०	**उ.फा.**	१२	१५	१०	२२	**व्य.**	१२	३८	**ब.**	२५	३०	०५:२८	०७:१८	आ ०१	**०८**	०६	**२२**	कन्या	बुध कर्क में १५:३०, सूर्य आर्द्रा में १२:२६, (E)
३४	३४	**९**	**मं.**	२८	००	१६	४०	**ह.**	१६	०५	११	५४	**व.**	११	५३	**कौ.**	२७	५७	०५:२८	०७:१८	०२	**०९**	०७	**२३**	तुला २४:५३	
३४	३३	**१०**	**बु.**	३१	५०	१८	१३	**चि.**	२१	१५	१३	५९	**परि.**	१२	१५	**ग.**	३१	५०	०५:२९	०७:१८	०३	**१०**	०८	**२४**	तुला	रामेश्वर प्रतिष्ठा दर्शन एवं पूजन, गंगा दशहरा।
३४	३३	**११**	**गु.**	३६	४३	२०	१०	**स्वा.**	२७	३०	१६	२९	**शि.**	१३	३३	**व.**	०४	१०	०५:२९	०७:१८	०४	**११**	०९	**२५**	तुला	भद्रा ०७:०९ से २०:१० तक, (F)
३४	३३	**१२**	**शु.**	४२	१५	२२	२३	**वि.**	३४	२८	१९	१६	**सि.**	१५	२५	**ब.**	०९	२५	०५:२९	०७:१८	०५	**१२**	१०	**२६**	वृश्चिक १२:३३	मोहर्रम।
३४	३२	**१३**	**श.**	४८	०८	२४	४४	**अनु.**	४१	४५	२२	११	**सा.**	१७	३८	**कौ.**	१५	०८	०५:२९	०७:१९	०६	**१३**	११	**२७**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. २२:११, शनि प्रदोष व्रत।
३४	३२	**१४**	**र.**	५४	०२	२७	०७	**ज्ये.**	४९	०८	२५	०९	**शु.**	१९	५७	**ग.**	२१	०३	०५:३०	०७:१९	०७	**१४**	१२	**२८**	धनु २५:०९	भद्रा प्रा. २७:०७,
३४	३१	**१५**	**सो.**	५९	५०	२९	२६	**मू.**	५६	२५	२८	०४	**शु.**	२२	२०	**वि.**	२६	५७	०५:३०	०७:१९	०८	**१५**	१३	**२९**	धनु	गण्डमूल समा. २८:०४, भद्रा समा. १६:१७, (G)

(A) काशी दशाश्वमेध स्नान प्रा., रम्भा तृतीया, महाराणा प्रताप जयन्ती (उदयकाल व्यापिनी)। (B) गुरु पुष्य में २१:०१, विनायक चतुर्थी। (C) अरण्य षष्ठी (सप्तमी विद्धा), विन्ध्यवासिनी पूजा, (D) सायन सूर्य कर्क में १३:५३, वर्ष का सबसे बड़ा दिन, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, राष्ट्रीय आषाढ़ प्रारम्भ, दक्षिणायन प्रारम्भ। (E) शुक्र आश्लेषा में २६:०८, दुर्गाष्टमी, मेला क्षीरभवानी (काश्मीर), श्री धूमावती जयन्ती। (F) निर्जला एकादशी व्रत (स.), गायत्री जयन्ती। (G) बुध वक्री २३:०६, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, वट पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत (दाक्षिणात्य), कबीरदास जयन्ती, मन्वादि (वैवस्वत)।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	०५	०१	०२	०३	०३	११	१०	०४
अं.	०६	०७	००	२९	०४	१५	१९	०८	०८
क.	२५	५५	५४	४७	०२	४३	३०	४९	४९
वि.	४४	१९	५५	२३	१३	२४	३९	५६	५६
गति	५७ १५	७६५ ५३	४३ १५	३४ ०६	१२ ३०	६९ ०८	०३ २६	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	मृग. ४ च.	उ.फा. ४ च.	कृति. २ च.	पुन. ३ च.	पुष्य. १ च.	पु. ४ च.	रेव. १ च.	शत. १ च.	म. ३ च.

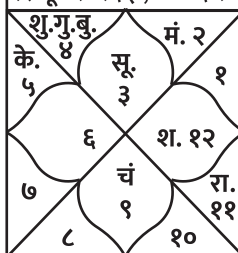
२२ जून २०२६ ई., प्रातः ६:२७



द्वि. ज्येष्ठ शु. ८, सोमवार

इस मास में गुरु-शुक्र की युति उनका केतु से द्विर्द्वादश तथा राहु से षड्ष्टक योग होने के कारण अगानिस्तान पाकिस्तान, पश्चिम बंगाल, कश्मीर में आतंकी गतिविधियों के विकराल रूप धारण करने की सम्भावना है। चीन के भी राजनैतिक हस्तक्षेप करने की सम्भावना रहेगी।

२९ जून २०२६ ई., प्रातः ६:२७



द्वि ज्येष्ठ शु. १५, सोमवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	०८	०१	०३	०३	०३	११	१०	०४
अं.	१३	०२	०५	०२	०५	२३	१९	०८	०८
क.	०६	३७	५५	००	३०	४४	५२	२७	२७
वि.	१७	२८	५९	३४	४९	१३	१२	४१	४१
गति	५७ १२	७१२ १३	४२ ४९	०३ ३१	१२ ४६	६८ २०	०२ ४८	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	आ. २ च.	मू. १ च.	कृति. ३ च.	पुन. ४ च.	पुष्य. १ च.	आश्ले. ३ च.	रेव. १ च.	शत. १ च.	म. ३ च.

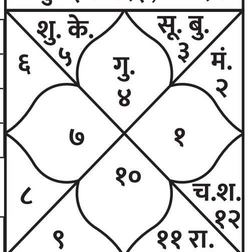
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, आषाढ़ कृष्ण पक्ष (दि. ३० जून से १४ जुलाई २०२६ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु, के. अहर्गण ५५६३, अयनांश २४°/१३'/४६"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३४	३०	**१**	मं.	६०	००	–	–	पू.षा.	६०	००	–	–	ब्र.	२४	३३	बा.	३२	४०	०५:३०	०७:१९	आषाढ़ ०९	आषाढ़ **१६**	मो. १४	जून **३०**	धनु	
३४	२९	**१**	बु.	०५	२०	०७	३८	पू.षा.	०३	२०	०६	५१	ऐं.	२६	२३	कौ.	०५	१८	०५:३१	०७:१९	१०	**१७**	१५	जुलाई **०१**	मकर १३:३२	
३४	२९	**२**	गु.	१०	१८	०९	३८	उ.षा.	०९	५०	०९	२७	वै.	२७	५०	ग.	१०	१८	०५:३१	०७:१९	११	**१८**	१६	**२**	मकर	भद्रा प्रा. २२:३२, बुध अस्त १४:३३,
३४	२८	**३**	शु.	१४	३५	११	२१	श्र.	१५	४०	११	४७	वि.	२८	४२	वि.	१४	३३	०५:३१	०७:१९	१२	**१९**	१७	**३**	कुम्भ २४:४८	भद्रा समा. ११:२१, पञ्चक प्रा. २४:४८, (A)
३४	२६	**४**	श.	१७	५०	१२	४०	ध.	२०	३०	१३	४४	प्री.	२८	४२	बा.	१७	५०	०५:३२	०७:१९	१३	**२०**	१८	**४**	कुम्भ	शुक्र सिंह में १९:१४, मंगल रोहिणी में २३:५४, (B)
३४	२५	**५**	र.	१९	५७	१३	३१	शत.	२४	१०	१५	१३	आ.	२७	५०	तै.	१९	५५	०५:३२	०७:१९	१४	**२१**	१९	**५**	कुम्भ	
३४	२४	**६**	सो.	२०	३५	१३	४७	पू.भा.	२६	२७	१६	०८	सौ.	२५	४५	व.	२०	३५	०५:३३	०७:१९	१५	**२२**	२०	**६**	मीन ०९:५७	भद्रा १३:४७ से २५:४१ तक, सूर्य पुनर्वसु में १२:०३,
३४	२३	**७**	मं.	१९	४०	१३	२५	उ.भा.	२७	०८	१६	२४	शो.	२२	२५	ब.	१९	४०	०५:३३	०७:१८	१६	**२३**	२१	**७**	मीन	गण्डमूल प्रा. १६:२४, वक्री बुध मिथुन में १०:४६, (C)
३४	२१	**८**	बु.	१७	००	१२	२२	रे.	२६	०५	१६	००	अति.	१७	४०	कौ.	१७	००	०५:३४	०७:१८	१७	**२४**	२२	**८**	मेष १६:००	पञ्चक समा. १६:००,
३४	२०	**९**	गु.	१२	४०	१०	३८	अश्वि.	२३	२५	१४	५६	सु.	११	३५	ग.	१२	४०	०५:३४	०७:१८	१८	**२५**	**२३**	**९**	मेष	गण्डमूल समा. १४:५६, भद्रा प्रा. २१:३२,
३४	१८	**१०** **११**	शु.	०६ ५९	४८ ५९	०८ २९	१७ २३	भ.	१९	१२	१३	१५	धृ. शू.	०४ ५५	१३ ४३	वि.	०६	४८	०५:३४	०७:१८	१९	**२६**	२४	**१०**	वृष १८:४५	भद्रा समा. ०८:१७, योगिनी एकादशी व्रत (स्मा.)।
३४	१७	**१२**	श.	५१	१३	२६	०४	कृ.	१३	४०	११	०३	ग.	४६	१५	कौ.	२५	२७	०५:३५	०७:१८	२०	**२७**	२५	**११**	वृष	योगिनी एकादशी व्रत (वै.), रोहिणी व्रत,
३४	१५	**१३**	र.	४२	१७	२२	३०	रो.	०७	१५	०८	२९	वृ.	३६	१७	ग.	१६	५०	०५:३५	०७:१८	२१	**२८**	२६	**१२**	मिथुन १९:०६	भद्रा प्रा. २२:३०, मास शिवरात्रि। (D)
३४	१३	**१४**	सो.	३३	०५	१८	५०	मृ. आ.	०० ५३	१५ ०८	०५ २६	४२ ५१	ध्रु.	२६	००	वि.	०७	४०	०५:३६	०७:१७	२२	**२९**	२७	**१३**	मिथुन	भद्रा समा. ०८:४०,
३४	११	**३०**	मं.	२४	०३	१५	१३	पुन.	४६	२५	२४	१०	व्या.	१५	५३	ना.	२४	०३	०५:३६	०७:१७	२३	**३०**	२८	**१४**	कर्क १८:४९	भौमवती अमावस्या।

(A) चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२१:५०)। (B) शुक्र मघा में १९:१४ (C) भानु सप्तमी, कालाष्टमी। (D) गुरु वार्धक्य प्रा. १९:२१

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	११	०१	०२	०३	०४	११	१०	०४
अं.	२१	२४	१२	२९	०७	०३	२०	०७	०७
क.	४१	३३	१८	३४	२७	५३	१३	५९	५९
वि.	०३	२२	३२	०१	०६	२७	१३	०४	०४
गति	५७ १२	८१५ ०१	४२ १५	३२ व.अ. ३४	१३ ०२	६७ ०९	०१ ५७	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पुन. ४ च.	रेव. ३ च.	रोहि. ४ च.	पुन. ३ च.	पुष्य २ च.	मघा २ च.	रेव. २ च.	शत. ४ च.	मघा ३ च.

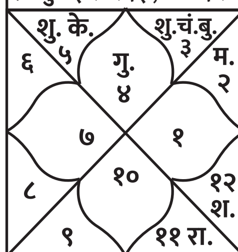
०८ जुलाई २०२६ ई., प्रातः ६:२७



आषाढ़ कृ. ८, बुधवार

इस मास में पाँच मंगलवार तथा पाँच बुधवार हैं और कर्क की संक्रान्ति गुरुवार को है, अतः कहीं वर्षा कम तो कहीं अधिक होगी। वनस्पति, घी, गुड़, शक्कर, चीनी, घी, तेल के भाव तेज रहेंगे। मंगलवार की अमावस्या होने के कारण राजनैतिक विद्वेश एवं किसी देश में छत्र भंग होने की भी सम्भावना है।

१४ जुलाई २०२६ ई., प्रातः ६:२७



आषाढ़ कृ. ३०, मंगलवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	०२	०१	०२	०३	०४	११	१०	०४
अं.	२७	२२	१६	२५	०८	१०	२०	०७	०७
क.	२४	१५	३०	५०	४५	३३	२२	३९	३९
वि.	२७	२७	४०	४९	४६	१६	५०	५९	५९
गति	५७ १५	९०४ अ. ४८	४१ ५१	३७ व.अ. ४३	१३ ०९	६६ १५	०१ २१	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पुन. ३ च.	पुन. ४ च.	रोहि. २ च.	पुन. २ च.	पुष्य २ च.	मघा ४ च.	रेव. २ च.	शत. ४ च.	मघा ३ च.

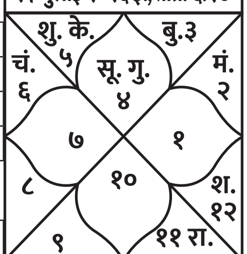
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, आषाढ़ शुक्ल पक्ष (दि. १५ जुलाई से २९ जुलाई २०२६ ई.), दक्षिणायन, उत्तरगोल गोल, वर्षा ऋतु, के. अहर्गण ५५७८, अयनांश २४°/१३'/४८''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३४	०९	**१**	**बु.**	१५	३५	११	५१	**पु.**	४०	२५	२१	४७	**ह. व.**	०६ ५७	०८ १३	**ब.**	१५	३५	०५:३७	०७:१७	आ. २४	**आ. ३१**	मो. २९	**जु. १५**	कर्क	गण्डमूल प्रा. २१:४७, (A) **गुरु अस्त १९:२१**
३४	०७	**२**	**गु.**	०८	१०	०८	५३	**आश्ले.**	३५	३८	१९	५२	**सि.**	४९	२३	**कौ.**	०८	१०	०५:३७	०७:१६	२५	**श्रा. ०१**	स. ०१	**१६**	सिंह १९:५२	सूर्य कर्क में २३:३९, शुक्र पू.फा. में १९:०७, (B)
३४	०५	**३ ४**	**शु.**	०२ ५७	०५ ४३	०६ २८	२८ ४३	**म.**	३२	२३	१८	३५	**व्य.**	४२	५०	**ग.**	०२	०५	०५:३८	०७:१६	२६	**०२**	०२	**१७**	सिंह	गण्डमूल समा. १८:३५, भद्रा १७:३० से २८:४३ तक,(C)
३४	०३	**५**	**श.**	५५	१३	२७	४३	**पू.फा.**	३०	५५	१८	००	**वरि.**	३७	४७	**ब.**	२६	२७	०५:३८	०७:१६	२७	**०३**	०३	**१८**	कन्या २३:५६	
३४	००	**६**	**र.**	५४	३८	२७	३०	**उ.फा.**	३१	२३	१८	१२	**परि.**	३४	२०	**कौ.**	२४	५५	०५:३९	०७:१५	२८	**०४**	०४	**१९**	कन्या	कुसुम्बा षष्ठी, कुमार षष्ठी।
३३	५८	**७**	**सो.**	५५	५८	२८	०३	**ह.**	३३	४३	१९	०९	**शि.**	३२	२३	**ग.**	२५	०३	०५:४०	०७:१५	२९	**०५**	०५	**२०**	कन्या	भद्रा प्रा. २८:०३, सूर्य पुष्य में ११:२८, शीतला सप्तमी।
३३	५६	**८**	**मं.**	५९	००	२९	१७	**चि.**	३७	५३	२०	४९	**सि.**	३१	५३	**वि.**	२७	३०	०५:४०	०७:१४	३०	**०६**	०६	**२१**	तुला ०७:५४	भद्रा समा. १६:३५, दुर्गाष्टमी, शीतलाष्टमी, ओली जैन प्रा.।
३३	५३	**९**	**बु.**	६०	००	-	-	**स्वा.**	४३	२५	२३	०३	**सा.**	३२	३२	**बा.**	३१	०५	०५:४१	०७:१४	३१	**०७**	०७	**२२**	तुला	बुध उदय ०९:३८, भड्डुली नवमी, सायन सूर्य सिंह में २४:४१।
३३	५१	**९**	**गु.**	०३	२८	०७	०४	**वि.**	५०	०४	२५	४३	**शु.**	३४	०८	**कौ.**	०३	२८	०५:४१	०७:१४	श्रा. ०१	**०८**	०८	**२३**	वृश्चिक १९:०१	राष्ट्रीय श्रावण प्रारम्भ, गुप्त नवरात्र समा., (D)
३३	४८	**१०**	**शु.**	०८	४८	०९	१३	**अनु.**	५७	१५	२८	३६	**शु.**	३६	१३	**ग.**	०८	४८	०५:४२	०७:१३	०२	**०९**	०९	**२४**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. २८:३६, भद्रा प्रा. २२:२३, (E)
३३	४५	**११**	**श.**	१४	४३	११	३५	**ज्ये.**	६०	००	-	-	**ब्र.**	३८	३८	**वि.**	१४	४३	०५:४२	०७:१३	०३	**१०**	१०	**२५**	वृश्चिक	भद्रा समा ११:३५, देवशयनी एकादशी व्रत (स.),(F)
३३	४३	**१२**	**र.**	२०	३८	१३	५८	**ज्ये.**	०४	४०	०७	३५	**ऐं.**	४०	५५	**बा.**	२०	३८	०५:४३	०७:१२	०४	**११**	११	**२६**	धनु ०७:३५	वासुदेव द्वादशी, प्रदोष व्रत, शनि वक्री २५:२६।
३३	४०	**१३**	**सो.**	२६	२०	१६	१५	**मू.**	११	५४	१०	२९	**वै.**	४३	००	**तै.**	२६	२०	०५:४३	०७:१२	०५	**१२**	१२	**२७**	धनु	गण्डमूल समा. १०:२९, जया पार्वती व्रत प्रा.
३३	३७	**१४**	**मं.**	३१	२७	१८	१९	**पू.षा.**	१८	३८	१३	११	**वि.**	४४	३२	**व.**	३१	२७	०५:४४	०७:११	०६	**१३**	१३	**२८**	मकर १९:४९	भद्रा प्रा. १८:१९, पूर्णिमा व्रत, शिवशयनोत्सव, (G)
३३	३४	**१५**	**बु.**	३५	५०	२०	०५	**उ.षा.**	२४	४०	१५	३७	**प्री.**	४५	३२	**वि.**	०३	४५	०५:४५	०७:११	०७	**१४**	१४	**२९**	मकर	भद्रा समा. ०७:१५, (H)

(A) गुप्त नवरात्र प्रा., भगवान श्रीजगन्नाथ नवयौवन दर्शन, चन्द्रदर्शन, (B) मु. सफ्फर प्रा., श्री जगन्नाथ रथयात्रा, मनोरथ द्वितीया, कर्क संक्रान्ति २३:३९, सं. पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर। (C) विनायक चतुर्थी (D) बुध मार्गी २८:२८, मंगल मृगशिरा में २७:२१ (E) गुप्त नवरात्र पारणा, भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा परावर्तन। (F) चातुर्मास्यारम्भ। (G) शुक्र उ.फा. में २८:५२, (H) सत्यव्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा, सन्यासियों का चातुर्मास्यारम्भ, कोकिला व्रत, ओली जैन समा., पवन परीक्षा।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	०५	०१	०२	०३	०४	११	१०	०४
अं.	०४	२९	२१	२२	१०	१८	२०	०७	०७
क.	०५	१४	२१	२८	१८	१२	२९	१७	१७
वि.	१८	३४	४०	२२	१८	०८	२८	४४	४४
गति	५७ १६	७४१ ५४	४१ २२	१५ व.अ. ०५	१३ अ. १५	६४ ५९	०० ३९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पुष्य. ४ च.	चि. २ च.	रोहि. ४ च.	पुन. ४ च.	पुष्य. ३ च.	पू.फा. २ च.	रेव. २ च.	शत. ४ च.	म. ३ च.

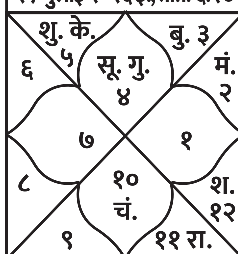
२१ जुलाई २०२६ ई., प्रातः ६:२७



आषाढ़ शु. ८, मंगलवार

इस मास में शुक्र-केतु की युति इनका गुरु से द्विर्द्वादश तथा मंगल से केन्द्रीय योग होने के कारण राजनैतिक दलों में भिड़न्त होने की सम्भावना है। युरोपीय एवं पश्चिम देशों में युद्ध विभीषिका के विकराल रूप लेने की सम्भावना है। इस मास में बुधोदय होने के कारण भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदा से भारी मात्रा में जन-धन की हानि होगी।

२९ जुलाई २०२६ ई., प्रातः ६:२७



आषाढ़ शु. १५, बुधवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	०९	०१	०२	०३	०४	११	१०	०४
अं.	११	०५	२६	२३	१२	२६	२०	०६	०६
क.	४३	२१	४९	२१	०४	४४	३०	५२	५२
वि.	४२	२७	५६	१४	३२	१०	५४	१७	१७
गति	५७ २०	७२७ ५०	४० ४७	३० १४	१३ अ. १८	६३ ११	०० व. ३९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पुष्य. ३ च.	उ.षा. ३ च.	मृग. २ च.	पुन. २ च.	पुष्य. ३ च.	उ. फा. १ च.	रेव. २ च.	शत. १ च.	म. ३ च.

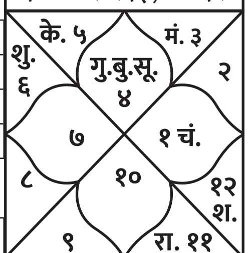
वि. सं. २०८३ , शाके १९४८, श्रावण कृष्ण पक्ष (दि. ३० जुलाई से १२ अगस्त २०२६ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु, के. अहर्गण ५५९३, अयनांश २४°/१३'/५१''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३३	३१	१	गु.	३९	१२	२१	३०	श्र.	२९	५५	१७	४३	आयु.	४५	५०	बा.	०७	४५	०५:४५	०७:१०	श्रावण ०८	श्रावण १५	र. १५	जुला. ३०	मकर	हिण्डोले प्रा. (व्रजमण्डल), अशून्य शयन व्रत।
३३	२८	२	शु.	४१	५५	२२	३२	ध.	३४	१२	१९	२७	सौ.	४५	२०	तै.	१०	४५	०५:४६	०७:०९	०९	१६	१६	३१	कुम्भ ०६:३८	पञ्चक प्रा. ०६:३७
३३	२५	३	श.	४३	२२	२३	०७	शत.	३७	२७	२०	४५	शो.	४४	०२	व.	१२	४७	०५:४६	०७:०९	१०	१७	१७	अग. ०१	कुम्भ	भद्रा १०:५३ से २३:०७ तक, शुक्र कन्या में ०९:२७ से, (A)
३३	२२	४	र.	४३	४०	२३	१५	पू.भा.	३९	३५	२१	३७	अति.	४१	४७	ब.	१३	४०	०५:४७	०७:०८	११	१८	१८	०२	मीन १५:२७	मंगल मिथुन में २२:५१, चतुर्थी व्रत, (B)
३३	१९	५	सो.	४२	४७	२२	५४	उ.भा.	४०	३२	२२	००	सु.	३८	३५	कौ.	१३	२५	०५:४७	०७:०८	१२	१९	१९	०३	मीन	गण्डमूल प्रा. २२:००, सूर्य आश्लेषा में १०:२३ (C)
३३	१६	६	मं.	४०	३७	२२	०३	रे.	४०	१५	२१	५४	धृ.	३४	२२	ग.	११	५२	०५:४८	०७:०६	१३	२०	२०	०४	मेष २१:५४	भद्रा २२:०३ से, पञ्चक समा. २१:५४, मंगलागौरी व्रत।
३३	१२	७	बु.	३७	१२	२०	४२	अश्वि.	३८	४२	२१	१८	शू.	२९	१०	वि.	०९	०५	०५:४९	०७:०६	१४	२१	२१	०५	मेष	गण्डमूल समा. २१:१८, भद्रा ०९:२३ तक, (D)
३३	०९	८	गु.	३२	३७	१८	५२	भ.	३६	०२	२०	१४	ग.	२३	००	बा.	०५	०५	०५:४९	०७:०५	१५	२२	२२	०६	वृष २५:५३	शीतलाष्टमी।
३३	०६	९	शु.	२६	५७	१६	३७	कृ.	३२	१२	१८	४३	वृ.	१५	५२	ग.	२६	५७	०५:५०	०७:०४	१६	२३	२३	०७	वृष	भद्रा २७:२० से, रोहिणी व्रत।
३३	०२	१०	श.	२०	२०	१३	५९	रो.	२७	३०	१६	५१	ध्रु. व्या.	०७ ५९	५७ २७	वि.	२०	२२	०५:५१	०७:०३	१७	२४	२४	०८	मिथुन २७:४९	भद्रा १३:५९ तक, बुध पुष्य में ०७:१९
३२	५९	११	र.	१३	०५	११	०५	मृग.	२२	१०	१४	४३	ह.	५०	३२	बा.	१३	०५	०५:५१	०७:०३	१८	२५	२५	०९	मिथुन	कामिका एकादशी व्रत (स.)।
३२	५६	१२ १३	सो.	०५ ५७	२५ ३७	०८ २८	०१ ५४	आ.	१६	३०	१२	२७	वज्र	४१	३०	तै.	०५	२५	०५:५१	०७:०२	१९	२६	२६	१०	कर्क २८:४३	भद्रा २८:५४ से, गुरु उदय ०५:५१, (E)
३२	५२	१४	मं.	५०	०२	२५	५३	पुन.	१०	४२	१०	०९	सि.	३२	३२	वि.	२३	४७	०५:५२	०७:०१	२०	२७	२७	११	कर्क	भद्रा, १५:२२ तक, शुक्र हस्त में ०६:२७, (F)
३२	४९	३०	बु.	४३	०२	२३	०६	पुष्य.	०५	१५	०७	५९	व्य.	२३	३६	चतु.	१६	२७	०५:५३	०७:००	२१	२८	२८	१२	कर्क	गण्डमूल प्रा. ०७:५९, मंगल आर्द्रा में २२:३३, (G)

(A) राहु शतभिषा में २७:१३ (B) चन्द्रोदय (२१:२१), जया पार्वती व्रत समा.। (C) श्रावण सोमवार व्रत, नाग पञ्चमी (बंगाल, बिहार)। (D) बुध कर्क में १९:५३, भानु सप्तमी, शीतला सप्तमी, कालाष्टमी। (E) श्रावण सोमवार व्रत, सोम प्रदोष व्रत (F) मंगला गौरी व्रत, मास शिवरात्रि। (G) हरियाली अमावस्या।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	००	०२	०३	०३	०५	११	१०	०४
अं.	१९	१८	०२	००	१३	०४	२०	०६	०६
क.	२२	३७	१३	३३	५०	५९	२५	२६	२६
वि.	५२	२१	३९	११	४३	५८	४८	५१	५१
गति	५७ २७	८८७ ००	५० ०३	७३ ०३	१३ १६	६२ ३१	०१ व ००	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	आश्ले. १ च.	भर. २ च.	मृग. ३ च.	पुन. ४ च.	पुष्य. ४ च.	उ.फा. ३ च.	रेवती २ च.	धनि. ४ च.	मघा. २ च.

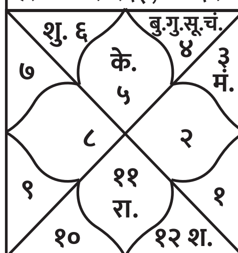
०६ अगस्त २०२६ ई., प्रात: ६:२७



श्रावण कृ. ८, गुरुवार

इस मास में पाँच गुरुवार तथा पाँच शुक्रवार हैं, और सिंह की संक्रान्ति सोमवार को है, अत: घी, गुड़, रसादि पदार्थों में तेजी तथा अन्नादि के भावों में मन्दी का रुख रहेगा। शेयर बाजार घटाबढ़ी के बाद मन्दी की चपेट में रहेगा।

१२ अगस्त २०२६ ई., प्रात: ६:२७



श्रावण कृ. ३०, बुधवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	०३	०२	०३	०३	०५	११	१०	०४
अं.	२५	१५	०६	०९	१५	१०	२०	०६	०६
क.	०८	४३	१३	३९	१०	५८	१७	०७	०७
वि.	०६	४०	२१	४८	०१	५६	४५	४७	४७
गति	५७ ३६	८८० ०३	३९ ४६	१०२ ००	१३ ३२	६० ३२	०१ व ३५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	आश्ले. ३ च.	पुष्य. ४ च.	मृग. ४ च.	पुष्य. २ च.	पुष्य. ४ च.	हस्त. १ च.	रेवती २ च.	धनि. ४ च.	मघा. २ च.

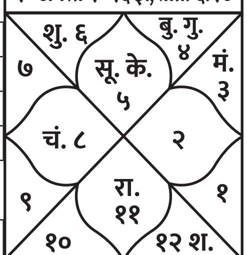
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, श्रावण शुक्ल पक्ष (दि. १३ अगस्त से २८ अगस्त २०२६ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा/शरद् ऋतु, के. अहर्गण ५६०७, अयनांश २४°/१३'/५४''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३२	४५	**१**	**गु.**	३७	०२	२०	४२	**आश्ले. मघा.**	०० ५६	३२ ५२	०६ २८	०६ ३८	**वरि.**	१५	५७	**किं**	१०	०५	०५:५३	०६:५९	श्रावण २२	श्रावण **२९**	स. २९	अगस्त **१३**	सिंह ०६:०६	गण्डमूल समा. २८:३८, गुरु बाल्यत्व समा. ०५:५३
३२	४१	**२**	**शु.**	३२	१२	१८	४७	**पू.फा.**	५४	३०	२७	४२	**परि.**	०८	५५	**बा.**	०४	३७	०५:५४	०६:५८	२३	**३०**	३०	**१४**	सिंह	चन्द्रदर्शन, सिंधारा।
३२	३८	**३**	**श.**	२८	५७	१७	२९	**उ.फा.**	५३	४७	२७	२५	**शि. सि.**	५३ ५८	५२ ३७	**तै.**	००	२२	०५:५४	०६:५७	२४	**३१**	रवि. ०१	**१५**	कन्या ०९:३४	भद्रा २९:१० से, बुध आश्लेषा में २६:१७, (A)
३२	३४	**४**	**र.**	२७	२२	१६	५२	**ह.**	५४	४७	२७	५०	**सा.**	५५	३२	**वि.**	२७	२२	०५:५५	०६:५७	२५	**३२**	०२	**१६**	कन्या	भद्रा १६:५२ तक, विनायक चतुर्थी, दूर्वागणपति व्रत।
३२	३०	**५**	**सो.**	२७	४२	१७	००	**चि.**	५७	३७	२८	५८	**शु.**	५३	५५	**बा.**	२७	४२	०५:५५	०६:५६	२६	**भा. ०१**	०३	**१७**	तुला १६:१९	सिंह संक्रान्ति ०७:५८, (B)
३१	२७	**६**	**मं.**	२९	४५	१७	५०	**स्वा.**	६०	००	–	–	**शु.**	५३	३७	**तै.**	२९	४५	०५:५६	०६:५५	२७	**०२**	०४	**१८**	तुला	बुध अस्त ०८:४५, गुरु आश्लेषा में २७:११, (C)
३२	२३	**७**	**बु.**	३३	३०	१९	२०	**स्वा.**	०२	०७	०६	४७	**ब्र.**	५४	२७	**ग.**	०१	२७	०५:५६	०६:५४	२८	**०३**	०५	**१९**	वृश्चिक २६:३०	भद्रा १९:१९ से, शीतला सप्तमी, भानु सप्तमी, (D)
३२	१९	**८**	**गु.**	३८	२२	२१	१८	**वि.**	०७	५७	०९	०८	**ऐं.**	५६	१०	**वि.**	०५	५७	०५:५७	०६:५३	२९	**०४**	०६	**२०**	वृश्चिक	भद्रा ०८:१६ तक, दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयना देवी, (E)
३२	१५	**९**	**शु.**	४४	०७	२३	३६	**अनु.**	१४	५०	११	५३	**वै.**	५८	२५	**बा.**	११	१२	०५:५७	०६:५२	३०	**०५**	०७	**२१**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. ११:५२
३२	११	**१०**	**श.**	५०	०५	२६	००	**ज्ये.**	२२	०७	१४	४९	**वि.**	६०	००	**तै.**	१७	०५	०५:५८	०६:५१	३१	**०६**	०८	**२२**	धनु १४:४९	बुध सिंह में १९:३१ बुध मघा में १९:३१
३२	०८	**११**	**र.**	५५	५२	२८	१९	**मू.**	२९	२७	१७	४५	**वि.**	००	४०	**व.**	२३	०२	०५:५८	०६:५०	भा. ०१	**०७**	०९	**२३**	धनु	गण्डमूल समा. १७:४४, भद्रा १५:११ से, २८:१८ तक,(F)
३२	०४	**१२**	**सो.**	६०	००	–	–	**पू.षा.**	३६	१२	२०	२८	**प्री.**	०२	४२	**ब.**	२८	३०	०५:५९	०६:४९	०२	**०८**	१०	**२४**	मकर २७:०६	श्रावण सोमवार व्रत, पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (नि.)।
३२	००	**१२**	**मं.**	००	५२	०६	२१	**उ.षा.**	४२	०७	२२	५१	**आयु.**	०४	१२	**बा.**	००	५२	०६:००	०६:४८	०३	**०९**	११	**२५**	मकर	शुक्र चित्रा १२:४९, मंगला गौरी व्रत, भौम प्रदोष व्रत।
३१	५६	**१३**	**बु.**	०४	५७	०७	५९	**श्र.**	४७	००	२४	४८	**सौ.**	०४	५७	**तै.**	०४	५७	०६:००	०६:४७	०४	**१०**	१२	**२६**	मकर	पेगम्बर मुहम्मद जन्मदिन, ओणम।
३१	५२	**१४**	**गु.**	०७	५०	०९	०९	**ध.**	५०	३५	२६	१५	**शो.**	०४	४५	**व.**	०७	५०	०६:०१	०६:४५	०५	**११**	१३	**२७**	कुम्भ १३:३५	भद्रा ०९:०९ से २१:३२ तक, पञ्चक प्रा. १३:३५, (G)
३१	४८	**१५**	**शु.**	०९	२७	०९	४८	**श.**	५३	००	२७	१३	**अति.**	०३	३७	**ब.**	०९	२७	०६:०१	०६:४४	०६	**१२**	१४	**२८**	कुम्भ	सत्यव्रत, रक्षाबन्धन, हयग्रीवावतार, (H)

(A) मु. रविलवल प्रा., हरियाली तीज, मधुश्रवा तृतीया, स्वर्ण गौरी व्रत, स्वतन्त्रता दिवस। (B) सूर्य मघा में, ०७:५८, श्रावण सोमवार व्रत, सं. पुण्यकाल सूर्योदय से ११:१० तक, नाग पञ्चमी, ऋग्यजुहिरण्यकेशी श्रावणी उपाकर्म, कल्कि जयन्ती (सायंकाल)। (C) मंगला गौरी व्रत, वर्ण षष्ठी। (D) तुलसीदास जयन्ती। (E) मेला ज्वाला देवी, मेला चिन्तपूर्णी। (F) राष्ट्रिय भाद्रपद प्रारम्भ, पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (स्मा.+वै.), सायन सूर्य कन्या में ०७:४७, शरद् ऋतु प्रा.। (G) पूर्णिमा व्रत। (H) अमरनाथ दर्शन, हिण्डोले समा. (व्रजमण्डल), श्रावणी उपाकर्म, संस्कृत दिवस, श्रावणी पूर्णिमा।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	०७	०२	०३	०३	०५	११	१०	०४
अं.	०२	०१	११	२४	१६	१८	२०	०५	०५
क.	४९	५९	२८	५२	५४	३६	०१	४२	४२
वि.	३०	०६	२९	५२	४७	०३	३५	२०	२०
गति	५७ ४०	७२९ १२	४० ४६	११८ ०४	१३ २६	५६ २६	०२ व. १४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	मघा. च. १	विशा. च. ४	आर्द्रा. च. २	आश्ले. च. ३	आश्ले. च. १	हस्त. च. ३	रेव. च. २	धनि. च. ४	मघा. च. २

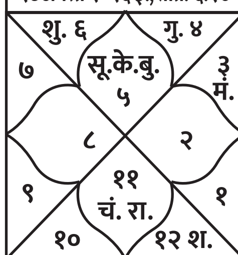
२० अगस्त २०२६ ई., प्रातः ६:२७



श्रावण शु. ८, गुरुवार

इस मास में नीच राशिस्थ शुक्र का शनि से समसप्तक, केतु से द्विर्द्वादश, राहु से षडष्टक तथा मंगल से केन्द्रीय योग होने के कारण विश्व रङ्गमञ्च पर विभिन्न देशों की विदेश नीति में बड़ी मात्रा में उथल-पुथल होने की सम्भावना है। कई देश उग्रवाद एवं एवं आन्तकवाद से आन्तकित होंगे।

२८ अगस्त २०२६ ई., प्रातः ६:२७



श्रावण शु. १५, शुक्रवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	१०	०२	०४	०३	०५	११	१०	०४
अं.	१०	०८	१६	१०	१८	२५	१९	०५	०५
क.	३२	५३	३८	५१	३७	४१	३९	१६	१६
वि.	०६	१६	१९	४२	५१	०३	४१	५४	५४
गति	५७ ४९	७५७ ०२	४० १८	१११ ५४	१३ २०	५२ ५२	०२ व. ४७	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	मघा. च. ४	शत. च. १	आर्द्रा. च. ३	मघा. च. ४	आश्ले. च. १	चित्रा. च. १	रेव. च. १	धनि. च. ४	मघा. च. २

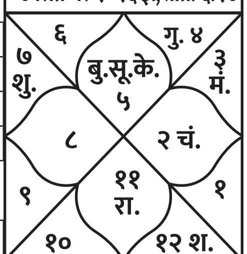
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, भाद्रपद कृष्ण पक्ष (दि. २९ अगस्त से ११ सितम्बर २०२६ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु, के. अहर्गण ५६२३, अयनांश २४°/१३'/५५''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३१	४४	१	श.	०९	४७	०९	५७	पू.भा.	५४	१०	२७	४२	सु. धृ.	०१ ५८	२५ २०	कौ.	०९	४७	०६:०२	०६:४३	भाद्र. ०७	भाद्र. १३	रवि. १५	अगस्त २९	मीन २१:३७	बुध पू.फा. में १२:५६, अशून्य शयन व्रत।
३१	४०	२	र.	०८	५७	०९	३७	उ.भा.	५४	१७	२७	४५	शुभ	५४	२०	ग.	०८	५७	०६:०२	०६:४२	०८	१४	१६	३०	मीन	गण्डमूल प्रा. २७:४५, भद्रा २१:१७ से, (A)
३१	३६	३	सो.	०७	००	०८	५१	रे.	५३	२०	२७	२३	ग.	४९	३०	वि.	०७	००	०६:०३	०६:४१	०९	१५	१७	३१	मेष २७:२३	भद्रा ०८:५१ तक, कज्जली तृतीया, चतुर्थी व्रत, (B)
३१	३२	४	मं.	०४	०७	०७	४२	अश्वि.	५१	३७	२६	४२	वृ.	४३	५७	बा.	०४	०७	०६:०३	०६:४०	१०	१६	१८	सित. ०१	मेष	गण्डमूल समा. २६:४२ ।
३१	२८	५ ६	बु.	०० ५५	२० ५५	०६ २८	१२ २६	भ.	४९	०४	२५	४२	ध्रु.	३७	५०	तै.	००	२२	०६:०४	०६:३९	११	१७	१९	०२	मेष	भद्रा २८:२६ से, शुक्र तुला में १३:४४, (C)
३१	२४	७	गु.	५०	५२	२६	२५	कृ.	४६	०२	२४	२९	व्या.	३१	१७	वि.	२३	२७	०६:०४	०६:३८	१२	१८	२०	०३	वृष ०७:२५	भद्रा १५:२७ तक।
३१	२०	८	शु.	४५	२२	२४	१४	रो.	४२	२७	२३	०४	ह.	२४	०८	बा.	१८	०७	०६:०५	०६:३७	१३	१९	२१	०४	वृष	श्री कृष्ण जयन्ती (निशीथ काल), कालाष्टमी, (D)
३१	१६	९	श.	३९	३२	२१	५४	मृग.	३८	३२	२१	३०	व.	१६	४५	तै.	१२	३०	०६:०५	०६:३५	१४	२०	२२	०५	मिथुन १०:१८	बुध उ.फा. में १६:२८, गोगा नवमी, गोकुलोत्सव, (E)
३१	११	१०	र.	३३	३०	१९	२९	आ.	३४	२७	१९	५२	सि.	०९	१०	व.	०६	३२	०६:०५	०६:३४	१५	२१	२३	०६	मिथुन	भद्रा ०८:४१ से १९:२९ तक
३१	०७	११	सो.	२७	२५	१७	०४	पुन.	३०	२०	१८	१४	व्य. वरि.	०१ ५३	२७ ५०	ब.	००	२७	०६:०६	०६:३३	१६	२२	२४	०७	कर्क १२:३८	बुध कन्या में १३:३२, अजा एकादशी व्रत (स.)।
३१	०३	१२	मं.	२१	३२	१४	४३	पु.	२६	२२	१६	३९	परि.	४६	२५	तै.	२१	३२	०६:०६	०६:३२	१७	२३	२५	०८	कर्क	गण्डमूल प्रा. १६:३९, भौम प्रदोष व्रत।
३०	५९	१३	बु.	१६	००	१२	३१	आश्ले.	२२	४७	१५	१४	शि.	३९	२५	व.	१६	००	०६:०७	०६:३१	१८	२४	२६	०९	सिंह १५:१४	भद्रा १२:३१ से २३:३० तक, पर्यूषण पर्वारम्भ, (F)
३०	५५	१४	गु.	११	०५	१०	३३	म.	१९	५२	१४	०४	सिद्ध	३२	५७	श.	११	०५	०६:०७	०६:३०	१९	२५	२७	१०	सिंह	गण्डमूल समा. १४:०४, अमावस्या श्राद्धादि।
३०	५१	३०	शु.	०७	०२	०८	५७	पू.फा.	१७	५०	१३	१६	सा.	२७	१५	नाग	०७	०२	०६:०८	०६:२८	२०	२६	२८	११	कन्या १९:०८	शुक्र स्वाति में २३:०९, अमावस्या स्नानादि, (G)

(A) सूर्य पू.फा. में २७:५९ (B) चन्द्रोदय (२०:२५), बहुला चतुर्थी, पञ्चक समा. २७:२३। (C) मंगल पुनर्वसु १३:१६, बलराम जयन्ती, हल षष्ठी, चन्दन षष्ठी, चम्पा षष्ठी। (D) श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत, श्री महाकाली जयन्ती (निशीथ काल), रोहिणी व्रत। (E) शिक्षक दिवस। (F) मासशिवरात्रि, डाकिनी चतुर्दशी। (G) कुशोत्पाटिनी अमावस्या।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	०१	०२	०४	०३	०६	११	१०	०४
अं.	१७	१३	२१	२४	२०	०१	१९	०४	०४
क.	१८	३०	०४	०६	०६	१८	१६	५४	५४
वि.	१२	३९	५८	१०	१०	१६	१९	३९	३९
गति	५८ ०१	८४४ ५८	३९ ५५	११४ ५३	१३ ०८	४७ ५८	०३ व. ३३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पू.फा. २ च.	रोहि. २ च.	पुन. १ च.	पू.फा. ४ च.	आश्ले. २ च.	चित्रा ३ च.	रेवती १ च.	धनि. ४ च.	मघा. २ च.

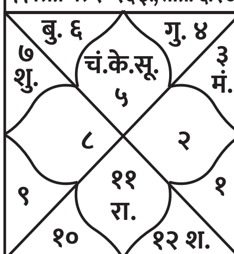
०४ सितम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



भाद्रपद कृ. ८, शुक्रवार

इस मास में पाँच शनिवार हैं, और कन्या की संक्रान्ति गुरुवार को है, अतः प्रजा में अशान्ति, रोग एवं आन्तकवाद से भय का वातावरण रहेगा। कपूर, केसर, कस्तूरी, चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थों तथा रुई के भाव तेज रहेंगे। गेहूं, जौ, चावल, मक्की, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, मसूर तथा सोना, चांदी, जस्ता, लोहा, ताँबा के भावों में मन्दी रहेगी। शेयर बाजार में तेजी का रुख रहेगा।

११ सितम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



भाद्रपद कृ. ३०, शुक्रवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	०४	०२	०५	०३	०६	११	१०	०४
अं.	२४	२२	२५	०६	२१	०६	१८	०४	०४
क.	०५	४६	२७	२२	३२	१३	४९	३२	३२
वि.	५३	१७	१४	२४	१९	२४	३२	२४	२४
गति	५८ १३	७७२ ११	३९ १२	१०८ २३	१२ ४५	४१ २२	०३ ५२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पू.फा. ४ च.	पू.फा. ३ च.	पुन. २ च.	उ.फा. ३ च.	आश्ले. २ च.	चित्रा. ४ च.	रेव. १ च.	धनि. ४ च.	मघा. २ च.

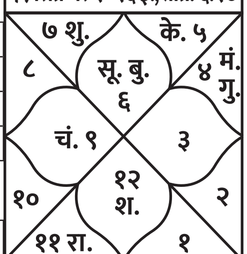
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, भाद्रपद शुक्ल पक्ष (दि. १२ सितम्बर से २६ सितम्बर २०२६ ई.), दक्षिणायन, उत्तर/दक्षिण गोल, शरद ऋतु, के. अहर्गण ५६३७, अयनांश २४°/१३'/५७"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३०	४६	**१**	**श.**	०४	०५	०७	४६	**उ.फा.**	१६	५७	१२	५५	**शुभ**	२२	३२	**ब.**	०४	०५	०६:०८	०६:२७	भाद्र. २१	भाद्र. **२७**	र. २९	सि. **१२**	कन्या	चन्द्रदर्शन।
३०	४२	**२**	**र.**	०२	२७	०७	०८	**ह.**	१७	२५	१३	०७	**शु.**	१८	५५	**कौ.**	०२	२७	०६:०९	०६:२६	२२	**२८**	३०	**१३**	तुला २५:२६	सूर्य उ.फा. में २१:४७, बुध हस्त में १०:४४, (A)
३०	३८	**३**	**सो.**	०२	२५	०७	०७	**चि.**	१९	२५	१३	५५	**ब्र.**	१६	३२	**ग.**	०२	२५	०६:०९	०६:२५	२३	**२९**	र. ०१	**१४**	तुला	भद्रा १९:२० से, मु. रविलाखर प्रा., (B)
३०	३४	**४**	**मं.**	०३	४५	०७	४४	**स्वा.**	२२	५७	१५	२१	**ऐं.**	१५	२५	**वि.**	०३	४५	०६:१०	०६:२३	२४	**३०**	०२	**१५**	तुला	भद्रा ०७:४४ तक, जैन सम्वत्सरी चतुर्थी पक्ष, (C)
३०	३०	**५**	**बु.**	०७	०२	०८	५९	**वि.**	२८	००	१७	२२	**वै**	१५	३०	**बा.**	०७	०२	०६:१०	०६:२२	२५	**३१**	०३	**१६**	वृश्चिक १०:४९	स्कन्द षष्ठी, बलदेव छठ, लोलार्क षष्ठी, (D)
३०	२५	**६**	**गु.**	११	३२	१०	४८	**अनु.**	३४	१५	१९	५३	**विष्कु**	१६	३५	**तै.**	११	३२	०६:११	०६:२१	२६	आ. **०१**	०४	**१७**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. १९:५३, (E)
३०	२१	**७**	**शु.**	१७	०२	१३	०१	**ज्ये.**	४१	२०	२२	४४	**प्री.**	१८	२५	**व.**	१७	०२	०६:१२	०६:२०	२७	**०२**	०५	**१८**	धनु २२:४५	भद्रा १३:०१ से, २६:१३ तक, मंगल कर्क में १६:३३
३०	१७	**८**	**श.**	२३	०७	१५	२७	**मू.**	४८	४७	२५	४३	**आ.**	२०	४२	**ब.**	२३	०७	०६:१२	०६:१९	२८	**०३**	०६	**१९**	धनु	गण्डमूल समा. २५:४३, राधाष्टमी, (F)
३०	१३	**९**	**र.**	२९	०५	१७	५१	**पू.**	५५	५२	२८	३४	**सौ.**	२२	५२	**कौ.**	२९	०५	०६:१३	०६:१७	२९	**०४**	०७	**२०**	धनु	श्री चन्द्र नवमी, अदुःख नवमी, मेला (G)
३०	०८	**१०**	**सो.**	३४	३०	२०	०१	**उ.षा.**	६०	००	-	-	**शो.**	२४	४०	**तै.**	०१	५०	०६:१३	०६:१६	३०	**०५**	०८	**२१**	मकर ११:१५	बुध चित्रा में २२:४२
३०	०४	**११**	**मं.**	३८	४५	२१	४३	**उ.षा.**	०२	१२	०७	०६	**अति.**	२५	४०	**व.**	०६	४०	०६:१३	०६:१५	३१	**०६**	०९	**२२**	मकर	भद्रा ०८:५६ से २१:४३ तक (H)
३०	००	**१२**	**बु.**	४१	३०	२२	५०	**श्र.**	०७	१७	०९	०९	**सु.**	२५	३०	**ब.**	१०	१०	०६:१४	०६:१४	आ. ०१	**०७**	१०	**२३**	कुम्भ २१:५७	पञ्चक प्रा. २१:५६, मंगल पुष्य में २९:४१ रा.आश्वि प्रा. (I)
२९	५६	**१३**	**गु.**	४२	४०	२३	१८	**ध.**	१०	५२	१०	३५	**धृ.**	२४	१०	**कौ.**	१२	२०	०६:१४	०६:१३	०२	**०८**	११	**२४**	कुम्भ	प्रदोष व्रत।
२९	५१	**१४**	**शु.**	४२	१०	२३	०७	**शत.**	१२	४७	११	२२	**शू.**	२१	३०	**ग.**	१२	०७	०६:१५	०६:११	०३	**०९**	१२	**२५**	मीन २९:३३	भद्रा २३:०६ से, अनन्त चतुर्दशी, गणपति विसर्जन।
२९	४७	**१५**	**श.**	४०	१०	२२	१९	**पू.भा.**	१३	१०	११	३१	**ग.**	१७	३५	**वि.**	११	१०	०६:१५	०६:१०	०४	**१०**	१३	**२६**	मीन	भद्रा १०:४७ तक, बुध तुला में १२:३८, (J)

(A) बुध उदय २६:५२, वराह जयन्ती (अपराह्णकाल)। (B) हरतालिका तीज, सामवेदियों का उपाकर्म, कलङ्क चतुर्थी, पत्थर चौथ, चन्द्र दर्शन निषेध, चन्द्रास्त २०:०६, सिद्धि विनायक चतुर्थी व्रत, गणेश जन्मोत्सव, हिन्दी दिवस। (C) ऋषि पञ्चमी। (D) ललिता षष्ठी, मेला देवछठ (व्रजमण्डल), स्वामी कार्तिकेय दर्शन, जैन सम्वत्सरी पञ्चमी पक्ष, उत्कलीय नवान्न भक्षण। (E) कन्या संक्रान्ति ०७:५२, सं. पुण्यकाल ०७:५२ से १४:१६ तक, सूर्य षष्ठी। (F) महालक्ष्मी व्रतारम्भ, दूर्वाष्टमी (व्रत निषेध)। (G) श्री रामदेव जी (राज.)। (H) पार्श्वपरिवर्तिनी एकादशी व्रत (स.), सायन सूर्य तुला में २९:३५ दक्षिण गोल प्रा., विषुवद् दिन। (I) वामन जयन्ती (मध्याह्नकाल), श्री भुवनेश्वरी जयन्ती। (J) पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, महालयारम्भ, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा, पूर्णिमा श्राद्ध, अगस्त्य अर्घ्य दान।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	०८	०३	०५	०३	०६	११	१०	०४
अं.	०१	०३	००	१९	२३	१०	१८	०४	०४
क.	५३	४८	२०	१६	०७	४२	१५	०६	०६
वि.	३७	३८	५९	०८	२७	०५	३६	५७	५७
गति	५८ २६	७१३ ४१	३८ ४०	१०० ५२	१२ २०	३२ ५०	०४ व. १०	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.फा. २ च.	मृग. २ च.	पुन. ४ च.	हस्त. ३ च.	आश्ले. २ च.	स्वा. २ च.	रेव. १ च.	धनि. ४ च.	मघा. २ च.

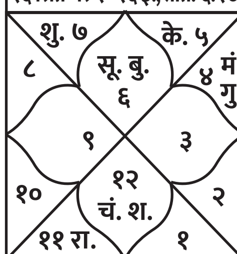
१९ सितम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



भाद्रपद शु. ८, शनिवार

इस मास में शुक्र का शनि से षडष्टक तथा सूर्य-केतु की युति तथा शनि से उनका भी षडष्टक योग तथा बाद में सूर्य-बुध का केतु से द्विर्द्वादश योग होने एवं बुधोदय होने के कारण तूफान, बाढ़, भूकम्प यान दुर्घटना आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन - धन की हानि होने की सम्भावना है। पक्ष-विपक्ष में भी मुद्दों के आधार पर नोंक-झोंक से गर्माहट का वातावरण रहेगा।

२६ सितम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



भाद्रपद शु. १५, शनिवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	११	०३	०५	०३	०६	११	१०	०४
अं.	०८	००	०४	२९	२४	१३	१७	०३	०३
क.	४४	३०	३२	३८	२७	१६	४३	४४	४४
वि.	२१	०४	२६	०५	१३	५३	५३	४२	४२
गति	५८ ३८	७९० ३५	३८ १५	९२ १६	१२ ००	२१ ३३	०४ व. २८	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.फा. ४ च.	पू.भा. ४ च.	पुष्य. १ च.	चित्रा. २ च.	आश्ले. ३ च.	स्वा. २ च.	रेव. १ च.	धनि. ४ च.	मघा. २ च.

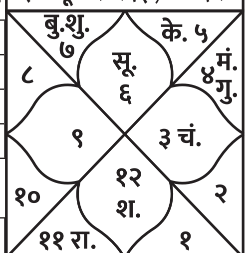
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, आश्विन कृष्ण पक्ष (दि. २७ सितम्बर से १० अक्टूबर २०२६ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु, के. अहर्गण ५६५२, अयनांश २४°/१३'/५८''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२९	४३	**१**	र.	३६	४७	२०	५९	उ.भा.	१२	०७	११	०७	वृ.	१२	३२	बा.	०८	२७	०६:१६	०६:०९	आश्वि. ०५	आश्वि. **११**	रवि. १४	सि. **२७**	मीन	गण्डमूल प्रा. ११:०७, सूर्य हस्त में १३:१९, (A)
२९	३९	**२**	सो.	३२	२५	११	१४	रे.	१०	००	१०	१६	ध्रु. व्या.	०६ ५९	३५ ५२	तै.	०४	४२	०६:१६	०६:०८	०६	**१२**	१५	**२८**	मेष १०:१६	भद्रा ३०:१३ से, पञ्चक समा. १०:१६, द्वितीया श्राद्ध।
२९	३४	**३**	मं.	२७	१२	१७	१०	अश्वि.	०६	५५	०९	०३	ह.	५२	३७	वि.	२७	१२	०६:१७	०६:०६	०७	**१३**	१६	**२९**	मेष	गण्डमूल समा. ०९:०३, भद्रा १७:१० तक, (B)
२९	३०	**४**	बु.	२१	३५	१४	५५	भ. कृ.	०३ ५९	२० ३२	०७ ३०	३७ ०३	व.	४५	०७	बा.	२१	३७	०६:१७	०६:०५	०८	**१४**	१७	**३०**	वृष १३:१४	चतुर्थी श्राद्ध।
२९	२६	**५**	गु.	१५	४५	१२	३५	रो.	५५	२२	२८	२७	सि.	३७	३०	तै.	१५	४५	०६:१८	०६:०४	०९	**१५**	१८	अक्टू. **०१**	वृष	बुध स्वाति में ०९:२९, पंचमी श्राद्ध, (C)
२९	२२	**६**	शु.	०९	५२	१०	१५	मृ.	५१	३२	२६	५५	व्य.	२९	५७	व.	०९	५२	०६:१८	०६:०३	१०	**१६**	१९	**०२**	मिथुन १५:४०	भद्रा १०:१५ से २१:०६ तक, सप्तमी श्राद्ध, (D)
२९	१७	**७ ८**	श.	०४ ५८	१० ५२	०७ २९	५९ ५२	आ.	४७	५७	२५	३०	वरि.	२२	३५	ब.	०४	१०	०६:१९	०६:०२	११	**१७**	२०	**०३**	मिथुन	शुक्र वक्री १२:४५, महालक्ष्मी व्रत सम्पन्न, (E)
२९	१३	**९**	र.	५३	५७	२७	५४	पुन.	४४	४७	२४	१४	परि.	१५	३२	तै.	२६	२२	०६:१९	०६:०१	१२	**१८**	२१	**०४**	कर्क १८:३२	सधवा नवमी, मातृ नवमी, नवमी श्राद्ध, (F)
२९	०९	**१०**	सो.	४९	३०	२६	०८	पुष्य.	४२	०२	२३	०९	शि.	०८	४७	व.	२१	३७	०६:२०	०५:५९	१३	**१९**	२२	**०५**	कर्क	गण्डमूल प्रा. २३:०९ से, भद्रा १४:५९ से २६:०७ तक (G)
२९	०५	**११**	मं.	४५	३५	२४	३४	आश्ले.	३९	५२	२२	१७	सिद्ध सा.	०२ ५६	३० ३७	ब.	१७	२७	०६:२०	०५:५८	१४	**२०**	२३	**०६**	सिंह २२:१७	इन्दिरा एकादशी व्रत (स्मा.+वै.) एकादशी श्राद्ध।
२९	००	**१२**	बु.	४२	१७	२३	१६	म.	३८	२२	२१	४०	शुभ	५१	१७	कौ.	१३	५२	०६:२१	०५:५७	१५	**२१**	२४	**०७**	सिंह	गण्डमूल समा २१:४०, द्वादशी श्राद्ध, (H)
२८	५६	**१३**	गु.	३९	४७	२२	१६	पू.फा.	३७	२७	२१	२०	शु.	४६	३२	ग.	१०	५७	०६:२१	०५:५६	१६	**२२**	२५	**०८**	कन्या २७:१८	भद्रा २२:१६ से, प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध, (I)
२८	५२	**१४**	शु.	३८	०५	२१	३६	उ.फा.	३७	२५	२१	२०	ब्र.	४२	२७	वि.	०८	४७	०६:२२	०५:५५	१७	**२३**	२६	**०९**	कन्या	भद्रा ०९:५३ तक, वक्री शनि उ.भा. में २०:५२, (J)
२८	४८	**३०**	श.	३७	२५	२१	२०	ह.	३८	२०	२१	४२	ऐं.	३९	१०	चतु.	०७	३७	०६:२२	०५:५४	१८	**२४**	२७	**१०**	कन्या	सूर्य चित्रा में २६:१९, अमावस्या श्राद्ध, (K)

(A) प्रतिपदा श्राद्ध, अशून्य शयन व्रत। (B) तृतीया श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (१९:३५)। (C) षष्ठी श्राद्ध १२:३५ बाद, रोहिणी व्रत। (D) गाँधी जयन्ती, श्री लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती। (E) कालाष्टमी, जीमूतवाहन व्रत, जीवित पुत्रिका व्रत, अष्टमी श्राद्ध। (F) अन्वष्टका श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत पारणा। (G) दशमी श्राद्ध। (H) सन्यासियों का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (नि.)। (I) मास शिवरात्रि। (J) चतुर्दशी श्राद्ध, विष-शस्त्रादि से हतों का श्राद्ध। (K) सर्वपितृ अमावस्या, सर्वपितृ विसर्जन, पितृपक्ष समा., शुक्र वार्धक्य प्रा. १७:५१।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	०२	०३	०६	०३	०६	११	१०	०४
अं.	१५	०८	०८	०९	२५	१४	१७	०३	०३
क.	३६	४५	३८	०६	४३	१५	११	२२	२२
वि.	४१	३३	२४	१३	१४	२४	०७	२७	२७
गति	५८ ५३	८५४ १७	३७ ३४	८२ ३२	११ २२	०७ व. ४१	०४ व. ४०	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	हस्त. २ च.	आर्द्रा. १ च.	पुष्य. २ च.	स्वा. १ च.	आश्ले. ३ च.	स्वा. ३ च.	रेव. १ च.	धनि. ४ च.	मघा. २ च.

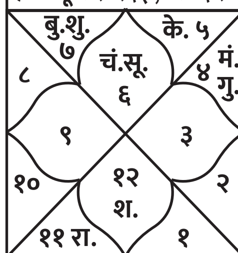
०३ अक्टूबर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



आश्विन कृ. ७/८, शनिवार

इस मास में पाँच रविवार और पाँच सोमवार हैं तथा तुला की संक्रान्ति शनिवार को है, अतः प्रजा में रोगभय एवं अशान्ति का वातावरण रहेगा। घी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, तिल, तैल,अलसी, सरसों, चावल, ज्वार, बाजरा, मक्की के भाव तेज रहेंगे तथा गेहूँ, जौ, चना के भाव सम एवं रुई, कपास के भाव मन्दे रहेंगे।

१० अक्टूबर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



आश्विन कृ. ३०, शनिवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	०५	०३	०६	०३	०६	११	१०	०४
अं.	२२	१५	१२	१७	२६	१३	१६	०३	०३
क.	३०	००	३८	२४	५४	२१	३८	००	००
वि.	५२	५५	१९	४९	५८	४५	०८	११	११
गति	५९ ०९	७९५ ३५	३६ ४९	७० ११	१० ५०	०८ व. २७	०४ व. ४०	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	हस्त. ४ च.	हस्त. २ च.	पुष्य. ३ च.	स्वा. ४ च.	आश्ले. ४ च.	स्वा. ३ च.	रेव. १ च.	धनि. ३ च.	मघा. १ च.

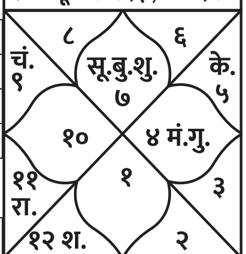
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, आश्विन शुक्ल पक्ष (दि. ११ अक्टूबर से २६ अक्टूबर २०२६ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्/हेमन्त ऋतु, के. अहर्गण ५६६६६, अयनांश २४°/१४'/००''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२८	४३	**१**	**र.**	३७	५०	२१	३१	**चि.**	४०	२२	२२	३२	**वै.**	३६	४५	**किं**	०७	२७	०६:२३	०५:५३	आश्वि. १९	आश्वि. **२५**	रवि. २८	अक्टू. **११**	तुला १०:०४	मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा., (A)
२८	३९	**२**	**सो.**	३९	३२	२२	१३	**स्वा.**	४३	४०	२३	५२	**वि.**	३५	२०	**बा.**	०८	३०	०६:२४	०५:५२	२०	**२६**	२९	**१२**	तुला	बुध विशाखा में १८:४२, चन्द्रदर्शन। **शुक्रास्त पश्चिम में १७:५१**
२८	३५	**३**	**मं.**	४२	३७	२३	२७	**वि.**	४५	१७	२५	४३	**प्री.**	३५	००	**तै.**	१०	५७	०६:२४	०५:५०	२१	**२७**	ज. ०१	**१३**	वृश्चिक १९:१२	मुस्लिम जमादिलावल प्रा.
२८	३१	**४**	**बु.**	४७	००	२५	१३	**अनु.**	५४	०५	२८	०३	**आ.**	३५	३२	**व.**	१४	४०	०६:२५	०५:४९	२२	**२८**	०२	**१४**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. २८:०३, भद्रा १२:१७ से, २५:१३ तक,(B)
२८	२७	**५**	**गु.**	५२	३०	२७	२५	**ज्ये.**	६०	००	-	-	**सौ.**	३७	०५	**ब.**	१९	४०	०६:२५	०५:४८	२३	**२९**	०३	**१५**	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता व्रत (सायंकाल व्यापिनी)
२८	२३	**६**	**शु.**	५८	४०	२९	५४	**ज्ये.**	००	५२	०६	४७	**शो.**	३९	०७	**कौ.**	२५	३०	०६:२६	०५:४७	२४	**३०**	०४	**१६**	धनु ०६:४८	बिल्वाभिमन्त्रण सायं (ज्येष्ठा नक्षत्र में)।
२८	१९	**७**	**श.**	६०	००	-	-	**मू.**	०८	२०	०९	४७	**अति.**	४१	२७	**ग.**	३१	५०	०६:२७	०५:४६	२५	**का. ०१**	०५	**१७**	धनु	गण्डमूल समा. ०९:४७, सूर्य तुला में १९:५१, (C)
२८	१४	**७**	**र.**	०५	०२	०८	२८	**पू.षा.**	१५	५५	१२	४९	**सु.**	४३	४२	**व.**	०५	०२	०६:२७	०५:४५	२६	**०२**	०६	**१८**	मकर १९:३३	भद्रा ०८:२८ से २१:४२ तक, (D)
२८	१०	**८**	**सो.**	११	००	१०	५२	**उ.षा.**	२२	५७	१५	३९	**धृ.**	४५	१७	**ब.**	११	००	०६:२८	०५:४४	२७	**०३**	**०७**	**१९**	मकर	दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत, ओली जैन प्रा., (E)
२८	०६	**९**	**मं.**	१५	५७	१२	५१	**श्र.**	२८	५५	१८	०२	**शू.**	४५	५५	**कौ.**	१५	५७	०६:२८	०५:४३	२८	**०४**	०८	**२०**	मकर	महानवमी व्रत, त्रिशूलिनी पूजा, सरस्वती विसर्जन।
२८	०२	**१०**	**बु.**	१९	१७	१४	१२	**ध.**	३३	१७	१९	४८	**ग.**	४५	१०	**ग.**	१९	१७	०६:२९	०५:४२	२९	**०५**	०९	**२१**	कुम्भ ०७:००	भद्रा २६:३६ से, पञ्चक प्रा. ०७:००, (F)
२७	५८	**११**	**गु.**	२०	४५	१४	४८	**शत.**	३५	४७	२०	४९	**वृ.**	४२	५२	**वि.**	२०	४५	०६:३०	०५:४१	३०	**०६**	१०	**२२**	कुम्भ	भद्रा १४:४८ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), (G)
२७	५४	**१२**	**शु.**	२०	१५	१४	३६	**पू.भा.**	३६	२२	२१	०३	**ध्रु.**	३९	०५	**बा.**	२०	१५	०६:३०	०५:४०	का. ०१	**०७**	११	**२३**	मीन १५:०४	वक्री शुक्र चित्रा में २७:२२, राष्ट्रिय कार्तिक प्रा. (H)
२७	५०	**१३**	**श.**	१७	४५	१३	३७	**उ.भा.**	३५	०२	२०	३२	**व्या.**	३३	४५	**तै.**	१७	४५	०६:३१	०५:३९	०२	**०८**	१२	**२४**	मीन	गण्डमूल प्रा. २०:३१, सूर्य स्वाति में १२:५०, (I)
२७	४६	**१४**	**र.**	१३	३०	११	५६	**रे.**	३२	०५	१९	२२	**ह.**	२७	०४	**व.**	१३	३०	०६:३२	०५:३८	०३	**०९**	१३	**२५**	मेष १९:२२	भद्रा ११:५६ से २२:५२ तक, पञ्चक समा. १९:२१, (J)
२७	४२	**१५**	**सो.**	०७	५२	०९	४१	**अश्वि.**	२७	५२	१७	४१	**व.**	१९	२२	**ब.**	०७	५२	०६:३२	०५:३७	०४	**१०**	१४	**२६**	मेष	गण्डमूल समा. १७:४१, सत्यव्रत, (K)

(A) घट स्थापन, महाराजा अग्रसेन जयन्ती। (B) विनायक चतुर्थी। (C)मंगल आश्लेषा में १२:४५, तुला संक्रान्ति १९:५१, सं. पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर, सरस्वती आवाहन (मूल नक्षत्र में), पत्रिका प्रवेश। (D) महानिशीथ पूजन, महानिशा पूजा। (E) सन्धि पूजा, सरस्वती बलिदान। (F) अपराजिता पूजा, विजयादशमी, शस्त्र पूजा, सीमोल्लंघन, नवरात्र पारणा, शमी पूजा, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ स्थापना दिवस। (G) मेला भरत मिलाप, मध्वाचार्य जयन्ती। (H) पद्मनाभ द्वादशी, प्रदोष व्रत, सायन सूर्य वृश्चिक में १५:०६, हेमन्त ऋतु प्रा.। (I) बुध वक्री १२:४२ (J) कोजागर व्रत, रास महोत्सव, लक्ष्मी पूजन, कोजागरी पूर्णिमा, शरद् पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत। (K) वाल्मीकि जयन्ती, मीराबाई जयन्ती, ओली जैन समा., कार्तिक स्नान प्रा.।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	०८	०३	०६	०३	०६	११	१०	०४
अं.	००	२३	१७	२४	२८	१०	१६	०२	०२
क.	२६	३१	०४	३२	१०	०५	०१	३४	३४
वि.	१७	२४	०५	००	५४	२८	२०	४५	४५
गति	५९ २१	७०९ ५५९	३५ ५३	५२ ३०	१० ०४	२४ व ०३	०४ व ३४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	चित्रा. ३ च.	पू. षा. ४ च.	आश्ले. १ च.	विशा. २ च.	आश्ले. ४ च.	स्वा. २ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. ३ च.	मघा. १ च.

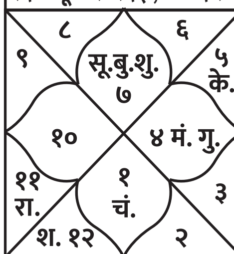
१८ अक्टूबर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



आश्विन शु. ७/८, रविवार

इस मास में सूर्य-बुध-शुक्र की युति उनका शनि से षडष्टक तथा मंगल- गुरु से केन्द्रीय योग होने के कारण उग्रवाद आन्तकवाद, हिंसक घटनाओं एवं राजनैतिक वैमनस्य से प्रजा में भय का वातावरण रहेगा। जाँच एजेंसियों की सतर्कता से आन्तकवादी रेकेट के भण्डाफोड़ होने की सम्भावना है।

२६ अक्टूबर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



आश्विन शु. १५, सोमवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	००	०३	०६	०३	०६	११	१०	०४
अं.	०८	०६	२१	२६	२९	०५	१५	०२	०२
क.	२३	३५	१९	३२	१९	२१	२६	०९	०९
वि.	३७	१९	५१	१५	३०	५६	४५	१९	१९
गति	५९ ३४	८५० २४	३५ ०१	२३ व २३	०९ २२	३४ व ४१	०४ व १६	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	स्वा. १ च.	आश्वि. २ च.	आश्ले. २ च.	विशा. २ च.	आश्ले. ४ च.	चित्रा. ४ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. ३ च.	मघा. १ च.

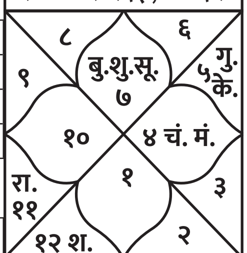
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, कार्तिक कृष्ण पक्ष (दि. २७ अक्टूबर से ०९ नवम्बर २०२६ ई.), दक्षिणायण, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु, के. अहर्गण ५६८२, अयनांश २४°/१४'/०२''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२७	३८	**१ २**	मं.	०१ ५३	१२ ५५	०७ २८	०२ ०७	भ.	२२	४५	१५	३९	सि.	१०	५०	कौ.	०१	१२	०६:३३	०५:३७	का. ०५	का. **११**	ज. १५	अक्टू. **२७**	वृष २१:०६	बुध अस्त ०६:४९, अशून्य शयन व्रत।
२७	३४	**३**	बु.	४६	२२	२५	०७	कृ.	१७	१०	१३	२६	व्य. वरि.	०१ ५२	५० ४५	व.	२०	०७	०६:३४	०५:३६	०६	**१२**	१६	**२८**	वृष	भद्रा १४:३७ से, २५:०६ तक, शुक्रोदय ३०:३३, (A)
२७	३०	**४**	गु.	३८	५७	२२	१०	रो.	११	३०	११	११	परि.	४३	४७	ब.	१२	३७	०६:३५	०५:३५	०७	**१३**	१७	**२९**	मिथुन २२:०६	करक चतुर्थी, करवा चौथ, चतुर्थी व्रत, (B)
२७	२७	**५**	शु.	३२	०५	११	२५	मृ.	०६	१२	०९	०४	शि.	३५	१५	कौ.	०५	२७	०६:३५	०५:३४	०८	**१४**	१८	**३०**	मिथुन	
२७	२३	**६**	श.	२५	५५	१६	५८	आ. पुन.	०१ ५७	३० ४०	०७ २९	१२ ४०	सिद्ध	२७	१७	व.	२५	५५	०६:३६	०५:३३	०९	**१५**	१९	**३१**	कर्क २४:००	भद्रा १६:५७ से २७:५१ तक, (C)
२७	१९	**७**	र.	२०	३७	१४	५२	पुष्य	५४	४५	२८	३१	सा.	२०	०५	ब.	२०	३७	०६:३७	०५:३२	१०	**१६**	२०	नव. **०१**	कर्क	गण्डमूल २८:३१, अहोई अष्टमी, कालाष्टमी, (D)
२७	१५	**८**	सो.	१६	२५	१३	११	आश्ले.	५२	५२	२७	४६	शुभ	१३	४२	कौ.	१६	२५	०६:३७	०५:३२	११	**१७**	२१	**०२**	सिंह २७:४६	वक्री बुध स्वाति में २९:५९,
२७	११	**९**	मं.	१३	१२	११	५५	मघा	५२	००	२७	२६	शु.	०८	१०	ग.	१३	१२	०६:३८	०५:३१	१२	**१८**	२२	**०३**	सिंह	गण्डमूल समा. २७:२६, भद्रा २३:२६ से
२७	०८	**१०**	बु.	११	००	११	०३	पू.फा.	५२	०७	२७	३०	ब्र. ऐं.	०३ ५९	२५ २७	वि.	११	००	०६:३९	०५:३०	१३	**१९**	२३	**०४**	सिंह	भद्रा ११:०३ तक,
२७	०४	**११**	गु.	०९	५०	१०	३६	उ.फा.	५३	१०	२७	५६	वै.	५६	१२	बा.	०९	५०	०६:४०	०५:२९	१४	**२०**	२४	**०५**	कन्या ०९:३४	रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी (E)
२७	००	**१२**	शु.	०९	३७	१०	३१	ह.	५५	०७	२८	४३	विष्कु	५३	४५	तै.	०९	३७	०६:४०	०५:२९	१५	**२१**	२५	**०६**	कन्या	सूर्य विशाखा में २१:०२ (F)
२६	५७	**१३**	श.	१०	१७	१०	४८	चि.	५७	५७	२९	५२	प्री.	५१	५५	व.	१०	१७	०६:४१	०५:२८	१६	**२२**	२६	**०७**	तुला १७:१५	भद्रा १०:४८ से २३:०५ तक, मास शिवरात्रि, (G)
२६	५३	**१४**	र.	११	५५	११	२८	स्वा.	६०	००	-	-	आयु.	५०	५०	श.	११	५५	०६:४२	०५:२८	१७	**२३**	२७	**०८**	तुला	दीपावली, महालक्ष्मी पूजन, केदारगौरी व्रत, (H)
२६	५०	**३०**	सो.	१४	३५	१२	३२	स्वा.	०१	४२	०७	२४	सौ.	५०	३५	ना.	१४	३५	०६:४३	०५:२७	१८	**२४**	२८	**०९**	वृश्चिक २६:४८	बुध उदय २४:४३, सोमवती अमावस्या, (I)

(A) रोहिणी व्रत। (B) चन्द्रोदय १९:५५, रोहिणी व्रत। (C) गुरु सिंह में १२:०१, गुरु मघा में १२:०१, शुक्र बाल्यत्व समा. ३०:३३ बजे। (D) राधा कुण्ड स्नान रात्रि समाप्ति पर अरुणोदय में। (E) वक्री शुक्र तुला में २५:०४(F) धनतेरस, धन्वन्तरि जयन्ती, प्रदोष व्रत, यमदीप दान। (G) हनुमज्जयन्ती, नरक निवारण चतुर्दशी, रुप चौदस, अभ्यङ्ग स्नान । (H) कमला जयन्ती (प्रदोषकाल), श्री महाकाली पूजा, उल्का भ्रमण, दारिद्रय निःसारण, अमावस्या श्राद्धादि। (I) महावीर निर्वाण दिवस, दयानन्द निर्वाण दिवस, आद्य शङ्कराचार्य निर्वाण दिवस, विद्यापीठ संस्थापक कुलपति डॉ. मण्डन मिश्र निर्वाण दिवस, कार्तिकी अमावस्या स्नान दानादि।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	०३	०३	०६	०४	०६	११	१०	०४
अं.	१५	१७	२४	२१	००	०१	१४	०१	०१
क.	२२	४७	५४	१३	१२	३०	५९	४७	४७
वि.	५८	१७	३४	१५	५१	४६	१४	०३	०३
गति	५९ ४०	८३९ २३	३४ ०१	७३ व. ४२	०७ १२	२८ व. २४	०२ व. ५८	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	स्वा. ३ च.	आश्ले. १ च.	आश्ले. ३ च.	विशा. १ च.	मघा. १ च.	चित्रा. ३ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. ३ च.	मघा. १ च.

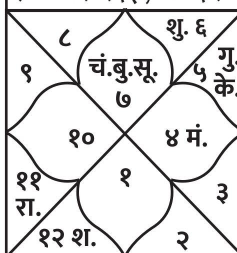
०२ नवम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



कार्तिक कृ. ८, सोमवार

इस मास में पाँच मंगलवार हैं और वृश्चिक संक्रान्ति सोमवार को है, अतः प्रजा में परस्पर द्वेष, कलह, रक्त विकार तथा अशान्ति का वातावरण रहेगा। गेहूँ, जौ, चना, चावल, घी के भाव मन्दे रहेंगे। कोयला, लकड़ी, सूत, सूती वस्त्र तथा ऊनी वस्त्र भी मन्दे रहेंगे। तिल, तेल, सोना, ताँबा, लोहा के भावों में तेजी रहेगी ।

९ नवम्बर२०२६ ई., प्रातः ६:२७



कार्तिक कृ. ३०, सोमवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	०६	०३	०६	०४	०५	११	१०	०४
अं.	२२	१९	२८	१२	००	२९	१४	०१	०१
क.	२४	३०	१९	५०	५९	०८	३५	२४	२४
वि.	०३	२७	३१	४९	१७	०५	०३	४८	४८
गति	६० ०४	७५२ १२	३२ ५२	४८ व. १८	०६ ०५	११ व. १०	०३ व. ०८	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	विशा. १ च.	स्वा. ४ च.	आश्ले. ४ च.	स्वा. २ च.	मघा. १ च.	चित्रा. २ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. ३ च.	मघा. १ च.

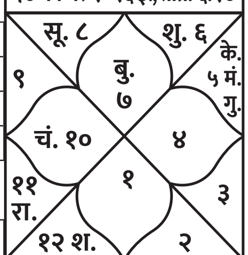
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, कार्तिक शुक्ल पक्ष (दि. १० नवम्बर से २४ नवम्बर २०२६ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु, के. अहर्गण ५६९६, अयनांश २४°/१४'/०४''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२६	४६	**१**	मं.	१८	१०	१४	००	वि.	०६	२७	०९	१९	शो.	५१	०२	ब.	१८	१०	०६:४४	०५:२६	का. १९	का. **२५**	ज. २९	नव. **१०**	वृश्चिक	गोवर्द्धन पूजा, अन्नकूट, विश्वकर्मा पूजा।
२६	४३	**२**	बु.	२२	५५	१५	५४	अनु.	१२	१७	११	३८	अति.	५२	२०	कौ.	२२	५२	०६:४४	०५:२६	२०	**२६**	३०	**११**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. ११:३८, चन्द्र दर्शन, भातृ द्वितीया, (A)
२६	४०	**३**	गु.	२८	३२	१८	१०	ज्ये.	१८	५५	१४	१९	सु.	५४	१२	ग.	२८	३०	०६:४५	०५:२५	२१	**२७**	जमा. ०१	**१२**	धनु १४:१९	मंगल सिंह में २०:१८ से, मंगल मघा में २०:१८, (B)
२६	३६	**४**	शु.	३४	५२	२०	४३	मू.	२६	१७	१७	१७	धृ.	५६	३२	व.	०१	४२	०६:४६	०५:२५	२२	**२८**	०२	**१३**	धनु	गण्डमूल समा. १७:१७, (C)
२६	३३	**५**	श.	४१	३२	२३	२४	पू.षा.	३४	०२	२०	२४	शू.	५८	५७	ब.	०८	१०	०६:४७	०५:२४	२३	**२९**	०३	**१४**	मकर २७:११	लाभ पञ्चमी, ज्ञान पञ्चमी, पाण्डव पञ्चमी, (D)
२६	३०	**६**	र.	४८	०२	२६	०१	उ.षा.	४१	४२	२३	२९	ग.	६०	००	कौ.	१४	५०	०६:४८	०५:२४	२४	**३०**	०४	**१५**	मकर	सायंकालीन अर्घ्य दान, प्रतिहार षष्ठी व्रत, (E)
२६	२७	**७**	सो.	५३	४७	२८	२०	श्र.	४८	४०	२६	१७	ग.	०१	०७	ग.	२१	०२	०६:४९	०५:२३	२५	मा. **०१**	०५	**१६**	मकर	भद्रा २८:१९ से, सूर्य वृश्चिक में १९:४२, (F)
२६	२४	**८**	मं.	५२	०७	३०	०५	ध.	५४	२२	२८	३५	वृ.	०२	४०	वि.	२६	०७	०६:५०	०५:२३	२६	**०२**	०६	**१७**	कुम्भ १५:३०	भद्रा १७:१७ तक पञ्चक प्रा. १५:३०, दुर्गाष्टमी, (G)
२६	२१	**९**	बु.	६०	००	-	-	शत.	५८	१७	३०	१०	ध्रु.	०३	०५	बा.	२९	३७	०६:५१	०५:२२	२७	**०३**	०७	**१८**	कुम्भ	अक्षय नवमी, सत्य युगादि, कूष्माण्ड नवमी, (H)
२६	१८	**९**	गु.	००	३५	०७	०६	पू.भा.	००	१०	३०	५६	व्या. ह.	०२ ५९	०५ ३०	कौ.	००	३५	०६:५२	०५:२२	२८	**०४**	०८	**१९**	मीन २४:५०	सूर्य अनुराधा में २७:०३, मेला कंस (मथुरा)।
२६	१५	**१० ११**	शु.	०० ५९	५७ ०७	०७ ३०	१६ ३२	उ.भा.	५९	५५	३०	५१	वज्र.	५५	१२	ग.	००	५७	०६:५३	०५:२२	२९	**०५**	०९	**२०**	मीन	गण्डमूल प्रा. ३०:५१, भद्रा १९:०० से ३०:३१ तक, (I)
२६	१२	**१२**	श.	५५	१०	२८	५७	रे.	५७	३५	२९	५५	सि.	४९	०२	ब.	२७	१०	०६:५३	०५:२१	३०	**०६**	१०	**२१**	मेष २९:५५	पञ्चक समा. २९:५४, तुलसी विवाह, (J)
२६	०९	**१३**	र.	४९	२०	२६	३७	अश्वि.	५३	२७	२८	१६	व्य.	४१	३०	कौ.	२२	०२	०६:५३	०५:२१	मा. ०१	**०७**	११	**२२**	मेष	गण्डमूल समा. २८:१६, शुक्र मार्गी तुला में १७:२०, (K)
२६	०६	**१४**	सो.	४२	०२	२३	४३	भ.	४७	५०	२६	०२	वृरि.	३२	४०	ग.	१५	५०	०६:५४	०५:२१	०२	**०८**	१२	**२३**	मेष	भद्रा २३:४२ से, वैकुण्ठ चतुर्दशी, (L)
२६	०४	**१५**	मं.	३३	४०	२०	२३	कृ.	४१	१५	२३	२५	परि.	२२	५७	वि.	०७	५५	०६:५५	०५:२१	०३	**०९**	१३	**२४**	वृष ०७:२४	भद्रा १०:०५ तक, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, (M)

(A) यम द्वितीया, चित्रगुप्त पूजन, यमुना स्नान (मथुरा)।(B) मुस्लिम जमादिलाखर प्रा., (C) भद्रा ०७:२४ से, २०:४२ तक, बुध मार्गी २१:२३, शुक्र मार्गी २९:५७, विनायक चतुर्थी, छठ व्रत नहाई खाई। (D) बाल दिवस, खरना छठ व्रत। (E) छठ पूजा, सूर्य षष्ठी। (F) प्रातः कालीन सूर्यार्घ्यदान, छठ व्रत पारणा, वृश्चिक संक्रान्ति १९:४२, सं. पुण्यकाल दिनार्धोत्तर। (G) ओली जैन प्रा., गोपाष्टमी, मेला गोचारण (मथुरा)। (H) मथुरा परिक्रमा। (I) भीष्म पञ्चक प्रा., प्रबोधिनी/देवोत्थान एकादशी व्रत (स्मा.)। (J) प्रबोधिनी/देवोत्थान एकादशी व्रत (वै.), कालिदास जयन्ती, चातुर्मास्य समाप्त (सन्यासी), मन्वादि। (K) राष्ट्रीय मार्गशीर्ष प्रा., प्रदोष व्रत, सायन सूर्य धनु में १२:५१ । (L) मणिकर्णिका स्नान, काशी विश्वनाथ स्थापना दिवस। (M) देव दीपावली, भीष्म पञ्चक समा., पुष्कर स्नान, गुरु नानक जयन्ती, मेला गढ़गंगा (मुक्तेश्वर), मेला हरिहर क्षेत्र, ओली जैन समा., कार्तिक स्नान समा., मन्वादि, त्रिपुरोत्सव (सायंकाल)।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	०९	०४	०६	०४	०५	११	१०	०४
अं.	००	२५	०१	११	०१	२८	१४	००	००
क.	२७	२५	५९	४७	४३	४८	१२	५९	५९
वि.	०३	३९	५१	१०	०२	३४	१८	२२	२२
गति	६० १७	७११ ४०	३१ २९	३७ २९	०४ ४५	१० मा. ५९	०२ व. ०३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	विशा. ४ च.	धनि. १ च.	मघा. १ च.	स्वा. २ च.	मघा. १ च.	चित्रा. २ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. ३ च.	मघा. १ च.

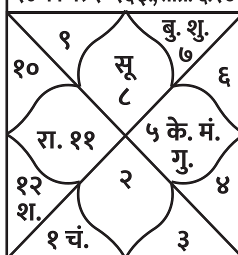
१७ नवम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



कार्तिक शु. ८, मंगलवार

इस मास में मंगल-गुरु-केतु की युति उनका राहु से समसप्तक तथा शनि से षडष्टक होने के कारण भारत में कश्मीर, पञ्जाब, पाकिस्तान, अफगानिस्तान में उग्रवादी एवं आन्तकवादी घटनाओं से जन-धन की हानि होगी। राजनैतिक दलों में भी भिड़न्त होने की सम्भावना है।

२४ नवम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



कार्तिक शु. १५, मंगलवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	००	०४	०६	०४	०६	११	१०	०४
अं.	०७	२९	०४	१८	०२	००	१३	००	००
क.	३०	२४	५८	२२	१२	३१	५७	३७	३७
वि.	५१	१६	४४	०९	३१	२५	१६	०६	०६
गति	६० ४२	८८४ ३८	२८ ०१	७३ ०३	०४ ०२	१७ ४४	०१ व. ४६	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	अनु. २ च.	कृति. १ च.	मघा. २ च.	स्वा. ४ च.	मघा. १ च.	चित्रा. ३ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. ३ च.	मघा. १ च.

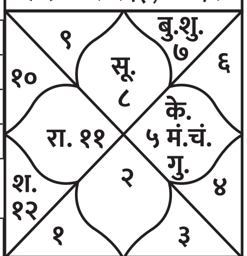
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (दि. २५ नवम्बर से ०८ दिसम्बर २०२६ ई.), दक्षिणायण, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु, के. अहर्गण ५७११, अयनांश २४°/१४'/०६''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२६	०१	१	बु.	२४	४५	१६	५०	रो.	३४	१०	२०	३६	शि.	१२	३७	कौ.	२४	४५	०६:५६	०५:२०	मा. ०४	मा. १०	ज. १४	नवं. २५	वृष	बुध विशाखा में १३:४०, रोहिणी व्रत।
२५	५९	२	गु.	१५	४५	१३	१५	मृग.	२७	०५	१७	४७	सिद्ध सा.	०२ ५१	१२ ५७	ग.	१५	४५	०६:५७	०५:२०	०५	११	१५	२६	मिथुन ०७:११	भद्रा २३:३० से
२५	५६	३ ४	शु.	०७ ५९	१० १७	०९ ३०	४९ ४०	आ.	२०	२७	१५	०८	शुभ	४२	१५	वि.	०७	१०	०६:५७	०५:२०	०६	१२	१६	२७	मिथुन	भद्रा ०९:४८ तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:०१।
२५	५४	५	श.	५२	२७	२७	५७	पुन.	१४	४०	१२	५०	शु.	३३	२०	कौ.	२५	४२	०६:५८	०५:२०	०७	१३	१७	२८	कर्क ०७:२२	
२५	५२	६	र.	४७	००	२५	४७	पुष्य.	१०	००	१०	५९	ब्र.	२५	२५	ग.	१९	३२	०६:५९	०५:२०	०८	१४	१८	२९	कर्क	गण्डमूल प्रा. १०:५९, भद्रा २५:४६ से
२५	५०	७	सो.	४३	००	२४	१२	आश्ले.	०६	४५	०९	४२	ऐं.	१८	३७	वि.	१४	४५	०७:००	०५:२०	०९	१५	१९	३०	सिंह ०९:४२	भद्रा १२:५४ तक
२५	४७	८	मं.	४०	३५	२३	१४	म.	०५	०२	०९	०१	वै.	१३	०७	बा.	११	३५	०७:००	०५:२०	१०	१६	२०	दि. ०१	सिंह	गण्डमूल समा. ०९:०१, कालाष्टमी, कालभैरव जयन्ती।
२५	४५	९	बु.	३९	३७	२२	५२	पू.फा.	०४	४५	०८	५५	विष्कु	०८	४५	तै.	०९	४५	०७:०१	०५:२०	११	१७	२१	०२	कन्या १४:५९	बुध वृश्चिक में १७:२७
२५	४४	१०	गु.	४०	०५	२३	०४	उ.फा.	०५	५५	०९	२४	प्री.	०५	३२	व.	०९	४०	०७:०२	०५:२०	१२	१८	२२	०३	कन्या	भद्रा १०:५९ से २३:०३ तक, सूर्य ज्येष्ठा में ०७:२७
२५	४२	११	शु.	४१	४५	२३	४५	ह.	०८	२०	१०	२३	आयु	०३	२०	ब.	१०	४२	०७:०३	०५:२०	१३	१९	२३	०४	तुला २३:०३	बुध अनुराधा में २३:१६ से, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.)।
२५	४०	१२	श.	४४	३०	२४	५२	चि.	११	५२	११	४९	सौ.	०२	०२	कौ.	१२	५७	०७:०४	०५:२०	१४	२०	२४	०५	तुला	राहु मकर में २२:३२, केतु कर्क में २२:३२, (A)
२५	३८	१३	र.	४८	१५	२६	२२	स्वा.	१६	२५	१३	३८	शो.	०१	३२	ग.	१६	१७	०७:०४	०५:२०	१५	२१	२५	०६	तुला	भद्रा २६:२२ से, प्रदोष व्रत।
२५	३७	१४	सो.	५२	४७	२८	१२	वि.	२१	४७	१५	४८	अति.	०१	४२	वि.	२०	२५	०७:०५	०५:२०	१६	२२	२६	०७	वृश्चिक ०९:१३	भद्रा १५:१५ तक, मास शिवरात्रि।
२५	३५	३०	मं.	५८	१०	३०	२२	अनु.	२७	५५	१८	१६	सु.	०२	३०	चतु.	२५	२२	०७:०६	०५:२०	१७	२३	२७	०८	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. १८:१६, अमावस्या।

(A) शुक्र स्वाति में २२:५८, केतु आश्लेषा में २२:३२

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	०४	०४	०६	०४	०६	११	१०	०४
अं.	१४	११	०७	२७	०२	०३	१३	००	००
क.	३५	५३	४२	५२	३३	४७	४७	१४	१४
वि.	४७	०७	४७	०२	१९	०९	०८	५१	५१
गति	६० ५०	८२६ १७	२६ ०३	८६ ३७	०२ ४५	३१ ००	०१ व. ००	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	अनु. ४ च.	मघा. ४ च.	मघा. ३ च.	विशा. ३ च.	मघा. १ च.	चित्रा. ४ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. ३ च.	मघा. १ च.

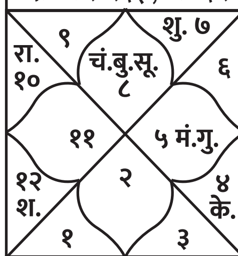
०१ दिसम्बर२०२६ई., प्रातः ६:२७



मार्गशीर्ष कृ. ८, मंगलवार

इस मास में पांच बुधवार हैं और धनु संक्रान्ति भी बुधवार को है, अतः उड़द, मूंग, बाजरा के भाव मन्दे, वनस्पति, घी, गुड़, शक्कर चीनी, तैल के भाव तेज, नारियल, किशमिश, छुहारे, चिरौंजी, लौंग, जीरा, रुई, चाँदी के भाव घटाबढ़ी के बाद तेज रहेंगे।

८ दिसम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



मार्गशीर्ष कृ. ३०, मंगलवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	०७	०४	०७	०४	०६	११	०९	०३
अं.	२१	१०	१०	०८	०२	०८	१३	२९	२९
क.	४१	४३	०९	१८	४४	१५	४२	५२	५२
वि.	५५	५१	२८	५८	५२	२५	११	३६	३६
गति	६० ५६	७२८ ३७	२३ १८	९३ ०५	०० ३१	३९ ५४	०० व. १७	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	ज्ये. २ च.	अनु. ३ च.	मघा. ४ च.	अनु. २ च.	मघा. १ च.	स्वा. १ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ४ च.

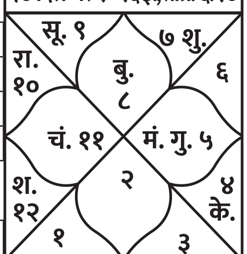
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (दि. ०९ दिसम्बर से २३ दिसम्बर २०२६ ई.), दक्षिणायन/उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त/शिशिर ऋतु, के. अहर्गण ५७२५, अयनांश २४°/१४'/०९''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२५	३४	१	बु.	६०	००	–	–	ज्ये.	३४	५२	२१	००	धृ.	०४	००	किं.	३१	१३	०७:०३	०५:२०	मार्गशीर्ष १८	मार्गशीर्ष २४	जमा. २८	दि. ०९	धनु २१:००	
२५	३३	१	गु.	०४	०७	०८	४६	मूल	४२	०७	२३	५८	शू.	०५	४३	बव.	०४	०७	०७:०७	०५:२०	१९	२५	२९	१०	धनु	गण्डमूल समा. २३:५२, शनि मार्गी २९:०१, (A)
२५	३२	२	शु.	१०	३८	११	२३	पू.षा.	४९	५०	२७	०४	ग.	०७	५५	कौ.	१०	३८	०७:०८	०५:२१	२०	२६	३०	११	धनु	
२५	३०	३	श.	१७	२५	१४	०६	उ.षा.	५७	४०	३०	१२	वृ.	१०	२०	ग.	१७	२५	०७:०८	०५:२१	२१	२७	रज्ज. ०१	१२	मकर ०९:५१	भद्रा प्रा. १७:२८ से, गुरु वक्री ३०:२६, मु. रज्जव प्रा.
२५	२९	४	र.	२४	०५	१६	४८	श्रव.	६०	००	–	–	ध्रु.	१२	४३	वि.	२४	०५	०७:०९	०५:२१	२२	२८	०२	१३	मकर	भद्रा समाप्त १६:४८ तक, बुध अस्त २२:२०, (B)
२५	२९	५	सो.	३०	१५	१९	१६	श्रव.	०५	०५	०९	१२	व्या.	१४	४५	बा.	३०	१५	०७:१०	०५:२१	२३	२९	०३	१४	कुम्भ २२:३५	पञ्चक प्रा. २२:३६ से, श्री सीताराम विवाहोत्सव, (C)
२५	२८	६	मं.	३५	२०	२१	१९	ध.	११	४३	११	५२	हर्ष.	१६	०५	कौ.	०२	५५	०७:११	०५:२२	२४	३०	०४	१५	कुम्भ	स्कन्द षष्ठी।
२५	२७	७	बु.	३७	५८	२२	४६	श.	१७	०७	१४	०२	वज्र.	१६	२५	ग.	०७	२३	०७:११	०५:२२	२५	पौ. ०१	०५	१६	कुम्भ	भद्रा प्रा. २२:४६ से, सूर्य मूल में १०:२५, (D)
२५	२७	८	गु.	४०	३५	२३	२६	पू.भा.	२०	४५	१५	३०	सि.	१५	२३	वि.	१०	००	०७:१२	०५:२२	२६	०२	०६	१७	मीन ०९:१२	भद्रा समा. ११:१२, दुर्गाष्टमी।
२५	२६	९	शु.	४०	०५	२३	१४	उ.भा.	२२	२५	१६	१०	व्य.	१२	४५	बा.	१०	३५	०७:१२	०५:२३	२७	०३	०७	१८	मीन	गण्डमूल प्रा. १६:१०
२५	२६	१०	श.	३७	२०	२२	०९	रेव.	२१	५०	१५	५७	वरि.	०८	२३	तै.	०८	५७	०७:१३	०५:२३	२८	०४	०८	१९	मेष १५:५७	मङ्गल पू.फा. में १०:२०, पञ्चक समा. १५:५८
२५	२६	११	र.	३२	३३	२०	१४	अ.	१९	१५	१४	५५	परि. शि.	०२ ५४	२० ४५	व.	०५	१३	०७:१३	०५:२४	२९	०५	०९	२०	मेष	गण्डमूल समा. १४:५५, (E)
२५	२५	१२	सो.	२५	५५	१७	३६	भ.	१४	४५	१३	०८	सि.	४५	४५	बा.	२५	५५	०७:१४	०५:२४	३०	०६	१०	२१	वृष १८:३५	मत्स्य द्वादशी, सोम प्रदोष व्रत, (F)
२५	२५	१३	मं.	१७	५३	१४	२३	कृ.	०८	४८	१०	४५	सा.	३५	४३	तै.	१७	५३	०७:१४	०५:२४	पौ. ०१	०७	११	२२	वृष	बुध धनु में ०७:३९, बुध मूल में ०७:३९, (G)
२५	२५	१४ १५	बु.	०८ ५९	५० १५	१० ३०	४७ ५७	रो. मृ.	०१ ५४	४२ ०५	०७ २८	५६ ५३	शु.	२५	००	व.	०८	५०	०७:१५	०५:२५	०२	०८	१२	२३	मिथुन १८:२५	भद्रा १०:४७ से २०:५३ तक, (H)

(A) चन्द्रदर्शन। (B) विनायक चतुर्थी। (C) विवाह पंचमी, नाग पञ्चमी (दाक्षिणात्य), स्वामी हरिदास जयन्ती, रामदास जयन्ती, बाबू बैजनाथ जयन्ती। (D) धनु संक्रान्ति १०:२५, सं. पुण्यकाल १०:२५ से १६:४८ (E) भद्रा प्रा. ०९:१८ से २०:१५ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), मौनी एकादशी (जैन), गीता जयन्ती, उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रा.। (F) सायन सूर्य मकर में २६:१७ उत्तरायण प्रा., शिशिर ऋतु प्रा. (G) शुक्र विशाखा में १३:५४, राष्ट्रीय पौष प्रा., वर्ष का सबसे छोटा दिवस, रोहिणी व्रत। (H) दत्तात्रेय जयन्ती (प्रदोषकाल), पिशाचमोचन श्राद्ध, सत्यव्रत, पं. मदनमोहन मालवीय जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, त्रिपुर भैरवी जयन्ती (प्रदोष व्यापिनी)।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	१०	०४	०७	०४	०६	११	०९	०३
अं.	००	१८	१२	२२	०२	१५	१३	२९	२९
क.	५०	२२	४७	०८	३५	१८	४३	२३	२३
वि.	५८	२८	४३	४८	४३	५३	४२	५३	५३
गति	६० ०३	७६८ ४७	१५ १४	९९ ००	०० व ५३	५१ २३	०० ४३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	मूल. १ च.	पू.भा. ३ च.	मघा. ४ च.	ज्ये. २ च.	मघा. १ च.	स्वा. ३ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ४ च.

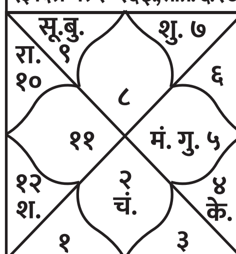
१७ दिसम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



मार्गशीर्ष शु. ८, गुरुवार

इस मास में मंगल-गुरु-केतु की युति उनका शनि के साथ षडष्टक होने के कारण कश्मीर, सिन्ध, पञ्जाब, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल से लेकर दक्षिण में भी उग्रवादी एवं हिंसक घटनायें बढ़ेंगी राजनैतिक दलों में भी मुद्दों के आधार पर आरोप प्रत्यारोप का दौर जारी रहेगा।

२३ दिसम्बर २०२६ ई., प्रातः ६:२७



श्रावण शु. १५, बुधवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	०१	०४	०८	०४	०६	११	०९	०३
अं.	०६	२१	१४	०२	०२	२०	१३	२९	२९
क.	५७	५२	११	२०	३८	३९	४९	०४	०४
वि.	५५	५३	५२	२४	०४	४७	४५	५९	५९
गति	६१ ०२	९१२ ५७	१२ ११	९२ ४५	०२ व ०२	५४ २१	०१ २०	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	मूल. ३ च.	रोहि. ४ च.	पू.फा. १ च.	मूल. १ च.	मघा. १ च.	विशा. १ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ४ च.

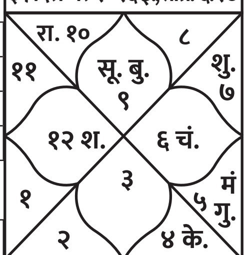
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, पौष कृष्ण पक्ष (दि. २४ दिसम्बर २०२६ से ०७ जनवरी २०२७ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु, के. अहर्गण ५७४०, अयनांश २४°/१४'/१२"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२५	२६	**१**	गु.	४१	४०	२७	०७	आ.	४६	२०	२५	४७	शु.	१४	००	बा.	२४	२७	०७:१५	०५:२६	पौष ०३	पौष **०९**	रज्ज. १३	दिस. **२४**	मिथुन	
२५	२६	**२**	शु.	४०	२५	२३	२६	पुन.	३८	५२	२२	४९	ब्र. ऐ.	०३ ५२	०० ३०	तै.	१४	५५	०७:१६	०५:२६	०४	**१०**	१४	**२५**	कर्क १७:३२	क्रिसमस दिवस, ईसामसीह जयन्ती।
२५	२६	**३**	श.	३२	०३	२०	०५	पु.	३२	२०	२०	२२	वै.	४२	४५	व.	०६	०५	०७:१६	०५:२७	०५	**११**	१५	**२६**	कर्क	गण्डमूल प्रा. २०:१३, भद्रा ०९:४३ से २०:०५ तक, (A)
२५	२७	**४**	र.	२४	५३	१७	१३	आश्ले.	२७	००	१८	०४	विष्कु.	३४	००	बा.	२४	५२	०७:१६	०५:२७	०६	**१२**	१६	**२७**	सिंह १८:०४	
२५	२७	**५**	सो.	१९	१३	१४	५८	म.	२३	०७	१६	३२	प्री.	२६	३५	तै.	१९	१२	०७:१७	०५:२८	०७	**१३**	१७	**२८**	सिंह	गण्डमूल समा. १६:३३
२५	२८	**६**	मं.	१५	२०	१३	२५	पू.फा.	२१	०२	१५	४२	आ.	२०	३२	व.	१५	२०	०७:१७	०५:२८	०८	**१४**	१८	**२९**	कन्या २१:३७	भद्रा १३:२५ से २४:५५ तक, सूर्य पू.षा. में १२:४४
२५	२९	**७**	बु.	१३	१७	१२	३६	उ.फा.	२०	३७	१५	३२	सौ.	१६	००	ब.	१३	१७	०७:१७	०५:२९	०९	**१५**	१९	**३०**	कन्या	बुध पू.षा. में १८:३१, कालाष्टमी।
२५	३०	**८**	गु.	१३	०५	१२	३२	ह.	२२	१७	१६	१३	शो.	१२	५०	कौ.	१३	०५	०७:१८	०५:३०	१०	**१६**	२०	**३१**	तुला २८:४६	
२५	३१	**९**	शु.	१४	४०	१३	१०	चि.	२५	२७	१७	२९	अ.	११	२	ग.	१४	४०	०७:१८	०५:३०	११	**१७**	२१	जन. **०१**	तुला	भद्रा प्रा. २५:४३ से, शुक्र वृश्चिक में २३:२३, (B)
२५	३२	**१०**	श.	१७	४५	१४	२४	स्वा.	३०	०२	१९	१९	सु.	१०	२५	वि.	१७	४५	०७:१८	०५:३१	१२	**१८**	२२	**०२**	तुला	भद्रा १४:२४ तक,
२५	३२	**११**	र.	२२	०५	१६	०८	वि.	३५	४५	२१	३६	धृ.	१०	४५	बा.	२२	०५	०७:१८	०५:३२	१३	**१९**	२३	**०३**	वृश्चिक १५:००	सफला एकादशी व्रत (स.)।
२५	३४	**१२**	सो.	२७	२०	१८	१५	अ.	४२	१७	२४	१४	शू.	११	५०	तै.	२७	२०	०७:१९	०५:३२	१४	**२०**	२४	**०४**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. २४:१५, शुक्र अनुराधा में ३०:०३,
२५	३६	**१३**	मं.	३३	२०	२०	३९	ज्ये.	४९	३०	२७	०७	ग.	१३	३०	ग.	००	१७	०७:१९	०५:३३	१५	**२१**	२५	**०५**	धनु २७:०७	भद्रा प्रा. २०:४० से, भौम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि।
२५	३७	**१४**	बु.	३९	४७	२३	१४	मू.	५७	०२	३०	०८	वृ.	१५	३०	वि.	०६	३२	०७:१९	०५:३४	१६	**२२**	२६	**०६**	धनु	गण्डमूल समा. ३०:०८, भद्रा ०९:५६ तक,
२५	३९	**३०**	गु.	४६	२७	२५	५४	पू.षा.	६०	००	–	–	ध्रु.	१७	३५	चतु.	१३	०५	०७:१९	०५:३५	१७	**२३**	२७	**०७**	धनु	बुध उ.षा. में २४:०९, अमावस्या।

(A) चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:११ (B) आंग्ल नववर्षारम्भ।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	०५	०४	०८	०४	०६	११	०९	०३
अं.	१५	१८	१५	१४	०२	२८	१४	२८	२८
क.	०६	०५	३१	०७	१५	१७	०३	३९	३९
वि.	१६	००	०८	३९	४३	४७	३४	२८	२८
गति	६१ १०	७३७ ४९	०७ १०	९६ ०४	०३ व ३३	५९ ४७	०२ १३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पू.षा. १ च.	हस्त. ३ च.	पू.फा. १ च.	पू.षा. १ च.	मघा. १ च.	विशा. ३ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ४ च.

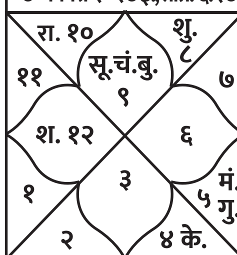
३१ दिसम्बर २०२६ ई., प्रात: ६:२७



पौष कृ. ८, गुरुवार

इस मास में पाँच गुरुवार तक पाँच शुक्रवार हैं तथा मकर संक्रान्ति भी गुरुवार को है, अतः मक्का, ज्वार, चावल, बाजरा, मूंग, मोठ, लोबिया, तिल, तेल, अलसी, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, जस्ता के भाव मन्दे, गेहूँ, जौ, चना, ऊन, रेशम के भाव तेज रहेंगे। शेयर बाजार में घटाबढ़ी के बाद गिरावट का रुख रहेगा।

०७ जनवरी २०२७ ई., प्रात: ६:२७



पौष कृ. ३०, गुरुवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	०८	०४	०८	०४	०७	११	०९	०३
अं.	२२	२३	१६	२५	०१	०५	१४	२८	२८
क.	१४	२९	०६	२७	४७	२५	२१	१७	१७
वि.	२६	१७	५२	२२	०२	०६	१५	१३	१३
गति	६१ १०	७०९ ०४	०२ १२	९२ ३४	०४ व ४०	६२ ३४	०३ ०२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पू.षा. ३ च.	पू.षा. ४ च.	पू.फा. १ च.	पू.षा. ४ च.	मघा. १ च.	अनु. १ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ४ च.

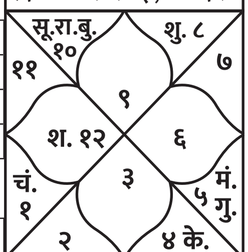
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, पौष शुक्ल पक्ष (दि. ०८ जनवरी से २२ जनवरी २०२७ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु, के. अहर्गण ५७५५, अयनांश २४°/१४'/१५''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२५	४०	**१**	**शु.**	५३	०५	२८	३३	**पू.षा.**	०४	४२	०९	१२	**व्या.**	२०	०५	**किं**	११	५०	०७:१९	०५:३५	पौष १८	पौष **२४**	रज्ज. २८	ज. **०८**	मकर १५:५२	
२५	४२	**२**	**श.**	५९	३०	३१	०७	**उ.षा.**	१२	२०	१२	१५	**ह.**	२२	२०	**बा.**	२६	२०	०७:१९	०५:३६	१९	**२५**	२९	**०९**	मकर	चन्द्रदर्शन, बुध मकर में २४:३७।
२५	४४	**३**	**र.**	६०	००	–	–	**श्र.**	११	४०	१५	११	**व.**	२४	१७	**तै.**	३२	३२	०७:१९	०५:३७	२०	**२६**	सावा. ०१	**१०**	कुम्भ २८:३४	मङ्गल वक्री १८:२९, (A)
२५	४६	**३**	**सो.**	०५	२२	०९	२८	**ध.**	२६	२५	१७	५३	**सि.**	२५	४७	**ग.**	०५	२२	०७:१९	०५:३८	२१	**२७**	०२	**११**	कुम्भ	भद्रा प्रा २२:३२ से, सूर्य उ.षा में १४:३९, (B)
२५	४८	**४**	**मं.**	१०	२५	११	२९	**श.**	३२	१५	२०	१३	**व्य.**	२६	३५	**वि.**	१०	२५	०७:१९	०५:३९	२२	**२८**	०३	**१२**	कुम्भ	भद्रा ११:२९ तक, (C)
२५	५०	**५**	**बु.**	१४	१५	१३	०१	**पू.भा.**	३६	५२	२२	०४	**व.**	२६	२५	**बा.**	१४	१५	०७:१९	०५:३९	२३	**२९**	०४	**१३**	मीन १५:३९	लोहड़ी (पंजाब)।
२५	५२	**६**	**गु.**	१६	३७	१३	५८	**उ.भा.**	३९	५७	२३	१८	**प.**	२५	०७	**तै.**	१६	३७	०७:१९	०५:४०	२४	माघ **०१**	०५	**१४**	मीन	गण्डमूल प्रा. २३:१९, मकर संक्रान्ति २१:१०, (D)
२५	५४	**७**	**शु.**	१७	१५	१४	१३	**रे.**	४१	२०	२३	५१	**शि.**	२२	२५	**व.**	१७	१५	०७:१९	०५:४१	२५	**०२**	०६	**१५**	मेष २३:५१	भद्रा १४:१४ से २६:०४ तक, बुध श्रवण में २४:२२, (E)
२५	५७	**८**	**श.**	१६	००	१३	४३	**अ.**	४०	४७	२३	३८	**सि.**	१८	१७	**ब.**	१६	००	०७:१९	०५:४२	२६	**०३**	**०७**	**१६**	मेष	गण्डमूल समा. २३:३९, दुर्गाष्टमी।
२५	५९	**९**	**र.**	१२	४७	१२	२६	**भ.**	३८	२७	२२	४२	**सा.**	१२	४०	**कौ.**	१२	४७	०७:१९	०५:४३	२७	**०४**	०८	**१७**	वृष २८:२१	शुक्र ज्येष्ठा में १९:२१
२६	०३	**१०**	**सो.**	०७	५०	१०	२७	**कृ.**	३६	५५	२२	०५	**शुभ शु.**	०५ ५७	३५ १५	**ग.**	०७	५०	०७:१९	०५:४४	२८	**०५**	०९	**१८**	वृष	भद्रा प्रा. २१:१३ से, बुध उदय १०:०५, रोहिणी व्रत।
२६	०४	**११ १२**	**मं.**	०१ ५२	१७ २७	०७ २८	४९ ४१	**रो.**	२८	५७	१८	५४	**ब्र.**	४७	५२	**वि.**	०१	१७	०७:१८	०५:४४	२९	**०६**	१०	**१९**	मिथुन २९:३२	भद्रा ०७:५० तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.)।
२६	०७	**१३**	**बु.**	४४	४२	२५	११	**मृ.**	२२	२५	१६	१७	**ऐं.**	३७	४२	**कौ.**	१९	१०	०७:१८	०५:४५	३०	**०७**	११	**२०**	मिथुन	प्रदोष व्रत, सायन सूर्य कुम्भ में १२:५७।
२६	१०	**१४**	**गु.**	३५	३०	२१	३०	**आ.**	१५	१०	१३	२३	**वै.**	२७	०५	**ग.**	१०	०७	०७:१८	०५:४६	माघ ०१	**०८**	१२	**२१**	कर्क २९:०९	भद्रा प्रा. २१:३० से, राष्ट्रीय माघ प्रा., पूर्णिमा व्रत।।
२६	१३	**१५**	**शु.**	२६	१२	१७	४७	**पुन.**	०७	४५	१०	२५	**विष्कु.**	१६	२०	**वि.**	००	५५	०७:१८	०५:४७	०२	**०९**	१३	**२२**	कर्क	भद्रा ०७:३८ तक, सत्यव्रत, शाकम्भरी जयन्ती, (F)

(A) पञ्चक प्रा. २८:३५, मु. सावान प्रा. (B) विनायक चतुर्थी। (C) स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, युवा दिवस। (D) सं. पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर से सूर्यास्त तक, पोंगल। (E) पञ्चक समा. २३:५१ (F) माघ स्नान प्रा.।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	००	०४	०९	०४	०७	११	०९	०३
अं.	०१	०३	१५	१०	००	१४	१४	२७	२७
क.	२४	३९	५९	२६	४८	५९	५२	४८	४८
वि.	४५	२३	४५	४९	१५	३५	०९	३६	३६
गति	६१ ०३	८१४ ०८	०४ व ४१	१०१ १४	०६ ०९	६५ १४	०४ १९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.षा. २ च.	अश्वि. २ च.	पू.फा. १ च.	श्रव. १ च.	मघा. १ च.	अनु. ४ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ४ च.

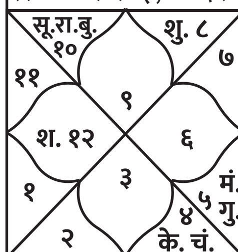
१६ जनवरी २०२७ ई., प्रातः ६:२७



पौष शु. ८, शनिवार

इस मास में मंगल-गुरु की युति उनका सूर्य-राहु एवं शनि से षडष्टक होने के कारण पक्ष एवं विपक्ष में तनातनी का माहोल रहेगा। विश्व के कई भागों में युद्ध, आन्तकवाद, अग्निकांड एवं हिंसक घटनाओं में जन-जन की हानि होने की सम्भावना है।

२२ जनवरी २०२७ ई., प्रातः ६:२७



पौष शु. १५, शुक्रवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	०३	०४	०९	०४	०७	११	०९	०३
अं.	०७	००	१५	२०	००	२१	१५	२७	२७
क.	३१	४९	१९	३२	१९	३४	१५	२९	२९
वि.	०९	०२	४३	५१	२८	३९	१६	३१	३१
गति	६१ ०१	९१० ३२	०९ व २८	९९ ४०	०६ ५२	६६ ३८	०४ १९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.षा. ४ च.	पुन. ४ च.	पू.फा. १ च.	श्रव. ४ च.	मघा. १ च.	ज्ये. २ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ४ च.

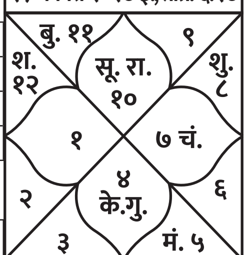
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, माघ कृष्ण पक्ष (दि. २३ जनवरी से ०६ फरवरी २०२७ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु, के. अहर्गण ५७७०, अयनांश २४°/१४'/१८''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२६	१५	**१**	**श.**	१७	१७	१४	१२	**पु. आश्ले.**	०० ५४	३५ ००	०७ २८	३१ ५३	**प्री. आ.**	०५ ५५	५२ ५७	**कौ.**	१७	१७	०७:१७	०५:४८	माघ ०३	माघ **१०**	सावा. १४	**ज. २३**	सिंह २८:५३	गण्डमूल प्रा. ०७:३१, बुध धनिष्ठा में २२:४६, (A)
२६	१८	**२**	**र.**	०९	१०	१०	५७	**म.**	४८	२७	२६	४०	**सौ.**	४६	५२	**ग.**	०९	१०	०७:१७	०५:४९	०४	**११**	१५	**२४**	सिंह	गण्डमूल समा. २६:४१, भद्रा २१:३० से, (B
२६	२१	**३ ४**	**सो.**	०२ ५६	१२ ४७	०८ ३०	१० ००	**पू.फा.**	४४	२५	२५	०३	**शो.**	३९	००	**वि.**	०२	१२	०७:१७	०५:५०	०५	**१२**	१६	**२५**	कन्या ३०:४४	भद्रा ०८:११ तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:१३, (C)
२६	२४	**५**	**मं.**	५३	१२	२८	३३	**उ.फा.**	४२	०५	२४	०६	**अ.**	३२	३५	**कौ.**	२४	४७	०७:१६	०५:५०	०६	**१३**	१७	**२६**	कन्या	भारतीय गणतंत्र दिवस।
२६	२८	**६**	**बु.**	५१	३२	२७	५३	**ह.**	४१	४०	२३	५६	**सु.**	२७	३५	**ग.**	२२	०७	१७:१६	०५:५१	०७	**१४**	१८	**२७**	कन्या	भद्रा २७:४५ से, बुध कुम्भ में २७:३४
२६	३१	**७**	**गु.**	५१	५७	२८	०३	**चि.**	४३	१०	२४	३२	**धृ.**	२४	१२	**वि.**	२१	३०	०७:१६	०५:५२	०८	**१५**	१९	**२८**	तुला १२:०८	भद्रा १५:५२ तक
२६	३४	**८**	**शु.**	५४	१७	२८	५८	**स्वा.**	४६	३७	२५	५४	**शू.**	२२	२५	**बा.**	२२	५५	०७:१५	०५:५३	०९	**१६**	२०	**२९**	तुला	शुक्र धनु में १८:४१, शुक्र मूल में १८:४१, (D)
२६	३७	**९**	**श.**	५८	१५	३०	३३	**वि.**	५१	४०	२७	५५	**ग.**	२१	५७	**तै.**	२६	०५	०७:१५	०५:५४	१०	**१७**	२१	**३०**	वृश्चिक २१:२१	
२६	४१	**१०**	**र.**	६०	००	-	-	**अ.**	५८	०२	३०	२७	**वृ.**	२२	४०	**व.**	३०	५०	०७:१४	०५:५५	११	**१८**	२२	**३१**	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. ३०:२८, भद्रा १९:३४ से (E)
२६	४४	**१०**	**सो.**	०३	३७	०८	४१	**ज्ये.**	६०	००	-	-	**ध्रु.**	२४	१५	**वि.**	०३	३७	०७:१४	०५:५६	१२	**१९**	२३	**फर. ०१**	वृश्चिक	भद्रा ०८:४१ तक, बुध शतभिषा में, २४:५८
२६	४८	**११**	**मं.**	०९	५२	११	१०	**ज्ये.**	०५	२०	०९	२१	**व्या.**	२६	२५	**बा.**	०९	५२	०७:१३	०५:५६	१३	**२०**	२४	**०२**	धनु ०९:२१	षट्तिला एकादशी व्रत (स.)।
२६	५१	**१२**	**बु.**	१६	३२	१३	५०	**मू.**	१३	०२	१२	२६	**ह.**	२८	४७	**तै.**	१६	३२	०७:१३	०५:५७	१४	**२१**	२५	**०३**	धनु	गण्डमूल समा. १२:२६, प्रदोष व्रत।
२६	५५	**१३**	**गु.**	२३	१७	१६	३१	**पू.षा.**	२०	५०	१५	३२	**व.**	३१	१२	**व.**	२३	१७	०७:१२	०५:५८	१५	**२२**	२६	**०४**	मकर २२:१८	भद्रा १६:३१ से, २९:५० तक, मास शिवरात्रि।
२६	५८	**१४**	**शु.**	२९	४५	१९	०५	**उ.षा.**	२८	२२	१८	३२	**सि.**	३३	२२	**श.**	२९	४५	०७:११	०५:५९	१६	**२३**	२७	**०५**	मकर	
२७	०२	**३०**	**श.**	३५	३५	२१	२५	**श्र.**	३५	२०	२१	१९	**व्य.**	३५	०५	**च.**	०२	३२	०७:११	०६:००	१७	**२४**	२८	**०६**	मकर	सूर्य धनिष्ठा में २०:०८, मौनी अमावस्या, (F)

(A) सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती। (B) वक्री गुरु कर्क में २५:३२, सूर्य श्रवण में १७:००, बृहस्पति आश्लेषा में २५:३२, (C) संकष्ट चतुर्थी, सकट चौथ, गणेशावतार, हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्य दिवस। (D) कालाष्टमी। (E) वक्री मंगल सिंह में १६:०४ (F) यम तर्पण, प्रयाग स्नान, शनैश्चरी अमावस्या।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	०६	०४	१०	०३	०७	११	०९	०३
अं.	१४	०९	१३	०१	२९	२९	१५	२७	२७
क.	३८	४८	५७	३९	२९	२५	४७	०७	०७
वि.	०५	२१	००	५६	१९	२१	१७	१६	१६
गति	६० ५७	७५२ ४६	१४ व ५३	८५ ३५	०७ व ३०	६७ ५९	०४ ५४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	श्रव. २ च.	स्वा. १ च.	पू.फा. १ च.	धनि. ३ च.	आश्ले. ४ च.	ज्ये. ४ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ४ च.

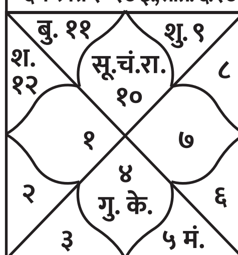
२९ जनवरी २०२७ ई., प्रातः ६:२७



माघ कृ. ८, शुक्रवार

इस मास में पाँच शनिवार हैं और कुम्भ की संक्रान्ति भी शनिवार को है, अतः प्रजा में रोग, चोरी तस्करी आदि से भय एवं अशान्ति का वातावरण रहेगा। दूध, घी, गेहूं, चना, जौ, नमक, मिर्च के भाव तेज रहेंगे। मक्का, ज्वार, बाजरा, मूंग, उड़द, सरसों, तिल, तेल के भाव मन्दे रहेंगे। सोना, चाँदी, जस्ता, पीतल, ताँबा लोहा, कपास, सूत, वस्त्र के भावों में घटाबढ़ी का रुख रहेगा।

०६ फरवरी २०२७ ई., प्रातः ६:२७



माघ कृ. ३०, शनिवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	०९	०४	१०	०३	०८	११	०९	०३
अं.	२२	१५	११	१०	२८	०८	१६	२६	२६
क.	४५	५४	३८	३२	२७	३३	२८	४१	४१
वि.	१९	५४	३०	५४	३६	३१	३७	४९	४९
गति	६० ५०	७११ ४०	२० व ०८	३३ ०३	०८ व ०६	६१ ०९	०६ ०१	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	श्रव. ४ च.	श्रव. २ च.	मघा. ४ च.	शत. २ च.	आश्ले. ४ च.	मूल ३ च.	उ.भा. ४ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ४ च.

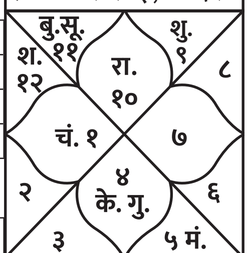
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, माघ शुक्ल पक्ष (दि. ०७ फरवरी से २० फरवरी २०२७ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर/वसन्त ऋतु, के. अहर्गण ५७८५, अयनांश २४°/१४'/२१''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२७	०६	१	र.	४०	४२	२३	२७	ध.	४१	३५	२३	४८	व.	३६	१५	किं.	०८	१७	०७:१०	०६:००	माघ १८	माघ २५	सावा. २९	फ. ०७	कुम्भ १०:३६	पञ्चक प्रा. १०:३६, गुप्त (शिशिर) नवरात्र प्रा.।
२७	०९	२	सो.	४४	५२	२५	०६	श.	४६	५७	२५	५६	प.	३६	४५	बा.	१२	५७	०७:०९	०६:०१	१९	२६	३०	०८	कुम्भ	शनि रेवती में ०७:५१, चन्द्रदर्शन।
२७	१३	३	मं.	४७	५५	२६	१९	पू.भा.	५१	१७	२७	४०	शि.	३६	२२	तै.	१६	३२	०७:०९	०६:०२	२०	२७	रम. ०१	०९	मीन २१:१६	बुध वक्री २३:०६, मु. रमजान प्रा.
२७	१७	४	बु.	४९	५०	२७	०४	उ.भा.	५४	३०	२८	५६	सि.	३५	१२	व.	१९	०५	०७:०८	०६:०३	२१	२८	०२	१०	मीन	गण्डमूल प्रा. २८:५६, भद्रा १४:४६, से २७:०५ तक, (A)
२७	२१	५	गु.	५०	२७	२७	१८	रे.	५६	२७	२९	४१	सा.	३३	०२	ब.	२०	२०	०७:०७	०६:०४	२२	२९	०३	११	मेष २९:४१	पञ्चक समा. २९:४२, वसन्त पञ्चमी, (B)
२७	२४	६	शु.	४९	४०	२६	५९	अ.	५७	०२	२९	५६	शुभ.	२९	४७	कौ.	२०	१५	०७:०७	०६:०४	२३	३०	०४	१२	मेष	गण्डमूल समा. २९:५६, बुध अस्त १८:०५, (C)
२७	२८	७	श.	४७	३०	२६	०६	भ.	५६	१२	२९	३७	शु.	२५	३०	ग.	१८	४७	०७:०६	०६:०५	२४	फाल्गु. ०१	०५	१३	मेष	भद्रा २६:०७ से, कुंभ संक्रान्ति १०:०९, (D)
२७	३२	८	र.	४४	००	२४	४१	कृ.	५४	१२	२८	४६	ब्र.	२०	०७	वि.	१५	५७	०७:०५	०६:०६	२५	०२	०६	१४	वृष ११:२७	भद्रा १३:२८ तक, भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, मन्वादि।
२७	३६	९	सो.	३९	१०	२२	४४	रो.	५०	५२	२७	२५	ऐं	१३	४०	बा.	११	४५	०७:०४	०६:०७	२६	०३	०७	१५	वृष	गुप्त (शिशिर) नवरात्र समा., रोहिणी व्रत।
२७	४०	१०	मं.	३३	१०	२०	१९	मृ.	४६	२५	२५	३७	वै. विष्कुं.	०६ ५७	१५ ५७	तै.	०६	२०	०७:०३	०६:०८	२७	०४	०८	१६	मिथुन १४:३४	भद्रा ३०:५८ से
२७	४४	११	बु.	२६	१५	१७	३२	आ.	४१	०७	२३	२९	प्री.	४८	५७	वि.	२६	१५	०७:०२	०६:०८	२८	०५	०९	१७	मिथुन	भद्रा १७:३२ तक, वक्री बुध धनिष्ठा में. २१:१२, (E)
२७	४८	१२	गु.	१८	३२	१४	२७	पुन.	३५	०७	२१	०५	आ.	३९	३०	बा.	१८	३२	०७:०२	०६:०९	२९	०६	१०	१८	कर्क १५:४२	भीष्म द्वादशी, तिल द्वादशी, प्रदोष व्रत, (F)
२७	५२	१३	शु.	१०	३२	११	१४	पु.	२८	५५	१८	३५	सौ.	२९	५२	तै.	१०	३२	०७:०१	०६:१०	३०	०७	११	१९	कर्क	गण्डमूल प्रा. १८:३६, सूर्य शतभिषा में २४:३७
२७	५६	१४ १५	श.	०२ ५४	३० ४२	०८ २८	०० ५३	आ.	२२	४७	१६	०७	शो.	२०	२०	व.	०२	३०	०७:००	०६:११	फाल्गु. ०१	०८	१२	२०	सिंह १६:०७	भद्रा ०८:०० से १८:१५ तक, राष्ट्रीय फाल्गुन प्रा. (G)

(A) शुक्र पू.षा में ०९:३७, विनायक चतुर्थी, तिल चतुर्थी। (B) श्री पञ्चमी, सरस्वती पूजन। (C) स्कन्द षष्ठी। (D) सं. पुण्यकाल सूर्योदय से १०:०९ तक, रथ सप्तमी, भानु सप्तमी, अचला सप्तमी। (E) जया एकादशी व्रत (स.)। (F) मरु महोत्सव जैसलमेर राज. (प्रा.), सायन सूर्य मीन में २७:०१, वसन्त ऋतु प्रा.। (G) माघी पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, गुरु रविदास जयन्ती, मरु महोत्सव (समा.), माघ स्नान समा., श्री ललिता जयन्ती, महाकवि माघ जयन्ती।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	००	०४	१०	०३	०८	११	०९	०३
अं.	००	२७	०८	१०	२७	१७	१७	२६	२६
क.	५१	०८	४४	०६	२४	४९	१४	१६	१६
वि.	१९	१४	३९	४१	०२	५२	२७	२३	२३
गति	६० ३८	८३० १७	२३ व १७	४७ व ५८	०७ व ५५	७० ००	०६ ०१	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	धनि. ३ च.	कृति. १ च.	मघा ३ च.	शत. २ च.	आश्ले. ४ च.	पू.षा. २ च.	रेवती १ च.	धनि. १ च.	आश्ले. ३ च.

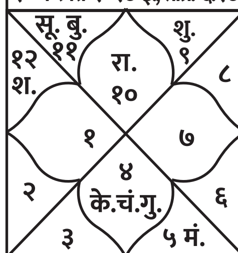
१४ फरवरी २०२७ ई., प्रातः ६:२७



माघ शु. ८, रविवार

इस मास में सूर्य-राहु की युति उनका गुरु-केतु के साथ समसप्तक योग मंगल से षडष्टक तथा शनि-मंगल का भी षडष्टक योग होने के कारण यान दुर्घटना, अग्निकाण्ड विस्कोट एवं तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं से जन-धन की हानि होने की सम्भावना है। किसी देश के राष्ट्राध्यक्ष के अपदस्थ होने की भी सम्भावना है।

२० फरवरी २०२७ ई., प्रातः ६:२७



माघ शु. १४/१५, शनिवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०३	०४	१०	०३	०८	११	०९	०३
अं.	०६	२४	०६	०४	२६	२४	१७	२५	२५
क.	५४	००	२२	०१	३६	५१	५१	५७	५७
वि.	४१	५९	४०	४६	५९	१८	२५	१९	१९
गति	६० २८	८८७ ४०	२३ व ५२	६६ व ४९	०७ व ४१	७० ३२	०६ २१	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	शत. १ च.	आश्ले. ३ च.	मघा २ च.	धनि. ४ च.	आश्ले. ३ च.	पू.षा. ४ च.	रेवती १ च.	धनि. १ च.	आश्ले. ३ च.

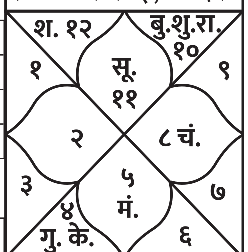
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, फाल्गुन कृष्ण पक्ष (दि. २१ फरवरी से ०८ मार्च २०२७ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु, के. अहर्गण ५७९९, अयनांश २४°/१४'/२३''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२८	००	१	र.	४७	४०	२६	०३	म.	१७	०७	१३	५०	अति.	११	१०	बा.	२१	१५	०६:५९	०६:११	फाल्गुन ०२	फाल्गुन ०९	रम. १३	फ. २१	सिंह	गण्डमूल समा. १३:५१, शुक्र उ.षा. में १९:२५
२८	०५	२	सो.	४१	४२	२३	३९	पू.फा.	१२	२०	११	५४	सु. धृ.	०२ ५५	३७ ०२	तै.	१४	३२	०६:५८	०६:१२	०३	१०	१४	२२	कन्या १७:३०	
२८	०९	३	मं.	३७	१०	२१	४९	उ.फा.	०८	४७	१०	२८	शू.	४८	४२	व.	०९	१५	०६:५७	०६:१३	०४	११	१५	२३	कन्या	भद्रा १०:३९ से २१:४९ तक, (A)
२८	१३	४	बु.	३४	२०	२०	४०	ह.	०६	४५	०९	३८	ग.	४३	४५	ब.	०५	३२	०६:५६	०६:१३	०५	१२	१६	२४	तुला २१:३०	शुक्र मकर में १५:१६, बुध उदय १९:३७
२८	१७	५	गु.	३३	२५	२०	१७	चि.	०६	३२	०९	३२	वृ.	४०	२२	कौ.	०३	४०	०६:५५	०६:१४	०६	१३	१७	२५	तुला	
२८	२१	६	शु.	३४	२७	२०	४३	स्वा.	०८	१७	१०	१३	ध्रु.	३८	३०	ग.	०३	४२	०६:५४	०६:१५	०७	१४	१८	२६	वृश्चिक २९:१४	भद्रा २०:४३ से
२८	२५	७	श.	३७	३२	२१	५४	वि.	११	५५	११	३९	व्या.	३८	०७	वि.	०६	०७	०६:५३	०६:१६	०८	१५	१९	२७	वृश्चिक	भद्रा ०९:१४ तक, कालाष्टमी।
२८	३०	८	र.	४२	०७	२३	४६	अ.	१७	१७	१३	४७	ह.	३८	५५	बा.	०९	४५	०६:५२	०६:१६	०९	१६	२०	२८	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. १३:४७
२८	३४	९	सो.	४८	१०	२६	०७	ज्ये.	२४	००	१६	२७	व.	४०	४७	तै.	१५	०५	०६:५१	०६:१७	१०	१७	२१	मार्च ०१	धनु १६:२७	
२८	३८	१०	मं.	५४	४५	२८	४४	मू.	३१	३२	१९	२७	सि.	४३	१०	व.	२१	२५	०६:५०	०६:१८	११	१८	२२	०२	धनु	गण्डमूल समा. १९:२७, (B)
२८	४२	११	बु.	६०	००	–	–	पू.षा.	३९	२२	२२	३४	व्य.	४५	४२	ब.	२८	०७	०६:४९	०६:१८	१२	१९	२३	०३	मकर २९:२०	बुध मार्गी १८:०२
२८	४७	११	गु.	०१	३०	०७	२४	उ.षा.	४६	५७	२५	३५	व.	४८	००	बा.	०१	३०	०६:४८	०६:१९	१३	२०	२४	०४	मकर	शुक्र श्रवण में २५:३९, विजया एकादशी व्रत (स.)।
२८	५२	१२	शु.	०७	४७	०९	५४	श्र.	५३	५२	२८	२०	प.	४९	४७	तै.	०७	४७	०६:४७	०६:१९	१४	२१	२५	०५	मकर	सूर्य पू.भा. में ०६:५७, प्रदोष व्रत।
२८	५५	१३	श.	१३	१२	१२	०३	ध.	५९	१७	३०	४१	शि.	५०	४५	व.	१३	१२	०६:४६	०६:२०	१५	२२	२६	०६	कुम्भ १७:३४	भद्रा १२:०४ से २४:५० तक, (C)
२८	५९	१४	र.	१७	३२	१३	४६	श.	६०	००	-	-	सि.	५०	४७	श.	१७	३२	०६:४५	०६:२०	१६	२३	२७	०७	कुम्भ	महाशिवरात्रि व्रत पारणा।
२९	०४	३०	सो.	२०	४०	१४	५९	श.	०४	४७	०८	३४	सा.	५०	००	ना.	२०	४०	०६:४३	०६:२१	१७	२४	२८	०८	मीन २७:४०	सोमवती अमावस्या, युगादि अमावस्या।

(A) बुध (व) मकर में २८:४०, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:५८, अर्घ्यदान २१:४९ के बाद। (B) भद्रा १५:२५ से २८:४४ तक, महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती। (C) पञ्चक प्रा. १७:३५ से, महाशिवरात्रि व्रत।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०७	०४	०९	०३	०९	११	०९	०३
अं.	१४	१२	०३	२७	२५	०४	१८	२५	२५
क.	५७	५७	१५	२२	३७	१७	४३	३१	३१
वि.	४०	११	४४	२५	२४	५४	३८	५२	५२
गति	६० १६	७२४ १७	२२ व १६	२० व ३७	०७ व ०५	७१ ०९	०६ ४५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	शत. ३ च.	अनु. ३ च.	मघा. १ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ३ च.	उ.षा. ३ च.	रेव. १ च.	धनि. १ च.	आश्ले. ३ च.

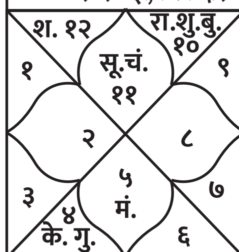
२८ फरवरी २०२७ ई., प्रातः ६:२७



फाल्गुन कृ. ८, रविवार

इस मास में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार हैं और मीन संक्रान्ति भी सोमवार को है, अतः समाज में असमञ्जस की स्थिति रहेगी। चन्ना, जौ, गेहूँ के भाव तेज होकर मन्दे रहेंगे। ज्वार, बाजरा, अलसी, तिल, सरसों, राई के भाव मन्दे रहेंगे। लोहा, जस्ता, ताँबा, मसाले तथा मेवे के भावों में घटा बढ़ी रहेगी।

०८ मार्च २०२७ ई., प्रातः ६:२७



फाल्गुन कृ. ३०, सोमवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	१०	०४	०९	०३	०९	११	०९	०३
अं.	२२	१८	००	२७	२४	१३	१९	२५	२५
क.	५९	५३	३१	४२	४३	४८	३८	०६	०६
वि.	०३	३६	०४	१६	४६	४८	०४	२६	२६
गति	६० ०२	७५४ ३५	१८ व ०५	२८ मा २३	०६ व १०	७१ ३६	०७ ०३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पू.भा. १ च.	शत. ४ च.	मघा. १ च.	धनि. २ च.	आश्ले. ३ च.	श्रव. २ च.	रेव. १ च.	धनि. १ च.	आश्ले. ३ च.

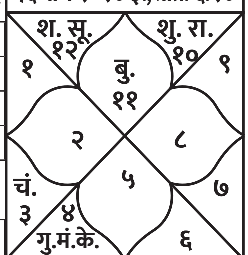
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, फाल्गुन शुक्ल पक्ष (दि. ०९ मार्च से २२ मार्च २०२७ ई.), उत्तरायण, दक्षिण/उत्तर गोल, वसन्त ऋतु, के. अहर्गण ५८१५, अयनांश २४°/१४'/२४"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२९	०८	**१**	मं.	२२	२५	१५	४०	पू.भा.	०८	१०	०९	५८	शुभ	४८	०७	ब.	२२	२५	०६:४२	०६:२२	फाल्गुन १८	फाल्गुन **२५**	रम. २९	**मार्च ०९**	मीन	वक्री मङ्गल आश्लेषा/ कर्क राशि में २४:१३
२९	१२	**२**	बु.	२२	५७	१५	५३	उ.भा.	१०	२७	१०	५२	शु.	४५	२२	कौ.	२२	५७	०६:४१	०६:२२	१९	**२६**	सव्वा. **०१**	**१०**	मीन	गण्डमूल प्रा. १०:५३, (A)
२९	१७	**३**	गु.	२२	२२	१५	३७	रे.	११	३७	११	१९	ब्र.	४१	४२	ग.	२२	२२	०६:४०	०६:२३	२०	**२७**	०२	**११**	मेष ११:१९	भद्रा २७:२० से, बुध कुम्भ में २९:०७, (B)
२९	२१	**४**	शु.	२०	४५	१४	५७	अ.	११	५७	११	२२	ऐं	३७	१७	वि.	२०	२०	०६:३९	०६:२४	२१	**२८**	०३	**१२**	मेष	गण्डमूल समा. ११:२२, भद्रा १४:५७ तक, (C)
२९	२५	**५**	श.	१८	१०	१३	५४	भ.	११	००	११	०२	वै.	३२	१०	बा.	१८	१०	०६:३८	०६:२४	२२	**२९**	०४	**१३**	वृष १६:५४	
२९	३०	**६**	र.	१४	४७	१२	३२	कृ.	०९	२५	१०	२३	विष्कं	२६	२२	तै.	१४	४७	०६:३७	०६:२५	२३	**३०**	०५	**१४**	वृष	रोहिणी व्रत।
२९	३४	**७**	सो.	१०	४५	१०	५१	रो.	०७	१०	०९	२६	प्री.	२०	०५	व.	१०	४५	०६:३४	०६:२६	२४	चैत्र **०१**	०६	**१५**	मिथुन २०:५१	भद्रा १०:५१ से २१:५५ तक, शुक्र धनिष्ठा में ३०:३१,(D)
२९	३८	**८**	मं.	०५	५०	०८	५४	मृ.	०४	०५	०८	१२	आ.	१३	१०	ब.	०५	५०	०६:३४	०६:२६	२५	**०२**	०७	**१६**	मिथुन	ओली जैन प्रा., होलाष्टक प्रा.।
२९	४३	**९ १०**	बु.	०० ५४	२५ ३२	०६ २८	४३ २२	आ. पुन.	०० ५६	३० २५	०६ २९	४५ ०७	सौ. शो.	०५ ५८	५० ०५	कौ.	००	२५	०६:३३	०६:२६	२६	**०३**	०८	**१७**	कर्क २३:३२	
२९	४७	**११**	गु.	४८	१७	२५	५१	पु.	५२	००	२७	२०	अ.	५०	०५	व.	२१	२७	०६:३२	०६:२७	२७	**०४**	०९	**१८**	कर्क	गण्डमूल प्रा. २७:२१, भद्रा १५:०७ से २५:५१ तक, (E)
२९	५१	**१२**	शु.	४१	५५	२३	१७	आश्ले.	४७	३०	२५	३१	सु.	४२	००	ब.	१५	०७	०६:३१	०६:२८	२८	**०५**	१०	**१९**	सिंह २५:३१	बुध शतभिषा में ११:५६, (F)
२९	५६	**१३**	श.	३५	३७	२०	४५	म.	४३	०५	२३	४४	धृ.	३३	५७	कौ.	०८	४५	०६:३०	०६:२८	२९	**०६**	११	**२०**	सिंह	गण्डमूल समा. २३:४४, शनि प्रदोष व्रत, (G)।
३०	००	**१४**	र.	२९	४२	१८	२१	पू.फा.	३९	०५	२२	०६	शू.	२६	१५	ग.	०२	४०	०६:२८	०६:२८	३०	**०७**	१२	**२१**	कन्या २७:४४	भद्रा १८:२२ से २९:१५ तक, शुक्र कुम्भ में १८:५१,(H)
३०	०५	**१५**	सो.	२४	२५	१६	२३	उ.फा.	३५	४५	२०	४५	ग.	१९	००	ब.	२४	२५	०६:२७	०६:२९	चैत्र **०१**	**०८**	१३	**२२**	कन्या	राष्ट्रीय चैत्र प्रा., होलाष्टक समा., सत्यव्रत, (I)

(A) मु. सव्वाल प्रा., चन्द्रदर्शन, फुलैरा दोज, रामकृष्ण परमहंस जयन्ती। (B) पञ्चक समा. ११:२० (C) विनायक चतुर्थी। (D) मीन संक्रान्ति ०७:०० बजे, सं. पुण्यकाल ०७:०० बजे से १३:२४ बजे तक, दुर्गाष्टमी। (E) सूर्य उ.भा. में १८:२०, आमलकी (रङ्गभरी) एकादशी व्रत (स्मा.+वै.)। (F) आमलकी (रङ्गभरी) एकादशी व्रत (नि.), गोविन्द द्वादशी। (G) सायन सूर्य मेष में २५:५२, विषुवद् दिन, उत्तर गोल प्रारम्भ (H) पूर्णिमा व्रत। (I) चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, ओली जैन समा., मन्वादि, होलिका दहन प्रदोषकाल में ।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०२	०३	१०	०३	०९	११	०९	०३
अं.	००	०५	२८	०३	२३	२३	२०	२४	२४
क.	५८	३७	२५	२३	५८	२२	३६	४१	४१
वि.	२६	४४	४४	१८	२६	४७	०४	००	००
गति	६० ४६	८५१ १२	१२ व. २१	५७ ५८	०४ व. ५९	७१ ५५	०७ १८	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पू.भा. ४ च.	मृ. ४ च.	आश्ले. ४ च.	धनि. ४ च.	आश्ले. ३ च.	धनि. १ च.	रेव. २ च.	धनि. १ च.	आश्ले. ३ च.

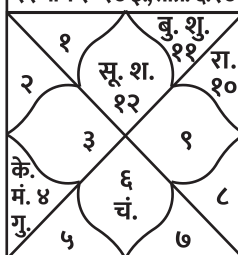
१६ मार्च २०२७ ई., प्रात: ६:२७



फाल्गुन शु. ८, मंगलवार

इस मास में शुक्र-बुध-राहू की युति उनका गुरु-केतु के साथ सप्तक, सूर्य से द्विर्दादश तथा मंगल से षडष्टक योग होने के कारण विश्व के कई देशों में राजनैतिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों में खींचतान रहेगी। मँहगाई एवं राजनैतिक मुद्दों के आधार पक्ष-विपक्ष में घमासान होने की सम्भावना है।

२२ मार्च २०२७ ई., प्रात: ६:२७



फाल्गुन शु. १५, सोमवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०५	०३	१०	०३	१०	११	०९	०३
अं.	०६	०१	२७	०९	२३	००	२२	२४	२४
क.	५६	३५	२३	४९	३०	३०	२०	२१	२१
वि.	२६	५१	१६	०४	५९	५०	११	५५	५५
गति	५९ ३२	८४२ ०८	०७ व. ४२	७२ १६	०३ व. ५९	७२ ०७	०७ २५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.भा. २ च.	उ.फा. २ च.	आश्ले. ४ च.	शत. १ च.	आश्ले. ३ च.	धनि. ३ च.	रेव. २ च.	धनि. १ च.	आश्ले. ३ च.

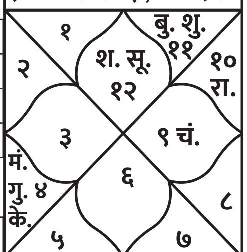
वि. सं. २०८३, शाके १९४८, चैत्र कृष्ण पक्ष (दि. २३ मार्च से ०६ अप्रैल २०२७ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु, के. अहर्गण ५८२९, अयनांश २४°/१४'/२६''

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३०	१०	**१**	मं.	२०	०५	१४	२८	ह.	३३	२७	१९	४९	वृ.	१२	३२	कौ.	२०	०५	०६:२६	०६:३०	चैत्र. ०२	चैत्र. **०९**	सब्वा. १४	मार्च **२३**	कन्या	आम्रकलिका प्राशन, वसन्तोत्सव, धुलैण्डी, धूलिवन्दन।
३०	१५	**२**	बु.	१७	०२	१३	१४	चि.	३२	३०	१९	२५	ध्रु.	०७	०५	ग.	१७	०२	०६:२५	०६:३०	०३	**१०**	१५	**२४**	तुला ०७:३३	भद्रा २४:५१ से, शनि अस्त २३:५५
३०	१८	**३**	गु.	१५	३०	१२	३७	स्वा.	३३	०२	१९	३९	व्या. ह.	०२ ५९	४२ ४७	वि.	१५	३०	०६:२३	०६:३१	०४	**११**	१६	**२५**	तुला	भद्रा १२:३८ तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:४४ ।
३०	२२	**४**	शु.	१५	५५	१२	४३	वि.	३५	३२	२०	३५	व.	५८	२५	बा.	१५	५५	०६:२२	०६:३१	०५	**१२**	१७	**२६**	वृश्चिक १४:१७	गुड फ्राईडे।
३०	२७	**५**	श.	१८	००	१३	३३	अ.	३९	४२	२२	१४	सि.	५८	२०	तै.	१८	२५	०६:२१	०६:३२	०६	**१३**	१८	**२७**	वृचिक	गण्डमूल प्रा. २२:१५, शुक्र शतभिषा में ०७:५१, (A)
३०	३१	**६**	र.	२१	५२	१५	०५	ज्ये.	४५	२७	२४	३१	व्य.	५९	२७	व.	२१	५२	०६:२०	०६:३३	०७	**१४**	१९	**२८**	धनु २४:३१	भद्रा १५:०५ से, २८:०४ तक, एकनाथ षष्ठी।
३०	३५	**७**	सो.	२७	१०	१७	११	मू.	५२	२७	२७	१८	व.	६०	००	ब.	२७	१०	०६:१९	०६:३३	०८	**१५**	२०	**२९**	धनु	गण्डमूल समा. २७:१८, बुध पू.भा में २५:०३, (B)
३०	४०	**८**	मं.	३३	२५	१९	४०	पू.षा.	६०	००	-	-	व.	०१	३०	कौ.	३३	२५	०६:१८	०६:३३	०९	**१६**	२१	**३०**	धनु	शीतलाष्टमी, बासोडा, मेला नवचण्डी, समा. (मेरठ)।
३०	४४	**९**	बु.	४०	००	२२	१६	पू.षा.	००	१२	०६	२१	प.	०४	०२	तै.	०६	४५	०६:१६	०६:३४	१०	**१७**	२२	**३१**	मकर १३:०७	सूर्य रेवती में २६:१३, तीर्थकर ऋषभदेव जन्म कल्याणक।
३०	४८	**१०**	गु.	४६	१५	२४	४५	उ.षा.	०७	५५	०९	२५	शि.	०६	३२	व.	१३	१२	०६:१५	०६:३५	११	**१८**	२३	अप्रै. **०१**	मकर	भद्रा ११:३३ से २४:४५ तक, मङ्गल मार्गी १९:३८, (C)
३०	५२	**११**	शु.	५१	३५	२६	५२	श्र.	१५	०५	१२	१६	सि.	०८	३५	ब.	१९	०५	०६:१४	०६:३५	१२	**१९**	२४	**०२**	कुम्भ २५:३२	पञ्चक प्रा. २५:३३, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.वै.)
३०	५७	**१२**	श.	५५	३२	२८	२६	ध.	२१	१०	१४	४१	सा.	०९	५२	कौ.	२३	४५	०६:१३	०६:३६	१३	**२०**	२५	**०३**	कुम्भ	पापमोचिनी एकादशी व्रत (नि.)।
३१	०१	**१३**	र.	५७	५८	२९	२३	श.	२५	५२	१६	३३	शुभ	१०	०२	ग.	२६	५०	०६:१२	०६:३६	१४	**२१**	२६	**०४**	कुम्भ	भद्रा २९:२३ से, प्रदोष व्रत।
३१	०५	**१४**	सो.	५८	४२	२९	४०	पू.भा.	२८	५७	१७	४६	शु.	०९	००	वि.	२८	३२	०६:११	०६:३७	१५	**२२**	२७	**०५**	मीन ११:३१	भद्रा १७:३८ तक, बुध मीन में १६:१६, मासशिवरात्रि।
३१	०९	**३०**	मं.	५७	५५	२९	२०	उ.भा.	३०	३२	१८	२३	ब्र.	०६	४२	चतु.	२८	२२	०६:१०	०६:३७	१६	**२३**	२८	**०६**	मीन	गण्डमूल प्रा. १८:२३, भौमवती अमावस्या, (D)

(A) रंग पंचमी, मेला नवचण्डी प्रा. (मेरठ)। (B) कालाष्टमी। (C) उत्कल दिवस। (D) मेला (पृथूदक पेह्वा) हरियाणा, वि.संवत् २०८३ समा.।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०८	०३	१०	०३	१०	११	०९	०३
अं.	१४	१४	२६	२०	२३	१०	२२	२३	२३
क.	५१	५३	४३	१९	०४	१२	१९	५६	५६
वि.	५२	२३	३४	१४	०१	४५	५९	२९	२९
गति	५९ १८	७०९ ३३	०१ व ३२	८६ २७	०२ व ३४	७२ २२	०७ ३२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.भा. ४ च.	पू.षा. १ च.	आश्ले. ४ च.	पू.भा. १ च.	आश्ले. २ च.	शत. २ च.	रेव. २ च.	धनि. १ च.	आश्ले. ३ च.

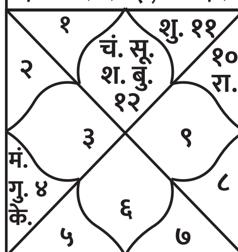
३० मार्च २०२७ ई., प्रातः ६:२७



चैत्र कृ. ८, मंगलवार

इस मास में सूर्य-बुध-शनि की युति उनका शुक्र के साथ द्विर्दादश तथा मंगल-गुरु-केतु के साथ नवम-पञ्चम योग तथा गुरु-मंगल-केतु का शुक्र से षडष्टक सम्बन्ध होने के कारण विश्व के कई देशों के राजनयिक सम्बन्धों में दरार पड़ने की सम्भावना है। विश्व के अनेक स्थानों पर हिंसक तथा साम्प्रदायिक घटनायें घटित होंगी।

०६ अप्रैल २०२७ ई., प्रातः ६:२७



चैत्र कृ. ३०, मंगलवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	११	०३	११	०३	१०	११	०९	०३
अं.	२१	१०	२६	००	२२	१८	२३	२३	२३
क.	४६	०९	४८	५६	५०	३९	१२	३४	३४
वि.	१८	३३	१८	४०	०१	५१	५२	१४	१४
गति	५९ ०४	७८९ ४८	०३ ३३	९७ ०४	०१ व. १५	७२ ३२	०७ ३४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	रेव. २ च.	उ.भा. ३ च.	आश्ले. ४ च.	पू.भा. ४ च.	आश्ले. २ च.	शत. ४ च.	रेव. २ च.	धनि. १ च.	आश्ले. ३ च.

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, अप्रैल २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	बुध	११ १७ ०५ २३	०५ ०४ ४५ ५७	१० २८ ५५ २५	१० १९ ३० २०	०२ २१ ३३ २९	०० ०७ २७ ५४	११ ११ १९ ३८	१० १३ १० ३९	०४ १३ १० ३९
२	गुरु	११ १८ ०४ ३५	०५ १७ २८ २५	१० २९ ४२ २०	१० २० २२ ४६	०२ २१ ३७ २९	०० ०८ ४१ ४५	११ ११ २७ ०६	१० १३ ०७ २८	०४ १३ ०७ २८
३	शुक्र	११ १९ ०३ ४४	०५ २९ ५९ १०	११ ०० २९ १४	१० २१ १८ १६	०२ २१ ४१ ३९	०० ०९ ५५ ३३	११ ११ ३४ ३३	१० १३ ०४ १८	०४ १३ ०४ १८
४	शनि	११ २० ०२ ५२	०६ १२ १८ ४५	११ ०१ १६ ०७	१० २२ १६ ४२	०२ २१ ४६ ००	०० ११ ०९ २०	११ ११ ४१ ५९	१० १३ ०१ ०७	०४ १३ ०१ ०७
५	रवि	११ २१ ०१ ५७	०६ २४ २८ १२	११ ०२ ०२ ५८	१० २३ १७ ५३	०२ २१ ५० ३०	०० १२ २३ ०४	११ ११ ४९ २५	१० १२ ५७ ५६	०४ १२ ५७ ५६
६	सोम	११ २२ ०१ ०१	०७ ०६ २९ १३	११ ०२ ४९ ४८	१० २४ २१ ४३	०२ २१ ५५ ११	०० १३ ३६ ४६	११ ११ ५६ ५०	१० १२ ५४ ४५	०४ १२ ५४ ४५
७	मंगल	११ २३ ०० ०३	०७ १८ २४ १४	११ ०३ ३६ ३६	१० २५ २८ ०३	०२ २२ ०० ०२	०० १४ ५० २६	११ १२ ०४ १५	१० १२ ५१ ३५	०४ १२ ५१ ३५
८	बुध	११ २३ ५९ ०३	०८ ०० १६ २७	११ ०४ २३ २३	१० २६ ३६ ४७	०२ २२ ०५ ०२	०० १६ ०४ ०४	११ १२ ११ ३९	१० १२ ४८ २४	०४ १२ ४८ २४
९	गुरु	११ २४ ५८ ०१	०८ १२ ०९ ४७	११ ०५ १० ०९	१० २७ ४७ ५०	०२ २२ १० १२	०० १७ १७ ४०	११ १२ १९ ०१	१० १२ ४५ १३	०४ १२ ४५ १३
१०	शुक्र	११ २५ ५६ ५७	०८ २४ ०८ ४१	११ ०५ ५६ ५३	१० २९ ०१ ०५	०२ २२ १५ ३२	०० १८ ३१ १३	११ १२ २६ २३	१० १२ ४२ ०२	०४ १२ ४२ ०२
११	शनि	११ २६ ५५ ५२	०९ ०६ १८ ०१	११ ०६ ४३ ३५	११ ०० १६ २८	०२ २२ २१ ०१	०० १९ ४४ ४४	११ १२ ३३ ४४	१० १२ ३८ ५२	०४ १२ ३८ ५२
१२	रवि	११ २७ ५४ ४५	०९ १८ ४२ ४३	११ ०७ ३० १५	११ ०१ ३३ ५५	०२ २२ २६ ४०	०० २० ५८ १३	११ १२ ४१ ०४	१० १२ ३५ ४१	०४ १२ ३५ ४१
१३	सोम	११ २८ ५३ ३६	१० ०१ २७ २३	११ ०८ १६ ५४	११ ०२ ५३ २१	०२ २२ ३२ २९	०० २२ ११ ४०	११ १२ ४८ २३	१० १२ ३२ ३०	०४ १२ ३२ ३०
१४	मंगल	११ २९ ५२ २६	१० १४ ३५ ४७	११ ०९ ०३ ३२	११ ०४ १४ ४४	०२ २२ ३८ २६	०० २३ २५ ०५	११ १२ ५५ ४०	१० १२ २९ १९	०४ १२ २९ १९
१५	बुध	०० ०० ५१ १४	१० २८ १० १८	११ ०९ ५० ०७	११ ०५ ३८ ००	०२ २२ ४४ ३३	०० २४ ३८ २७	११ १३ ०२ ५६	१० १२ २६ ०८	०४ १२ २६ ०८
१६	गुरु	०० ०१ ५० ००	११ १२ ११ ०७	११ १० ३६ ४०	११ ०७ ०३ ०८	०२ २२ ५० ४८	०० २५ ५१ ४७	११ १३ १० ११	१० १२ २२ ५८	०४ १२ २२ ५८
१७	शुक्र	०० ०२ ४८ ४४	११ २६ ३५ ४९	११ ११ २३ १२	११ ०८ ३० ०४	०२ २२ ५७ १३	०० २७ ०५ ०५	११ १३ १७ २५	१० १२ १९ ४७	०४ १२ १९ ४७
१८	शनि	०० ०३ ४७ २६	०० ११ १९ ०७	११ १२ ०९ ४२	११ ०९ ५८ ४७	०२ २३ ०३ ४७	०० २८ १८ २१	११ १३ २४ ३७	१० १२ १६ ३६	०४ १२ १६ ३६
१९	रवि	०० ०४ ४६ ०६	०० २६ १३ १९	११ १२ ५६ ०९	११ ११ २९ १६	०२ २३ १० २९	०० २९ ३१ ३४	११ १३ ३१ ४७	१० १२ १३ २५	०४ १२ १३ २५
२०	सोम	०० ०५ ४४ ४४	०१ ११ ०९ ३१	११ १३ ४२ ३४	११ १३ ०१ २९	०२ २३ १७ २०	०१ ०० ४४ ४४	११ १३ ३८ ५६	१० १२ १० १५	०४ १२ १० १५
२१	मंगल	०० ०६ ४३ २०	०१ २५ ५८ ५९	११ १४ २८ ५७	११ १४ ३५ २५	०२ २३ २४ २०	०१ ०१ ५७ ५२	११ १३ ४६ ०३	१० १२ ०७ ०४	०४ १२ ०७ ०४
२२	बुध	०० ०७ ४१ ५४	०२ १० ३४ ३९	११ १५ १५ १८	११ १६ ११ ०५	०२ २३ ३१ २८	०१ ०३ १० ५७	११ १३ ५३ ०९	१० १२ ०३ ५३	०४ १२ ०३ ५३
२३	गुरु	०० ०८ ४० २६	०२ २४ ५१ ५२	११ १६ ०१ ३७	११ १७ ४८ २७	०२ २३ ३८ ४४	०१ ०४ २४ ००	११ १४ ०० १२	१० १२ ०० ४२	०४ १२ ०० ४२
२४	शुक्र	०० ०९ ३८ ५५	०३ ०८ ४८ ३६	११ १६ ४७ ५३	११ १९ २७ ३१	०२ २३ ४६ ०८	०१ ०५ ३७ ००	११ १४ ०७ १४	१० ११ ५७ ३१	०४ ११ ५७ ३१
२५	शनि	०० १० ३७ २३	०३ २२ २४ ५७	११ १७ ३४ ०७	११ २१ ०८ १८	०२ २३ ५३ ४१	०१ ०६ ४९ ५६	११ १४ १४ १४	१० ११ ५४ २१	०४ ११ ५४ २१
२६	रवि	०० ११ ३५ ४८	०४ ०५ ४२ ३०	११ १८ २० १८	११ २२ ५० ४८	०२ २४ ०१ २१	०१ ०८ ०२ ५०	११ १४ २१ ११	१० ११ ५१ १०	०४ ११ ५१ १०
२७	सोम	०० १२ ३४ ११	०४ १८ ४३ ३४	११ १९ ०६ २७	११ २४ ३५ ०१	०२ २४ ०९ ०९	०१ ०९ १५ ४२	११ १४ २८ ०७	१० ११ ४७ ५९	०४ ११ ४७ ५९
२८	मंगल	०० १३ ३२ ३२	०५ ०१ ३० ३६	११ १९ ५२ ३४	११ २६ २० ५८	०२ २४ १७ ०५	०१ १० २८ ३०	११ १४ ३५ ०१	१० ११ ४४ ४८	०४ ११ ४४ ४८
२९	बुध	०० १४ ३० ५१	०५ १४ ०५ ४९	११ २० ३८ ३८	११ २८ ०८ ३९	०२ २४ २५ ०८	०१ ११ ४१ १५	११ १४ ४१ ५२	१० ११ ४१ ३८	०४ ११ ४१ ३८
३०	गुरु	०० १५ २९ ०८	०५ २६ ३० ५९	११ २१ २४ ४०	११ २९ ५८ ०४	०२ २४ ३३ १९	०१ १२ ५३ ५७	११ १४ ४८ ४१	१० ११ ३८ २७	०४ ११ ३८ २७

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, मई २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	शुक्र	०० १६ २७ २३	०६ ०८ ४७ २८	११ २२ १० ३९	०० ०१ ४९ १४	०२ २४ ४१ ३७	०१ १४ ०६ ३७	११ १४ ५५ २८	१० ११ ३५ १६	०४ ११ ३५ १६
२	शनि	०० १७ २५ ३७	०६ २० ५६ २१	११ २२ ५६ ३६	०० ०३ ४२ ०९	०२ २४ ५० ०३	०१ १५ १९ १३	११ १५ ०२ १२	१० ११ ३२ ०५	०४ ११ ३२ ०५
३	रवि	०० १८ २३ ४८	०७ ०२ ५८ ३७	११ २३ ४२ ३०	०० ०५ ३६ ४८	०२ २४ ५८ ३५	०१ १६ ३१ ४७	११ १५ ०८ ५४	१० ११ २८ ५५	०४ ११ २८ ५५
४	सोम	०० १९ २१ ५८	०७ १४ ५५ २८	११ २४ २८ २२	०० ०७ ३३ १२	०२ २५ ०७ १५	०१ १७ ४४ १७	११ १५ १५ ३४	१० ११ २५ ४४	०४ ११ २५ ४४
५	मंगल	०० २० २० ०७	०७ २६ ४८ २९	११ २५ १४ १२	०० ०९ ३१ १९	०२ २५ १६ ०१	०१ १८ ५६ ४५	११ १५ २२ ११	१० ११ २२ ३३	०४ ११ २२ ३३
६	बुध	०० २१ १८ १३	०८ ०८ ३९ ५४	११ २५ ५९ ५९	०० ११ ३१ ०७	०२ २५ २४ ५५	०१ २० ०९ १०	११ १५ २८ ४६	१० ११ १९ २२	०४ ११ १९ २२
७	गुरु	०० २२ १६ १९	०८ २० ३२ ४०	११ २६ ४५ ४३	०० १३ ३२ ३४	०२ २५ ३३ ५५	०१ २१ २१ ३२	११ १५ ३५ १८	१० ११ १६ ११	०४ ११ १६ ११
८	शुक्र	०० २३ १४ २३	०९ ०२ ३० ३०	११ २७ ३१ २५	०० १५ ३५ ३७	०२ २५ ४३ ०१	०१ २२ ३३ ५०	११ १५ ४१ ४७	१० ११ १३ ०१	०४ ११ १३ ०१
९	शनि	०० २४ १२ २५	०९ १४ ३७ ४५	११ २८ १७ ०४	०० १७ ४० ११	०२ २५ ५२ १५	०१ २३ ४६ ०६	११ १५ ४८ १३	१० ११ ०९ ५०	०४ ११ ०९ ५०
१०	रवि	०० २५ १० २६	०९ २६ ५९ १६	११ २९ ०२ ४१	०० १९ ४६ १०	०२ २६ ०१ ३५	०१ २४ ५८ १९	११ १५ ५४ ३७	१० ११ ०६ ३९	०४ ११ ०६ ३९
११	सोम	०० २६ ०८ २६	१० ०९ ४० ०५	११ २९ ४८ १५	०० २१ ५३ २७	०२ २६ ११ ०१	०१ २६ १० २९	११ १६ ०० ५८	१० ११ ०३ २८	०४ ११ ०३ २८
१२	मंगल	०० २७ ०६ २५	१० २२ ४४ ५०	०० ०० ३३ ४७	०० २४ ०१ ५३	०२ २६ २० ३३	०१ २७ २२ ३६	११ १६ ०७ १५	१० ११ ०० १८	०४ ११ ०० १८
१३	बुध	०० २८ ०४ २२	११ ०६ १७ १०	०० ०१ १९ १६	०० २६ ११ १८	०२ २६ ३० १२	०१ २८ ३४ ४०	११ १६ १३ ३०	१० १० ५७ ०७	०४ १० ५७ ०७
१४	गुरु	०० २९ ०२ १८	११ २० १८ ५०	०० ०२ ०४ ४२	०० २८ २१ ३१	०२ २६ ३९ ५७	०१ २९ ४६ ४१	११ १६ १९ ४२	१० १० ५३ ५६	०४ १० ५३ ५६
१५	शुक्र	०१ ०० ०० १३	०० ०४ ४८ ४८	०० ०२ ५० ०५	०१ ०० ३२ १८	०२ २६ ४९ ४८	०२ ०० ५८ ३९	११ १६ २५ ५०	१० १० ५० ४५	०४ १० ५० ४५
१६	शनि	०१ ०० ५८ ०६	०० १९ ४२ ३०	०० ०३ ३५ २५	०१ ०२ ४३ २४	०२ २६ ५९ ४४	०२ ०२ १० ३३	११ १६ ३१ ५६	१० १० ४७ ३५	०४ १० ४७ ३५
१७	रवि	०१ ०१ ५५ ५८	०१ ०४ ५१ ५८	०० ०४ २० ४२	०१ ०४ ५४ ३५	०२ २७ ०९ ४७	०२ ०३ २२ २५	११ १६ ३७ ५८	१० १० ४४ २४	०४ १० ४४ २४
१८	सोम	०१ ०२ ५३ ४९	०१ २० ०६ ४५	०० ०५ ०५ ५६	०१ ०७ ०५ ३२	०२ २७ १९ ५५	०२ ०४ ३४ १३	११ १६ ४३ ५६	१० १० ४१ १३	०४ १० ४१ १३
१९	मंगल	०१ ०३ ५१ ३८	०२ ०५ १५ ४७	०० ०५ ५१ ०८	०१ ०९ १६ ००	०२ २७ ३० ०९	०२ ०५ ४५ ५८	११ १६ ४९ ५२	१० १० ३८ ०२	०४ १० ३८ ०२
२०	बुध	०१ ०४ ४९ २५	०२ २० ०९ २२	०० ०६ ३६ १६	०१ ११ २५ ४१	०२ २७ ४० २८	०२ ०६ ५७ ३९	११ १६ ५५ ४३	१० १० ३४ ५१	०४ १० ३४ ५१
२१	गुरु	०१ ०५ ४७ ११	०३ ०४ ४० ३८	०० ०७ २१ २१	०१ १३ ३४ १९	०२ २७ ५० ५३	०२ ०८ ०९ १७	११ १७ ०१ ३१	१० १० ३१ ४१	०४ १० ३१ ४१
२२	शुक्र	०१ ०६ ४४ ५५	०३ १८ ४६ ०९	०० ०८ ०६ २२	०१ १५ ४१ ३७	०२ २८ ०१ २३	०२ ०९ २० ५१	११ १७ ०७ १६	१० १० २८ ३०	०४ १० २८ ३०
२३	शनि	०१ ०७ ४२ ३८	०४ ०२ २५ ३३	०० ०८ ५१ २१	०१ १७ ४७ २२	०२ २८ ११ ५८	०२ १० ३२ २१	११ १७ १२ ५७	१० १० २५ १९	०४ १० २५ १९
२४	रवि	०१ ०८ ४० १८	०४ १५ ४० ४६	०० ०९ ३६ १६	०१ १९ ५१ १९	०२ २८ २२ ३८	०२ ११ ४३ ४८	११ १७ १८ ३४	१० १० २२ ०८	०४ १० २२ ०८
२५	सोम	०१ ०९ ३७ ५८	०४ २८ ३५ ०२	०० १० २१ ०८	०१ २१ ५३ १७	०२ २८ ३३ २४	०२ १२ ५५ १०	११ १७ २४ ०८	१० १० १८ ५८	०४ १० १८ ५८
२६	मंगल	०१ १० ३५ ३६	०५ ११ १२ ०५	०० ११ ०५ ५७	०१ २३ ५३ ०४	०२ २८ ४४ १४	०२ १४ ०६ २९	११ १७ २९ ३७	१० १० १५ ४७	०४ १० १५ ४७
२७	बुध	०१ ११ ३३ १२	०५ २३ ३५ ३४	०० ११ ५० ४२	०१ २५ ५० ३३	०२ २८ ५५ ०८	०२ १५ १७ ४३	११ १७ ३५ ०३	१० १० १२ ३६	०४ १० १२ ३६
२८	गुरु	०१ १२ ३० ४७	०६ ०५ ४८ ४५	०० १२ ३५ २४	०१ २७ ४५ ३५	०२ २९ ०६ ०८	०२ १६ २८ ५३	११ १७ ४० २५	१० १० ०९ २५	०४ १० ०९ २५
२९	शुक्र	०१ १३ २८ २१	०६ १७ ५४ १६	०० १३ २० ०३	०१ २९ ३८ ०५	०२ २९ १७ १२	०२ १७ ३९ ५९	११ १७ ४५ ४३	१० १० ०६ १४	०४ १० ०६ १४
३०	शनि	०१ १४ २५ ५३	०६ २९ ५४ ११	०० १४ ०४ ३९	०२ ०१ २७ ५६	०२ २९ २८ २०	०२ १८ ५१ ०१	११ १७ ५० ५७	१० १० ०३ ०४	०४ १० ०३ ०४
३१	रवि	०१ १५ २३ २५	०७ ११ ५० ०६	०० १४ ४९ १२	०२ ०३ १५ ०६	०२ २९ ३९ ३३	०२ २० ०१ ५९	११ १७ ५६ ०६	१० ०९ ५९ ५३	०४ ०९ ५९ ५३

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, जून २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	सोम	०१ १६ २० ५५	०७ २३ ४३ २५	०० १५ ३३ ४१	०२ ०४ ५९ ३१	०२ २९ ५० ५०	०२ २१ १२ ५२	११ १८ ०१ १२	१० ०९ ५६ ४२	०४ ०९ ५६ ४२
२	मंगल	०१ १७ १८ २४	०८ ०५ ३५ २८	०० १६ १८ ०७	०२ ०६ ४१ ०८	०३ ०० ०२ १२	०२ २२ २३ ४१	११ १८ ०६ १४	१० ०९ ५३ ३१	०४ ०९ ५३ ३१
३	बुध	०१ १८ १५ ५२	०८ १७ २७ ५५	०० १७ ०२ ३०	०२ ०८ १९ ५५	०३ ०० १३ ३७	०२ २३ ३४ २५	११ १८ ११ ११	१० ०९ ५० २१	०४ ०९ ५० २१
४	गुरु	०१ १९ १३ २०	०८ २९ २२ ५३	०० १७ ४६ ४९	०२ ०९ ५५ ५१	०३ ०० २५ ०७	०२ २४ ४५ ०५	११ १८ १६ ०४	१० ०९ ४७ १०	०४ ०९ ४७ १०
५	शुक्र	०१ २० १० ४६	०९ ११ २३ ०८	०० १८ ३१ ०६	०२ ११ २८ ५३	०३ ०० ३६ ४१	०२ २५ ५५ ४१	११ १८ २० ५३	१० ०९ ४३ ५९	०४ ०९ ४३ ५९
६	शनि	०१ २१ ०८ १२	०९ २३ ३२ ०६	०० १९ १५ १९	०२ १२ ५९ ०१	०३ ०० ४८ १८	०२ २७ ०६ १२	११ १८ २५ ३७	१० ०९ ४० ४८	०४ ०९ ४० ४८
७	रवि	०१ २२ ०५ ३७	१० ०५ ५३ ५२	०० १९ ५९ २९	०२ १४ २६ ११	०३ ०१ ०० ००	०२ २८ १६ ३९	११ १८ ३० १७	१० ०९ ३७ ३८	०४ ०९ ३७ ३८
८	सोम	०१ २३ ०३ ०२	१० १८ ३२ ५६	०० २० ४३ ३५	०२ १५ ५० २४	०३ ०१ ११ ४५	०२ २९ २७ ०१	११ १८ ३४ ५२	१० ०९ ३४ २७	०४ ०९ ३४ २७
९	मंगल	०१ २४ ०० २६	११ ०१ ३३ ४८	०० २१ २७ ३८	०२ १७ ११ ३६	०३ ०१ २३ ३४	०३ ०० ३७ १८	११ १८ ३९ २३	१० ०९ ३१ १६	०४ ०९ ३१ १६
१०	बुध	०१ २४ ५७ ४९	११ १५ ०० २६	०० २२ ११ ३८	०२ १८ २९ ४५	०३ ०१ ३५ २७	०३ ०१ ४७ ३१	११ १८ ४३ ४९	१० ०९ २८ ०५	०४ ०९ २८ ०५
११	गुरु	०१ २५ ५५ १२	११ २८ ५५ २७	०० २२ ५५ ३४	०२ १९ ४४ ४९	०३ ०१ ४७ २३	०३ ०२ ५७ ३९	११ १८ ४८ १०	१० ०९ २४ ५४	०४ ०९ २४ ५४
१२	शुक्र	०१ २६ ५२ ३५	०० १३ १९ ०५	०० २३ ३९ २७	०२ २० ५६ ४५	०३ ०१ ५९ २३	०३ ०४ ०७ ४२	११ १८ ५२ २७	१० ०९ २१ ४४	०४ ०९ २१ ४४
१३	शनि	०१ २७ ४९ ५६	०० २८ ०८ २५	०० २४ २३ १७	०२ २२ ०५ २९	०३ ०२ ११ २६	०३ ०५ १७ ४०	११ १८ ५६ ३८	१० ०९ १८ ३३	०४ ०९ १८ ३३
१४	रवि	०१ २८ ४७ १८	०१ १३ १६ ५०	०० २५ ०७ ०३	०२ २३ १० ५७	०३ ०२ २३ ३३	०३ ०६ २७ ३४	११ १९ ०० ४५	१० ०९ १५ २२	०४ ०९ १५ २२
१५	सोम	०१ २९ ४४ ३९	०१ २८ ३४ ४३	०० २५ ५० ४५	०२ २४ १३ ०६	०३ ०२ ३५ ४२	०३ ०७ ३७ २२	११ १९ ०४ ४७	१० ०९ १२ ११	०४ ०९ १२ ११
१६	मंगल	०२ ०० ४१ ५९	०२ १३ ५० ४६	०० २६ ३४ २३	०२ २५ ११ ५०	०३ ०२ ४७ ५५	०३ ०८ ४७ ०५	११ १९ ०८ ४५	१० ०९ ०९ ०१	०४ ०९ ०९ ०१
१७	बुध	०२ ०१ ३९ १८	०२ २८ ५४ ०८	०० २७ १७ ५८	०२ २६ ०७ ०४	०३ ०३ ०० ११	०३ ०९ ५६ ४३	११ १९ १२ ३७	१० ०९ ०५ ५०	०४ ०९ ०५ ५०
१८	गुरु	०२ ०२ ३६ ३७	०३ १३ ३६ १५	०० २८ ०१ २९	०२ २६ ५८ ४३	०३ ०३ १२ ३०	०३ ११ ०६ १५	११ १९ १६ २३	१० ०९ ०२ ३९	०४ ०९ ०२ ३९
१९	शुक्र	०२ ०३ ३३ ५५	०३ २७ ५१ ५४	०० २८ ४४ ५७	०२ २७ ४६ ४१	०३ ०३ २४ ५२	०३ १२ १५ ४१	११ १९ २० ०५	१० ०८ ५९ २८	०४ ०८ ५९ २८
२०	शनि	०२ ०४ ३१ १२	०४ ११ ३९ १७	०० २९ २८ २०	०२ २८ ३० ५१	०३ ०३ ३७ १६	०३ १३ २५ ०२	११ १९ २३ ४२	१० ०८ ५६ १८	०४ ०८ ५६ १८
२१	रवि	०२ ०५ २८ २९	०४ २४ ५९ २६	०१ ०० ११ ४०	०२ २९ ११ ०७	०३ ०३ ४९ ४३	०३ १४ ३४ १६	११ १९ २७ १३	१० ०८ ५३ ०७	०४ ०८ ५३ ०७
२२	सोम	०२ ०६ २५ ४४	०५ ०७ ५५ १९	०१ ०० ५४ ५५	०२ २९ ४७ २३	०३ ०४ ०२ १३	०३ १५ ४३ २४	११ १९ ३० ३९	१० ०८ ४९ ५६	०४ ०८ ४९ ५६
२३	मंगल	०२ ०७ २२ ५९	०५ २० ३० ५३	०१ ०१ ३८ ०७	०३ ०० १९ ३२	०३ ०४ १४ ४६	०३ १६ ५२ २६	११ १९ ३४ ००	१० ०८ ४६ ४५	०४ ०८ ४६ ४५
२४	बुध	०२ ०८ २० १४	०६ ०२ ५० २८	०१ ०२ २१ १६	०३ ०० ४७ २८	०३ ०४ २७ २०	०३ १८ ०१ २१	११ १९ ३७ १६	१० ०८ ४३ ३४	०४ ०८ ४३ ३४
२५	गुरु	०२ ०९ १७ २७	०६ १४ ५८ १४	०१ ०३ ०४ २०	०३ ०१ ११ ०४	०३ ०४ ३९ ५८	०३ १९ १० ०९	११ १९ ४० २६	१० ०८ ४० २४	०४ ०८ ४० २४
२६	शुक्र	०२ १० १४ ४०	०६ २६ ५७ ५७	०१ ०३ ४७ २१	०३ ०१ ३० १५	०३ ०४ ५२ ३७	०३ २० १८ ५१	११ १९ ४३ ३१	१० ०८ ३७ १३	०४ ०८ ३७ १३
२७	शनि	०२ ११ ११ ५३	०७ ०८ ५२ ४६	०१ ०४ ३० १७	०३ ०१ ४४ ५६	०३ ०५ ०५ १९	०३ २१ २७ २५	११ १९ ४६ ३०	१० ०८ ३४ ०२	०४ ०८ ३४ ०२
२८	रवि	०२ १२ ०९ ०५	०७ २० ४५ १५	०१ ०५ १३ १०	०३ ०१ ५५ ०३	०३ ०५ १८ ०३	०३ २२ ३५ ५३	११ १९ ४९ २४	१० ०८ ३० ५१	०४ ०८ ३० ५१
२९	सोम	०२ १३ ०६ १७	०८ ०२ ३७ २८	०१ ०५ ५५ ५९	०३ ०२ ०० ३४	०३ ०५ ३० ४९	०३ २३ ४४ १३	११ १९ ५२ १२	१० ०८ २७ ४१	०४ ०८ २७ ४१
३०	मंगल	०२ १४ ०३ २९	०८ १४ ३१ ०९	०१ ०६ ३८ ४५	०३ ०२ ०१ २८	०३ ०५ ४३ ३६	०३ २४ ५२ २६	११ १९ ५४ ५५	१० ०८ २४ ३०	०४ ०८ २४ ३०

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, जुलाई २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	बुध	०२ १५ ०० ४१	०८ २६ २७ ५२	०१ ०७ २१ २६	०३ ०१ ५७ ४५	०३ ०५ ५६ २६	०३ २६ ०० ३१	११ १९ ५७ ३२	१० ०८ २१ १९	०४ ०८ २१ १९
२	गुरु	०२ १५ ५७ ५२	०९ ०८ २९ १६	०१ ०८ ०४ ०४	०३ ०१ ४९ २९	०३ ०६ ०९ १८	०३ २७ ०८ २९	११ २० ०० ०४	१० ०८ १८ ०८	०४ ०८ १८ ०८
३	शुक्र	०२ १६ ५५ ०४	०९ २० ३७ १७	०१ ०८ ४६ ३८	०३ ०१ ३६ ४६	०३ ०६ २२ १२	०३ २८ १६ १९	११ २० ०२ ३०	१० ०८ १४ ५८	०४ ०८ १४ ५८
४	शनि	०२ १७ ५२ १५	१० ०२ ५४ १७	०१ ०९ २९ ०९	०३ ०१ १९ ४६	०३ ०६ ३५ ०७	०३ २९ २४ ०१	११ २० ०४ ५०	१० ०८ ११ ४७	०४ ०८ ११ ४७
५	रवि	०२ १८ ४९ २७	१० १५ २३ ०६	०१ १० ११ ३५	०३ ०० ५८ ४१	०३ ०६ ४८ ०५	०४ ०० ३१ ३५	११ २० ०७ ०४	१० ०८ ०८ ३६	०४ ०८ ०८ ३६
६	सोम	०२ १९ ४६ ३९	१० २८ ०६ ५९	०१ १० ५३ ५८	०३ ०० ३३ ४८	०३ ०७ ०१ ०४	०४ ०१ ३९ ०१	११ २० ०९ १३	१० ०८ ०५ २५	०४ ०८ ०५ २५
७	मंगल	०२ २० ४३ ५१	११ ११ ०९ २१	०१ ११ ३६ १७	०३ ०० ०५ २७	०३ ०७ १४ ०४	०४ ०२ ४६ १८	११ २० ११ १६	१० ०८ ०२ १४	०४ ०८ ०२ १४
८	बुध	०२ २१ ४१ ०३	११ २४ ३३ २२	०१ १२ १८ ३२	०२ २९ ३४ ०१	०३ ०७ २७ ०६	०४ ०३ ५३ २७	११ २० १३ १३	१० ०७ ५९ ०४	०४ ०७ ५९ ०४
९	गुरु	०२ २२ ३८ १६	०० ०८ २१ २१	०१ १३ ०० ४३	०२ २९ ०० ००	०३ ०७ ४० ०९	०४ ०५ ०० २८	११ २० १५ ०४	१० ०७ ५५ ५३	०४ ०७ ५५ ५३
१०	शुक्र	०२ २३ ३५ ३०	०० २२ ३४ ००	०१ १३ ४२ ५१	०२ २८ २३ ५४	०३ ०७ ५३ १४	०४ ०६ ०७ २०	११ २० १६ ४९	१० ०७ ५२ ४२	०४ ०७ ५२ ४२
११	शनि	०२ २४ ३२ ४३	०१ ०७ ०९ ३६	०१ १४ २४ ५४	०२ २७ ४६ १८	०३ ०८ ०६ २१	०४ ०७ १४ ०३	११ २० १८ २९	१० ०७ ४९ ३१	०४ ०७ ४९ ३१
१२	रवि	०२ २५ २९ ५७	०१ २२ ०३ ३५	०१ १५ ०६ ५३	०२ २७ ०७ ४९	०३ ०८ १९ २८	०४ ०८ २० ३७	११ २० २० ०२	१० ०७ ४६ २१	०४ ०७ ४६ २१
१३	सोम	०२ २६ २७ १२	०२ ०७ ०८ ३८	०१ १५ ४८ ४९	०२ २६ २९ ०६	०३ ०८ ३२ ३७	०४ ०९ २७ ०१	११ २० २१ २९	१० ०७ ४३ १०	०४ ०७ ४३ १०
१४	मंगल	०२ २७ २४ २७	०२ २२ १५ २७	०१ १६ ३० ४०	०२ २५ ५० ४९	०३ ०८ ४५ ४६	०४ १० ३३ १६	११ २० २२ ५०	१० ०७ ३९ ५९	०४ ०७ ३९ ५९
१५	बुध	०२ २८ २१ ४२	०३ ०७ १४ १६	०१ १७ १२ २७	०२ २५ १३ ३८	०३ ०८ ५८ ५७	०४ ११ ३९ २२	११ २० २४ ०५	१० ०७ ३६ ४८	०४ ०७ ३६ ४८
१६	गुरु	०२ २९ १८ ५८	०३ २१ ५६ २६	०१ १७ ५४ १०	०२ २४ ३८ १२	०३ ०९ १२ ०९	०४ १२ ४५ १७	११ २० २५ १४	१० ०७ ३३ ३७	०४ ०७ ३३ ३७
१७	शुक्र	०३ ०० १६ १३	०४ ०६ १५ ४१	०१ १८ ३५ ४८	०२ २४ ०५ ११	०३ ०९ २५ २१	०४ १३ ५१ ०१	११ २० २६ १७	१० ०७ ३० २७	०४ ०७ ३० २७
१८	शनि	०३ ०१ १३ २९	०४ २० ०८ ३९	०१ १९ १७ २३	०२ २३ ३५ ०९	०३ ०९ ३८ ३५	०४ १४ ५६ ३५	११ २० २७ १४	१० ०७ २७ १६	०४ ०७ २७ १६
१९	रवि	०३ ०२ १० ४५	०५ ०३ ३४ ४५	०१ १९ ५८ ५३	०२ २३ ०८ ४१	०३ ०९ ५१ ४९	०४ १६ ०१ ५८	११ २० २८ ०५	१० ०७ २४ ०५	०४ ०७ २४ ०५
२०	सोम	०३ ०३ ०८ ०२	०५ १६ ३५ ४०	०१ २० ४० १८	०२ २२ ४६ १७	०३ १० ०५ ०३	०४ १७ ०७ ०९	११ २० २८ ४९	१० ०७ २० ५४	०४ ०७ २० ५४
२१	मंगल	०३ ०४ ०५ १८	०५ २९ १४ ३४	०१ २१ २१ ४०	०२ २२ २८ २२	०३ १० १८ १८	०४ १८ १२ ०८	११ २० २९ २८	१० ०७ १७ ४४	०४ ०७ १७ ४४
२२	बुध	०३ ०५ ०२ ३५	०६ ११ ३५ ३२	०१ २२ ०२ ५७	०२ २२ १५ २०	०३ १० ३१ ३४	०४ १९ १६ ५५	११ २० ३० ००	१० ०७ १४ ३३	०४ ०७ १४ ३३
२३	गुरु	०३ ०५ ५९ ५२	०६ २३ ४३ ००	०१ २२ ४४ १०	०२ २२ ०७ ३१	०३ १० ४४ ५०	०४ २० २१ २९	११ २० ३० २६	१० ०७ ११ २२	०४ ०७ ११ २२
२४	शुक्र	०३ ०६ ५७ ०९	०७ ०५ ४१ २२	०१ २३ २५ १८	०२ २२ ०५ ११	०३ १० ५८ ०७	०४ २१ २५ ५०	११ २० ३० ४६	१० ०७ ०८ ११	०४ ०७ ०८ ११
२५	शनि	०३ ०७ ५४ २७	०७ १७ ३४ ४०	०१ २४ ०६ २२	०२ २२ ०८ ३१	०३ ११ ११ २३	०४ २२ २९ ५९	११ २० ३१ ००	१० ०७ ०५ ०१	०४ ०७ ०५ ०१
२६	रवि	०३ ०८ ५१ ४५	०७ २९ २६ ३१	०१ २४ ४७ २२	०२ २२ १७ ४२	०३ ११ २४ ४०	०४ २३ ३३ ५३	११ २० ३१ ०७	१० ०७ ०१ ५०	०४ ०७ ०१ ५०
२७	सोम	०३ ०९ ४९ ०३	०८ ११ १९ ५९	०१ २५ २८ १८	०२ २२ ३२ ५०	०३ ११ ३७ ५७	०४ २४ ३७ ३३	११ २० ३१ ०९	१० ०६ ५८ ३९	०४ ०६ ५८ ३९
२८	मंगल	०३ १० ४६ २२	०८ २३ १७ ३७	०१ २६ ०९ ०९	०२ २२ ५४ ००	०३ ११ ५१ १४	०४ २५ ४० ५९	११ २० ३१ ०४	१० ०६ ५५ २८	०४ ०६ ५५ २८
२९	बुध	०३ ११ ४३ ४२	०९ ०५ २१ २७	०१ २६ ४९ ५६	०२ २३ २१ १४	०३ १२ ०४ ३२	०४ २६ ४४ १०	११ २० ३० ५४	१० ०६ ५२ १७	०४ ०६ ५२ १७
३०	गुरु	०३ १२ ४१ ०२	०९ १७ ३३ १२	०१ २७ ३० ३९	०२ २३ ५४ ३३	०३ १२ १७ ४८	०४ २७ ४७ ०६	११ २० ३० ३७	१० ०६ ४९ ०७	०४ ०६ ४९ ०७
३१	शुक्र	०३ १३ ३८ २४	०९ २९ ५४ १९	०१ २८ ११ १८	०२ २४ ३३ ५५	०३ १२ ३१ ०५	०४ २८ ४९ ४६	११ २० ३० १४	१० ०६ ४५ ५६	०४ ०६ ४५ ५६

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, अगस्त २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	शनि	०३ १४ ३५ ४६	१० १२ २६ १०	०१ २८ ५१ ५२	०२ २५ १९ १७	०३ १२ ४४ २२	०४ २९ ५२ ११	११ २० २९ ४५	१० ०६ ४२ ४५	०४ ०६ ४२ ४५
२	रवि	०३ १५ ३३ ०९	१० २५ १० १३	०१ २९ ३२ २२	०२ २६ १० ३५	०३ १२ ५७ ३९	०५ ०० ५४ १९	११ २० २९ १०	१० ०६ ३९ ३४	०४ ०६ ३९ ३४
३	सोम	०३ १६ ३० ३३	११ ०८ ०७ ५५	०२ ०० १२ ४८	०२ २७ ०७ ४६	०३ १३ १० ५५	०५ ०१ ५६ १०	११ २० २८ २८	१० ०६ ३६ २४	०४ ०६ ३६ २४
४	मंगल	०३ १७ २७ ५८	११ २१ २० ५१	०२ ०० ५३ ०९	०२ २८ १० ४०	०३ १३ २४ ११	०५ ०२ ५७ ४३	११ २० २७ ४१	१० ०६ ३३ १३	०४ ०६ ३३ १३
५	बुध	०३ १८ २५ २५	०० ०४ ५० २१	०२ ०१ ३३ २६	०२ २९ १९ १२	०३ १३ ३७ २७	०५ ०३ ५९ ००	११ २० २६ ४८	१० ०६ ३० ०२	०४ ०६ ३० ०२
६	गुरु	०३ १९ २२ ५२	०० १८ ३७ २१	०२ ०२ १३ ३९	०३ ०० ३३ ११	०३ १३ ५० ४३	०५ ०४ ५९ ५८	११ २० २५ ४८	१० ०६ २६ ५१	०४ ०६ २६ ५१
७	शुक्र	०३ २० २० २१	०१ ०२ ४१ ५१	०२ ०२ ५३ ४७	०३ ०१ ५२ २८	०३ १४ ०३ ५७	०५ ०६ ०० ३७	११ २० २४ ४३	१० ०६ २३ ४१	०४ ०६ २३ ४१
८	शनि	०३ २१ १७ ५२	०१ १७ ०२ ३४	०२ ०३ ३३ ५१	०३ ०३ १६ ४९	०३ १४ १७ १२	०५ ०७ ०० ५७	११ २० २३ ३१	१० ०६ २० ३०	०४ ०६ २० ३०
९	रवि	०३ २२ १५ २३	०२ ०१ ३६ ३०	०२ ०४ १३ ५०	०३ ०४ ४६ ००	०३ १४ ३० २५	०५ ०८ ०० ५८	११ २० २२ १३	१० ०६ १७ १९	०४ ०६ १७ १९
१०	सोम	०३ २३ १२ ५६	०२ १६ १८ ५५	०२ ०४ ५३ ४५	०३ ०६ १९ ४६	०३ १४ ४३ ३८	०५ ०९ ०० ३८	११ २० २० ५०	१० ०६ १४ ०८	०४ ०६ १४ ०८
११	मंगल	०३ २४ १० ३०	०३ ०१ ०३ ३७	०२ ०५ ३३ ३५	०३ ०७ ५७ ४८	०३ १४ ५६ ५०	०५ ०९ ५९ ५८	११ २० १९ २०	१० ०६ १० ५७	०४ ०६ १० ५७
१२	बुध	०३ २५ ०८ ०६	०३ १५ ४३ ४०	०२ ०६ १३ २१	०३ ०९ ३९ ४८	०३ १५ १० ०१	०५ १० ५८ ५६	११ २० १७ ४५	१० ०६ ०७ ४७	०४ ०६ ०७ ४७
१३	गुरु	०३ २६ ०५ ४३	०४ ०० १२ १४	०२ ०६ ५३ ०२	०३ ११ २५ २३	०३ १५ २३ ११	०५ ११ ५७ ३२	११ २० १६ ०४	१० ०६ ०४ ३६	०४ ०६ ०४ ३६
१४	शुक्र	०३ २७ ०३ २०	०४ १४ २३ ३३	०२ ०७ ३२ ३७	०३ १३ १४ १३	०३ १५ ३६ २०	०५ १२ ५५ ४४	११ २० १४ १७	१० ०६ ०१ २५	०४ ०६ ०१ २५
१५	शनि	०३ २८ ०० ५९	०४ २८ १३ ३६	०२ ०८ १२ ०८	०३ १५ ०५ ५२	०३ १५ ४९ २८	०५ १३ ५३ ३३	११ २० १२ २४	१० ०५ ५८ १४	०४ ०५ ५८ १४
१६	रवि	०३ २८ ५८ ३९	०५ ११ ४० २६	०२ ०८ ५१ ३४	०३ १६ ५९ ५८	०३ १६ ०२ ३४	०५ १४ ५० ५६	११ २० १० २५	१० ०५ ५५ ०४	०४ ०५ ५५ ०४
१७	सोम	०३ २९ ५६ २०	०५ २४ ४४ ०३	०२ ०९ ३० ५६	०३ १८ ५६ ०६	०३ १६ १५ ४०	०५ १५ ४७ ५४	११ २० ०८ २१	१० ०५ ५१ ५३	०४ ०५ ५१ ५३
१८	मंगल	०४ ०० ५४ ०२	०६ ०७ २६ ११	०२ १० १० १२	०३ २० ५३ ५२	०३ १६ २८ ४४	०५ १६ ४४ २५	११ २० ०६ ११	१० ०५ ४८ ४२	०४ ०५ ४८ ४२
१९	बुध	०४ ०१ ५१ ४६	०६ १९ ४९ ५४	०२ १० ४९ २३	०३ २२ ५२ ५५	०३ १६ ४१ ४६	०५ १७ ४० २८	११ २० ०३ ५६	१० ०५ ४५ ३१	०४ ०५ ४५ ३१
२०	गुरु	०४ ०२ ४९ ३०	०७ ०१ ५९ ०६	०२ ११ २८ २९	०३ २४ ५२ ५२	०३ १६ ५४ ४७	०५ १८ ३६ ०३	११ २० ०१ ३५	१० ०५ ४२ २०	०४ ०५ ४२ २०
२१	शुक्र	०४ ०३ ४७ १५	०७ १३ ५८ ११	०२ १२ ०७ ३०	०३ २६ ५३ २३	०३ १७ ०७ ४६	०५ १९ ३१ ०७	११ १९ ५९ ०९	१० ०५ ३९ १०	०४ ०५ ३९ १०
२२	शनि	०४ ०४ ४५ ०१	०७ २५ ५१ ४१	०२ १२ ४६ २७	०३ २८ ५४ ११	०३ १७ २० ४४	०५ २० २५ ४१	११ १९ ५६ ३८	१० ०५ ३५ ५९	०४ ०५ ३५ ५९
२३	रवि	०४ ०५ ४२ ४९	०८ ०७ ४४ ०१	०२ १३ २५ १८	०४ ०० ५४ ५८	०३ १७ ३३ ४०	०५ २१ १९ ४२	११ १९ ५४ ०१	१० ०५ ३२ ४८	०४ ०५ ३२ ४८
२४	सोम	०४ ०६ ४० ३८	०८ १९ ३९ २०	०२ १४ ०४ ०४	०४ ०२ ५५ ३१	०३ १७ ४६ ३४	०५ २२ १३ १०	११ १९ ५१ १९	१० ०५ २९ ३७	०४ ०५ २९ ३७
२५	मंगल	०४ ०७ ३८ २८	०९ ०१ ४१ १३	०२ १४ ४२ ४५	०४ ०४ ५५ ३८	०३ १७ ५९ २६	०५ २३ ०६ ०३	११ १९ ४८ ३२	१० ०५ २६ २७	०४ ०५ २६ २७
२६	बुध	०४ ०८ ३६ १९	०९ १३ ५२ ४५	०२ १५ २१ २२	०४ ०६ ५५ ०८	०३ १८ १२ १६	०५ २३ ५८ २१	११ १९ ४५ ४०	१० ०५ २३ १६	०४ ०५ २३ १६
२७	गुरु	०४ ०९ ३४ १२	०९ २६ १६ १४	०२ १५ ५९ ५३	०४ ०८ ५३ ५१	०३ १८ २५ ०५	०५ २४ ५० ०१	११ १९ ४२ ४३	१० ०५ २० ०५	०४ ०५ २० ०५
२८	शुक्र	०४ १० ३२ ०६	१० ०८ ५३ १६	०२ १६ ३८ १९	०४ १० ५१ ४२	०३ १८ ३७ ५१	०५ २५ ४१ ०३	११ १९ ३९ ४१	१० ०५ १६ ५४	०४ ०५ १६ ५४
२९	शनि	०४ ११ ३० ०२	१० २१ ४४ ४२	०२ १७ १६ ४०	०४ १२ ४८ ३५	०३ १८ ५० ३५	०५ २६ ३१ २५	११ १९ ३६ ३५	१० ०५ १३ ४४	०४ ०५ १३ ४४
३०	रवि	०४ १२ २७ ५९	११ ०४ ५० ४१	०२ १७ ५४ ५६	०४ १४ ४४ २४	०३ १९ ०३ १७	०५ २७ २१ ०६	११ १९ ३३ २३	१० ०५ १० ३३	०४ ०५ १० ३३
३१	सोम	०४ १३ २५ ५८	११ १८ १० ५०	०२ १८ ३३ ०७	०४ १६ ३९ ०६	०३ १९ १५ ५६	०५ २८ १० ०४	११ १९ ३० ०७	१० ०५ ०७ २२	०४ ०५ ०७ २२

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, सितम्बर २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	मंगल	०४ १४ २३ ५९	०० ०१ ४४ १३	०२ १९ ११ १२	०४ १८ ३२ ३९	०३ १९ २८ ३४	०५ २८ ५८ १७	११ १९ २६ ४७	१० ०५ ०४ ११	०४ ०५ ०४ ११
२	बुध	०४ १५ २२ ०१	०० १५ २९ ३९	०२ १९ ४९ १३	०४ २० २५ ०१	०३ १९ ४१ ०८	०५ २९ ४५ ४५	११ १९ २३ २२	१० ०५ ०१ ००	०४ ०५ ०१ ००
३	गुरु	०४ १६ २० ०६	०० २९ २५ ४१	०२ २० २७ ०८	०४ २२ १६ १२	०३ १९ ५३ ४१	०६ ०० ३२ २५	११ १९ १९ ५२	१० ०४ ५७ ५०	०४ ०४ ५७ ५०
४	शुक्र	०४ १७ १८ १२	०१ १३ ३० ३९	०२ २१ ०४ ५८	०४ २४ ०६ १०	०३ २० ०६ १०	०६ ०१ १८ १६	११ १९ १६ १९	१० ०४ ५४ ३९	०४ ०४ ५४ ३९
५	शनि	०४ १८ १६ २१	०१ २७ ४२ ४०	०२ २१ ४२ ४३	०४ २५ ५४ ५५	०३ २० १८ ३८	०६ ०२ ०३ १५	११ १९ १२ ४१	१० ०४ ५१ २८	०४ ०४ ५१ २८
६	रवि	०४ १९ १४ ३१	०२ ११ ५९ ३०	०२ २२ २० २२	०४ २७ ४२ २७	०३ २० ३१ ०२	०६ ०२ ४७ २२	११ १९ ०८ ५९	१० ०४ ४८ १७	०४ ०४ ४८ १७
७	सोम	०४ २० १२ ४४	०२ २६ १८ २८	०२ २२ ५७ ५६	०४ २९ २८ ४८	०३ २० ४३ २३	०६ ०३ ३० ३३	११ १९ ०५ १३	१० ०४ ४५ ०७	०४ ०४ ४५ ०७
८	मंगल	०४ २१ १० ५८	०३ १० ३६ २१	०२ २३ ३५ २४	०५ ०१ १३ ५७	०३ २० ५५ ४२	०६ ०४ १२ ४८	११ १९ ०१ २३	१० ०४ ४१ ५६	०४ ०४ ४१ ५६
९	बुध	०४ २२ ०९ १५	०३ २४ ४९ ३२	०२ २४ १२ ४७	०५ ०२ ५७ ५५	०३ २१ ०७ ५८	०६ ०४ ५४ ०३	११ १८ ५७ ३०	१० ०४ ३८ ४५	०४ ०४ ३८ ४५
१०	गुरु	०४ २३ ०७ ३३	०४ ०८ ५४ ०६	०२ २४ ५० ०३	०५ ०४ ४० ४४	०३ २१ २० १०	०६ ०५ ३४ १६	११ १८ ५३ ३३	१० ०४ ३५ ३४	०४ ०४ ३५ ३४
११	शुक्र	०४ २४ ०५ ५३	०४ २२ ४६ १७	०२ २५ २७ १४	०५ ०६ २२ २४	०३ २१ ३२ १९	०६ ०६ १३ २४	११ १८ ४९ ३२	१० ०४ ३२ २४	०४ ०४ ३२ २४
१२	शनि	०४ २५ ०४ १५	०५ ०६ २२ ५२	०२ २६ ०४ १९	०५ ०८ ०२ ५५	०३ २१ ४४ २५	०६ ०६ ५१ २६	११ १८ ४५ २८	१० ०४ २९ १३	०४ ०४ २९ १३
१३	रवि	०४ २६ ०२ ३९	०५ १९ ४१ ३२	०२ २६ ४१ १७	०५ ०९ ४२ २०	०३ २१ ५६ २८	०६ ०७ २८ १७	११ १८ ४१ २१	१० ०४ २६ ०२	०४ ०४ २६ ०२
१४	सोम	०४ २७ ०१ ०५	०६ ०२ ४१ १४	०२ २७ १८ १०	०५ ११ २० ३९	०३ २२ ०८ २७	०६ ०८ ०३ ५६	११ १८ ३७ १०	१० ०४ २२ ५१	०४ ०४ २२ ५१
१५	मंगल	०४ २७ ५९ ३२	०६ १५ २२ १६	०२ २७ ५४ ५६	०५ १२ ५७ ५२	०३ २२ २० २३	०६ ०८ ३८ १८	११ १८ ३२ ५७	१० ०४ १९ ४०	०४ ०४ १९ ४०
१६	बुध	०४ २८ ५८ ०१	०६ २७ ४६ १६	०२ २८ ३१ ३६	०५ १४ ३४ ०१	०३ २२ ३२ १५	०६ ०९ ११ २२	११ १८ २८ ४०	१० ०४ १६ ३०	०४ ०४ १६ ३०
१७	गुरु	०४ २९ ५६ ३१	०७ ०९ ५६ ०३	०२ २९ ०८ १०	०५ १६ ०९ ०६	०३ २२ ४४ ०३	०६ ०९ ४३ ०३	११ १८ २४ २२	१० ०४ १३ १९	०४ ०४ १३ १९
१८	शुक्र	०५ ०० ५५ ०३	०७ २१ ५५ २३	०२ २९ ४४ ३८	०५ १७ ४३ ०८	०३ २२ ५५ ४७	०६ १० १३ १९	११ १८ २० ००	१० ०४ १० ०८	०४ ०४ १० ०८
१९	शनि	०५ ०१ ५३ ३७	०८ ०३ ४८ ३८	०३ ०० २० ५९	०५ १९ १६ ०८	०३ २३ ०७ २७	०६ १० ४२ ०५	११ १८ १५ ३६	१० ०४ ०६ ५७	०४ ०४ ०६ ५७
२०	रवि	०५ ०२ ५२ १३	०८ १५ ४० ३४	०३ ०० ५७ १४	०५ २० ४८ ०५	०३ २३ १९ ०४	०६ ११ ०९ १९	११ १८ ११ १०	१० ०४ ०३ ४७	०४ ०४ ०३ ४७
२१	सोम	०५ ०३ ५० ५०	०८ २७ ३६ ०५	०३ ०१ ३३ २२	०५ २२ १९ ०१	०३ २३ ३० ३६	०६ ११ ३४ ५७	११ १८ ०६ ४२	१० ०४ ०० ३६	०४ ०४ ०० ३६
२२	मंगल	०५ ०४ ४९ २८	०९ ०९ ३९ ५२	०३ ०२ ०९ २४	०५ २३ ४८ ५४	०३ २३ ४२ ०४	०६ ११ ५८ ५५	११ १८ ०२ ११	१० ०३ ५७ २५	०४ ०३ ५७ २५
२३	बुध	०५ ०५ ४८ ०९	०९ २१ ५६ ११	०३ ०२ ४५ २०	०५ २५ १७ ४६	०३ २३ ५३ २८	०६ १२ २१ ०९	११ १७ ५७ ३९	१० ०३ ५४ १४	०४ ०३ ५४ १४
२४	गुरु	०५ ०६ ४६ ५१	१० ०४ २८ ३४	०३ ०३ २१ ०९	०५ २६ ४५ ३५	०३ २४ ०४ ४७	०६ १२ ४१ ३६	११ १७ ५३ ०५	१० ०३ ५१ ०३	०४ ०३ ५१ ०३
२५	शुक्र	०५ ०७ ४५ ३५	१० १७ १९ २९	०३ ०३ ५६ ५१	०५ २८ १२ २२	०३ २४ १६ ०२	०६ १३ ०० ११	११ १७ ४८ ३०	१० ०३ ४७ ५३	०४ ०३ ४७ ५३
२६	शनि	०५ ०८ ४४ २१	११ ०० ३० ०४	०३ ०४ ३२ २६	०५ २९ ३८ ०५	०३ २४ २७ १३	०६ १३ १६ ५३	११ १७ ४३ ५३	१० ०३ ४४ ४२	०४ ०३ ४४ ४२
२७	रवि	०५ ०९ ४३ ०९	११ १३ ५९ ५३	०३ ०५ ०७ ५५	०६ ०१ ०२ ४३	०३ २४ ३८ १९	०६ १३ ३१ ३६	११ १७ ३९ १५	१० ०३ ४१ ३१	०४ ०३ ४१ ३१
२८	सोम	०५ १० ४१ ५९	११ २७ ४६ ५८	०३ ०५ ४३ १७	०६ ०२ २६ १५	०३ २४ ४९ २०	०६ १३ ४४ १७	११ १७ ३४ ३६	१० ०३ ३८ २०	०४ ०३ ३८ २०
२९	मंगल	०५ ११ ४० ५१	०० ११ ४७ ५९	०३ ०६ १८ ३३	०६ ०३ ४८ ३९	०३ २५ ०० १७	०६ १३ ५४ ५३	११ १७ २९ ५५	१० ०३ ३५ १०	०४ ०३ ३५ १०
३०	बुध	०५ १२ ३९ ४५	०० २५ ५८ ४१	०३ ०६ ५३ ४१	०६ ०५ ०९ ५४	०३ २५ ११ ०९	०६ १४ ०३ २०	११ १७ २५ १४	१० ०३ ३१ ५९	०४ ०३ ३१ ५९

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, अक्टूबर २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	गुरु	०५ १३ ३८ ४१	०१ १० १४ ३०	०३ ०७ २८ ४३	०६ ०६ २९ ५७	०३ २५ २१ ५६	०६ १४ ०९ ३६	११ १७ २० ३२	१० ०३ २८ ४८	०४ ०३ २८ ४८
२	शुक्र	०५ १४ ३७ ४०	०१ २४ ३१ १६	०३ ०८ ०३ ३७	०६ ०७ ४८ ४४	०३ २५ ३२ ३८	०६ १४ १३ ३९	११ १७ १५ ५०	१० ०३ २५ ३७	०४ ०३ २५ ३७
३	शनि	०५ १५ ३६ ४१	०२ ०८ ४५ ३३	०३ ०८ ३८ २४	०६ ०९ ०६ १३	०३ २५ ४३ १४	०६ १४ १५ २४	११ १७ ११ ०७	१० ०३ २२ २७	०४ ०३ २२ २७
४	रवि	०५ १६ ३५ ४४	०२ २२ ५४ ५५	०३ ०९ १३ ०४	०६ १० २२ २०	०३ २५ ५३ ४६	०६ १४ १४ ५१	११ १७ ०६ २४	१० ०३ १९ १६	०४ ०३ १९ १६
५	सोम	०५ १७ ३४ ५०	०३ ०६ ५७ ४८	०३ ०९ ४७ ३६	०६ ११ ३७ ००	०३ २६ ०४ १२	०६ १४ ११ ५६	११ १७ ०१ ४०	१० ०३ १६ ०५	०४ ०३ १६ ०५
६	मंगल	०५ १८ ३३ ५८	०३ २० ५३ ०९	०३ १० २२ ००	०६ १२ ५० ०७	०३ २६ १४ ३२	०६ १४ ०६ ४०	११ १६ ५६ ५७	१० ०३ १२ ५४	०४ ०३ १२ ५४
७	बुध	०५ १९ ३३ ०८	०४ ०४ ४० ११	०३ १० ५६ १७	०६ १४ ०१ ३६	०३ २६ २४ ४८	०६ १३ ५९ ०१	११ १६ ५२ १४	१० ०३ ०९ ४३	०४ ०३ ०९ ४३
८	गुरु	०५ २० ३२ २१	०४ १८ १७ ५८	०३ ११ ३० २६	०६ १५ ११ २०	०३ २६ ३४ ५७	०६ १३ ४८ ५८	११ १६ ४७ ३१	१० ०३ ०६ ३३	०४ ०३ ०६ ३३
९	शुक्र	०५ २१ ३१ ३५	०५ ०१ ४५ २०	०३ १२ ०४ २६	०६ १६ १९ ११	०३ २६ ४५ ०१	०६ १३ ३६ ३३	११ १६ ४२ ४९	१० ०३ ०३ २२	०४ ०३ ०३ २२
१०	शनि	०५ २२ ३० ५२	०५ १५ ०० ५५	०३ १२ ३८ १९	०६ १७ २४ ५९	०३ २६ ५४ ५८	०६ १३ २१ ४५	११ १६ ३८ ०८	१० ०३ ०० ११	०४ ०३ ०० ११
११	रवि	०५ २३ ३० ११	०५ २८ ०३ २०	०३ १३ १२ ०३	०६ १८ २८ ३४	०३ २७ ०४ ५०	०६ १३ ०४ ३८	११ १६ ३३ २७	१० ०२ ५७ ००	०४ ०२ ५७ ००
१२	सोम	०५ २४ २९ ३२	०६ १० ५१ ३४	०३ १३ ४५ ३८	०६ १९ २९ ४५	०३ २७ १४ ३५	०६ १२ ४५ १२	११ १६ २८ ४७	१० ०२ ५३ ५०	०४ ०२ ५३ ५०
१३	मंगल	०५ २५ २८ ५५	०६ २३ २५ १४	०३ १४ १९ ०५	०६ २० २८ १९	०३ २७ २४ १५	०६ १२ २३ ३४	११ १६ २४ ०९	१० ०२ ५० ३९	०४ ०२ ५० ३९
१४	बुध	०५ २६ २८ २०	०७ ०५ ४४ ५५	०३ १४ ५२ २३	०६ २१ २४ ००	०३ २७ ३३ ४८	०६ ११ ५९ ४६	११ १६ १९ ३२	१० ०२ ४७ २८	०४ ०२ ४७ २८
१५	गुरु	०५ २७ २७ ४६	०७ १७ ५२ १३	०३ १५ २५ ३२	०६ २२ १६ ३२	०३ २७ ४३ १४	०६ ११ ३३ ५६	११ १६ १४ ५६	१० ०२ ४४ १७	०४ ०२ ४४ १७
१६	शुक्र	०५ २८ २७ १५	०७ २९ ४९ ५०	०३ १५ ५८ ३२	०६ २३ ०५ ३७	०३ २७ ५२ ३४	०६ ११ ०६ ११	११ १६ १० २२	१० ०२ ४१ ०७	०४ ०२ ४१ ०७
१७	शनि	०५ २९ २६ ४५	०८ ११ ४१ २५	०३ १६ ३१ २३	०६ २३ ५० ५४	०३ २८ ०१ ४७	०६ १० ३६ ३८	११ १६ ०५ ५०	१० ०२ ३७ ५६	०४ ०२ ३७ ५६
१८	रवि	०६ ०० २६ १७	०८ २३ ३१ २४	०३ १७ ०४ ०५	०६ २४ ३२ ००	०३ २८ १० ५४	०६ १० ०५ २८	११ १६ ०१ २०	१० ०२ ३४ ४५	०४ ०२ ३४ ४५
१९	सोम	०६ ०१ २५ ५१	०९ ०५ २४ ४६	०३ १७ ३६ ३७	०६ २५ ०८ २९	०३ २८ १९ ५३	०६ ०९ ३२ ५०	११ १५ ५६ ५१	१० ०२ ३१ ३४	०४ ०२ ३१ ३४
२०	मंगल	०६ ०२ २५ २६	०९ १७ २६ ४९	०३ १८ ०९ ००	०६ २५ ३९ ५४	०३ २८ २८ ४६	०६ ०८ ५८ ५७	११ १५ ५२ २५	१० ०२ २८ २३	०४ ०२ २८ २३
२१	बुध	०६ ०३ २५ ०४	०९ २९ ४२ ४९	०३ १८ ४१ १३	०६ २६ ०५ ४५	०३ २८ ३७ ३१	०६ ०८ २४ ०२	११ १५ ४८ ०२	१० ०२ २५ १३	०४ ०२ २५ १३
२२	गुरु	०६ ०४ २४ ४३	१० १२ १७ ३५	०३ १९ १३ १६	०६ २६ २५ ३०	०३ २८ ४६ १०	०६ ०७ ४८ १७	११ १५ ४३ ४१	१० ०२ २२ ०२	०४ ०२ २२ ०२
२३	शुक्र	०६ ०५ २४ २३	१० २५ १४ ५९	०३ १९ ४५ १०	०६ २६ ३८ ३५	०३ २८ ५४ ४१	०६ ०७ ११ ५७	११ १५ ३९ २३	१० ०२ १८ ५१	०४ ०२ १८ ५१
२४	शनि	०६ ०६ २४ ०६	११ ०८ ३७ २२	०३ २० १६ ५४	०६ २६ ४४ २७	०३ २९ ०३ ०५	०६ ०६ ३५ १६	११ १५ ३५ ०७	१० ०२ १५ ४०	०४ ०२ १५ ४०
२५	रवि	०६ ०७ २३ ५०	११ २२ २४ ५५	०३ २० ४८ २७	०६ २६ ४२ ३०	०३ २९ ११ २१	०६ ०५ ५८ ३१	११ १५ ३० ५४	१० ०२ १२ ३०	०४ ०२ १२ ३०
२६	सोम	०६ ०८ २३ ३७	०० ०६ ३५ १९	०३ २१ १९ ५१	०६ २६ ३२ १५	०३ २९ १९ ३०	०६ ०५ २१ ५६	११ १५ २६ ४५	१० ०२ ०९ १९	०४ ०२ ०९ १९
२७	मंगल	०६ ०९ २३ २५	०० २१ ०३ ४२	०३ २१ ५१ ०४	०६ २६ १३ १३	०३ २९ २७ ३१	०६ ०४ ४५ ४६	११ १५ २२ ३९	१० ०२ ०६ ०८	०४ ०२ ०६ ०८
२८	बुध	०६ १० २३ १५	०१ ०५ ४३ १०	०३ २२ २२ ०६	०६ २५ ४५ ०६	०३ २९ ३५ २४	०६ ०४ १० १६	११ १५ १८ ३६	१० ०२ ०२ ५७	०४ ०२ ०२ ५७
२९	गुरु	०६ ११ २३ ०७	०१ २० २५ ५५	०३ २२ ५२ ५८	०६ २५ ०७ ४४	०३ २९ ४३ १०	०६ ०३ ३५ ४१	११ १५ १४ ३६	१० ०१ ५९ ४७	०४ ०१ ५९ ४७
३०	शुक्र	०६ १२ २३ ०२	०२ ०५ ०४ ३१	०३ २३ २३ ३९	०६ २४ २१ १५	०३ २९ ५० ४७	०६ ०३ ०२ १४	११ १५ १० ४०	१० ०१ ५६ ३६	०४ ०१ ५६ ३६
३१	शनि	०६ १३ २२ ५८	०२ १९ ३३ ०६	०३ २३ ५४ ०९	०६ २३ २६ ०४	०३ २९ ५८ १७	०६ ०२ ३० ०८	११ १५ ०६ ४८	१० ०१ ५३ २५	०४ ०१ ५३ २५

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, नवम्बर २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	रवि	०६ १४ २२ ५७	०३ ०३ ४७ ५४	०३ २४ २४ २७	०६ २२ २२ ५९	०४ ०० ०५ ३८	०६ ०१ ५९ ३५	११ १५ ०२ ५९	१० ०१ ५० १४	०४ ०१ ५० १४
२	सोम	०६ १५ २२ ५८	०३ १७ ४७ १७	०३ २४ ५४ ३४	०६ २१ १३ १५	०४ ०० १२ ५१	०६ ०१ ३० ४६	११ १४ ५९ १४	१० ०१ ४७ ०३	०४ ०१ ४७ ०३
३	मंगल	०६ १६ २३ ०१	०४ ०१ ३१ १४	०३ २५ २४ २९	०६ १९ ५८ ३०	०४ ०० १९ ५५	०६ ०१ ०३ ५०	११ १४ ५५ ३४	१० ०१ ४३ ५३	०४ ०१ ४३ ५३
४	बुध	०६ १७ २३ ०६	०४ १५ ०० ४६	०३ २५ ५४ ११	०६ १८ ४० ४७	०४ ०० २६ ५१	०६ ०० ३८ ५५	११ १४ ५१ ५७	१० ०१ ४० ४२	०४ ०१ ४० ४२
५	गुरु	०६ १८ २३ १४	०४ २८ १७ १३	०३ २६ २३ ४१	०६ १७ २२ २६	०४ ०० ३३ ३८	०६ ०० १६ ०८	११ १४ ४८ २५	१० ०१ ३७ ३१	०४ ०१ ३७ ३१
६	शुक्र	०६ १९ २३ २३	०५ ११ २१ ५०	०३ २६ ५२ ५९	०६ १६ ०५ ५४	०४ ०० ४० १७	०५ २९ ५५ ३६	११ १४ ४४ ५८	१० ०१ ३४ २०	०४ ०१ ३४ २०
७	शनि	०६ २० २३ ३५	०५ २४ १५ २३	०३ २७ २२ ०३	०६ १४ ५३ ४०	०४ ०० ४६ ४६	०५ २९ ३७ २२	११ १४ ४१ ३५	१० ०१ ३१ १०	०४ ०१ ३१ १०
८	रवि	०६ २१ २३ ४८	०६ ०६ ५८ १५	०३ २७ ५० ५४	०६ १३ ४७ ५९	०४ ०० ५३ ०६	०५ २९ २१ ३१	११ १४ ३८ १६	१० ०१ २७ ५९	०४ ०१ २७ ५९
९	सोम	०६ २२ २४ ०३	०६ १९ ३० २७	०३ २८ १९ ३१	०६ १२ ५० ४९	०४ ०० ५९ १७	०५ २९ ०८ ०५	११ १४ ३५ ०३	१० ०१ २४ ४८	०४ ०१ २४ ४८
१०	मंगल	०६ २३ २४ २०	०७ ०१ ५२ ०२	०३ २८ ४७ ५५	०६ १२ ०३ ३९	०४ ०१ ०५ १९	०५ २८ ५७ ०५	११ १४ ३१ ५४	१० ०१ २१ ३७	०४ ०१ २१ ३७
११	बुध	०६ २४ २४ ३९	०७ १४ ०३ १८	०३ २९ १६ ०५	०६ ११ २७ ३१	०४ ०१ ११ ११	०५ २८ ४८ ३४	११ १४ २८ ५०	१० ०१ १८ २६	०४ ०१ १८ २६
१२	गुरु	०६ २५ २४ ५९	०७ २६ ०५ १०	०३ २९ ४४ ००	०६ ११ ०२ ५८	०४ ०१ १६ ५४	०५ २८ ४२ ३०	११ १४ २५ ५१	१० ०१ १५ १६	०४ ०१ १५ १६
१३	शुक्र	०६ २६ २५ २१	०८ ०७ ५९ २३	०४ ०० ११ ४०	०६ १० ५० ०७	०४ ०१ २२ २७	०५ २८ ३८ ५४	११ १४ २२ ५८	१० ०१ १२ ०५	०४ ०१ १२ ०५
१४	शनि	०६ २७ २५ ४४	०८ १९ ४८ ३४	०४ ०० ३९ ०६	०६ १० ४८ ४३	०४ ०१ २७ ५१	०५ २८ ३७ ४४	११ १४ २० १०	१० ०१ ०८ ५४	०४ ०१ ०८ ५४
१५	रवि	०६ २८ २६ ०९	०९ ०१ ३६ १९	०४ ०१ ०६ १७	०६ १० ५८ १५	०४ ०१ ३३ ०४	०५ २८ ३८ ५९	११ १४ १७ २७	१० ०१ ०५ ४३	०४ ०१ ०५ ४३
१६	सोम	०६ २९ २६ ३५	०९ १३ २६ ५९	०४ ०१ ३३ १२	०६ ११ १८ ०१	०४ ०१ ३८ ०८	०५ २८ ४२ ३६	११ १४ १४ ५०	१० ०१ ०२ ३३	०४ ०१ ०२ ३३
१७	मंगल	०७ ०० २७ ०३	०९ २५ २५ ३९	०४ ०१ ५९ ५१	०६ ११ ४७ १०	०४ ०१ ४३ ०२	०५ २८ ४८ ३४	११ १४ १२ १८	१० ०० ५९ २२	०४ ०० ५९ २२
१८	बुध	०७ ०१ २७ ३२	१० ०७ ३७ ४६	०४ ०२ २६ १५	०६ १२ २४ ५०	०४ ०१ ४७ ४६	०५ २८ ५६ ४९	११ १४ ०९ ५२	१० ०० ५६ ११	०४ ०० ५६ ११
१९	गुरु	०७ ०२ २८ ०२	१० २० ०८ ५१	०४ ०२ ५२ २२	०६ १३ १० ०६	०४ ०१ ५२ १९	०५ २९ ०७ १८	११ १४ ०७ ३१	१० ०० ५३ ००	०४ ०० ५३ ००
२०	शुक्र	०७ ०३ २८ ३३	११ ०३ ०३ ५२	०४ ०३ १८ १३	०६ १४ ०२ ०७	०४ ०१ ५६ ४२	०५ २९ १९ ५९	११ १४ ०५ १६	१० ०० ४९ ५०	०४ ०० ४९ ५०
२१	शनि	०७ ०४ २९ ०६	११ १६ २६ ३८	०४ ०३ ४३ ४६	०६ १५ ०० ०३	०४ ०२ ०० ५५	०५ २९ ३४ ४७	११ १४ ०३ ०७	१० ०० ४६ ३९	०४ ०० ४६ ३९
२२	रवि	०७ ०५ २९ ४०	०० ०० १८ ५६	०४ ०४ ०९ ०३	०६ १६ ०३ ०९	०४ ०२ ०४ ५८	०५ २९ ५१ ४०	११ १४ ०१ ०४	१० ०० ४३ २८	०४ ०० ४३ २८
२३	सोम	०७ ०६ ३० १५	०० १४ ३९ ३८	०४ ०४ ३४ ०३	०६ १७ १० ४४	०४ ०२ ०८ ५०	०६ ०० १० ३४	११ १३ ५९ ०७	१० ०० ४० १७	०४ ०० ४० १७
२४	मंगल	०७ ०७ ३० ५१	०० २९ २४ १६	०४ ०४ ५८ ४४	०६ १८ २२ ०९	०४ ०२ १२ ३१	०६ ०० ३१ २५	११ १३ ५७ १६	१० ०० ३७ ०६	०४ ०० ३७ ०६
२५	बुध	०७ ०८ ३१ २९	०१ १४ २५ ०७	०४ ०५ २३ ०८	०६ १९ ३६ ५४	०४ ०२ १६ ०२	०६ ०० ५४ १०	११ १३ ५५ ३१	१० ०० ३३ ५६	०४ ०० ३३ ५६
२६	गुरु	०७ ०९ ३२ ०९	०१ २९ ३२ २०	०४ ०५ ४७ १३	०६ २० ५४ २९	०४ ०२ १९ २२	०६ ०१ १८ ४६	११ १३ ५३ ५१	१० ०० ३० ४५	०४ ०० ३० ४५
२७	शुक्र	०७ १० ३२ ४९	०२ १४ ३५ ३८	०४ ०६ ११ ००	०६ २२ १४ २८	०४ ०२ २२ ३१	०६ ०१ ४५ ०८	११ १३ ५२ १८	१० ०० २७ ३४	०४ ०० २७ ३४
२८	शनि	०७ ११ ३३ ३१	०२ २९ २६ ०७	०४ ०६ ३४ २७	०६ २३ ३६ ३१	०४ ०२ २५ २९	०६ ०२ १३ १३	११ १३ ५० ५१	१० ०० २४ २३	०४ ०० २४ २३
२९	रवि	०७ १२ ३४ १५	०३ १३ ५७ ३०	०४ ०६ ५७ ३४	०६ २५ ०० १७	०४ ०२ २८ १७	०६ ०२ ४२ ५७	११ १३ ४९ ३१	१० ०० २१ १३	०४ ०० २१ १३
३०	सोम	०७ १३ ३५ ०१	०३ २८ ०६ ४०	०४ ०७ २० २१	०६ २६ २५ ३३	०४ ०२ ३० ५३	०६ ०३ १४ १७	११ १३ ४८ १६	१० ०० १८ ०२	०४ ०० १८ ०२

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, दिसम्बर २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	मंगल	०७ १४ ३५ ४७	०४ ११ ५३ ०७	०४ ०७ ४२ ४७	०६ २७ ५२ ०२	०४ ०२ ३३ १८	०६ ०३ ४७ ०९	११ १३ ४७ ०८	१० ०० १४ ५१	०४ ०० १४ ५१
२	बुध	०७ १५ ३६ ३६	०४ २५ १८ १८	०४ ०८ ०४ ५२	०६ २९ १९ ३४	०४ ०२ ३५ ३१	०६ ०४ २१ ३०	११ १३ ४६ ०६	१० ०० ११ ४०	०४ ०० ११ ४०
३	गुरु	०७ १६ ३७ २६	०५ ०८ २४ ४३	०४ ०८ २६ ३६	०७ ०० ४७ ५९	०४ ०२ ३७ ३४	०६ ०४ ५७ १५	११ १३ ४५ ११	१० ०० ०८ ३०	०४ ०० ०८ ३०
४	शुक्र	०७ १७ ३८ १७	०५ २१ १५ ११	०४ ०८ ४७ ५७	०७ ०२ १७ ०८	०४ ०२ ३९ २४	०६ ०५ ३४ २३	११ १३ ४४ २२	१० ०० ०५ १९	०४ ०० ०५ १९
५	शनि	०७ १८ ३९ १०	०६ ०३ ५२ २२	०४ ०९ ०८ ५५	०७ ०३ ४६ ५३	०४ ०२ ४१ ०४	०६ ०६ १२ ४८	११ १३ ४३ ४०	१० ०० ०२ ०८	०४ ०० ०२ ०८
६	रवि	०७ १९ ४० ०४	०६ १६ १८ २९	०४ ०९ २९ ३०	०७ ०५ १७ १०	०४ ०२ ४२ ३२	०६ ०६ ५२ २९	११ १३ ४३ ०४	०९ २९ ५८ ५७	०३ २९ ५८ ५७
७	सोम	०७ २० ४० ५९	०६ २८ ३५ १४	०४ ०९ ४९ ४१	०७ ०६ ४७ ५३	०४ ०२ ४३ ४८	०६ ०७ ३३ २३	११ १३ ४२ ३४	०९ २९ ५५ ४६	०३ २९ ५५ ४६
८	मंगल	०७ २१ ४१ ५५	०७ १० ४३ ५१	०४ १० ०९ २८	०७ ०८ १८ ५८	०४ ०२ ४४ ५२	०६ ०८ १५ २५	११ १३ ४२ ११	०९ २९ ५२ ३६	०३ २९ ५२ ३६
९	बुध	०७ २२ ४२ ५२	०७ २२ ४५ २२	०४ १० २८ ४९	०७ ०९ ५० २२	०४ ०२ ४५ ४५	०६ ०८ ५८ ३५	११ १३ ४१ ५५	०९ २९ ४९ २५	०३ २९ ४९ २५
१०	गुरु	०७ २३ ४३ ५१	०८ ०४ ४० ५०	०४ १० ४७ ४६	०७ ११ २२ ०१	०४ ०२ ४६ २६	०६ ०९ ४२ ४८	११ १३ ४१ ४५	०९ २९ ४६ १४	०३ २९ ४६ १४
११	शुक्र	०७ २४ ४४ ५०	०८ १६ ३१ ३७	०४ ११ ०६ १६	०७ १२ ५३ ५४	०४ ०२ ४६ ५५	०६ १० २८ ०३	११ १३ ४१ ४२	०९ २९ ४३ ०३	०३ २९ ४३ ०३
१२	शनि	०७ २५ ४५ ५०	०८ २८ १९ ३५	०४ ११ २४ २०	०७ १४ २५ ५९	०४ ०२ ४७ १३	०६ ११ १४ १६	११ १३ ४१ ४५	०९ २९ ३९ ५३	०३ २९ ३९ ५३
१३	रवि	०७ २६ ४६ ५०	०९ १० ०७ १८	०४ ११ ४१ ५७	०७ १५ ५८ १५	०४ ०२ ४७ १८	०६ १२ ०१ २७	११ १३ ४१ ५५	०९ २९ ३६ ४२	०३ २९ ३६ ४२
१४	सोम	०७ २७ ४७ ५१	०९ २१ ५८ ०६	०४ ११ ५९ ०६	०७ १७ ३० ४०	०४ ०२ ४७ १२	०६ १२ ४९ ३२	११ १३ ४२ १२	०९ २९ ३३ ३१	०३ २९ ३३ ३१
१५	मंगल	०७ २८ ४८ ५३	१० ०३ ५६ ०४	०४ १२ १५ ४७	०७ १९ ०३ १४	०४ ०२ ४६ ५४	०६ १३ ३८ २९	११ १३ ४२ ३५	०९ २९ ३० २०	०३ २९ ३० २०
१६	बुध	०७ २९ ४९ ५५	१० १६ ०५ ५३	०४ १२ ३२ ००	०७ २० ३५ ५७	०४ ०२ ४६ २५	०६ १४ २८ १७	११ १३ ४३ ०५	०९ २९ २७ ०९	०३ २९ २७ ०९
१७	गुरु	०८ ०० ५० ५८	१० २८ ३२ ३८	०४ १२ ४७ ४३	०७ २२ ०८ ४८	०४ ०२ ४५ ४३	०६ १५ १८ ५३	११ १३ ४३ ४२	०९ २९ २३ ५९	०३ २९ २३ ५९
१८	शुक्र	०८ ०१ ५२ ०१	११ ११ २१ २५	०४ १३ ०२ ५७	०७ २३ ४१ ४८	०४ ०२ ४४ ५०	०६ १६ १० १६	११ १३ ४४ २५	०९ २९ २० ४८	०३ २९ २० ४८
१९	शनि	०८ ०२ ५३ ०५	११ २४ ३६ ३९	०४ १३ १७ ४०	०७ २५ १४ ५६	०४ ०२ ४३ ४५	०६ १७ ०२ २४	११ १३ ४५ १४	०९ २९ १७ ३७	०३ २९ १७ ३७
२०	रवि	०८ ०३ ५४ ०९	०० ०८ २१ २४	०४ १३ ३१ ५२	०७ २६ ४८ १४	०४ ०२ ४२ २८	०६ १७ ५५ १५	११ १३ ४६ ११	०९ २९ १४ २६	०३ २९ १४ २६
२१	सोम	०८ ०४ ५५ १३	०० २२ ३६ २२	०४ १३ ४५ ३३	०७ २८ २१ ४०	०४ ०२ ४१ ००	०६ १८ ४८ ४८	११ १३ ४७ १३	०९ २९ ११ १६	०३ २९ ११ १६
२२	मंगल	०८ ०५ ५६ १७	०१ ०७ १९ ०२	०४ १३ ५८ ४२	०७ २९ ५५ १८	०४ ०२ ३९ २०	०६ १९ ४३ ०२	११ १३ ४८ २२	०९ २९ ०८ ०५	०३ २९ ०८ ०५
२३	बुध	०८ ०६ ५७ २२	०१ २२ २३ १९	०४ १४ ११ १८	०८ ०१ २९ ०५	०४ ०२ ३७ २८	०६ २० ३७ ५५	११ १३ ४९ ३८	०९ २९ ०४ ५४	०३ २९ ०४ ५४
२४	गुरु	०८ ०७ ५८ २७	०२ ०७ ४० ००	०४ १४ २३ २१	०८ ०३ ०३ ०५	०४ ०२ ३५ २५	०६ २१ ३३ २५	११ १३ ५१ ००	०९ २९ ०१ ४३	०३ २९ ०१ ४३
२५	शुक्र	०८ ०८ ५९ ३३	०२ २२ ५८ ०६	०४ १४ ३४ ५०	०८ ०४ ३७ १७	०४ ०२ ३३ १०	०६ २२ २९ ३२	११ १३ ५२ २९	०९ २८ ५८ ३३	०३ २८ ५८ ३३
२६	शनि	०८ १० ०० ३९	०३ ०८ ०६ ४६	०४ १४ ४५ ४४	०८ ०६ ११ ४२	०४ ०२ ३० ४४	०६ २३ २६ १४	११ १३ ५४ ०४	०९ २८ ५५ २२	०३ २८ ५५ २२
२७	रवि	०८ ११ ०१ ४५	०३ २२ ५७ ०८	०४ १४ ५६ ०३	०८ ०७ ४६ २१	०४ ०२ २८ ०६	०६ २४ २३ २९	११ १३ ५५ ४५	०९ २८ ५२ ११	०३ २८ ५२ ११
२८	सोम	०८ १२ ०२ ५२	०४ ०७ २३ २३	०४ १५ ०५ ४६	०८ ०९ २१ १६	०४ ०२ २५ १८	०६ २५ २१ १८	११ १३ ५७ ३३	०९ २८ ४९ ००	०३ २८ ४९ ००
२९	मंगल	०८ १३ ०४ ००	०४ २१ २२ ५९	०४ १५ १४ ५१	०८ १० ५६ २६	०४ ०२ २२ १७	०६ २६ १९ ३८	११ १३ ५९ २७	०९ २८ ४५ ४९	०३ २८ ४५ ४९
३०	बुध	०८ १४ ०५ ०८	०५ ०४ ५६ ०९	०४ १५ २३ १९	०८ १२ ३१ ५४	०४ ०२ १९ ०६	०६ २७ १८ २८	११ १४ ०१ २७	०९ २८ ४२ ३९	०३ २८ ४२ ३९
३१	गुरु	०८ १५ ०६ १६	०५ १८ ०५ ००	०४ १५ ३१ ०८	०८ १४ ०७ ३९	०४ ०२ १५ ४३	०६ २८ १७ ४७	११ १४ ०३ ३४	०९ २८ ३९ २८	०३ २८ ३९ २८

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, जनवरी २०२७ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	शुक्र	०८ १६ ०७ २६	०६ ०० ५२ ४९	०४ १५ ३८ १८	०८ १५ ४३ ४३	०४ ०२ १२ १०	०६ २९ १७ ३४	११ १४ ०५ ४७	०९ २८ ३६ १७	०३ २८ ३६ १७
२	शनि	०८ १७ ०८ ३५	०६ १३ २३ १६	०४ १५ ४४ ४८	०८ १७ २० ०७	०४ ०२ ०८ २५	०७ ०० १७ ४८	११ १४ ०८ ०६	०९ २८ ३३ ०६	०३ २८ ३३ ०६
३	रवि	०८ १८ ०९ ४५	०६ २५ ४० ०२	०४ १५ ५० ३७	०८ १८ ५६ ५१	०४ ०२ ०४ ३०	०७ ०१ १८ २८	११ १४ १० ३२	०९ २८ २९ ५६	०३ २८ २९ ५६
४	सोम	०८ १९ १० ५५	०७ ०७ ४६ २३	०४ १५ ५५ ४५	०८ २० ३३ ५६	०४ ०२ ०० २३	०७ ०२ १९ ३२	११ १४ १३ ०३	०९ २८ २६ ४५	०३ २८ २६ ४५
५	मंगल	०८ २० १२ ०५	०७ १९ ४५ १२	०४ १६ ०० १०	०८ २२ ११ २२	०४ ०१ ५६ ०७	०७ ०३ २१ ०१	११ १४ १५ ४१	०९ २८ २३ ३४	०३ २८ २३ ३४
६	बुध	०८ २१ १३ १५	०८ ०१ ३८ ५०	०४ १६ ०३ ५३	०८ २३ ४९ ११	०४ ०१ ५१ ३९	०७ ०४ २२ ५२	११ १४ १८ २५	०९ २८ २० २३	०३ २८ २० २३
७	गुरु	०८ २२ १४ २६	०८ १३ २९ १७	०४ १६ ०६ ५२	०८ २५ २७ २२	०४ ०१ ४७ ०२	०७ ०५ २५ ०६	११ १४ २१ १५	०९ २८ १७ १३	०३ २८ १७ १३
८	शुक्र	०८ २३ १५ ३६	०८ २५ १८ २१	०४ १६ ०९ ०७	०८ २७ ०५ ५६	०४ ०१ ४२ १५	०७ ०६ २७ ४०	११ १४ २४ ११	०९ २८ १४ ०२	०३ २८ १४ ०२
९	शनि	०८ २४ १६ ४६	०९ ०७ ०७ ४९	०४ १६ १० ३७	०८ २८ ४४ ५२	०४ ०१ ३७ १७	०७ ०७ ३० ३५	११ १४ २७ १३	०९ २८ १० ५१	०३ २८ १० ५१
१०	रवि	०८ २५ १७ ५६	०९ १८ ५९ ३६	०४ १६ ११ २३	०९ ०० २४ १०	०४ ०१ ३२ १०	०७ ०८ ३३ ५०	११ १४ ३० २०	०९ २८ ०७ ४०	०३ २८ ०७ ४०
११	सोम	०८ २६ १९ ०५	१० ०० ५६ ०२	०४ १६ ११ २३	०९ ०२ ०३ ५०	०४ ०१ २६ ५३	०७ ०९ ३७ २४	११ १४ ३३ ३४	०९ २८ ०४ २९	०३ २८ ०४ २९
१२	मंगल	०८ २७ २० १४	१० १२ ५९ ५१	०४ १६ १० ३७	०९ ०३ ४३ ५१	०४ ०१ २१ २७	०७ १० ४१ १६	११ १४ ३६ ५४	०९ २८ ०१ १९	०३ २८ ०१ १९
१३	बुध	०८ २८ २१ २३	१० २५ १४ २०	०४ १६ ०९ ०४	०९ ०५ २४ १२	०४ ०१ १५ ५२	०७ ११ ४५ २६	११ १४ ४० १९	०९ २७ ५८ ०८	०३ २७ ५८ ०८
१४	गुरु	०८ २९ २२ ३१	११ ०७ ४३ ११	०४ १६ ०६ ४५	०९ ०७ ०४ ५०	०४ ०१ १० ०९	०७ १२ ४९ ५२	११ १४ ४३ ५०	०९ २७ ५४ ५७	०३ २७ ५४ ५७
१५	शुक्र	०९ ०० २३ ३८	११ २० ३० १७	०४ १६ ०३ ३९	०९ ०८ ४५ ४३	०४ ०१ ०४ १६	०७ १३ ५४ ३६	११ १४ ४७ २६	०९ २७ ५१ ४६	०३ २७ ५१ ४६
१६	शनि	०९ ०१ २४ ४५	०० ०३ ३९ २३	०४ १५ ५९ ४५	०९ १० २६ ४९	०४ ०० ५८ १५	०७ १४ ५९ ३५	११ १४ ५१ ०९	०९ २७ ४८ ३६	०३ २७ ४८ ३६
१७	रवि	०९ ०२ २५ ५१	०० १७ १३ ३१	०४ १५ ५५ ०४	०९ १२ ०८ ०३	०४ ०० ५२ ०६	०७ १६ ०४ ४९	११ १४ ५४ ५६	०९ २७ ४५ २५	०३ २७ ४५ २५
१८	सोम	०९ ०३ २६ ५६	०१ ०१ १४ १५	०४ १५ ४९ ३५	०९ १३ ४९ २०	०४ ०० ४५ ४९	०७ १७ १० १९	११ १४ ५८ ५०	०९ २७ ४२ १४	०३ २७ ४२ १४
१९	मंगल	०९ ०४ २८ ००	०१ १५ ४१ ०१	०४ १५ ४३ १९	०९ १५ ३० ३६	०४ ०० ३९ २५	०७ १८ १६ ०३	११ १५ ०२ ४८	०९ २७ ३९ ०३	०३ २७ ३९ ०३
२०	बुध	०९ ०५ २९ ०४	०२ ०० ३० २२	०४ १५ ३६ १५	०९ १७ ११ ४२	०४ ०० ३२ ५३	०७ १९ २२ ०१	११ १५ ०६ ५२	०९ २७ ३५ ५२	०३ २७ ३५ ५२
२१	गुरु	०९ ०६ ३० ०७	०२ १५ ३५ ५९	०४ १५ २८ २३	०९ १८ ५२ ३०	०४ ०० २६ १४	०७ २० २८ १३	११ १५ ११ ०१	०९ २७ ३२ ४२	०३ २७ ३२ ४२
२२	शुक्र	०९ ०७ ३१ ०९	०३ ०० ४९ ०२	०४ १५ १९ ४३	०९ २० ३२ ५१	०४ ०० १९ २८	०७ २१ ३४ ३९	११ १५ १५ १६	०९ २७ २९ ३१	०३ २७ २९ ३१
२३	शनि	०९ ०८ ३२ १०	०३ १५ ५९ ३४	०४ १५ १० १५	०९ २२ १२ ३१	०४ ०० १२ ३६	०७ २२ ४१ १७	११ १५ १९ ३५	०९ २७ २६ २०	०३ २७ २६ २०
२४	रवि	०९ ०९ ३३ ११	०४ ०० ५७ ५५	०४ १५ ०० ००	०९ २३ ५१ १७	०४ ०० ०५ ३७	०७ २३ ४८ ०८	११ १५ २४ ००	०९ २७ २३ ०९	०३ २७ २३ ०९
२५	सोम	०९ १० ३४ ११	०४ १५ ३६ १८	०४ १४ ४८ ५७	०९ २५ २८ ५१	०३ २९ ५८ ३२	०७ २४ ५५ १२	११ १५ २८ २९	०९ २७ १९ ५९	०३ २७ १९ ५९
२६	मंगल	०९ ११ ३५ १०	०४ २९ ४९ ३४	०४ १४ ३७ ०८	०९ २७ ०४ ५५	०३ २९ ५१ २२	०७ २६ ०२ २७	११ १५ ३३ ०४	०९ २७ १६ ४८	०३ २७ १६ ४८
२७	बुध	०९ १२ ३६ ०९	०५ १३ ३५ २७	०४ १४ २४ ३१	०९ २८ ३९ ०५	०३ २९ ४४ ०६	०७ २७ ०९ ५४	११ १५ ३७ ४४	०९ २७ १३ ३७	०३ २७ १३ ३७
२८	गुरु	०९ १३ ३७ ०७	०५ २६ ५४ १८	०४ १४ ११ ०८	१० ०० १० ५५	०३ २९ ३६ ४५	०७ २८ १७ ३२	११ १५ ४२ २८	०९ २७ १० २६	०३ २७ १० २६
२९	शुक्र	०९ १४ ३८ ०५	०६ ०९ ४८ २१	०४ १३ ५७ ००	१० ०१ ३९ ५६	०३ २९ २९ १९	०७ २९ २५ २१	११ १५ ४७ १७	०९ २७ ०७ १६	०३ २७ ०७ १६
३०	शनि	०९ १५ ३९ ०२	०६ २२ २१ ०७	०४ १३ ४२ ०७	१० ०३ ०५ ३४	०३ २९ २१ ४९	०८ ०० ३३ २०	११ १५ ५२ ११	०९ २७ ०४ ०५	०३ २७ ०४ ०५
३१	रवि	०९ १६ ३९ ५८	०७ ०४ ३६ ४५	०४ १३ २६ २९	१० ०४ २७ १३	०३ २९ १४ १४	०८ ०१ ४१ २९	११ १५ ५७ १०	०९ २७ ०० ५४	०३ २७ ०० ५४

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, फरवरी २०२७ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	सोम	०९ १७ ४० ५४	०७ १६ ३९ ३६	०४ १३ १० ०९	१० ०५ ४४ १३	०३ २९ ०६ ३५	०८ ०२ ४९ ४७	११ १६ ०२ १३	०९ २६ ५७ ४३	०३ २६ ५७ ४३
२	मंगल	०९ १८ ४१ ४९	०७ २८ ३३ ५२	०४ १२ ५३ ०७	१० ०६ ५५ ५०	०३ २८ ५८ ५३	०८ ०३ ५८ १५	११ १६ ०७ २१	०९ २६ ५४ ३२	०३ २६ ५४ ३२
३	बुध	०९ १९ ४२ ४३	०८ १० २३ २४	०४ १२ ३५ २५	१० ०८ ०१ १७	०३ २८ ५१ ०८	०८ ०५ ०६ ५१	११ १६ १२ ३३	०९ २६ ५१ २२	०३ २६ ५१ २२
४	गुरु	०९ २० ४३ ३६	०८ २२ ११ ३३	०४ १२ १७ ०३	१० ०८ ५९ ४९	०३ २८ ४३ २०	०८ ०६ १५ ३७	११ १६ १७ ५०	०९ २६ ४८ ११	०३ २६ ४८ ११
५	शुक्र	०९ २१ ४४ २८	०९ ०४ ०१ १५	०४ ११ ५८ ०५	१० ०९ ५० ३७	०३ २८ ३५ २९	०८ ०७ २४ ३०	११ १६ २३ ११	०९ २६ ४५ ००	०३ २६ ४५ ००
६	शनि	०९ २२ ४५ १९	०९ १५ ५४ ५४	०४ ११ ३८ ३०	१० १० ३२ ५४	०३ २८ २७ ३६	०८ ०८ ३३ ३१	११ १६ २८ ३७	०९ २६ ४१ ४९	०३ २६ ४१ ४९
७	रवि	०९ २३ ४६ ०९	०९ २७ ५४ ३४	०४ ११ १८ २२	१० ११ ०५ ५७	०३ २८ १९ ४२	०८ ०९ ४२ ४०	११ १६ ३४ ०७	०९ २६ ३८ ३९	०३ २६ ३८ ३९
८	सोम	०९ २४ ४६ ५७	१० १० ०२ ०५	०४ १० ५७ ४२	१० ११ २९ ०७	०३ २८ ११ ४६	०८ १० ५१ ५६	११ १६ ३९ ४१	०९ २६ ३५ २८	०३ २६ ३५ २८
९	मंगल	०९ २५ ४७ ४५	१० २२ १९ ०६	०४ १० ३६ ३२	१० ११ ४१ ५६	०३ २८ ०३ ४९	०८ १२ ०१ १९	११ १६ ४५ १८	०९ २६ ३२ १७	०३ २६ ३२ १७
१०	बुध	०९ २६ ४८ ३१	११ ०४ ४७ १९	०४ १० १४ ५५	१० ११ ४४ ०१	०३ २७ ५५ ५२	०८ १३ १० ४९	११ १६ ५१ ००	०९ २६ २९ ०६	०३ २६ २९ ०६
११	गुरु	०९ २७ ४९ १५	११ १७ २८ ३१	०४ ०९ ५२ ५२	१० ११ ३५ १६	०३ २७ ४७ ५४	०८ १४ २० २५	११ १६ ५६ ४६	०९ २६ २५ ५६	०३ २६ २५ ५६
१२	शुक्र	०९ २८ ४९ ५८	०० ०० २४ ३२	०४ ०९ ३० २७	१० ११ १५ ४९	०३ २७ ३९ ५६	०८ १५ ३० ०८	११ १७ ०२ ३६	०९ २६ २२ ४५	०३ २६ २२ ४५
१३	शनि	०९ २९ ५० ४०	०० १३ ३७ १४	०४ ०९ ०७ ४२	१० १० ४६ ०३	०३ २७ ३१ ५९	०८ १६ ३९ ५७	११ १७ ०८ ३०	०९ २६ १९ ३४	०३ २६ १९ ३४
१४	रवि	१० ०० ५१ १९	०० २७ ०८ १४	०४ ०८ ४४ ३९	१० १० ०६ ४१	०३ २७ २४ ०२	०८ १७ ४९ ५२	११ १७ १४ २७	०९ २६ १६ २३	०३ २६ १६ २३
१५	सोम	१० ०१ ५१ ५७	०१ १० ५८ ३१	०४ ०८ २१ २२	१० ०९ १८ ४३	०३ २७ १६ ०७	०८ १८ ५९ ५२	११ १७ २० २८	०९ २६ १३ १२	०३ २६ १३ १२
१६	मंगल	१० ०२ ५२ ३३	०१ २५ ०८ ०५	०४ ०७ ५७ ५१	१० ०८ २३ २७	०३ २७ ०८ १३	०८ २० ०९ ५९	११ १७ २६ ३३	०९ २६ १० ०२	०३ २६ १० ०२
१७	बुध	१० ०३ ५३ ०८	०२ ०९ ३५ २४	०४ ०७ ३४ ११	१० ०७ २२ २३	०३ २७ ०० २१	०८ २१ २० १०	११ १७ ३२ ४१	०९ २६ ०६ ५१	०३ २६ ०६ ५१
१८	गुरु	१० ०४ ५३ ४१	०२ २४ १७ ०६	०४ ०७ १० २५	१० ०६ १७ १४	०३ २६ ५२ ३१	०८ २२ ३० २७	११ १७ ३८ ५२	०९ २६ ०३ ४०	०३ २६ ०३ ४०
१९	शुक्र	१० ०५ ५४ १२	०३ ०९ ०७ ५५	०४ ०६ ४६ ३३	१० ०५ ०९ ४६	०३ २६ ४४ ४४	०८ २३ ४० ५०	११ १७ ४५ ०७	०९ २६ ०० २९	०३ २६ ०० २९
२०	शनि	१० ०६ ५४ ४१	०३ २४ ०० ५९	०४ ०६ २२ ४०	१० ०४ ०१ ४६	०३ २६ ३६ ५९	०८ २४ ५१ १८	११ १७ ५१ २५	०९ २५ ५७ १९	०३ २५ ५७ १९
२१	रवि	१० ०७ ५५ ०९	०४ ०८ ४८ ३९	०४ ०५ ५८ ४८	१० ०२ ५४ ५७	०३ २६ २९ १८	०८ २६ ०१ ५०	११ १७ ५७ ४६	०९ २५ ५४ ०८	०३ २५ ५४ ०८
२२	सोम	१० ०८ ५५ ३५	०४ २३ २३ २३	०४ ०५ ३४ ५९	१० ०१ ५० ५३	०३ २६ २१ ४०	०८ २७ १२ २८	११ १८ ०४ १०	०९ २५ ५० ५७	०३ २५ ५० ५७
२३	मंगल	१० ०९ ५५ ५९	०५ ०७ ३८ ५७	०४ ०५ ११ १६	१० ०० ५० ५५	०३ २६ १४ ०६	०८ २८ २३ ११	११ १८ १० ३७	०९ २५ ४७ ४६	०३ २५ ४७ ४६
२४	बुध	१० १० ५६ २२	०५ २१ ३१ ०२	०४ ०४ ४७ ४२	०९ २९ ५६ ०८	०३ २६ ०६ ३६	०८ २९ ३३ ५९	११ १८ १७ ०८	०९ २५ ४४ ३६	०३ २५ ४४ ३६
२५	गुरु	१० ११ ५६ ४४	०६ ०४ ५७ ४३	०४ ०४ २४ २०	०९ २९ ०७ २४	०३ २५ ५९ ११	०९ ०० ४४ ५१	११ १८ २३ ४१	०९ २५ ४१ २५	०३ २५ ४१ २५
२६	शुक्र	१० १२ ५७ ०४	०६ १७ ५९ १७	०४ ०४ ०१ १०	०९ २८ २५ १९	०३ २५ ५१ ५०	०९ ०१ ५५ ४८	११ १८ ३० १७	०९ २५ ३८ १४	०३ २५ ३८ १४
२७	शनि	१० १३ ५७ २३	०७ ०० ३७ ५५	०४ ०३ ३८ १८	०९ २७ ५० १६	०३ २५ ४४ ३४	०९ ०३ ०६ ४९	११ १८ ३६ ५६	०९ २५ ३५ ०३	०३ २५ ३५ ०३
२८	रवि	१० १४ ५७ ४०	०७ १२ ५७ ११	०४ ०३ १५ ४४	०९ २७ २२ २५	०३ २५ ३७ २४	०९ ०४ १७ ५४	११ १८ ४३ ३८	०९ २५ ३१ ५२	०३ २५ ३१ ५२

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, मार्च २०२७ (भा. स्टैं. टा. समय प्रात:०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	सोम	१० १५ ५७ ५६	०७ २५ ०१ २८	०४ ०२ ५३ ३१	०९ २७ ०१ ४८	०३ २५ ३० १९	०९ ०५ २९ ०३	११ १८ ५० २३	०९ २५ २८ ४२	०३ २५ २८ ४२
२	मंगल	१० १६ ५८ १०	०८ ०६ ५५ ३७	०४ ०२ ३१ ४२	०९ २६ ४८ १९	०३ २५ २३ २०	०९ ०६ ४० १६	११ १८ ५७ १०	०९ २५ २५ ३१	०३ २५ २५ ३१
३	बुध	१० १७ ५८ २३	०८ १८ ४४ २९	०४ ०२ १० १९	०९ २६ ४१ ४६	०३ २५ १६ २७	०९ ०७ ५१ ३३	११ १९ ०४ ००	०९ २५ २२ २०	०३ २५ २२ २०
४	गुरु	१० १८ ५८ ३४	०९ ०० ३२ ४३	०४ ०१ ४९ २३	०९ २६ ४१ ५१	०३ २५ ०९ ४०	०९ ०९ ०२ ५४	११ १९ १० ५२	०९ २५ १९ ०९	०३ २५ १९ ०९
५	शुक्र	१० १९ ५८ ४४	०९ १२ २४ ३०	०४ ०१ २८ ५८	०९ २६ ४८ १८	०३ २५ ०३ ०१	०९ १० १४ १७	११ १९ १७ ४६	०९ २५ १५ ५९	०३ २५ १५ ५९
६	शनि	१० २० ५८ ५२	०९ २४ २३ २७	०४ ०१ ०९ ०५	०९ २७ ०० ४५	०३ २४ ५६ २८	०९ ११ २५ ४५	११ १९ २४ ४३	०९ २५ १२ ४८	०३ २५ १२ ४८
७	रवि	१० २१ ५८ ५८	१० ०६ ३२ २८	०४ ०० ४९ ४७	०९ २७ १८ ५१	०३ २४ ५० ०३	०९ १२ ३७ १५	११ १९ ३१ ४२	०९ २५ ०९ ३७	०३ २५ ०९ ३७
८	सोम	१० २२ ५९ ०३	१० १८ ५३ ३६	०४ ०० ३१ ०४	०९ २७ ४२ १६	०३ २४ ४३ ४६	०९ १३ ४८ ४८	११ १९ ३८ ४४	०९ २५ ०६ २६	०३ २५ ०६ २६
९	मंगल	१० २३ ५९ ०५	११ ०१ २८ ११	०४ ०० १२ ५९	०९ २८ १० ३९	०३ २४ ३७ ३६	०९ १५ ०० २४	११ १९ ४५ ४७	०९ २५ ०३ १५	०३ २५ ०३ १५
१०	बुध	१० २४ ५९ ०६	११ १४ १६ ४५	०३ २९ ५५ ३२	०९ २८ ४३ ४०	०३ २४ ३१ ३४	०९ १६ १२ ०३	११ १९ ५२ ५३	०९ २५ ०० ०५	०३ २५ ०० ०५
११	गुरु	१० २५ ५९ ०५	११ २७ १९ १३	०३ २९ ३८ ४७	०९ २९ २१ ०१	०३ २४ २५ ४१	०९ १७ २३ ४४	११ २० ०० ००	०९ २४ ५६ ५४	०३ २४ ५६ ५४
१२	शुक्र	१० २६ ५९ ०२	०० १० ३५ ०६	०३ २९ २२ ४२	१० ०० ०२ २४	०३ २४ १९ ५६	०९ १८ ३५ २८	११ २० ०७ १०	०९ २४ ५३ ४३	०३ २४ ५३ ४३
१३	शनि	१० २७ ५८ ५६	०० २४ ०३ ४१	०३ २९ ०७ २१	१० ०० ४७ ३४	०३ २४ १४ २०	०९ १९ ४७ १५	११ २० १४ २१	०९ २४ ५० ३२	०३ २४ ५० ३२
१४	रवि	१० २८ ५८ ४८	०१ ०७ ४४ १०	०३ २८ ५२ ४४	१० ०१ ३६ १५	०३ २४ ०८ ५३	०९ २० ५९ ०३	११ २० २१ ३४	०९ २४ ४७ २२	०३ २४ ४७ २२
१५	सोम	१० २९ ५८ ३८	०१ २१ ३५ ४७	०३ २८ ३८ ५१	१० ०२ २८ १४	०३ २४ ०३ ३५	०९ २२ १० ५४	११ २० २८ ४८	०९ २४ ४४ ११	०३ २४ ४४ ११
१६	मंगल	११ ०० ५८ २६	०२ ०५ ३७ ४४	०३ २८ २५ ४४	१० ०३ २३ १८	०३ २३ ५८ २६	०९ २३ २२ ४७	११ २० ३६ ०४	०९ २४ ४१ ००	०३ २४ ४१ ००
१७	बुध	११ ०१ ५८ १२	०२ १९ ४८ ५६	०३ २८ १३ २३	१० ०४ २१ १६	०३ २३ ५३ २७	०९ २४ ३४ ४२	११ २० ४३ २२	०९ २४ ३७ ४९	०३ २४ ३७ ४९
१८	गुरु	११ ०२ ५७ ५५	०३ ०४ ०७ ४७	०३ २८ ०१ ४८	१० ०५ २१ ५७	०३ २३ ४८ ३८	०९ २५ ४६ ४०	११ २० ५० ४१	०९ २४ ३४ ३९	०३ २४ ३४ ३९
१९	शुक्र	११ ०३ ५७ ३६	०३ १८ ३१ ५०	०३ २७ ५० ५९	१० ०६ २५ १२	०३ २३ ४३ ५८	०९ २६ ५८ ३९	११ २० ५८ ०२	०९ २४ ३१ २८	०३ २४ ३१ २८
२०	शनि	११ ०४ ५७ १५	०४ ०२ ५७ ३७	०३ २७ ४० ५८	१० ०७ ३० ५३	०३ २३ ३९ २८	०९ २८ १० ४०	११ २१ ०५ २३	०९ २४ २८ १७	०३ २४ २८ १७
२१	रवि	११ ०५ ५६ ५१	०४ १७ २० ४०	०३ २७ ३१ ४४	१० ०८ ३८ ५३	०३ २३ ३५ ०९	०९ २९ २२ ४४	११ २१ १२ ४६	०९ २४ २५ ०६	०३ २४ २५ ०६
२२	सोम	११ ०६ ५६ २६	०५ ०१ ३५ ५१	०३ २७ २३ १६	१० ०९ ४९ ०४	०३ २३ ३० ५९	१० ०० ३४ ५०	११ २१ २० ११	०९ २४ २१ ५५	०३ २४ २१ ५५
२३	मंगल	११ ०७ ५५ ५८	०५ १५ ३७ ५९	०३ २७ १५ ३५	१० ११ ०१ २०	०३ २३ २७ ००	१० ०१ ४६ ५७	११ २१ २७ ३६	०९ २४ १८ ४५	०३ २४ १८ ४५
२४	बुध	११ ०८ ५५ २९	०५ २९ २२ ३९	०३ २७ ०८ ४२	१० १२ १५ ३६	०३ २३ २३ ११	१० ०२ ५९ ०७	११ २१ ३५ ०२	०९ २४ १५ ३४	०३ २४ १५ ३४
२५	गुरु	११ ०९ ५४ ५७	०६ १२ ४६ ४४	०३ २७ ०२ ३५	१० १३ ३१ ४७	०३ २३ १९ ३३	१० ०४ ११ १९	११ २१ ४२ ३०	०९ २४ १२ २३	०३ २४ १२ २३
२६	शुक्र	११ १० ५४ २४	०६ २५ ४८ ५७	०३ २६ ५७ १४	१० १४ ४९ ४९	०३ २३ १६ ०५	१० ०५ २३ ३२	११ २१ ४९ ५८	०९ २४ ०९ १२	०३ २४ ०९ १२
२७	शनि	११ ११ ५३ ४९	०७ ०८ २९ ५१	०३ २६ ५२ ४०	१० १६ ०९ ३७	०३ २३ १२ ४८	१० ०६ ३५ ४८	११ २१ ५७ २७	०९ २४ ०६ ०२	०३ २४ ०६ ०२
२८	रवि	११ १२ ५३ १२	०७ २० ५१ ४०	०३ २६ ४८ ५२	१० १७ ३१ १०	०३ २३ ०९ ४१	१० ०७ ४८ ०५	११ २२ ०४ ५७	०९ २४ ०२ ५१	०३ २४ ०२ ५१
२९	सोम	११ १३ ५२ ३३	०८ ०२ ५८ ००	०३ २६ ४५ ५०	१० १८ ५४ २३	०३ २३ ०६ ४६	१० ०९ ०० २४	११ २२ १२ २८	०९ २३ ५९ ४०	०३ २३ ५९ ४०
३०	मंगल	११ १४ ५१ ५२	०८ १४ ५३ २३	०३ २६ ४३ ३४	१० २० १९ १४	०३ २३ ०४ ०१	१० १० १२ ४५	११ २२ १९ ५९	०९ २३ ५६ २९	०३ २३ ५६ २९
३१	बुध	११ १५ ५१ १०	०८ २६ ४२ ५६	०३ २६ ४२ ०२	१० २१ ४५ ४१	०३ २३ ०१ २७	१० ११ २५ ०७	११ २२ २७ ३१	०९ २३ ५३ १९	०३ २३ ५३ १९

विक्रम सम्वत् २०८३, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, अप्रैल २०२७ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	गुरु	११ १६ ५० २६	०९ ०८ ३१ ५७	०३ २६ ४१ १६	१० २३ १३ ४२	०३ २२ ५९ ०५	१० १२ ३७ ३१	११ २२ ३५ ०४	०९ २३ ५० ०८	०३ २३ ५० ०८
२	शुक्र	११ १७ ४९ ४०	०९ २० २५ ३७	०३ २६ ४१ १३	१० २४ ४३ १६	०३ २२ ५६ ५४	१० १३ ४९ ५६	११ २२ ४२ ३७	०९ २३ ४६ ५७	०३ २३ ४६ ५७
३	शनि	११ १८ ४८ ५२	१० ०२ २८ ४१	०३ २६ ४१ ५५	१० २६ १४ २२	०३ २२ ५४ ५३	१० १५ ०२ २३	११ २२ ५० १०	०९ २३ ४३ ४६	०३ २३ ४३ ४६
४	रवि	११ १९ ४८ ०३	१० १४ ४५ १३	०३ २६ ४३ २०	१० २७ ४६ ५८	०३ २२ ५३ ०४	१० १६ १४ ५१	११ २२ ५७ ४४	०९ २३ ४० ३५	०३ २३ ४० ३५
५	सोम	११ २० ४७ ११	१० २७ १८ १५	०३ २६ ४५ २८	१० २९ २१ ०४	०३ २२ ५१ २७	१० १७ २७ २१	११ २३ ०५ १८	०९ २३ ३७ २५	०३ २३ ३७ २५
६	मंगल	११ २१ ४६ १८	११ १० ०९ ३३	०३ २६ ४८ १८	११ ०० ५६ ४०	०३ २२ ५० ०१	१० १८ ३९ ५१	११ २३ १२ ५२	०९ २३ ३४ १४	०३ २३ ३४ १४
७	बुध	११ २२ ४५ २२	११ २३ १९ २१	०३ २६ ५१ ५१	११ ०२ ३३ ४४	०३ २२ ४८ ४६	१० १९ ५२ २३	११ २३ २० २६	०९ २३ ३१ ०३	०३ २३ ३१ ०३
८	गुरु	११ २३ ४४ २५	०० ०६ ४६ २७	०३ २६ ५६ ०४	११ ०४ १२ १८	०३ २२ ४७ ४२	१० २१ ०४ ५५	११ २३ २८ ०१	०९ २३ २७ ५२	०३ २३ २७ ५२
९	शुक्र	११ २४ ४३ २५	०० २० २८ २२	०३ २७ ०० ५८	११ ०५ ५२ २१	०३ २२ ४६ ५०	१० २२ १७ २९	११ २३ ३५ ३५	०९ २३ २४ ४२	०३ २३ २४ ४२
१०	शनि	११ २५ ४२ २४	०१ ०४ २१ ४४	०३ २७ ०६ ३३	११ ०७ ३३ ५३	०३ २२ ४६ ०९	१० २३ ३० ०३	११ २३ ४३ ०९	०९ २३ २१ ३१	०३ २३ २१ ३१
११	रवि	११ २६ ४१ २०	०१ १८ २२ ५७	०३ २७ १२ ४६	११ ०९ १६ ५५	०३ २२ ४५ ४०	१० २४ ४२ ३८	११ २३ ५० ४३	०९ २३ १८ २०	०३ २३ १८ २०
१२	सोम	११ २७ ४० १४	०२ ०२ २८ ४१	०३ २७ १९ ३९	११ ११ ०१ २७	०३ २२ ४५ २२	१० २५ ५५ १४	११ २३ ५८ १७	०९ २३ १५ ०९	०३ २३ १५ ०९
१३	मंगल	११ २८ ३९ ०५	०२ १६ ३६ १८	०३ २७ २७ ०९	११ १२ ४७ ३१	०३ २२ ४५ १६	१० २७ ०७ ५१	११ २४ ०५ ५१	०९ २३ ११ ५८	०३ २३ ११ ५८
१४	बुध	११ २९ ३७ ५५	०३ ०० ४३ ५९	०३ २७ ३५ १७	११ १४ ३५ ०५	०३ २२ ४५ २१	१० २८ २० २८	११ २४ १३ २४	०९ २३ ०८ ४८	०३ २३ ०८ ४८
१५	गुरु	०० ०० ३६ ४२	०३ १४ ५० ३१	०३ २७ ४४ ०१	११ १६ २४ १२	०३ २२ ४५ ३७	१० २९ ३३ ०६	११ २४ २० ५७	०९ २३ ०५ ३७	०३ २३ ०५ ३७
१६	शुक्र	०० ०१ ३५ २६	०३ २८ ५४ ५७	०३ २७ ५३ २१	११ १८ १४ ५१	०३ २२ ४६ ०४	११ ०० ४५ ४५	११ २४ २८ २९	०९ २३ ०२ २६	०३ २३ ०२ २६
१७	शनि	०० ०२ ३४ ०९	०४ १२ ५६ ०६	०३ २८ ०३ १५	११ २० ०७ ०३	०३ २२ ४६ ४३	११ ०१ ५८ २४	११ २४ ३६ ०१	०९ २२ ५९ १५	०३ २२ ५९ १५
१८	रवि	०० ०३ ३२ ४९	०४ २६ ५२ १९	०३ २८ १३ ४४	११ २२ ०० ४८	०३ २२ ४७ ३२	११ ०३ ११ ०४	११ २४ ४३ ३२	०९ २२ ५६ ०५	०३ २२ ५६ ०५
१९	सोम	०० ०४ ३१ २७	०५ १० ४१ १६	०३ २८ २४ ४६	११ २३ ५६ ०७	०३ २२ ४८ ३३	११ ०४ २३ ४५	११ २४ ५१ ०२	०९ २२ ५२ ५४	०३ २२ ५२ ५४
२०	मंगल	०० ०५ ३० ०३	०५ २४ २० ०५	०३ २८ ३६ २१	११ २५ ५२ ५७	०३ २२ ४९ ४५	११ ०५ ३६ २७	११ २४ ५८ ३२	०९ २२ ४९ ४३	०३ २२ ४९ ४३
२१	बुध	०० ०६ २८ ३७	०६ ०७ ४५ ५०	०३ २८ ४८ २८	११ २७ ५१ १९	०३ २२ ५१ ०८	११ ०६ ४९ ०९	११ २५ ०६ ०१	०९ २२ ४६ ३२	०३ २२ ४६ ३२
२२	गुरु	०० ०७ २७ ०९	०६ २० ५६ ००	०३ २९ ०१ ०७	११ २९ ५१ ११	०३ २२ ५२ ४२	११ ०८ ०१ ५२	११ २५ १३ २९	०९ २२ ४३ २२	०३ २२ ४३ २२
२३	शुक्र	०० ०८ २५ ४०	०७ ०३ ४९ ००	०३ २९ १४ १६	०० ०१ ५२ ३१	०३ २२ ५४ २७	११ ०९ १४ ३७	११ २५ २० ५६	०९ २२ ४० ११	०३ २२ ४० ११
२४	शनि	०० ०९ २४ ०८	०७ १६ २४ ३१	०३ २९ २७ ५५	०० ०३ ५५ १४	०३ २२ ५६ २२	११ १० २७ २१	११ २५ २८ २२	०९ २२ ३७ ००	०३ २२ ३७ ००
२५	रवि	०० १० २२ ३५	०७ २८ ४३ ४०	०३ २९ ४२ ०४	०० ०५ ५९ १७	०३ २२ ५८ २८	११ ११ ४० ०७	११ २५ ३५ ४७	०९ २२ ३३ ४९	०३ २२ ३३ ४९
२६	सोम	०० ११ २१ ००	०८ १० ४८ ५७	०३ २९ ५६ ४१	०० ०८ ०४ ३५	०३ २३ ०० ४५	११ १२ ५२ ५३	११ २५ ४३ ११	०९ २२ ३० ३८	०३ २२ ३० ३८
२७	मंगल	०० १२ १९ २३	०८ २२ ४४ ०३	०४ ०० ११ ४७	०० १० ११ ००	०३ २३ ०३ १३	११ १४ ०५ ४१	११ २५ ५० ३४	०९ २२ २७ २८	०३ २२ २७ २८
२८	बुध	०० १३ १७ ४५	०९ ०४ ३३ ३२	०४ ०० २७ २१	०० १२ १८ २३	०३ २३ ०५ ५१	११ १५ १८ २९	११ २५ ५७ ५५	०९ २२ २४ १७	०३ २२ २४ १७
२९	गुरु	०० १४ १६ ०६	०९ १६ २२ ३६	०४ ०० ४३ २२	०० १४ २६ ३६	०३ २३ ०८ ४०	११ १६ ३१ १७	११ २६ ०५ १६	०९ २२ २१ ०६	०३ २२ २१ ०६
३०	शुक्र	०० १५ १४ २४	०९ २८ १६ ४२	०४ ०० ५९ ५०	०० १६ ३५ २५	०३ २३ ११ ३९	११ १७ ४४ ०७	११ २६ १२ ३४	०९ २२ १७ ५५	०३ २२ १७ ५५

विक्रम सम्वत् २०२६-२७ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

मार्च, २०२६, अयनांश : २४:०८:५४

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१०:३०	१२:२५	१४:४०	१७:००	१९:१७	२१:३४	२३:५३	०२:१६	०४:२०	०६:०२	०७:२९	०८:५४
०२	१०:२६	१२:२१	१४:३६	१६:५६	१९:१३	२१:३०	२३:४९	०२:१२	०४:१६	०५:५८	०७:२५	०८:५०
०३	१०:२२	१२:१७	१४:३२	१६:५२	१९:१०	२१:२६	२३:४५	०२:०८	०४:१२	०५:५४	०७:२१	०८:४६
०४	१०:१८	१२:१३	१४:२८	१६:४८	१९:०६	२१:२२	२३:४१	०२:०४	०४:०८	०५:५०	०७:१८	०८:४३
०५	१०:१४	१२:०९	१४:२४	१६:४४	१९:०२	२१:१८	२३:३७	०२:००	०४:०४	०५:४६	०७:१४	०८:३९
०६	१०:१०	१२:०५	१४:२०	१६:४०	१८:५८	२१:१४	२३:३४	०१:५६	०४:००	०५:४२	०७:१०	०८:३५
०७	१०:०६	१२:०२	१४:१६	१६:३६	१८:५४	२१:१०	२३:३०	०१:५२	०३:५६	०५:३८	०७:०६	०८:३१
०८	१०:०२	११:५८	१४:१२	१६:३३	१८:५०	२१:०६	२३:२६	०१:४८	०३:५२	०५:३४	०७:०२	०८:२७
०९	०९:५८	११:५४	१४:०८	१६:२९	१८:४६	२१:०२	२३:२२	०१:४४	०३:४८	०५:३०	०६:५८	०८:२३
१०	०९:५४	११:५०	१४:०४	१६:२५	१८:४२	२०:५८	२३:१८	०१:४०	०३:४४	०५:२७	०६:५४	०८:१९
११	०९:५०	११:४६	१४:००	१६:२१	१८:३८	२०:५४	२३:१४	०१:३६	०३:४०	०५:२३	०६:५०	०८:१५
१२	०९:४६	११:४२	१३:५६	१६:१७	१८:३४	२०:५०	२३:१०	०१:३२	०३:३६	०५:१९	०६:४६	०८:११
१३	०९:४२	११:३८	१३:५३	१६:१३	१८:३०	२०:४७	२३:०६	०१:२९	०३:३२	०५:१५	०६:४२	०८:०७
१४	०९:३८	११:३४	१३:४९	१६:०९	१८:२६	२०:४३	२३:०२	०१:२५	०३:२९	०५:११	०६:३८	०८:०३
१५	०९:३४	११:३०	१३:४५	१६:०५	१८:२२	२०:३९	२२:५८	०१:२१	०३:२५	०५:०७	०६:३४	०७:५९
१६	०९:३१	११:२६	१३:४१	१६:०१	१८:१८	२०:३५	२२:५४	०१:१७	०३:२१	०५:०३	०६:३०	०७:५५
१७	०९:२७	११:२२	१३:३७	१५:५७	१८:१४	२०:३१	२२:५०	०१:१३	०३:१७	०४:५९	०६:२६	०७:५१
१८	०९:२३	११:१८	१३:३३	१५:५३	१८:११	२०:२७	२२:४६	०१:०९	०३:१३	०४:५५	०६:२३	०७:४७
१९	०९:१९	११:१४	१३:२९	१५:४९	१८:०७	२०:२३	२२:४२	०१:०५	०३:०९	०४:५१	०६:१९	०७:४४
२०	०९:१५	११:१०	१३:२५	१५:४५	१८:०३	२०:१९	२२:३९	०१:०१	०३:०५	०४:४७	०६:१५	०७:४०
२१	०९:११	११:०६	१३:२१	१५:४१	१७:५९	२०:१५	२२:३५	००:५७	०३:०१	०४:४३	०६:११	०७:३६
२२	०९:०७	११:०३	१३:१७	१५:३८	१७:५५	२०:११	२२:३१	००:५३	०२:५७	०४:३९	०६:०७	०७:३२
२३	०९:०३	१०:५९	१३:१३	१५:३४	१७:५१	२०:०७	२२:२७	००:४९	०२:५३	०४:३५	०६:०३	०७:२८
२४	०८:५९	१०:५५	१३:०९	१५:३०	१७:४७	२०:०३	२२:२३	००:४५	०२:४९	०४:३१	०५:५९	०७:२४
२५	०८:५५	१०:५१	१३:०५	१५:२६	१७:४३	१९:५९	२२:१९	००:४१	०२:४५	०४:२८	०५:५५	०७:२०
२६	०८:५१	१०:४७	१३:०१	१५:२२	१७:३९	१९:५५	२२:१५	००:३७	०२:४१	०४:२४	०५:५१	०७:१६
२७	०८:४७	१०:४३	१२:५८	१५:१८	१७:३५	१९:५१	२२:११	००:३३	०२:३७	०४:२०	०५:४७	०७:१२
२८	०८:४३	१०:३९	१२:५४	१५:१४	१७:३१	१९:४८	२२:०७	००:३०	०२:३४	०४:१६	०५:४३	०७:०८
२९	०८:३९	१०:३५	१२:५०	१५:१०	१७:२७	१९:४४	२२:०३	००:२६	०२:३०	०४:१२	०५:३९	०७:०४
३०	०८:३६	१०:३१	१२:४६	१५:०६	१७:२३	१९:४०	२१:५९	००:२२	०२:२६	०४:०८	०५:३५	०७:००
३१	०८:३२	१०:२७	१२:४२	१५:०२	१७:१९	१९:३६	२१:५५	००:१८	०२:२२	०४:०४	०५:३१	०६:५६

अप्रैल, २०२६, अयनांश : २४:०८:५७

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०८:२८	१०:२३	१२:३८	१४:५८	१७:१५	१९:३२	२१:५१	००:१४	०२:१८	०४:००	०५:२७	०६:५२
०२	०८:२४	१०:१९	१२:३४	१४:५४	१७:१२	१९:२८	२१:४७	००:१०	०२:१४	०३:५६	०५:२४	०६:४८
०३	०८:२०	१०:१५	१२:३०	१४:५०	१७:०८	१९:२४	२१:४३	००:०६	०२:१०	०३:५२	०५:२०	०६:४५
०४	०८:१६	१०:११	१२:२६	१४:४६	१७:०४	१९:२०	२१:४०	२३:५८	०२:०६	०३:४८	०५:१६	०६:४१
०५	०८:१२	१०:०७	१२:२२	१४:४२	१७:००	१९:१६	२१:३६	२३:५४	०२:०२	०३:४४	०५:१२	०६:३७
०६	०८:०८	१०:०४	१२:१८	१४:३९	१६:५६	१९:१२	२१:३२	२३:५०	०१:५८	०३:४०	०५:०८	०६:३३
०७	०८:०४	१०:००	१२:१४	१४:३५	१६:५२	१९:०८	२१:२८	२३:४६	०१:५४	०३:३६	०५:०४	०६:२९
०८	०८:००	०९:५६	१२:१०	१४:३१	१६:४८	१९:०४	२१:२४	२३:४२	०१:५०	०३:३३	०५:००	०६:२५
०९	०७:५६	०९:५२	१२:०६	१४:२७	१६:४४	१९:००	२१:२०	२३:३८	०१:४६	०३:२९	०४:५६	०६:२१
१०	०७:५२	०९:४८	१२:०२	१४:२३	१६:४०	१८:५६	२१:१६	२३:३४	०१:४२	०३:२५	०४:५२	०६:१७
११	०७:४८	०९:४४	११:५९	१४:१९	१६:३६	१८:५२	२१:१२	२३:३१	०१:३८	०३:२१	०४:४८	०६:१३
१२	०७:४४	०९:४०	११:५५	१४:१५	१६:३२	१८:४९	२१:०८	२३:२७	०१:३५	०३:१७	०४:४४	०६:०९
१३	०७:४०	०९:३६	११:५१	१४:११	१६:२८	१८:४५	२१:०४	२३:२३	०१:३१	०३:१३	०४:४०	०६:०५
१४	०७:३७	०९:३२	११:४७	१४:०७	१६:२४	१८:४१	२१:००	२३:१९	०१:२७	०३:०९	०४:३६	०६:०१
१५	०७:३३	०९:२८	११:४३	१४:०३	१६:२०	१८:३७	२०:५६	२३:१५	०१:२३	०३:०५	०४:३२	०५:५७
१६	०७:२९	०९:२४	११:३९	१३:५९	१६:१७	१८:३३	२०:५२	२३:११	०१:१९	०३:०१	०४:२८	०५:५३
१७	०७:२५	०९:२०	११:३५	१३:५५	१६:१३	१८:२९	२०:४८	२३:०७	०१:१५	०२:५७	०४:२५	०५:५०
१८	०७:२१	०९:१६	११:३१	१३:५१	१६:०९	१८:२५	२०:४४	२३:०३	०१:११	०२:५३	०४:२१	०५:४६
१९	०७:१७	०९:१२	११:२७	१३:४७	१६:०५	१८:२१	२०:४१	२२:५९	०१:०७	०२:४९	०४:१७	०५:४२
२०	०७:१३	०९:०९	११:२३	१३:४३	१६:०१	१८:१७	२०:३७	२२:५५	०१:०३	०२:४५	०४:१३	०५:३८
२१	०७:०९	०९:०५	११:१९	१३:४०	१५:५७	१८:१३	२०:३३	२२:५१	००:५९	०२:४१	०४:०९	०५:३४
२२	०७:०५	०९:०१	११:१५	१३:३६	१५:५३	१८:०९	२०:२९	२२:४७	००:५५	०२:३७	०४:०५	०५:३०
२३	०७:०१	०८:५७	११:११	१३:३२	१५:४९	१८:०५	२०:२५	२२:४३	००:५१	०२:३४	०४:०१	०५:२६
२४	०६:५७	०८:५३	११:०७	१३:२८	१५:४५	१८:०१	२०:२१	२२:३९	००:४७	०२:३०	०३:५७	०५:२२
२५	०६:५३	०८:४९	११:०३	१३:२४	१५:४१	१७:५७	२०:१७	२२:३६	००:४३	०२:२६	०३:५३	०५:१८
२६	०६:४९	०८:४५	११:००	१३:२०	१५:३७	१७:५४	२०:१३	२२:३२	००:३९	०२:२२	०३:४९	०५:१४
२७	०६:४५	०८:४१	१०:५६	१३:१६	१५:३३	१७:५०	२०:०९	२२:२८	००:३६	०२:१८	०३:४५	०५:१०
२८	०६:४१	०८:३७	१०:५२	१३:१२	१५:२९	१७:४६	२०:०५	२२:२४	००:३२	०२:१४	०३:४१	०५:०६
२९	०६:३८	०८:३३	१०:४८	१३:०८	१५:२५	१७:४२	२०:०१	२२:२०	००:२८	०२:१०	०३:३७	०५:०२
३०	०६:३४	०८:२९	१०:४४	१३:०४	१५:२१	१७:३८	१९:५७	२२:१६	००:२४	०२:०६	०३:३३	०४:५८

विक्रम सम्वत् २०२६-२७ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

मई, २०२६, अयनांश : २४:०९:०१

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०६:३०	०८:२५	१०:४०	१३:००	१५:१८	१७:३४	१९:५३	२२:१२	००:२०	०२:०२	०३:३०	०४:५४
०२	०६:२६	०८:२१	१०:३६	१२:५६	१५:१४	१७:३०	१९:४९	२२:०८	००:१६	०१:५८	०३:२६	०४:५१
०३	०६:२२	०८:१७	१०:३२	१२:५२	१५:१०	१७:२६	१९:४६	२२:०४	००:१२	०१:५४	०३:२२	०४:४७
०४	०६:१८	०८:१३	१०:२८	१२:४८	१५:०६	१७:२२	१९:४२	२२:००	००:०८	०१:५०	०३:१८	०४:४३
०५	०६:१४	०८:१०	१०:२४	१२:४५	१५:०२	१७:१८	१९:३८	२१:५६	००:०४	०१:४६	०३:१४	०४:३९
०६	०६:१०	०८:०६	१०:२०	१२:४१	१४:५८	१७:१४	१९:३४	२१:५२	२३:५६	०१:४२	०३:१०	०४:३५
०७	०६:०६	०८:०२	१०:१६	१२:३७	१४:५४	१७:१०	१९:३०	२१:४८	२३:५२	०१:३८	०३:०६	०४:३१
०८	०६:०२	०७:५८	१०:१२	१२:३३	१४:५०	१७:०६	१९:२६	२१:४४	२३:४८	०१:३५	०३:०२	०४:२७
०९	०५:५८	०७:५४	१०:०८	१२:२९	१४:४६	१७:०२	१९:२२	२१:४०	२३:४४	०१:३१	०२:५८	०४:२३
१०	०५:५४	०७:५०	१०:०५	१२:२५	१४:४२	१६:५८	१९:१८	२१:३७	२३:४१	०१:२७	०२:५४	०४:१९
११	०५:५०	०७:४६	१०:०१	१२:२१	१४:३८	१६:५५	१९:१४	२१:३३	२३:३७	०१:२३	०२:५०	०४:१५
१२	०५:४६	०७:४२	०९:५७	१२:१७	१४:३४	१६:५१	१९:१०	२१:२९	२३:३३	०१:१९	०२:४६	०४:११
१३	०५:४३	०७:३८	०९:५३	१२:१३	१४:३०	१६:४७	१९:०६	२१:२५	२३:२९	०१:१५	०२:४२	०४:०७
१४	०५:३९	०७:३४	०९:४९	१२:०९	१४:२६	१६:४३	१९:०२	२१:२१	२३:२५	०१:११	०२:३८	०४:०३
१५	०५:३५	०७:३०	०९:४५	१२:०५	१४:२२	१६:३९	१८:५८	२१:१७	२३:२१	०१:०७	०२:३४	०३:५९
१६	०५:३१	०७:२६	०९:४१	१२:०१	१४:१९	१६:३५	१८:५४	२१:१३	२३:१७	०१:०३	०२:३१	०३:५५
१७	०५:२७	०७:२२	०९:३७	११:५७	१४:१५	१६:३१	१८:५०	२१:०९	२३:१३	००:५९	०२:२७	०३:५२
१८	०५:२३	०७:१८	०९:३३	११:५३	१४:११	१६:२७	१८:४७	२१:०५	२३:०९	००:५५	०२:२३	०३:४८
१९	०५:१९	०७:१४	०९:२९	११:४९	१४:०७	१६:२३	१८:४३	२१:०१	२३:०५	००:५१	०२:१९	०३:४४
२०	०५:१५	०७:११	०९:२५	११:४६	१४:०३	१६:१९	१८:३९	२०:५७	२३:०१	००:४७	०२:१५	०३:४०
२१	०५:११	०७:०७	०९:२१	११:४२	१३:५९	१६:१५	१८:३५	२०:५३	२२:५७	००:४३	०२:११	०३:३६
२२	०५:०७	०७:०३	०९:१७	११:३८	१३:५५	१६:११	१८:३१	२०:४९	२२:५३	००:४०	०२:०७	०३:३२
२३	०५:०३	०६:५९	०९:१३	११:३४	१३:५१	१६:०७	१८:२७	२०:४५	२२:४९	००:३६	०२:०३	०३:२८
२४	०४:५९	०६:५५	०९:०९	११:३०	१३:४७	१६:०३	१८:२३	२०:४१	२२:४५	००:३२	०१:५९	०३:२४
२५	०४:५५	०६:५१	०९:०६	११:२६	१३:४३	१५:५९	१८:१९	२०:३८	२२:४२	००:२८	०१:५५	०३:२०
२६	०४:५१	०६:४७	०९:०२	११:२२	१३:३९	१५:५६	१८:१५	२०:३४	२२:३८	००:२४	०१:५१	०३:१६
२७	०४:४७	०६:४३	०८:५८	११:१८	१३:३५	१५:५२	१८:११	२०:३०	२२:३४	००:२०	०१:४७	०३:१२
२८	०४:४४	०६:३९	०८:५४	११:१४	१३:३१	१५:४८	१८:०७	२०:२६	२२:३०	००:१६	०१:४३	०३:०८
२९	०४:४०	०६:३५	०८:५०	११:१०	१३:२७	१५:४४	१८:०३	२०:२२	२२:२६	००:१२	०१:३९	०३:०४
३०	०४:३६	०६:३१	०८:४६	११:०६	१३:२४	१५:४०	१७:५९	२०:१८	२२:२२	००:०८	०१:३५	०३:००
३१	०४:३२	०६:२७	०८:४२	११:०२	१३:२०	१५:३६	१७:५५	२०:१४	२२:१८	००:०४	०१:३२	०२:५७

जून, २०२६, अयनांश : २४:०९:०६

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०४:२८	०६:२३	०८:३८	१०:५८	१३:१६	१५:३२	१७:५१	२०:१०	२२:१४	२३:५६	०१:२८	०२:५३
०२	०४:२४	०६:१९	०८:३४	१०:५४	१३:१२	१५:२८	१७:४८	२०:०६	२२:१०	२३:५२	०१:२४	०२:४९
०३	०४:२०	०६:१६	०८:३०	१०:५०	१३:०८	१५:२४	१७:४४	२०:०२	२२:०६	२३:४८	०१:२०	०२:४५
०४	०४:१६	०६:१२	०८:२६	१०:४७	१३:०४	१५:२०	१७:४०	१९:५८	२२:०२	२३:४४	०१:१६	०२:४१
०५	०४:१२	०६:०८	०८:२२	१०:४३	१३:००	१५:१६	१७:३६	१९:५४	२१:५८	२३:४१	०१:१२	०२:३७
०६	०४:०८	०६:०४	०८:१८	१०:३९	१२:५६	१५:१२	१७:३२	१९:५०	२१:५४	२३:३७	०१:०८	०२:३३
०७	०४:०४	०६:००	०८:१४	१०:३५	१२:५२	१५:०८	१७:२८	१९:४६	२१:५०	२३:३३	०१:०४	०२:२९
०८	०४:००	०५:५६	०८:१०	१०:३१	१२:४८	१५:०४	१७:२४	१९:४३	२१:४६	२३:२९	०१:००	०२:२५
०९	०३:५६	०५:५२	०८:०७	१०:२७	१२:४४	१५:०१	१७:२०	१९:३९	२१:४३	२३:२५	००:५६	०२:२१
१०	०३:५२	०५:४८	०८:०३	१०:२३	१२:४०	१४:५७	१७:१६	१९:३५	२१:३९	२३:२१	००:५२	०२:१७
११	०३:४८	०५:४४	०७:५९	१०:१९	१२:३६	१४:५३	१७:१२	१९:३१	२१:३५	२३:१७	००:४८	०२:१३
१२	०३:४५	०५:४०	०७:५५	१०:१५	१२:३२	१४:४९	१७:०८	१९:२७	२१:३१	२३:१३	००:४४	०२:०९
१३	०३:४१	०५:३६	०७:५१	१०:११	१२:२८	१४:४५	१७:०४	१९:२३	२१:२७	२३:०९	००:४०	०२:०५
१४	०३:३७	०५:३२	०७:४७	१०:०७	१२:२५	१४:४१	१७:००	१९:१९	२१:२३	२३:०५	००:३७	०२:०१
१५	०३:३३	०५:२८	०७:४३	१०:०३	१२:२१	१४:३७	१६:५६	१९:१५	२१:१९	२३:०१	००:३३	०१:५८
१६	०३:२९	०५:२४	०७:३९	०९:५९	१२:१७	१४:३३	१६:५३	१९:११	२१:१५	२२:५७	००:२९	०१:५४
१७	०३:२५	०५:२०	०७:३५	०९:५५	१२:१३	१४:२९	१६:४९	१९:०७	२१:११	२२:५३	००:२५	०१:५०
१८	०३:२१	०५:१७	०७:३१	०९:५२	१२:०९	१४:२५	१६:४५	१९:०३	२१:०७	२२:४९	००:२१	०१:४६
१९	०३:१७	०५:१३	०७:२७	०९:४८	१२:०५	१४:२१	१६:४१	१८:५९	२१:०३	२२:४५	००:१७	०१:४२
२०	०३:१३	०५:०९	०७:२३	०९:४४	१२:०१	१४:१७	१६:३७	१८:५५	२०:५९	२२:४२	००:१३	०१:३८
२१	०३:०९	०५:०५	०७:१९	०९:४०	११:५७	१४:१३	१६:३३	१८:५१	२०:५५	२२:३८	००:०९	०१:३४
२२	०३:०५	०५:०१	०७:१५	०९:३६	११:५३	१४:०९	१६:२९	१८:४७	२०:५१	२२:३४	००:०५	०१:३०
२३	०३:०१	०४:५७	०७:१२	०९:३२	११:४९	१४:०५	१६:२५	१८:४४	२०:४८	२२:३०	२३:५७	०१:२६
२४	०२:५७	०४:५३	०७:०८	०९:२८	११:४५	१४:०२	१६:२१	१८:४०	२०:४४	२२:२६	२३:५३	०१:२२
२५	०२:५३	०४:४९	०७:०४	०९:२४	११:४१	१३:५८	१६:१७	१८:३६	२०:४०	२२:२२	२३:४९	०१:१८
२६	०२:५०	०४:४५	०७:००	०९:२०	११:३७	१३:५४	१६:१३	१८:३२	२०:३६	२२:१८	२३:४५	०१:१४
२७	०२:४६	०४:४१	०६:५६	०९:१६	११:३३	१३:५०	१६:०९	१८:२८	२०:३२	२२:१४	२३:४१	०१:१०
२८	०२:४२	०४:३७	०६:५२	०९:१२	११:२९	१३:४६	१६:०५	१८:२४	२०:२८	२२:१०	२३:३८	०१:०६
२९	०२:३८	०४:३३	०६:४८	०९:०८	११:२६	१३:४२	१६:०१	१८:२०	२०:२४	२२:०६	२३:३४	०१:०२
३०	०२:३४	०४:२९	०६:४४	०९:०४	११:२२	१३:३८	१५:५७	१८:१६	२०:२०	२२:०२	२३:३०	००:५९

विक्रम सम्वत् २०२६-२७ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

जुलाई, २०२६, अयनांश : २४:०९:११

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०२:३०	०४:२५	०६:४०	०९:००	११:१८	१३:३४	१५:५४	१८:१२	२०:१६	२१:५८	२३:२६	००:५५
०२	०२:२६	०४:२१	०६:३६	०८:५६	११:१४	१३:३०	१५:५०	१८:०८	२०:१२	२१:५४	२३:२२	००:५१
०३	०२:२२	०४:१८	०६:३२	०८:५३	११:१०	१३:२६	१५:४६	१८:०४	२०:०८	२१:५०	२३:१८	००:४७
०४	०२:१८	०४:१४	०६:२८	०८:४९	११:०६	१३:२२	१५:४२	१८:००	२०:०४	२१:४७	२३:१४	००:४३
०५	०२:१४	०४:१०	०६:२४	०८:४५	११:०२	१३:१८	१५:३८	१७:५६	२०:००	२१:४३	२३:१०	००:३९
०६	०२:१०	०४:०६	०६:२०	०८:४१	१०:५८	१३:१४	१५:३४	१७:५२	१९:५६	२१:३९	२३:०६	००:३५
०७	०२:०६	०४:०२	०६:१६	०८:३७	१०:५४	१३:१०	१५:३०	१७:४८	१९:५२	२१:३५	२३:०२	००:३१
०८	०२:०२	०३:५८	०६:१३	०८:३३	१०:५०	१३:०६	१५:२६	१७:४५	१९:४९	२१:३१	२२:५८	००:२७
०९	०१:५८	०३:५४	०६:०९	०८:२९	१०:४६	१३:०३	१५:२२	१७:४१	१९:४५	२१:२७	२२:५४	००:२३
१०	०१:५४	०३:५०	०६:०५	०८:२५	१०:४२	१२:५९	१५:१८	१७:३७	१९:४१	२१:२३	२२:५०	००:१९
११	०१:५१	०३:४६	०६:०१	०८:२१	१०:३८	१२:५५	१५:१४	१७:३३	१९:३७	२१:१९	२२:४६	००:१५
१२	०१:४७	०३:४२	०५:५७	०८:१७	१०:३४	१२:५१	१५:१०	१७:२९	१९:३३	२१:१५	२२:४२	००:११
१३	०१:४३	०३:३८	०५:५३	०८:१३	१०:३१	१२:४७	१५:०६	१७:२५	१९:२९	२१:११	२२:३९	००:०७
१४	०१:३९	०३:३४	०५:४९	०८:०९	१०:२७	१२:४३	१५:०२	१७:२१	१९:२५	२१:०७	२२:३५	२४:००
१५	०१:३५	०३:३०	०५:४५	०८:०५	१०:२३	१२:३९	१४:५८	१७:१७	१९:२१	२१:०३	२२:३१	२३:५६
१६	०१:३१	०३:२६	०५:४१	०८:०१	१०:१९	१२:३५	१४:५५	१७:१३	१९:१७	२०:५९	२२:२७	२३:५२
१७	०१:२७	०३:२३	०५:३७	०७:५७	१०:१५	१२:३१	१४:५१	१७:०९	१९:१३	२०:५५	२२:२३	२३:४८
१८	०१:२३	०३:१९	०५:३३	०७:५४	१०:११	१२:२७	१४:४७	१७:०५	१९:०९	२०:५१	२२:१९	२३:४४
१९	०१:१९	०३:१५	०५:२९	०७:५०	१०:०७	१२:२३	१४:४३	१७:०१	१९:०५	२०:४८	२२:१५	२३:४०
२०	०१:१५	०३:११	०५:२५	०७:४६	१०:०३	१२:१९	१४:३९	१६:५७	१९:०१	२०:४४	२२:११	२३:३६
२१	०१:११	०३:०७	०५:२१	०७:४२	०९:५९	१२:१५	१४:३५	१६:५३	१८:५७	२०:४०	२२:०७	२३:३२
२२	०१:०७	०३:०३	०५:१७	०७:३८	०९:५५	१२:११	१४:३१	१६:५०	१८:५३	२०:३६	२२:०३	२३:२८
२३	०१:०३	०२:५९	०५:१४	०७:३४	०९:५१	१२:०८	१४:२७	१६:४६	१८:५०	२०:३२	२१:५९	२३:२४
२४	००:५९	०२:५५	०५:१०	०७:३०	०९:४७	१२:०४	१४:२३	१६:४२	१८:४६	२०:२८	२१:५५	२३:२०
२५	००:५५	०२:५१	०५:०६	०७:२६	०९:४३	१२:००	१४:१९	१६:३८	१८:४२	२०:२४	२१:५१	२३:१६
२६	००:५२	०२:४७	०५:०२	०७:२२	०९:३९	११:५६	१४:१५	१६:३४	१८:३८	२०:२०	२१:४७	२३:१२
२७	००:४८	०२:४३	०४:५८	०७:१८	०९:३५	११:५२	१४:११	१६:३०	१८:३४	२०:१६	२१:४४	२३:०८
२८	००:४४	०२:३९	०४:५४	०७:१४	०९:३२	११:४८	१४:०७	१६:२६	१८:३०	२०:१२	२१:४०	२३:०५
२९	००:४०	०२:३५	०४:५०	०७:१०	०९:२८	११:४४	१४:०३	१६:२२	१८:२६	२०:०८	२१:३६	२३:०१
३०	००:३६	०२:३१	०४:४६	०७:०६	०९:२४	११:४०	१४:००	१६:१८	१८:२२	२०:०४	२१:३२	२२:५७
३१	००:३२	०२:२७	०४:४२	०७:०२	०९:२०	११:३६	१३:५६	१६:१४	१८:१८	२०:००	२१:२८	२२:५३

अगस्त, २०२६, अयनांश : २४:०९:१६

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	००:२८	०२:२४	०४:३८	०६:५९	०९:१६	११:३२	१३:५२	१६:१०	१८:१४	१९:५६	२१:२४	२२:४९
०२	००:२४	०२:२०	०४:३४	०६:५५	०९:१२	११:२८	१३:४८	१६:०६	१८:१०	१९:५२	२१:२०	२२:४५
०३	००:२०	०२:१६	०४:३०	०६:५१	०९:०८	११:२४	१३:४४	१६:०२	१८:०६	१९:४९	२१:१६	२२:४१
०४	००:१६	०२:१२	०४:२६	०६:४७	०९:०४	११:२०	१३:४०	१५:५८	१८:०२	१९:४५	२१:१२	२२:३७
०५	००:१२	०२:०८	०४:२२	०६:४३	०९:००	११:१६	१३:३६	१५:५४	१७:५८	१९:४१	२१:०८	२२:३३
०६	००:०८	०२:०४	०४:१९	०६:३९	०८:५६	११:१२	१३:३२	१५:५१	१७:५५	१९:३७	२१:०४	२२:२९
०७	००:०४	०२:००	०४:१५	०६:३५	०८:५२	११:०९	१३:२८	१५:४७	१७:५१	१९:३३	२१:००	२२:२५
०८	२३:५७	०१:५६	०४:११	०६:३१	०८:४८	११:०५	१३:२४	१५:४३	१७:४७	१९:२९	२०:५६	२२:२१
०९	२३:५३	०१:५२	०४:०७	०६:२७	०८:४४	११:०१	१३:२०	१५:३९	१७:४३	१९:२५	२०:५२	२२:१७
१०	२३:४९	०१:४८	०४:०३	०६:२३	०८:४०	१०:५७	१३:१६	१५:३५	१७:३९	१९:२१	२०:४८	२२:१३
११	२३:४५	०१:४४	०३:५९	०६:१९	०८:३६	१०:५३	१३:१२	१५:३१	१७:३५	१९:१७	२०:४५	२२:०९
१२	२३:४१	०१:४०	०३:५५	०६:१५	०८:३३	१०:४९	१३:०८	१५:२७	१७:३१	१९:१३	२०:४१	२२:०६
१३	२३:३७	०१:३६	०३:५१	०६:११	०८:२९	१०:४५	१३:०४	१५:२३	१७:२७	१९:०९	२०:३७	२२:०२
१४	२३:३३	०१:३२	०३:४७	०६:०७	०८:२५	१०:४१	१३:०१	१५:१९	१७:२३	१९:०५	२०:३३	२१:५८
१५	२३:२९	०१:२८	०३:४३	०६:०३	०८:२१	१०:३७	१२:५७	१५:१५	१७:१९	१९:०१	२०:२९	२१:५४
१६	२३:२५	०१:२५	०३:३९	०६:००	०८:१७	१०:३३	१२:५३	१५:११	१७:१५	१८:५७	२०:२५	२१:५०
१७	२३:२१	०१:२१	०३:३५	०५:५६	०८:१३	१०:२९	१२:४९	१५:०७	१७:११	१८:५४	२०:२१	२१:४६
१८	२३:१७	०१:१७	०३:३१	०५:५२	०८:०९	१०:२५	१२:४५	१५:०३	१७:०७	१८:५०	२०:१७	२१:४२
१९	२३:१३	०१:१३	०३:२७	०५:४८	०८:०५	१०:२१	१२:४१	१४:५९	१७:०३	१८:४६	२०:१३	२१:३८
२०	२३:०९	०१:०९	०३:२३	०५:४४	०८:०१	१०:१७	१२:३७	१४:५५	१६:५९	१८:४२	२०:०९	२१:३४
२१	२३:०५	०१:०५	०३:२०	०५:४०	०७:५७	१०:१३	१२:३३	१४:५२	१६:५६	१८:३८	२०:०५	२१:३०
२२	२३:०१	०१:०१	०३:१६	०५:३६	०७:५३	१०:१०	१२:२९	१४:४८	१६:५२	१८:३४	२०:०१	२१:२६
२३	२२:५८	००:५७	०३:१२	०५:३२	०७:४९	१०:०६	१२:२५	१४:४४	१६:४८	१८:३०	१९:५७	२१:२२
२४	२२:५४	००:५३	०३:०८	०५:२८	०७:४५	१०:०२	१२:२१	१४:४०	१६:४४	१८:२६	१९:५३	२१:१८
२५	२२:५०	००:४९	०३:०४	०५:२४	०७:४१	०९:५८	१२:१७	१४:३६	१६:४०	१८:२२	१९:४९	२१:१४
२६	२२:४६	००:४५	०३:००	०५:२०	०७:३८	०९:५४	१२:१३	१४:३२	१६:३६	१८:१८	१९:४६	२१:११
२७	२२:४२	००:४१	०२:५६	०५:१६	०७:३४	०९:५०	१२:०९	१४:२८	१६:३२	१८:१४	१९:४२	२१:०७
२८	२२:३८	००:३७	०२:५२	०५:१२	०७:३०	०९:४६	१२:०५	१४:२४	१६:२८	१८:१०	१९:३८	२१:०३
२९	२२:३४	००:३३	०२:४८	०५:०८	०७:२६	०९:४२	१२:०२	१४:२०	१६:२४	१८:०६	१९:३४	२०:५९
३०	२२:३०	००:३०	०२:४४	०५:०४	०७:२२	०९:३८	११:५८	१४:१६	१६:२०	१८:०२	१९:३०	२०:५५
३१	२२:२६	००:२६	०२:४०	०५:०१	०७:१८	०९:३४	११:५४	१४:१२	१६:१६	१७:५८	१९:२६	२०:५१

विक्रम सम्वत् २०२६-२७ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

सितम्बर, २०२६, अयनांश : २४:०९:२०

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	२२:२२	००:२२	०२:३६	०४:५७	०७:१४	०९:३०	११:५०	१४:०८	१६:१२	१७:५५	१९:२२	२०:४७
०२	२२:१८	००:१८	०२:३२	०४:५३	०७:१०	०९:२६	११:४६	१४:०४	१६:०८	१७:५१	१९:१८	२०:४३
०३	२२:१४	००:१४	०२:२८	०४:४९	०७:०६	०९:२२	११:४२	१४:००	१६:०४	१७:४७	१९:१४	२०:३९
०४	२२:१०	००:१०	०२:२४	०४:४५	०७:०२	०९:१८	११:३८	१३:५७	१६:००	१७:४३	१९:१०	२०:३५
०५	२२:०६	००:०६	०२:२१	०४:४१	०६:५८	०९:१५	११:३४	१३:५३	१५:५७	१७:३९	१९:०६	२०:३१
०६	२२:०२	२३:५८	०२:१७	०४:३७	०६:५४	०९:११	११:३०	१३:४९	१५:५३	१७:३५	१९:०२	२०:२७
०७	२१:५९	२३:५४	०२:१३	०४:३३	०६:५०	०९:०७	११:२६	१३:४५	१५:४९	१७:३१	१८:५८	२०:२३
०८	२१:५५	२३:५०	०२:०९	०४:२९	०६:४६	०९:०३	११:२२	१३:४१	१५:४५	१७:२७	१८:५४	२०:१९
०९	२१:५१	२३:४६	०२:०५	०४:२५	०६:४२	०८:५९	११:१८	१३:३७	१५:४१	१७:२३	१८:५१	२०:१५
१०	२१:४७	२३:४२	०२:०१	०४:२१	०६:३९	०८:५५	११:१४	१३:३३	१५:३७	१७:१९	१८:४७	२०:१२
११	२१:४३	२३:३८	०१:५७	०४:१७	०६:३५	०८:५१	११:१०	१३:२९	१५:३३	१७:१५	१८:४३	२०:०८
१२	२१:३९	२३:३४	०१:५३	०४:१३	०६:३१	०८:४७	११:०७	१३:२५	१५:२९	१७:११	१८:३९	२०:०४
१३	२१:३५	२३:३१	०१:४९	०४:०९	०६:२७	०८:४३	११:०३	१३:२१	१५:२५	१७:०७	१८:३५	२०:००
१४	२१:३१	२३:२७	०१:४५	०४:०६	०६:२३	०८:३९	१०:५९	१३:१७	१५:२१	१७:०३	१८:३१	१९:५६
१५	२१:२७	२३:२३	०१:४१	०४:०२	०६:१९	०८:३५	१०:५५	१३:१३	१५:१७	१६:५९	१८:२७	१९:५२
१६	२१:२३	२३:१९	०१:३७	०३:५८	०६:१५	०८:३१	१०:५१	१३:०९	१५:१३	१६:५६	१८:२३	१९:४८
१७	२१:१९	२३:१५	०१:३३	०३:५४	०६:११	०८:२७	१०:४७	१३:०५	१५:०९	१६:५२	१८:१९	१९:४४
१८	२१:१५	२३:११	०१:२९	०३:५०	०६:०७	०८:२३	१०:४३	१३:०१	१५:०५	१६:४८	१८:१५	१९:४०
१९	२१:११	२३:०७	०१:२६	०३:४६	०६:०३	०८:१९	१०:३९	१२:५८	१५:०२	१६:४४	१८:११	१९:३६
२०	२१:०७	२३:०३	०१:२२	०३:४२	०५:५९	०८:१६	१०:३५	१२:५४	१४:५८	१६:४०	१८:०७	१९:३२
२१	२१:०४	२२:५९	०१:१८	०३:३८	०५:५५	०८:१२	१०:३१	१२:५०	१४:५४	१६:३६	१८:०३	१९:२८
२२	२१:००	२२:५५	०१:१४	०३:३४	०५:५१	०८:०८	१०:२७	१२:४६	१४:५०	१६:३२	१७:५९	१९:२४
२३	२०:५६	२२:५१	०१:१०	०३:३०	०५:४७	०८:०४	१०:२३	१२:४२	१४:४६	१६:२८	१७:५५	१९:२०
२४	२०:५२	२२:४७	०१:०६	०३:२६	०५:४३	०८:००	१०:१९	१२:३८	१४:४२	१६:२४	१७:५२	१९:१६
२५	२०:४८	२२:४३	०१:०२	०३:२२	०५:४०	०७:५६	१०:१५	१२:३४	१४:३८	१६:२०	१७:४८	१९:१३
२६	२०:४४	२२:३९	००:५८	०३:१८	०५:३६	०७:५२	१०:११	१२:३०	१४:३४	१६:१६	१७:४४	१९:०९
२७	२०:४०	२२:३५	००:५४	०३:१४	०५:३२	०७:४८	१०:०८	१२:२६	१४:३०	१६:१२	१७:४०	१९:०५
२८	२०:३६	२२:३२	००:५०	०३:१०	०५:२८	०७:४४	१०:०४	१२:२२	१४:२६	१६:०८	१७:३६	१९:०१
२९	२०:३२	२२:२८	००:४६	०३:०७	०५:२४	०७:४०	१०:००	१२:१८	१४:२२	१६:०४	१७:३२	१८:५७
३०	२०:२८	२२:२४	००:४२	०३:०३	०५:२०	०७:३६	०९:५६	१२:१४	१४:१८	१६:०१	१७:२८	१८:५३

अक्टूबर, २०२६, अयनांश : २४:०९:२३

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	२०:२४	२२:२०	००:३८	०२:५९	०५:१६	०७:३२	०९:५२	१२:१०	१४:१४	१५:५७	१७:२४	१८:४९
०२	२०:२०	२२:१६	००:३४	०२:५५	०५:१२	०७:२८	०९:४८	१२:०६	१४:१०	१५:५३	१७:२०	१८:४५
०३	२०:१६	२२:१२	००:३०	०२:५१	०५:०८	०७:२४	०९:४४	१२:०२	१४:०६	१५:४९	१७:१६	१८:४१
०४	२०:१२	२२:०८	००:२७	०२:४७	०५:०४	०७:२०	०९:४०	११:५९	१४:०३	१५:४५	१७:१२	१८:३७
०५	२०:०८	२२:०४	००:२३	०२:४३	०५:००	०७:१७	०९:३६	११:५५	१३:५९	१५:४१	१७:०८	१८:३३
०६	२०:०५	२२:००	००:१९	०२:३९	०४:५६	०७:१३	०९:३२	११:५१	१३:५५	१५:३७	१७:०४	१८:२९
०७	२०:०१	२१:५६	००:१५	०२:३५	०४:५२	०७:०९	०९:२८	११:४७	१३:५१	१५:३३	१७:००	१८:२५
०८	१९:५७	२१:५२	००:११	०२:३१	०४:४८	०७:०५	०९:२४	११:४३	१३:४७	१५:२९	१६:५६	१८:२१
०९	१९:५३	२१:४८	००:०७	०२:२७	०४:४५	०७:०१	०९:२०	११:३९	१३:४३	१५:२५	१६:५३	१८:१८
१०	१९:४९	२१:४४	२३:५९	०२:२३	०४:४१	०६:५७	०९:१६	११:३५	१३:३९	१५:२१	१६:४९	१८:१४
११	१९:४५	२१:४०	२३:५५	०२:१९	०४:३७	०६:५३	०९:१२	११:३१	१३:३५	१५:१७	१६:४५	१८:१०
१२	१९:४१	२१:३७	२३:५१	०२:१५	०४:३३	०६:४९	०९:०९	११:२७	१३:३१	१५:१३	१६:४१	१८:०६
१३	१९:३७	२१:३३	२३:४७	०२:११	०४:२९	०६:४५	०९:०५	११:२३	१३:२७	१५:०९	१६:३७	१८:०२
१४	१९:३३	२१:२९	२३:४३	०२:०८	०४:२५	०६:४१	०९:०१	११:१९	१३:२३	१५:०५	१६:३३	१७:५८
१५	१९:२९	२१:२५	२३:३९	०२:०४	०४:२१	०६:३७	०८:५७	११:१५	१३:१९	१५:०२	१६:२९	१७:५४
१६	१९:२५	२१:२१	२३:३५	०२:००	०४:१७	०६:३३	०८:५३	११:११	१३:१५	१४:५८	१६:२५	१७:५०
१७	१९:२१	२१:१७	२३:३१	०१:५६	०४:१३	०६:२९	०८:४९	११:०७	१३:११	१४:५४	१६:२१	१७:४६
१८	१९:१७	२१:१३	२३:२८	०१:५२	०४:०९	०६:२५	०८:४५	११:०४	१३:०७	१४:५०	१६:१७	१७:४२
१९	१९:१३	२१:०९	२३:२४	०१:४८	०४:०५	०६:२२	०८:४१	११:००	१३:०४	१४:४६	१६:१३	१७:३८
२०	१९:०९	२१:०५	२३:२०	०१:४४	०४:०१	०६:१८	०८:३७	१०:५६	१३:००	१४:४२	१६:०९	१७:३४
२१	१९:०६	२१:०१	२३:१६	०१:४०	०३:५७	०६:१४	०८:३३	१०:५२	१२:५६	१४:३८	१६:०५	१७:३०
२२	१९:०२	२०:५७	२३:१२	०१:३६	०३:५३	०६:१०	०८:२९	१०:४८	१२:५२	१४:३४	१६:०१	१७:२६
२३	१८:५८	२०:५३	२३:०८	०१:३२	०३:४९	०६:०६	०८:२५	१०:४४	१२:४८	१४:३०	१५:५८	१७:२२
२४	१८:५४	२०:४९	२३:०४	०१:२८	०३:४६	०६:०२	०८:२१	१०:४०	१२:४४	१४:२६	१५:५४	१७:१९
२५	१८:५०	२०:४५	२३:००	०१:२४	०३:४२	०५:५८	०८:१७	१०:३६	१२:४०	१४:२२	१५:५०	१७:१५
२६	१८:४६	२०:४१	२२:५६	०१:२०	०३:३८	०५:५४	०८:१४	१०:३२	१२:३६	१४:१८	१५:४६	१७:११
२७	१८:४२	२०:३८	२२:५२	०१:१६	०३:३४	०५:५०	०८:१०	१०:२८	१२:३२	१४:१४	१५:४२	१७:०७
२८	१८:३८	२०:३४	२२:४८	०१:१३	०३:३०	०५:४६	०८:०६	१०:२४	१२:२८	१४:१०	१५:३८	१७:०३
२९	१८:३४	२०:३०	२२:४४	०१:०९	०३:२६	०५:४२	०८:०२	१०:२०	१२:२४	१४:०६	१५:३४	१६:५९
३०	१८:३०	२०:२६	२२:४०	०१:०५	०३:२२	०५:३८	०७:५८	१०:१६	१२:२०	१४:०३	१५:३०	१६:५५
३१	१८:२६	२०:२२	२२:३६	०१:०१	०३:१८	०५:३४	०७:५४	१०:१२	१२:१६	१३:५९	१५:२६	१६:५१

विक्रम सम्वत् २०२४-२५ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

नवम्बर, २०२६, अयनांश : २४:०९:२७

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१८:२२	२०:१८	२२:३३	००:५७	०३:१४	०५:३०	०७:५०	१०:०८	१२:१२	१३:५५	१५:२२	१६:४७
०२	१८:१८	२०:१४	२२:२९	००:५३	०३:१०	०५:२६	०७:४६	१०:०५	१२:०९	१३:५१	१५:१८	१६:४३
०३	१८:१४	२०:१०	२२:२५	००:४९	०३:०६	०५:२३	०७:४२	१०:०१	१२:०५	१३:४७	१५:१४	१६:३९
०४	१८:११	२०:०६	२२:२१	००:४५	०३:०२	०५:१९	०७:३८	०९:५७	१२:०१	१३:४३	१५:१०	१६:३५
०५	१८:०७	२०:०२	२२:१७	००:४१	०२:५८	०५:१५	०७:३४	०९:५३	११:५७	१३:३९	१५:०६	१६:३१
०६	१८:०३	१९:५८	२२:१३	००:३७	०२:५४	०५:११	०७:३०	०९:४९	११:५३	१३:३५	१५:०२	१६:२७
०७	१७:५९	१९:५४	२२:०९	००:३३	०२:५०	०५:०७	०७:२६	०९:४५	११:४९	१३:३१	१४:५९	१६:२३
०८	१७:५५	१९:५०	२२:०५	००:२९	०२:४७	०५:०३	०७:२२	०९:४१	११:४५	१३:२७	१४:५५	१६:२०
०९	१७:५१	१९:४६	२२:०१	००:२५	०२:४३	०४:५९	०७:१८	०९:३७	११:४१	१३:२३	१४:५१	१६:१६
१०	१७:४७	१९:४२	२१:५७	००:२१	०२:३९	०४:५५	०७:१५	०९:३३	११:३७	१३:१९	१४:४७	१६:१२
११	१७:४३	१९:३९	२१:५३	००:१७	०२:३५	०४:५१	०७:११	०९:२९	११:३३	१३:१५	१४:४३	१६:०८
१२	१७:३९	१९:३५	२१:४९	००:१४	०२:३१	०४:४७	०७:०७	०९:२५	११:२९	१३:११	१४:३९	१६:०४
१३	१७:३५	१९:३१	२१:४५	००:१०	०२:२७	०४:४३	०७:०३	०९:२१	११:२५	१३:०८	१४:३५	१६:००
१४	१७:३१	१९:२७	२१:४१	००:०६	०२:२३	०४:३९	०६:५९	०९:१७	११:२१	१३:०४	१४:३१	१५:५६
१५	१७:२७	१९:२३	२१:३७	२३:५८	०२:१९	०४:३५	०६:५५	०९:१३	११:१७	१३:००	१४:२७	१५:५२
१६	१७:२३	१९:१९	२१:३४	२३:५४	०२:१५	०४:३१	०६:५१	०९:०९	११:१३	१२:५६	१४:२३	१५:४८
१७	१७:१९	१९:१५	२१:३०	२३:५०	०२:११	०४:२७	०६:४७	०९:०६	११:१०	१२:५२	१४:१९	१५:४४
१८	१७:१५	१९:११	२१:२६	२३:४६	०२:०७	०४:२४	०६:४३	०९:०२	११:०६	१२:४८	१४:१५	१५:४०
१९	१७:१२	१९:०७	२१:२२	२३:४२	०२:०३	०४:२०	०६:३९	०८:५८	११:०२	१२:४४	१४:११	१५:३६
२०	१७:०८	१९:०३	२१:१८	२३:३८	०१:५९	०४:१६	०६:३५	०८:५४	१०:५८	१२:४०	१४:०७	१५:३२
२१	१७:०४	१८:५९	२१:१४	२३:३४	०१:५५	०४:१२	०६:३१	०८:५०	१०:५४	१२:३६	१४:०३	१५:२८
२२	१७:००	१८:५५	२१:१०	२३:३०	०१:५२	०४:०८	०६:२७	०८:४६	१०:५०	१२:३२	१४:००	१५:२५
२३	१६:५६	१८:५१	२१:०६	२३:२६	०१:४८	०४:०४	०६:२३	०८:४२	१०:४६	१२:२८	१३:५६	१५:२१
२४	१६:५२	१८:४७	२१:०२	२३:२२	०१:४४	०४:००	०६:१९	०८:३८	१०:४२	१२:२४	१३:५२	१५:१७
२५	१६:४८	१८:४४	२०:५८	२३:१८	०१:४०	०३:५६	०६:१६	०८:३४	१०:३८	१२:२०	१३:४८	१५:१३
२६	१६:४४	१८:४०	२०:५४	२३:१५	०१:३६	०३:५२	०६:१२	०८:३०	१०:३४	१२:१६	१३:४४	१५:०९
२७	१६:४०	१८:३६	२०:५०	२३:११	०१:३२	०३:४८	०६:०८	०८:२६	१०:३०	१२:१२	१३:४०	१५:०५
२८	१६:३६	१८:३२	२०:४६	२३:०७	०१:२८	०३:४४	०६:०४	०८:२२	१०:२६	१२:०९	१३:३६	१५:०१
२९	१६:३२	१८:२८	२०:४२	२३:०३	०१:२४	०३:४०	०६:००	०८:१८	१०:२२	१२:०५	१३:३२	१४:५७
३०	१६:२८	१८:२४	२०:३८	२२:५९	०१:२०	०३:३६	०५:५६	०८:१४	१०:१८	१२:०१	१३:२८	१४:५३

दिसम्बर, २०२६, अयनांश : २४:०९:३१

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१६:२४	१८:२०	२०:३५	२२:५५	०१:१६	०३:३२	०५:५२	०८:११	१०:१४	११:५७	१३:२४	१४:४९
०२	१६:२०	१८:१६	२०:३१	२२:५१	०१:१२	०३:२९	०५:४८	०८:०७	१०:११	११:५३	१३:२०	१४:४५
०३	१६:१६	१८:१२	२०:२७	२२:४७	०१:०८	०३:२५	०५:४४	०८:०३	१०:०७	११:४९	१३:१६	१४:४१
०४	१६:१३	१८:०८	२०:२३	२२:४३	०१:०४	०३:२१	०५:४०	०७:५९	१०:०३	११:४५	१३:१२	१४:३७
०५	१६:०९	१८:०४	२०:१९	२२:३९	०१:००	०३:१७	०५:३६	०७:५५	०९:५९	११:४१	१३:०८	१४:३३
०६	१६:०५	१८:००	२०:१५	२२:३५	००:५६	०३:१३	०५:३२	०७:५१	०९:५५	११:३७	१३:०५	१४:२९
०७	१६:०१	१७:५६	२०:११	२२:३१	००:५३	०३:०९	०५:२८	०७:४७	०९:५१	११:३३	१३:०१	१४:२६
०८	१५:५७	१७:५२	२०:०७	२२:२७	००:४९	०३:०५	०५:२४	०७:४३	०९:४७	११:२९	१२:५७	१४:२२
०९	१५:५३	१७:४८	२०:०३	२२:२३	००:४५	०३:०१	०५:२१	०७:३९	०९:४३	११:२५	१२:५३	१४:१८
१०	१५:४९	१७:४५	१९:५९	२२:२०	००:४१	०२:५७	०५:१७	०७:३५	०९:३९	११:२१	१२:४९	१४:१४
११	१५:४५	१७:४१	१९:५५	२२:१६	००:३७	०२:५३	०५:१३	०७:३१	०९:३५	११:१७	१२:४५	१४:१०
१२	१५:४१	१७:३७	१९:५१	२२:१२	००:३३	०२:४९	०५:०९	०७:२७	०९:३१	११:१३	१२:४१	१४:०६
१३	१५:३७	१७:३३	१९:४७	२२:०८	००:२९	०२:४५	०५:०५	०७:२३	०९:२७	११:१०	१२:३७	१४:०२
१४	१५:३३	१७:२९	१९:४३	२२:०४	००:२५	०२:४१	०५:०१	०७:१९	०९:२३	११:०६	१२:३३	१३:५८
१५	१५:२९	१७:२५	१९:४०	२२:००	००:२१	०२:३७	०४:५७	०७:१५	०९:१९	११:०२	१२:२९	१३:५४
१६	१५:२५	१७:२१	१९:३६	२१:५६	००:१७	०२:३३	०४:५३	०७:१२	०९:१६	१०:५८	१२:२५	१३:५०
१७	१५:२१	१७:१७	१९:३२	२१:५२	००:१३	०२:३०	०४:४९	०७:०८	०९:१२	१०:५४	१२:२१	१३:४६
१८	१५:१८	१७:१३	१९:२८	२१:४८	००:०९	०२:२६	०४:४५	०७:०४	०९:०८	१०:५०	१२:१७	१३:४२
१९	१५:१४	१७:०९	१९:२४	२१:४४	००:०५	०२:२२	०४:४१	०७:००	०९:०४	१०:४६	१२:१३	१३:३८
२०	१५:१०	१७:०५	१९:२०	२१:४०	२३:५७	०२:१८	०४:३७	०६:५६	०९:००	१०:४२	१२:०९	१३:३४
२१	१५:०६	१७:०१	१९:१६	२१:३६	२३:५४	०२:१४	०४:३३	०६:५२	०८:५६	१०:३८	१२:०६	१३:३०
२२	१५:०२	१६:५७	१९:१२	२१:३२	२३:५०	०२:१०	०४:२९	०६:४८	०८:५२	१०:३४	१२:०२	१३:२७
२३	१४:५८	१६:५३	१९:०८	२१:२८	२३:४६	०२:०६	०४:२५	०६:४४	०८:४८	१०:३०	११:५८	१३:२३
२४	१४:५४	१६:४९	१९:०४	२१:२४	२३:४२	०२:०२	०४:२२	०६:४०	०८:४४	१०:२६	११:५४	१३:१९
२५	१४:५०	१६:४६	१९:००	२१:२१	२३:३८	०१:५८	०४:१८	०६:३६	०८:४०	१०:२२	११:५०	१३:१५
२६	१४:४६	१६:४२	१८:५६	२१:१७	२३:३४	०१:५४	०४:१४	०६:३२	०८:३६	१०:१८	११:४६	१३:११
२७	१४:४२	१६:३८	१८:५२	२१:१३	२३:३०	०१:५०	०४:१०	०६:२८	०८:३२	१०:१५	११:४२	१३:०७
२८	१४:३८	१६:३४	१८:४८	२१:०९	२३:२६	०१:४६	०४:०६	०६:२४	०८:२८	१०:११	११:३८	१३:०३
२९	१४:३४	१६:३०	१८:४४	२१:०५	२३:२२	०१:४२	०४:०२	०६:२०	०८:२४	१०:०७	११:३४	१२:५९
३०	१४:३०	१६:२६	१८:४१	२१:०१	२३:१८	०१:३८	०३:५८	०६:१६	०८:२०	१०:०३	११:३०	१२:५५
३१	१४:२६	१६:२२	१८:३७	२०:५७	२३:१४	०१:३४	०३:५४	०६:१३	०८:१७	०९:५९	११:२६	१२:५१

विक्रम सम्वत् २०२६-२७ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

जनवरी, २०२७, अयनांश : २४:०९:३७

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१४:२२	१६:१८	१८:३३	२०:५३	२३:१०	०१:३१	०३:५०	०६:०९	०८:१३	०९:५५	११:२२	१२:४७
०२	१४:१९	१६:१४	१८:२९	२०:४९	२३:०६	०१:२७	०३:४६	०६:०५	०८:०९	०९:५१	११:१८	१२:४३
०३	१४:१५	१६:१०	१८:२५	२०:४५	२३:०२	०१:२३	०३:४२	०६:०१	०८:०५	०९:४७	११:१४	१२:३९
०४	१४:११	१६:०६	१८:२१	२०:४१	२२:५९	०१:१९	०३:३८	०५:५७	०८:०१	०९:४३	११:१०	१२:३५
०५	१४:०७	१६:०२	१८:१७	२०:३७	२२:५५	०१:१५	०३:३४	०५:५३	०७:५७	०९:३९	११:०७	१२:३२
०६	१४:०३	१५:५८	१८:१३	२०:३३	२२:५१	०१:११	०३:३०	०५:४९	०७:५३	०९:३५	११:०३	१२:२८
०७	१३:५९	१५:५४	१८:०९	२०:२९	२२:४७	०१:०७	०३:२६	०५:४५	०७:४९	०९:३१	१०:५९	१२:२४
०८	१३:५५	१५:५१	१८:०५	२०:२५	२२:४३	०१:०३	०३:२३	०५:४१	०७:४५	०९:२७	१०:५५	१२:२०
०९	१३:५१	१५:४७	१८:०१	२०:२२	२२:३९	००:५९	०३:१९	०५:३७	०७:४१	०९:२३	१०:५१	१२:१६
१०	१३:४७	१५:४३	१७:५७	२०:१८	२२:३५	००:५५	०३:१५	०५:३३	०७:३७	०९:१९	१०:४७	१२:१२
११	१३:४३	१५:३९	१७:५३	२०:१४	२२:३१	००:५१	०३:११	०५:२९	०७:३३	०९:१६	१०:४३	१२:०८
१२	१३:३९	१५:३५	१७:४९	२०:१०	२२:२७	००:४७	०३:०७	०५:२५	०७:२९	०९:१२	१०:३९	१२:०४
१३	१३:३५	१५:३१	१७:४५	२०:०६	२२:२३	००:४३	०३:०३	०५:२१	०७:२५	०९:०८	१०:३५	१२:००
१४	१३:३१	१५:२७	१७:४२	२०:०२	२२:१९	००:३९	०२:५९	०५:१८	०७:२१	०९:०४	१०:३१	११:५६
१५	१३:२७	१५:२३	१७:३८	१९:५८	२२:१५	००:३६	०२:५५	०५:१४	०७:१८	०९:००	१०:२७	११:५२
१६	१३:२३	१५:१९	१७:३४	१९:५४	२२:११	००:३२	०२:५१	०५:१०	०७:१४	०८:५६	१०:२३	११:४८
१७	१३:२०	१५:१५	१७:३०	१९:५०	२२:०७	००:२८	०२:४७	०५:०६	०७:१०	०८:५२	१०:१९	११:४४
१८	१३:१६	१५:११	१७:२६	१९:४६	२२:०३	००:२४	०२:४३	०५:०२	०७:०६	०८:४८	१०:१५	११:४०
१९	१३:१२	१५:०७	१७:२२	१९:४२	२२:००	००:२०	०२:३९	०४:५८	०७:०२	०८:४४	१०:१२	११:३६
२०	१३:०८	१५:०३	१७:१८	१९:३८	२१:५६	००:१६	०२:३५	०४:५४	०६:५८	०८:४०	१०:०८	११:३३
२१	१३:०४	१४:५९	१७:१४	१९:३४	२१:५२	००:१२	०२:३१	०४:५०	०६:५४	०८:३६	१०:०४	११:२९
२२	१३:००	१४:५५	१७:१०	१९:३०	२१:४८	००:०८	०२:२८	०४:४६	०६:५०	०८:३२	१०:००	११:२५
२३	१२:५६	१४:५२	१७:०६	१९:२७	२१:४४	००:०४	०२:२४	०४:४२	०६:४६	०८:२८	०९:५६	११:२१
२४	१२:५२	१४:४८	१७:०२	१९:२३	२१:४०	२३:५६	०२:२०	०४:३८	०६:४२	०८:२४	०९:५२	११:१७
२५	१२:४८	१४:४४	१६:५८	१९:१९	२१:३६	२३:५२	०२:१६	०४:३४	०६:३८	०८:२०	०९:४८	११:१३
२६	१२:४४	१४:४०	१६:५४	१९:१५	२१:३२	२३:४८	०२:१२	०४:३०	०६:३४	०८:१७	०९:४४	११:०९
२७	१२:४०	१४:३६	१६:५०	१९:११	२१:२८	२३:४४	०२:०८	०४:२६	०६:३०	०८:१३	०९:४०	११:०५
२८	१२:३६	१४:३२	१६:४७	१९:०७	२१:२४	२३:४०	०२:०४	०४:२२	०६:२६	०८:०९	०९:३६	११:०१
२९	१२:३२	१४:२८	१६:४३	१९:०३	२१:२०	२३:३७	०२:००	०४:१९	०६:२३	०८:०५	०९:३२	१०:५७
३०	१२:२८	१४:२४	१६:३९	१८:५९	२१:१६	२३:३३	०१:५६	०४:१५	०६:१९	०८:०१	०९:२८	१०:५३
३१	१२:२५	१४:२०	१६:३५	१८:५५	२१:१२	२३:२९	०१:५२	०४:११	०६:१५	०७:५७	०९:२४	१०:४९

फरवरी, २०२७, अयनांश : २४:०९:४३

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१२:२१	१४:१६	१६:३१	१८:५१	२१:०८	२३:२५	०१:४८	०४:०७	०६:११	०७:५३	०९:२०	१०:४५
०२	१२:१७	१४:१२	१६:२७	१८:४७	२१:०४	२३:२१	०१:४४	०४:०३	०६:०७	०७:४९	०९:१६	१०:४१
०३	१२:१३	१४:०८	१६:२३	१८:४३	२१:०१	२३:१७	०१:४०	०३:५९	०६:०३	०७:४५	०९:१३	१०:३७
०४	१२:०९	१४:०४	१६:१९	१८:३९	२०:५७	२३:१३	०१:३६	०३:५५	०५:५९	०७:४१	०९:०९	१०:३४
०५	१२:०५	१४:००	१६:१५	१८:३५	२०:५३	२३:०९	०१:३२	०३:५१	०५:५५	०७:३७	०९:०५	१०:३०
०६	१२:०१	१३:५६	१६:११	१८:३१	२०:४९	२३:०५	०१:२९	०३:४७	०५:५१	०७:३३	०९:०१	१०:२६
०७	११:५७	१३:५३	१६:०७	१८:२८	२०:४५	२३:०१	०१:२५	०३:४३	०५:४७	०७:२९	०८:५७	१०:२२
०८	११:५३	१३:४९	१६:०३	१८:२४	२०:४१	२२:५७	०१:२१	०३:३९	०५:४३	०७:२५	०८:५३	१०:१८
०९	११:४९	१३:४५	१५:५९	१८:२०	२०:३७	२२:५३	०१:१७	०३:३५	०५:३९	०७:२२	०८:४९	१०:१४
१०	११:४५	१३:४१	१५:५५	१८:१६	२०:३३	२२:४९	०१:१३	०३:३१	०५:३५	०७:१८	०८:४५	१०:१०
११	११:४१	१३:३७	१५:५१	१८:१२	२०:२९	२२:४५	०१:०९	०३:२७	०५:३१	०७:१४	०८:४१	१०:०६
१२	११:३७	१३:३३	१५:४८	१८:०८	२०:२५	२२:४१	०१:०५	०३:२३	०५:२७	०७:१०	०८:३७	१०:०२
१३	११:३३	१३:२९	१५:४४	१८:०४	२०:२१	२२:३८	०१:०१	०३:२०	०५:२४	०७:०६	०८:३३	०९:५८
१४	११:२९	१३:२५	१५:४०	१८:००	२०:१७	२२:३४	००:५७	०३:१६	०५:२०	०७:०२	०८:२९	०९:५४
१५	११:२६	१३:२१	१५:३६	१७:५६	२०:१३	२२:३०	००:५३	०३:१२	०५:१६	०६:५८	०८:२५	०९:५०
१६	११:२२	१३:१७	१५:३२	१७:५२	२०:०९	२२:२६	००:४९	०३:०८	०५:१२	०६:५४	०८:२१	०९:४६
१७	११:१८	१३:१३	१५:२८	१७:४८	२०:०६	२२:२२	००:४५	०३:०४	०५:०८	०६:५०	०८:१७	०९:४२
१८	११:१४	१३:०९	१५:२४	१७:४४	२०:०२	२२:१८	००:४१	०३:००	०५:०४	०६:४६	०८:१४	०९:३९
१९	११:१०	१३:०५	१५:२०	१७:४०	१९:५८	२२:१४	००:३७	०२:५६	०५:००	०६:४२	०८:१०	०९:३५
२०	११:०६	१३:०१	१५:१६	१७:३६	१९:५४	२२:१०	००:३३	०२:५२	०४:५६	०६:३८	०८:०६	०९:३१
२१	११:०२	१२:५८	१५:१२	१७:३२	१९:५०	२२:०६	००:३०	०२:४८	०४:५२	०६:३४	०८:०२	०९:२७
२२	१०:५८	१२:५४	१५:०८	१७:२९	१९:४६	२२:०२	००:२६	०२:४४	०४:४८	०६:३०	०७:५८	०९:२३
२३	१०:५४	१२:५०	१५:०४	१७:२५	१९:४२	२१:५८	००:२२	०२:४०	०४:४४	०६:२६	०७:५४	०९:१९
२४	१०:५०	१२:४६	१५:००	१७:२१	१९:३८	२१:५४	००:१८	०२:३६	०४:४०	०६:२३	०७:५०	०९:१५
२५	१०:४६	१२:४२	१४:५६	१७:१७	१९:३४	२१:५०	००:१४	०२:३२	०४:३६	०६:१९	०७:४६	०९:११
२६	१०:४२	१२:३८	१४:५२	१७:१३	१९:३०	२१:४६	००:१०	०२:२८	०४:३२	०६:१५	०७:४२	०९:०७
२७	१०:३८	१२:३४	१४:४९	१७:०९	१९:२६	२१:४३	००:०६	०२:२५	०४:२८	०६:११	०७:३८	०९:०३
२८	१०:३४	१२:३०	१४:४५	१७:०५	१९:२२	२१:३९	२३:५८	०२:२१	०४:२५	०६:०७	०७:३४	०८:५९

विक्रम सम्वत् २०२६-२७ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

मार्च, २०२७, अयनांश : २४:०९:४७

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१०:३१	१२:२६	१४:४१	१७:०१	१९:१८	२१:३५	२३:५४	०२:१७	०४:२१	०६:०३	०७:३०	०८:५५
०२	१०:२७	१२:२२	१४:३७	१६:५७	१९:१४	२१:३१	२३:५०	०२:१३	०४:१७	०५:५९	०७:२६	०८:५१
०३	१०:२३	१२:१८	१४:३३	१६:५३	१९:११	२१:२७	२३:४६	०२:०९	०४:१३	०५:५५	०७:२२	०८:४७
०४	१०:१९	१२:१४	१४:२९	१६:४९	१९:०७	२१:२३	२३:४२	०२:०५	०४:०९	०५:५१	०७:१९	०८:४४
०५	१०:१५	१२:१०	१४:२५	१६:४५	१९:०३	२१:१९	२३:३९	०२:०१	०४:०५	०५:४७	०७:१५	०८:४०
०६	१०:११	१२:०६	१४:२१	१६:४१	१८:५९	२१:१५	२३:३५	०१:५७	०४:०१	०५:४३	०७:११	०८:३६
०७	१०:०७	१२:०३	१४:१७	१६:३८	१८:५५	२१:११	२३:३१	०१:५३	०३:५७	०५:३९	०७:०७	०८:३२
०८	१०:०३	११:५९	१४:१३	१६:३४	१८:५१	२१:०७	२३:२७	०१:४९	०३:५३	०५:३५	०७:०३	०८:२८
०९	०९:५९	११:५५	१४:०९	१६:३०	१८:४७	२१:०३	२३:२३	०१:४५	०३:४९	०५:३१	०६:५९	०८:२४
१०	०९:५५	११:५१	१४:०५	१६:२६	१८:४३	२०:५९	२३:१९	०१:४१	०३:४५	०५:२८	०६:५५	०८:२०
११	०९:५१	११:४७	१४:०१	१६:२२	१८:३९	२०:५५	२३:१५	०१:३७	०३:४१	०५:२४	०६:५१	०८:१६
१२	०९:४७	११:४३	१३:५८	१६:१८	१८:३५	२०:५१	२३:११	०१:३३	०३:३७	०५:२०	०६:४७	०८:१२
१३	०९:४३	११:३९	१३:५४	१६:१४	१८:३१	२०:४८	२३:०७	०१:३०	०३:३३	०५:१६	०६:४३	०८:०८
१४	०९:३९	११:३५	१३:५०	१६:१०	१८:२७	२०:४४	२३:०३	०१:२६	०३:३०	०५:१२	०६:३९	०८:०४
१५	०९:३५	११:३१	१३:४६	१६:०६	१८:२३	२०:४०	२२:५९	०१:२२	०३:२६	०५:०८	०६:३५	०८:००
१६	०९:३२	११:२७	१३:४२	१६:०२	१८:१९	२०:३६	२२:५५	०१:१८	०३:२२	०५:०४	०६:३१	०७:५६
१७	०९:२८	११:२३	१३:३८	१५:५८	१८:१५	२०:३२	२२:५१	०१:१४	०३:१८	०५:००	०६:२७	०७:५२
१८	०९:२४	११:१९	१३:३४	१५:५४	१८:१२	२०:२८	२२:४७	०१:१०	०३:१४	०४:५६	०६:२४	०७:४८
१९	०९:२०	११:१५	१३:३०	१५:५०	१८:०८	२०:२४	२२:४३	०१:०६	०३:१०	०४:५२	०६:२०	०७:४५
२०	०९:१६	११:११	१३:२६	१५:४६	१८:०४	२०:२०	२२:४०	०१:०२	०३:०६	०४:४८	०६:१६	०७:४१
२१	०९:१२	११:०७	१३:२२	१५:४२	१८:००	२०:१६	२२:३६	००:५८	०३:०२	०४:४४	०६:१२	०७:३७
२२	०९:०८	११:०४	१३:१८	१५:३९	१७:५६	२०:१२	२२:३२	००:५४	०२:५८	०४:४०	०६:०८	०७:३३
२३	०९:०४	११:००	१३:१४	१५:३५	१७:५२	२०:०८	२२:२८	००:५०	०२:५४	०४:३६	०६:०४	०७:२९
२४	०९:००	१०:५६	१३:१०	१५:३१	१७:४८	२०:०४	२२:२४	००:४६	०२:५०	०४:३२	०६:००	०७:२५
२५	०८:५६	१०:५२	१३:०६	१५:२७	१७:४४	२०:००	२२:२०	००:४२	०२:४६	०४:२९	०५:५६	०७:२१
२६	०८:५२	१०:४८	१३:०२	१५:२३	१७:४०	१९:५६	२२:१६	००:३८	०२:४२	०४:२५	०५:५२	०७:१७
२७	०८:४८	१०:४४	१२:५९	१५:१९	१७:३६	१९:५२	२२:१२	००:३४	०२:३८	०४:२१	०५:४८	०७:१३
२८	०८:४४	१०:४०	१२:५५	१५:१५	१७:३२	१९:४९	२२:०८	००:३१	०२:३५	०४:१७	०५:४४	०७:०९
२९	०८:४०	१०:३६	१२:५१	१५:११	१७:२८	१९:४५	२२:०४	००:२७	०२:३१	०४:१३	०५:४०	०७:०५
३०	०८:३७	१०:३२	१२:४७	१५:०७	१७:२४	१९:४१	२२:००	००:२३	०२:२७	०४:०९	०५:३६	०७:०१
३१	०८:३३	१०:२८	१२:४३	१५:०३	१७:२०	१९:३७	२१:५६	००:१९	०२:२३	०४:०५	०५:३२	०६:५७

अप्रैल, २०२७, अयनांश : २४:०९:५०

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०८:२९	१०:२४	१२:३९	१४:५९	१७:१७	१९:३३	२१:५२	००:१५	०२:१९	०४:०१	०५:२८	०६:५३
०२	०८:२५	१०:२०	१२:३५	१४:५५	१७:१३	१९:२९	२१:४८	००:११	०२:१५	०३:५७	०५:२५	०६:४९
०३	०८:२१	१०:१६	१२:३१	१४:५१	१७:०९	१९:२५	२१:४४	००:०७	०२:११	०३:५३	०५:२१	०६:४६
०४	०८:१७	१०:१२	१२:२७	१४:४७	१७:०५	१९:२१	२१:४१	२३:५९	०२:०७	०३:४९	०५:१७	०६:४२
०५	०८:१३	१०:०९	१२:२३	१४:४३	१७:०१	१९:१७	२१:३७	२३:५५	०२:०३	०३:४५	०५:१३	०६:३८
०६	०८:०९	१०:०५	१२:१९	१४:४०	१६:५७	१९:१३	२१:३३	२३:५१	०१:५९	०३:४१	०५:०९	०६:३४
०७	०८:०५	१०:०१	१२:१५	१४:३६	१६:५३	१९:०९	२१:२९	२३:४७	०१:५५	०३:३७	०५:०५	०६:३०
०८	०८:०१	०९:५७	१२:११	१४:३२	१६:४९	१९:०५	२१:२५	२३:४३	०१:५१	०३:३४	०५:०१	०६:२६
०९	०७:५७	०९:५३	१२:०७	१४:२८	१६:४५	१९:०१	२१:२१	२३:३९	०१:४७	०३:३०	०४:५७	०६:२२
१०	०७:५३	०९:४९	१२:०३	१४:२४	१६:४१	१८:५७	२१:१७	२३:३६	०१:४३	०३:२६	०४:५३	०६:१८
११	०७:४९	०९:४५	१२:००	१४:२०	१६:३७	१८:५४	२१:१३	२३:३२	०१:३९	०३:२२	०४:४९	०६:१४
१२	०७:४५	०९:४१	११:५६	१४:१६	१६:३३	१८:५०	२१:०९	२३:२८	०१:३६	०३:१८	०४:४५	०६:१०
१३	०७:४१	०९:३७	११:५२	१४:१२	१६:२९	१८:४६	२१:०५	२३:२४	०१:३२	०३:१४	०४:४१	०६:०६
१४	०७:३८	०९:३३	११:४८	१४:०८	१६:२५	१८:४२	२१:०१	२३:२०	०१:२८	०३:१०	०४:३७	०६:०२
१५	०७:३४	०९:२९	११:४४	१४:०४	१६:२१	१८:३८	२०:५७	२३:१६	०१:२४	०३:०६	०४:३३	०५:५८
१६	०७:३०	०९:२५	११:४०	१४:००	१६:१८	१८:३४	२०:५३	२३:१२	०१:२०	०३:०२	०४:२९	०५:५४
१७	०७:२६	०९:२१	११:३६	१३:५६	१६:१४	१८:३०	२०:४९	२३:०८	०१:१६	०२:५८	०४:२६	०५:५१
१८	०७:२२	०९:१७	११:३२	१३:५२	१६:१०	१८:२६	२०:४६	२३:०४	०१:१२	०२:५४	०४:२२	०५:४७
१९	०७:१८	०९:१३	११:२८	१३:४८	१६:०६	१८:२२	२०:४२	२३:००	०१:०८	०२:५०	०४:१८	०५:४३
२०	०७:१४	०९:१०	११:२४	१३:४५	१६:०२	१८:१८	२०:३८	२२:५६	०१:०४	०२:४६	०४:१४	०५:३९
२१	०७:१०	०९:०६	११:२०	१३:४१	१५:५८	१८:१४	२०:३४	२२:५२	०१:००	०२:४२	०४:१०	०५:३५
२२	०७:०६	०९:०२	११:१६	१३:३७	१५:५४	१८:१०	२०:३०	२२:४८	००:५६	०२:३८	०४:०६	०५:३१
२३	०७:०२	०८:५८	११:१२	१३:३३	१५:५०	१८:०६	२०:२६	२२:४४	००:५२	०२:३५	०४:०२	०५:२७
२४	०६:५८	०८:५४	११:०८	१३:२९	१५:४६	१८:०२	२०:२२	२२:४०	००:४८	०२:३१	०३:५८	०५:२३
२५	०६:५४	०८:५०	११:०५	१३:२५	१५:४२	१७:५८	२०:१८	२२:३७	००:४४	०२:२७	०३:५४	०५:१९
२६	०६:५०	०८:४६	११:०१	१३:२१	१५:३८	१७:५५	२०:१४	२२:३३	००:४०	०२:२३	०३:५०	०५:१५
२७	०६:४६	०८:४२	१०:५७	१३:१७	१५:३४	१७:५१	२०:१०	२२:२९	००:३७	०२:१९	०३:४६	०५:११
२८	०६:४२	०८:३८	१०:५३	१३:१३	१५:३०	१७:४७	२०:०६	२२:२५	००:३३	०२:१५	०३:४२	०५:०७
२९	०६:३९	०८:३४	१०:४९	१३:०९	१५:२६	१७:४३	२०:०२	२२:२१	००:२९	०२:११	०३:३८	०५:०३
३०	०६:३५	०८:३०	१०:४५	१३:०५	१५:२२	१७:३९	१९:५८	२२:१७	००:२५	०२:०७	०३:३४	०४:५९

षड्वर्ग-चक्र

अंश		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२३	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला		३०	३०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
विफला		०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
मेष	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
वृष	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
मि.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
क.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
सिं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
कं.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्ग-चक्र

अंश		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२३	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला		३०	३०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
विफला		०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
तुला	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
धनु	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
मकर	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
कुम्भ	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
मीन	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

विंशोत्तरीदशा-सारिणी

राशि	मे. सिं. ध.	वृ. कं. म.	मि. तु. कुं.	क. वृ. मी.	राशि	मे. सिं. ध.	वृ. कं. म.	मि. तु. कुं.	क. वृ. मी.	राशि	मे. सिं. ध.	वृ. कं. म.	मि. तु. कुं.	क. वृ. मी.
	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा		भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा		भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा
स्प.चन्द्र	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	स्प.चन्द्र	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	स्प.चन्द्र	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.
अं. क.	के.	सू.	भौ.	गु.	अं. क.	के.	चं	रा.	श.	अं. क.	शु.	चं.	गु.	बु.
० ००	७ ० ०	४ ६ ०	३ ६ ०	४ ० ०	१० २०	१ ६ २७	९ ९ ०	१३ ० १८	९ ० ९	२० २०	९ ६ ०	२ ३ ०	१५ ७ ६	१२ ३ २७
० २०	६ ९ २७	४ ४ ६	३ ३ २७	३ ७ ६	१० ४०	१ ४ २४	९ ६ ०	१२ ७ ६	८ ६ १८	२० ४०	९ ० ०	२ ० ०	१५ २ १२	११ १० २४
० ४०	६ ७ २४	४ २ १२	३ १ २४	३ २ १२	११ ००	१ २ २१	९ ३ ०	१२ १ २४	८ ० २७	२१ ००	८ ६ ०	१ ९ ०	१४ ९ १८	११ ५ २१
१ ००	६ ५ २१	४ ० १८	२ ११ २१	२ ९ १८	११ २०	१ ० १८	९ ० ०	११ ८ १२	७ ७ ६	२१ २०	८ ० ०	१ ६ ०	१४ ४ २४	११ ० १८
१ २०	६ ३ १८	३ १० २४	२ ९ १८	२ ४ २४	११ ४०	० १० १५	८ ९ ०	११ ३ ०	७ १ १५	२१ ४०	७ ६ ०	१ ३ ०	१४ ० ०	१० ७ १५
१ ४०	६ १ १५	३ ९ ०	२ ७ १५	२ ० ०	१२ ००	० ८ १२	८ ६ ०	१० ९ १८	६ ७ २४	२२ ००	७ ० ०	१ ० ०	१३ ७ ६	१० २ १२
२ ००	५ ११ १२	३ ७ ६	२ ५ १२	१ ७ ६	१२ २०	० ६ ९	८ ३ ०	१० ४ ६	६ २ ३	२२ २०	६ ६ ०	० ९ ०	१३ २ १२	९ ९ ९
२ २०	५ ९ ९	३ ५ १२	२ ३ ९	१ २ १२	१२ ४०	० ४ ६	८ ० ०	९ १० २४	५ ८ १२	२२ ४०	६ ० ०	० ६ ०	१२ ९ १८	९ ४ ६
२ ४०	५ ७ ६	३ ३ १८	२ १ ६	० ९ १८	१३ ००	० २ ३	७ ९ ०	९ ५ १२	५ २ २१	२३ ००	५ ६ ०	० ३ ०	१२ ४ २४	८ ११ ३
						शु.						भौ.		
३ ००	५ ५ ३	३ १ २४	१ ११ ३	० ४ २४	१३ २०	२० ० ०	७ ६ ०	९ ० ०	४ ९ ०	२३ २०	५ ० ०	७ ० ०	१२ ० ०	८ ६ ०
				श.										
३ २०	५ ३ ०	३ ० ०	१ ९ ०	१९ ० ०	१३ ४०	१९ ६ ०	७ ३ ०	८ ६ १८	४ ३ ९	२३ ४०	४ ६ ०	६ ९ २७	११ ७ ६	८ ० २७
३ ४०	५ ० २७	२ १० ६	१ ६ २७	१८ ६ ९	१४ ००	१९ ० ०	७ ० ०	८ १ ६	३ ९ १८	२४ ००	४ ० ०	६ ७ २४	११ २ १२	७ ७ २४
४ ००	४ १० २४	२ ८ १२	१ ४ २४	१८ ० १८	१४ २०	१८ ६ ०	६ ९ ०	७ ७ २४	३ ३ २७	२४ २०	३ ६ ०	६ ५ २१	१० ९ १८	७ २ २१
४ २०	४ ८ २१	२ ६ १८	१ २ २१	१७ ६ २७	१४ ४०	१८ ० ०	६ ६ ०	७ २ १२	२ १० ६	२४ ४०	३ ० ०	६ ३ १८	१० ४ २४	६ ९ १८
४ ४०	४ ६ १८	२ ४ २४	१ ० १८	१७ १ ६	१५ ००	१७ ६ ०	६ ३ ०	६ ९ ०	२ ४ १५	२५ ००	२ ६ ०	६ १ १५	१० ० ०	६ ४ १५
५ ००	४ ४ १५	२ ३ ०	० १० १५	१६ ७ १५	१५ २०	१७ ० ०	६ ० ०	६ ३ १८	१ १० २४	२५ २०	२ ० ०	५ ११ १२	९ ७ ६	५ ११ १२
५ २०	४ २ १२	२ १ ६	० ८ १२	१६ १ २४	१५ ४०	१६ ६ ०	५ ९ ०	५ १० ६	१ ५ ३	२५ ४०	१ ६ ०	५ ९ ९	९ २ १२	५ ६ ९
५ ४०	४ ० ९	१ ११ १२	० ६ ९	१५ ८ ३	१६ ००	१६ ० ०	५ ६ ०	५ ४ २४	० ११ १२	२६ ००	१ ० ०	५ ७ ६	८ ९ १८	५ १ ६
६ ००	३ १० ६	१ ९ १८	० ४ ६	१५ २ १२	१६ २०	१५ ६ ०	५ ३ ०	४ ११ १२	० ५ २१	२६ २०	० ६ ०	५ ५ ३	८ ४ २४	४ ८ ३
									बु.		सू.			
६ २०	३ ८ ३	१ ७ २४	० २ ३	१४ ८ २१	१६ ४०	१५ ० ०	५ ० ०	४ ६ ०	१७ ० ०	२६ ४०	६ ० ०	५ ३ ०	८ ० ०	४ ३ ०
			रा.											
६ ४०	३ ६ ०	१ ६ ०	१८ ० ०	१४ ३ ०	१७ ००	१४ ६ ०	४ ९ ०	४ ० १८	१६ ६ २७	२७ ००	५ १० ६	५ ० २७	७ ७ ६	३ ९ २७
७ ००	३ ३ २७	१ ४ ६	१७ ६ १८	१३ ९ ९	१७ २०	१४ ० ०	४ ६ ०	३ ७ ६	१६ १ २४	२७ २०	५ ८ १२	४ १० २४	७ २ १२	३ ४ २४
७ २०	३ १ २४	१ २ १२	१७ १ ६	१३ ३ ८	१७ ४०	१३ ६ ०	४ ३ ०	३ १ २४	१५ ८ २१	२७ ४०	५ ६ १८	४ ८ २१	६ ९ १८	२ ११ २१
७ ४०	२ ११ २१	१ ० १८	१६ ७ २४	१२ ९ २७	१८ ००	१३ ० ०	४ ० ०	२ ८ १२	१५ ३ १८	२८ ००	५ ४ २४	४ ६ १८	६ ४ २४	२ ६ १८
८ ००	२ ९ १८	० १० २४	१६ २ १२	१२ ४ ६	१८ २०	१२ ६ ०	३ ९ ०	२ ३ ०	१४ १० १५	२८ २०	५ ३ ०	४ ४ १५	६ ० ०	२ १ १५
८ २०	२ ७ १५	० ९ ०	१५ ९ ०	११ १० १५	१८ ४०	१२ ० ०	३ ६ ०	१ ९ १८	१४ ५ १२	२८ ४०	५ १ ६	४ २ १२	५ ७ ६	१ ८ १२
८ ४०	२ ५ १२	० ७ ६	१५ ३ १८	११ ४ २४	१९ ००	११ ६ ०	३ ३ ०	१ ४ ६	१४ ० ९	२९ ००	४ ११ १२	४ ० ९	५ २ १२	१ ३ ९
९ ००	२ ३ ९	० ५ १२	१४ १० ६	१० ११ ३	१९ २०	११ ० ०	३ ० ०	० १० २४	१३ ७ ६	२९ २०	५ ९ १८	३ १० ३	४ ९ १८	० १० ६
९ २०	२ १ ६	० ३ १८	१४ ४ २४	१० ५ १२	१९ ४०	१० ६ ०	२ ९ ०	० ५ १२	१३ २ ३	२९ ४०	४ ७ २४	३ ८ ६	४ ४ २४	० ५ ३
								गु.						
९ ४०	१ ११ ३	० १ २४	१३ ११ १२	९ ११ २१	२० ००	१० ० ०	२ ६ ०	१६ ० ०	१२ ९ ०	३० ००	४ ६ ०	३ ६ ०	४ ० ०	० ० ०
		च.												
१० ००	१ ९ ०	१० ० ०	१३ ६ ०	९ ६ ०										

विंशोत्तरीदशा-कलासारिणी

	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्र १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष		
क.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	क.
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८	१
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	९	९
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०
१५	१	१७	४	१५	१	११	२	८	१	१७	४	२	३	१८	४	८	३	२५	१५
२०	२	३	६	०	१	२४	३	०	२	३	५	१२	४	२४	५	२१	५	३	२०

दशासाधन-विधि

सर्वप्रथम स्पष्टचन्द्र बनाकर उसकी राशि के कोष्ठक में अंश एवं कलाओं के अनुसार विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालना चाहिए। यहाँ २०-२० कलाओं के अन्तर पर दशा भोग्यमान वर्ष, मास एवं दिन में दिया गया है, फिर २० कलाओं से जितनी कलायें अधिक या कम हों उनके अनुसार कला सारिणी से उस ग्रह के कोष्ठक से मासादि फल जानकर पूर्वानीत फल में घटाना या जोड़ना चाहिए। इस प्रकार स्पष्टचन्द्र के राशि अंश एवं कलाओं के आधार पर विंशोत्तरी दशा का भोग्यमान सुगमता से जाना जा सकता है।

विंशोत्तरीदशान्तर्दशा-चक्र

	सूर्य				चन्द्र				मंगल				राहु				गुरु				शनि				बुध				केतु				गुरु			
	कृ. उ.फा. उ.षा.				रोहि. ह. श्रवण				मृ. चि. ध.				आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. वि. पू. भा.				पुष्य. अनु. उ.भा.				आश्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मू. अश्वि.				पू.फा. पू.षा. भ.			
	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
अन्तर्दशामानानि	सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
	चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	वृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
	मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	०६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
	रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
	बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
	श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
	बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
	के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
	शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

वेधसिद्ध (नवीन) वर्षमानानुसारेण वर्षप्रवेशसारिणी

गताब्द संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द संख्या	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमानानुसारेण वर्षप्रवेश सारिणी

गताब्द संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	००	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	००	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	३१	३	३४	६	३७	००	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द संख्या	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

विं. मुद्दादशाचक्र

सूर्य	चन्द्र	मं.	राहु	गुरु	शनि	बुध	के.	शुक्र
०	१	०	१	१	१	१	०	२
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

योगिनीक्रमेण मुद्दादशाचक्र

यो.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
मा.	०	०	१	१	१	२	२	२
दि.	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

त्रिराशिपतिचक्र

लग्नम्	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दि.प.	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
लग्नम्	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रा.प.	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्षफल निर्माण विधि

जिस वर्ष का वर्षफल् अभीष्ट हो, उस अभीष्ट संवत् में से जन्म सवंत् घटाने पर जो शेष बचे वे जन्म से गतवर्ष अर्थात् 'गताब्द' होते हैं उन गताब्दों से पृष्ट १३१ पर दी गई प्राचीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी के नीचे दिए वार, घटी, पलादि फल लेकर उसमें जन्म वार इष्टवटी, पलादि जोड़ने पर वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्टकालज्ञात होता है। पल, घटी आदि यदि ६० से अधिक हों तो उन्हें सवर्ण करके तथा यदि वारादि संख्या ७ हो तो ७ अधिक का भाग देने पर एकादि शेष रहने पर रवि आदि क्रम से वार तथा आगे वर्षेष्ट घटी पलादि होते हैं। जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के राश्यंशादि की तरह वर्ष प्रवेशकालिक लग्न सिद्ध होता है। इस प्रकार वर्ष प्रवेश कालिक ग्रह स्थापित करने पर वर्ष कुण्डली बनती है।

मुन्थासाधन–

वर्ष कुण्डली में मुन्था भी लगाई जाती है। जन्म के प्रथम वर्ष में लग्न ही मुन्था होती है, यह प्रतिवर्ष एक-एक राशि बढ़ती है। अतः गतवर्ष संख्या में जन्म लग्न जोड़ने पर यदि १२ से अधिक हो तो १२ का भाग देने पर शेष मुन्था की राशि होती है।

मुद्दादशासाधन–

गत वर्ष संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर जो संख्या उपलब्ध हो, उसमें २ घटाकर ९ का भाग देने पर एकादि शेष बचने पर सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र की दशा होती है। सूर्यादि मुद्दादशा दिन पृ. सं. ९४ पर दिए गए मुद्दादशा चक्र से जानें।

हर्षबलसाधन–

वर्ष कुण्डली में स्थानबल, स्वोच्चबल, पुरुषस्त्रीबल तथा दिनरात्रिबल- ये चार हर्ष बल कहलाते हैं

स्थानबल–

वर्ष लग्न से ९ स्थान में सूर्य, ३ में चन्द्रमा, ६ में मंगल, १ में बुध, ११ में गुरु, ५ में शुक्र तथा १२ में शनि ५ हर्षबल होते हैं।

स्वोच्चबल–

प्रत्येक ग्रह अपनी तथा उच्च राशि में ५ हर्षबल देते हैं। अर्थात् सूर्य १।५ चन्द्र २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६।, गुरु ४।९।१२, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७ इन स्वोच्च राशियों में सूर्यादि ग्रह हर्षित होते हैं।

पुरुषस्त्रीबल–

स्त्रीग्रह (चं.बु.शु.श.) १।२।३।७।९ स्थानों में तथा पुरुषग्रह (सू. मं.गु) ४।५।६।१०।११।१२ स्थानों में ५ हर्षबल होते हैं।

दिनरात्रिबल–

दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुरुषग्रह तथा रात्रि में हो तो स्त्री ग्रह ५ हर्षबल देते हैं। यहाँ यह ध्यान देना चाहिए जहाँ बल प्राप्त हो वहाँ ५ तथा जहाँ बल प्राप्त न हों वहाँ ० शून्य रखना चाहिए। इस प्रकार सूर्यादि ग्रहों के चारों स्थानादि बलों का योग हर्षबल कहलाता है।

वर्षेश-निर्णय –

जन्म लग्नपति, वर्ष लग्नपति, मुन्थाधिपति, त्रिराशिपति, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी में पञ्चाधिकारी कहलाते है। इन पञ्चाधिकारियों में जो बलवान् होकर लग्न को देखता हो, वह वर्षेश होता है। बलवान् होने पर भी यदि लग्न को न देखता हो तो वर्षेश नहीं होगा। समान बली होने पर जो लग्न को अधिक दृष्टि से देखता हो वह वर्षेश होगा। लग्न को देखने वाला ग्रह यदि अल्पबल हो तो मुन्थेश अर्थात् मुन्था जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी वर्षेश होगा। यदि पञ्चाधिकारियों में कोई भी ग्रह लग्न को न देखता हो तो जो ग्रह सबसे बलवान हो वह वर्षेश होगा। यदि चन्द्र वर्षेश प्राप्त हो तो वह पञ्चाधिकारियों में जिससे इत्थशाल करे वह वर्षेश होगा। यदि इत्थाशाल न करे तो चन्द्र जिस राशि में बैठा हो वह वर्षेश होगा।

वर्ष दृष्टि-विचार–

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस स्थान में स्थित हो, उससे ५।९ स्थान को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से, ३।११ स्थान का गुप्त मित्र दृष्टि से १/७ स्थान को प्रम्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा ४।१० स्थान को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखता है। प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि सभी कार्यों में शीघ्र सफलता देने वाली होती है, गुप्त मित्र दृष्टि कार्यों में कठिनता से सफलता देने वाली होती है। प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि शत्रुता उत्पन्न करने वाली, मित्र से शत्रुता कराने वाली, बनते काम बिगड़ने वाली हानिकारक होती है। गुप्त शत्रु दृष्टि कार्यों को कठिनता से सफल कराने वाली तथा गुप्त रूप से शत्रु उत्पन्न कराने वाली होती है।

❁ लग्नसारिणी ❁

अक्षांश २३° । ००", पलभा ५ । ५ । ३४, अयनांश २४° । ०५ स्वोदयपल (२२८, २५८, ३०५, ३३८, ३४०, ३३०)

इन्दौर, उज्जैन, कलकत्ता, जबलपुर, डाकोर, दाहोद, नड़ियाद, भोपाल, मोरवी, मांडवी, वीरमगाम आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
	२	१०	१७	२५	३२	४०	४८	५६	५	१३	२२	३१	३९	४८	५६	५	१४	२२	३१	३९	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५
	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८
१ वृष	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११
	१४	२३	३१	४०	४८	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९
	२४	००	३६	१२	४८	२४	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३०
	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	०६	२४	४२	००	१८	३६	५४	१२	३०	४८	०६	२४	४२	००	१८	३६	५४
३ कर्क	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	०६	१७	२८	४०	५१	०२	१४	२५	३६	४८	५९	१०
	१२	३०	४८	०६	२४	४२	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०
४ सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	२२	३३	४४	५६	७	१८	३०	४१	५२	०३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	०४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
	००	२०	४०	००	२०	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	०१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	०२	१३
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	२४	३५	४६	५७	०८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४२	५४	०५	१६	२८	३९	५०
	०	०	०	०	०	०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
७ वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	०२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५५	०६	१७	२९	४०	५१	०३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९
	००	२०	४०	०	२०	४०	००	१८	३६	५४	१२	३०	४८	०६	२४	४२	००	१८	३६	५४	१२	३०	४८	०६	२४	४२	००	१८	३६	५४
८ धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	४०	५१	०३	१५	२६	३७	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	०२	१२	२२	३२	४२
	१२	३०	४८	०६	२४	४२	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०
९ मकर	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	५३	०३	१३	२३	३३	४३	५४	०२	११	१९	२८	३७	४५	५४	०२	११	२०	२८	३७	४५	५४	०३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११
	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	२०	२९	३७	४६	५४	०३	१२	१९	२७	३४	४२	५०	५७	०५	१२	२०	२८	३५	४३	५०	५८	०६	१३	२१	२८	३६	४४	५१	५९	६
	२४	०	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
	१४	२२	२९	३७	४४	५२	०	७	१५	२२	३०	३८	४५	५३	०	८	१६	२३	३१	३८	४६	५४	०१	९	१६	२४	३२	३९	४७	५४
	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	००	३६	१२	४८

❀ लग्नसारिणी ❀

अक्षांश २५° । ००", पलभा ५ । ३५ । ४४, अयनांश २४° । ०५ — स्वोदयपल (२२३, २५४, ३०३, ३४१, ३४४, ३३५)

आबू, इलाहाबाद, उदयपुर, कराची, काशी, कोटा, जमालपुर, जालोर, झांसी, मालदा, मिर्जापुर, मुंगेर, मोकामा, बूंदी आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
	५८	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	५०	५८	६	१५	२३	३२	४०	४९	५७
	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	०८	३६	०४	३२	००	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४
१ वृष	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
	६	१४	२३	३१	४०	४८	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९
	१२	४०	०८	३६	०४	३२	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८
२ मिथुन	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	५९	९	१९	२९	३९	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१
	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४	२६
३ कर्क	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	३२	४४	५५	०६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	०७	१८	३०	४१	५३	०४
	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	०८	३६	०४	३२	००	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४
४ सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	१६	२७	३९	५०	०२	१३	२५	३६	४७	५८	०९	२०	३२	४३	५४	०५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	०८	१९	३०	४१
	१२	४०	०८	३६	४	३२	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	५३	४	१५	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४४	५५	०७	१८	२९	४०	५१	०२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	०५	१६
	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०
६ तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८
	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	२८	५६	२४	४२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	०८	३६	०४	३२	००	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४
७ वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	०४	१५	२७	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१
	१२	४०	०८	३६	०४	३२	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४	२६
८ धनु	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
	५२	४	१५	२६	३८	४९	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५१	०१	११	२२	३२	४२	५२
	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	०६	१२	१८
९ मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	२	१२	२२	३२	४२	५२	०३	११	१९	२८	३६	४५	५३	२	१०	१९	२७	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३५	४३	५२	००	०९	१७
	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	०८	३६	०४	३२	००	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	२६	३४	४३	५१	००	०८	१७	२४	३१	३९	४६	५४	०१	०९	१६	२३	३१	३८	४६	५३	०१	०८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	००	०७
	१२	४०	०८	३६	०४	३२	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२	५८
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	१५	२२	३०	३७	४५	५२	००	७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	५९	०६	१४	२१	२९	३६	४४	५१	५८	०६	१३	२१	२८	३६	४३	५०
	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२	५८

❁ लग्नसारिणी ❁

अक्षांश २७° । ००", पलभा ६ । ६ । ५२, अयनांश २४° । ०५ — स्वोदयपल (२१७, २५०, ३०३, ३४३, ३४८, ३३९)

अयोध्या, अलीगढ़, आगरा, इटावा, उन्नाव, कन्नौज, गोरखपुर, फैजाबाद, आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० मेष	५३	०	८	१५	२२	२९	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८
	३६	५०	४	१८	३२	४६	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ वृष	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८
	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ मिथुन	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१२
	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८
	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
३ कर्क	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	५९
	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८
	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ सिंह	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४
	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
५ कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४
	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
६ तुला	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५
	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८
	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
७ वृश्चिक	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९
	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८
	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८ धनु	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३२	४२	५२	२
	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८
	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१३	२१	२९	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४
	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० कुम्भ	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५७	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२
	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ मीन	१६	२३	३१	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	५	१२	१९	२६	३४	४१	४८	५५	२	१०	१७	२४	३१	३९	४६
	३६	५०	४	१८	३२	४६	०	१४	२८	४२	५६	१०	२४	३८	५२	६	२०	३४	४८	२	१६	३०	४४	५८	१२	२६	४०	५४	८	२२

❁ लग्नसारिणी ❁

अक्षांश २८° । ३९", पलभा ६ । ३३ । ६, अयनांश २४° । ०५ — स्वोदयपल (२१३, २४७, ३००, ३४४, ३५१, ३४५)

दिल्ली, गाजियाबाद, टनकपुर, नैनीताल, मुजफ्फरनगर, मेरठ, गुड़गाँव, रोहतक, मुक्तिनाथ आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
० मेष	२ ५० २४	२ ५७ ३०	३ ४ ३६	३ ११ ४२	३ १८ ४८	३ २५ ५४	३ ३३ ००	३ ४१ १४	३ ४९ २८	३ ५७ ४२	४ ५ ५६	४ १४ १०	४ २२ २४	४ ३० ३८	४ ३८ ५२
१ वृष	६ ५० ३६	६ ५८ ५०	७ ७ ४	७ १५ १८	७ २३ ३२	७ ३१ ४६	७ ४० ००	७ ५० ००	८ ०० ००	८ १० ००	८ २० ००	८ ३० ००	८ ४० ००	८ ५० ००	९ ० ००
२ मिथुन	११ ४० ००	११ ५० ००	१२ ०० ००	१२ १० ००	१२ २० ००	१२ ३० ००	१२ ४० ००	१२ ५१ २८	१३ २ ५६	१३ १४ २४	१३ २५ ५२	१३ ३७ २०	१३ ४८ ४८	१४ ० १६	१४ ११ ४४
३ कर्क	१७ १५ १२	१७ २६ ४०	१७ ३८ ०८	१७ ४९ ३६	१८ १ ४	१८ १२ ३२	१८ २४ ००	१८ ३५ ४२	१८ ४७ २४	१८ ५९ ०६	१९ १० ४८	१९ २२ ३०	१९ ३४ १२	१९ ४५ ५४	१९ ५७ ३६
४ सिंह	२३ ०४ ४८	२३ १६ ३०	२३ २८ १२	२३ ३९ ५४	२३ ५१ ३६	२४ ३ १८	२४ १५ ००	२४ २६ ३०	२४ ३८ ००	२४ ४९ ३०	२५ ०१ ००	२५ १२ ३०	२५ २४ ००	२५ ३५ ३०	२५ ४७ ००
५ कन्या	२८ ५१ ००	२९ ०२ ३०	२९ १४ ००	२९ २५ ३०	२९ ३७ ००	२९ ४८ ३०	३० ०० ००	३० ११ ३०	३० २३ ००	३० ३४ ३०	३० ४६ ००	३० ५७ ३०	३१ ०९ ००	३१ २० ३०	३१ ३२ ००
६ तुला	३४ ३६ ००	३४ ४७ ३०	३४ ५९ ००	३५ १० ३०	३५ २२ ००	३५ ३३ ३०	३५ ४५ ००	३५ ५६ ४२	३६ ८ २४	३६ २० ०६	३६ ३१ ४८	३६ ४३ ३०	३६ ५५ १२	३७ ०६ ५४	३७ १८ ३६
७ वृश्चिक	४० २५ ४८	४० ३७ ३०	४० ४९ १२	४१ ०० ५४	४१ १२ ३६	४१ २४ १८	४१ ३६ ००	४१ ४७ २८	४१ ५८ ५६	४२ १० २४	४२ २१ ५२	४२ ३३ २०	४२ ४४ ४८	४२ ५६ १६	४३ ०७ ४४
८ धनु	४६ ११ १२	४६ २२ ४०	४६ ३४ ८	४६ ४५ ३६	४६ ५७ ४	४७ ०८ ३२	४७ २० ००	४७ ३० ००	४७ ४० ०	४७ ५० ०	४८ ०० ०	४८ १० ०	४८ २० ००	४८ ३० ००	४८ ४० ००
९ मकर	५१ २० ००	५१ ३० ००	५१ ४० ००	५१ ५० ००	५२ ०० ००	५२ १० ००	५२ २० ००	५२ २८ १४	५२ ३६ २८	५२ ४४ ४२	५२ ५२ ५६	५३ ०१ १०	५३ ९ २४	५३ १७ ३८	५३ २५ ५२
१० कुम्भ	५५ ३७ ३६	५५ ४५ ५०	५५ ५४ ०४	५६ ०२ १८	५६ १० ३२	५६ १८ ४६	५६ २७ ००	५६ ३४ ०६	५६ ४१ १२	५६ ४८ १८	५६ ५५ २४	५७ ०२ ३०	५७ ०९ ३६	५७ १६ ४२	५७ २३ ४८
११ मीन	५९ १७ २४	५९ २४ ३०	५९ ३१ ३६	५९ ३८ ४२	५९ ४५ ४८	५९ ५२ ५४	० ० ०	० ७ ६	० १४ १२	० २१ १८	० २८ २४	० ३५ ३०	० ४२ ३६	० ४९ ४२	० ५६ ४८

	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	४ ४७ ०६	४ ५५ २०	५ ०३ ३४	५ ११ ४८	५ २० ०२	५ २८ १६	५ ३६ ३०	५ ४४ ४४	५ ५२ ५८	६ १ १२	६ ९ २६	६ १७ ४०	६ २५ ५४	६ ३४ ०८	६ ४२ २२
१ वृष	९ १० ००	९ २० ००	९ ३० ००	९ ४० ००	१ ५० ००	१० ०० ००	१० १० ००	१० २० ००	१० ३० ००	१० ४० ००	१० ५० ००	११ ०० ००	११ १० ००	११ २० ००	११ ३० ००
२ मिथुन	१४ २३ १२	१४ ३४ ४०	१४ ४६ ०८	१४ ५७ ३६	१५ ०९ ०४	१५ २० ३२	१५ ३२ ००	१५ ४३ २८	१५ ५४ ५६	१६ ०६ २४	१६ १७ ५२	१६ २९ २०	१६ ४० ४८	१६ ५२ १६	१७ ०३ ४४
३ कर्क	२० ०९ १८	२० २१ ००	२० ३२ ४२	२० ४४ २४	२० ५६ ०६	२१ ०७ ४८	२१ १९ ३०	२१ ३१ १२	२१ ४२ ५४	२१ ५४ ३६	२२ ०६ १८	२२ १८ ००	२२ २९ ४२	२२ ४१ २४	२२ ५३ ०६
४ सिंह	२५ ५८ ३०	२६ १० ००	२६ २१ ३०	२६ ३३ ००	२६ ४४ ३०	२६ ५६ ००	२७ ०७ ३०	२७ १९ ००	२७ ३० ३०	२७ ४२ ००	२७ ५३ ३०	२८ ०५ ००	२८ १६ ३०	२८ २८ ००	२८ ३९ ३०
५ कन्या	३१ ४३ ३०	३१ ५५ ००	३२ ०६ ३०	३२ १८ ००	३२ २९ ३०	३२ ४१ ००	३२ ५२ ३०	३३ ०४ ००	३३ १५ ३०	३३ २७ ००	३३ ३८ ३०	३३ ५० ००	३४ ०१ ३०	३४ १३ ००	३४ २४ ३०
६ तुला	३७ ३० १८	३७ ४२ ००	३७ ५३ ४२	३८ ०५ २४	३८ १७ ०६	३८ २८ ४८	३८ ४० ३०	३८ ५२ १२	३९ ०३ ५४	३९ १५ ३६	३९ २७ १८	३९ ३९ ००	३९ ५० ४२	४० ०२ २४	४० १४ ०६
७ वृश्चिक	४३ १९' १२	४३ ३० ४०	४३ ४२ ०८	४३ ५३ ३६	४४ ०५ ०४	४४ १६ ३२	४४ २८ ००	४४ ३९ २८	४४ ५० ५६	४५ २ २४	४५ १३ ५२	४५ २५ २०	४५ ३६ ४८	४५ ४८ १६	४५ ५९ ४४
८ धनु	४८ ५० ००	४९ ०० ००	४९ १० ००	४९ २० ००	४९ ३० ००	४९ ४० ००	४९ ५० ००	५० ०० ००	५० १० ००	५० २० ००	५० ३० ००	५० ४० ००	५० ५० ००	५१ ०० ००	५१ १० ००
९ मकर	५३ ३४ ०६	५३ ४२ २०	५३ ५० ३४	५३ ५८ ४८	५४ ०७ ०२	५४ १५ १६	५४ २३ ३०	५४ ३१ ४४	५४ ३९ ५८	५४ ४८ १२	५४ ५६ २६	५५ ४ ४०	५५ १२ ५४	५५ २१ ०८	५५ २९ २२
१० कुम्भ	५७ ३० ५४	५७ ३८ ००	५७ ४५ ०६	५७ ५२ १२	५७ ५९ १८	५८ ०६ २४	५८ १३ ३०	५८ २० ३६	५८ २७ ४२	५८ ३४ ४८	५८ ४१ ५४	५८ ४९ ००	५८ ५६ ०६	५९ ०३ १२	५९ १० १८
११ मीन	१ ३ ५४	१ ११ ०	१ १८ ०६	१ २५ १२	१ ३२ १८	१ ३९ २४	१ ४६ ३०	१ ५३ ३६	२ ०० ४२	२ ०७ ४८	२ १४ ५४	२ २२ ००	२ २९ ०६	२ ३६ १२	२ ४३ १८

❁ लग्नसारिणी ❁

अक्षांश ३०° । ००" पलभा ६ । ५५ । ४२, अयनांश २४° । ०५ स्वोदयपल (२१०, २४४, २९९, ३४५, ३५४, ३४८)

अल्मोड़ा, सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहबाद, मुल्तान आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ४८ ०	२ ५५ ०	३ ०२ ०	३ ९ ०	३ १६ ०	३ २३ ०	३ ३० ०	३ ३८ ८	३ ४६ १६	३ ५४ २४	४ २ ३२	४ १० ४०	४ १८ ४८	४ २६ ५६	४ ३५ ०४	४ ४३ १२	४ ५१ २०	४ ५९ २८	५ ७ ३६	५ १५ ४४	५ २३ ५२	५ ३२ ००	५ ४० ८	५ ४८ १६	५ ५६ २४	६ ०४ ३२	६ १२ ४०	६ २० ४८	६ २८ ५६	६ ३७ ०४
१ वृष	६ ४५ १२	६ ५३ २०	७ १ २८	७ ०९ ३६	७ १७ ४४	७ २५ ५२	७ ३४ ००	७ ४३ ५८	७ ५३ ५६	८ ३ ५४	८ १३ ५२	८ २३ ५०	८ ३३ ४८	८ ४३ ४६	८ ५३ ४४	९ ३ ४२	९ १३ ४०	९ २३ ३८	९ ३३ ३६	९ ४३ ३४	९ ५३ ३२	१० ०३ ३०	१० १३ २८	१० २३ २६	१० ३३ २४	१० ४३ २२	१० ५३ २०	११ ३ १८	११ १३ १६	११ २३ १४
२ मिथुन	११ ३३ १२	११ ४३ १०	११ ५३ ०८	१२ ०३ ०६	१२ १३ ०४	१२ २३ ०२	१२ ३३ ००	१२ ४४ ३०	१२ ५६ ००	१३ ०७ ३०	१३ १९ ००	१३ ३० ३०	१३ ४२ ००	१३ ५३ ३०	१४ ५ ००	१४ १६ ३०	१४ २८ ००	१४ ३९ ३०	१४ ५१ ००	१५ ०२ ३०	१५ १४ ००	१५ २५ ३०	१५ ३७ ००	१५ ४८ ३०	१६ ०० ००	१६ ११ ३०	१६ २३ ००	१६ ३४ ३०	१६ ४६ ००	१६ ५७ ३०
३ कर्क	१७ ०९ ००	१७ २० ३०	१७ ३२ ००	१७ ४३ ३०	१७ ५५ ००	१८ ०६ ३०	१८ १८ ००	१८ २९ ४८	१८ ४१ ३६	१८ ५३ २४	१९ ०५ १२	१९ १७ ००	१९ २८ ४८	१९ ४० ३६	१९ ५२ २४	२० ०४ १२	२० १६ ००	२० २७ ४८	२० ३९ ३६	२० ५१ २४	२१ ३ १२	२१ १५ ००	२१ २६ ४८	२१ ३८ ३६	२१ ५० २४	२२ ०२ १२	२२ १४ ००	२२ २५ ४८	२२ ३७ ३६	२२ ४९ २४
४ सिंह	२३ १ १२	२३ १३ ००	२३ २४ ४८	२३ ३६ ३६	२३ ४८ २४	२४ ०० १२	२४ १२ ००	२४ २३ ३६	२४ ३५ १२	२४ ४६ ४८	२४ ५८ २४	२५ १० ०	२५ २१ ३६	२५ ३३ १२	२५ ४४ ४८	२५ ५६ २४	२६ ८ ००	२६ १९ ३६	२६ ३१ १२	२६ ४२ ४८	२६ ५४ २४	२७ ०६ ००	२७ १७ ३६	२७ २८ १२	२७ ४० ४८	२७ ५२ २४	२८ ०४ ००	२८ १५ ३६	२८ २७ १२	२८ ३८ ४८
५ कन्या	२८ ५० २४	२९ ०२ ००	२९ १३ ३६	२९ २५ १२	२९ ३६ ४८	२९ ४८ २४	३० ०० ००	३० ११ ३६	३० २३ १२	३० ३४ ४८	३० ४६ २४	३० ५८ ०	३१ ०९ ३६	३१ २१ १२	३१ ३२ ४८	३१ ४४ २४	३१ ५६ ००	३२ ०७ ३६	३२ १९ १२	३२ ३० ४८	३२ ४२ २४	३२ ५४ ००	३३ ५ ३६	३३ १७ १२	३३ २८ ४८	३३ ४० २४	३३ ५२ ००	३४ ३ ३६	३४ १५ १२	३४ २६ ४८
६ तुला	३४ ३८ २४	३४ ५० ००	३५ १ ३६	३५ १३ १२	३५ २४ ४८	३५ ३६ २४	३५ ४८ ००	३५ ५९ ४८	३६ ११ ३६	३६ २३ २४	३६ ३५ १२	३६ ४७ ००	३६ ५८ ४८	३७ १० ३६	३७ २२ २४	३७ ३४ १२	३७ ४६ ००	३७ ५७ ४८	३८ ०९ ३६	३८ २१ २४	३८ ३३ १२	३८ ४५ ००	३८ ५६ ४८	३९ ०८ ३६	३९ २० २४	३९ ३२ १२	३९ ४४ ००	३९ ५५ ४८	४० ०७ ३६	४० १९ २४
७ वृश्चिक	४० ३१ १२	४० ४३ ००	४० ५४ ४८	४१ ०६ ३६	४१ १८ २४	४१ ३० १२	४१ ४२ ००	४१ ५३ ३०	४२ ०५ ००	४२ १६ ३०	४२ २८ ००	४२ ३९ ३०	४२ ५१ ००	४३ ०२ ३०	४३ १४ ००	४३ २५ ३०	४३ ३७ ००	४३ ४८ ३०	४४ ०० ००	४४ ११ ३०	४४ २३ ००	४४ ३४ ३०	४४ ४६ ००	४४ ५७ ३०	४५ ९ ००	४५ २० ३०	४५ ३२ ००	४५ ४३ ३०	४५ ५५ ००	४६ ६ ३०
८ धनु	४६ १८ ००	४६ २९ ३०	४६ ४१ ००	४६ ५२ ३०	४७ ०४ ००	४७ १५ ३०	४७ २७ ००	४७ ३६ ५८	४७ ४६ ५६	४७ ५६ ५४	४८ ०६ ५२	४८ १६ ५०	४८ २६ ४८	४८ ३६ ४६	४८ ४६ ४४	४८ ५६ ४२	४९ ०६ ४०	४९ १६ ३८	४९ २६ ३६	४९ ३६ ३४	४९ ४६ ३२	४९ ५६ ३०	५० ६ २८	५० १६ २६	५० २६ २४	५० ३६ २२	५० ४६ २०	५० ५६ १८	५१ ६ १६	५१ १६ १४
९ मकर	५१ २६ १२	५१ ३६ १०	५१ ४६ ०८	५१ ५६ ०६	५२ ०६ ०४	५२ १६ ०२	५२ २६ ००	५२ ३४ ०८	५२ ४२ १६	५२ ५० २४	५२ ५८ ३२	५३ ६ ४०	५३ १४ ४८	५३ २२ ५६	५३ ३१ ०४	५३ ३९ १२	५३ ४७ २०	५३ ५५ २८	५४ ३ ३६	५४ ११ ४४	५४ १९ ५२	५४ २८ ००	५४ ३६ ०८	५४ ४४ १६	५४ ५२ २४	५५ ०० ३२	५५ ८ ४०	५५ १६ ४८	५५ २४ ५६	५५ ३३ ४
१० कुम्भ	५५ ४१ १२	५५ ४९ २०	५५ ५७ २८	५६ ५ ३६	५६ १३ ४४	५६ २१ ५२	५६ ३० ००	५६ ३७ ००	५६ ४४ ००	५६ ५१ ००	५६ ५८ ००	५७ ०५ ००	५७ १२ ००	५७ १९ ००	५७ २६ ००	५७ ३३ ००	५७ ४० ००	५७ ४७ ००	५७ ५४ ००	५८ १ ००	५८ ०८ ००	५८ १५ ००	५८ २२ ००	५८ २९ ००	५८ ३६ ००	५८ ४३ ००	५८ ५० ००	५८ ५७ ००	५९ ४ ००	५९ ११ ००
११ मीन	५९ १८ ००	५९ २५ ००	५९ ३२ ००	५९ ३९ ००	५९ ४६ ००	५९ ५३ ००	० ० ०	० ७ ०	० १४ ०	० २१ ०	० २८ ०	० ३५ ०	० ४२ ०	० ४९ ०	० ५६ ०	१ ३ ०	१ १० ०	१ १७ ०	१ २४ ०	१ ३१ ०	१ ३८ ०	१ ४५ ०	१ ५२ ०	१ ५९ ०	२ ०६ ०	२ १३ ०	२ २० ०	२ २७ ०	२ ३४ ०	२ ४१ ०

❁ लग्नसारिणी ❁

अक्षांश ३१° । ००", पलभा ७/१२/३९, अयनांश २४° । ०५ स्वोदयपल (२०७, २४१, २९८, ३४६, ३५७, ३५१)

सोलन, फिरोजपुर, उत्तरकाशी, लुधियाना, फरीदकोट, रोपड़, शिमला आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
० मेष	२ ४५ ३६	२ ५२ ३०	२ ५९ ३४	३ ६ २८	३ १३ २२	३ २० १६	३ २७ १०	३ ३५ १२	३ ४३ १४	३ ५१ १६	३ ५९ १८	४ ७ २०	४ १५ २२	४ २३ २४	४ ३१ २६
१ वृष	६ ३९ ५८	६ ४८ ००	६ ५६ ०२	७ ०४ ०४	७ १२ ०६	७ २० ०८	७ २८ १०	७ ३८ ०६	७ ४८ ०२	७ ५७ ५८	८ ७ ५४	८ १७ ५०	८ २७ ४६	८ ३७ ४२	८ ४७ ३८
२ मिथुन	११ २६ ३४	११ ३६ ३०	११ ४६ २६	११ ५६ २२	१२ ०६ १८	१२ १६ १४	१२ २६ १०	१२ ३७ ४२	१२ ४९ १४	१३ ०० ४६	१३ १२ १८	१३ २३ ४०	१३ ३५ १२	१३ ४६ ४४	१३ ५८ १६
३ कर्क	१७ ०२ ४८	१७ १४ २०	१७ २५ ५२	१७ ३७ २४	१७ ४८ ५६	१८ ०० २८	१८ १२ ००	१८ २३ ५४	१८ ३५ ४८	१८ ४७ ४२	१८ ५९ ३६	१९ ११ ३०	१९ २३ २४	१९ ३५ १८	१९ ४७ १२
४ सिंह	२२ ५७ ३६	२३ ९ ३०	२३ २१ २४	२३ ३३ १८	२३ ४५ १२	२३ ५७ ०६	२४ ०९ ००	२४ २० ४२	२४ ३२ २४	२४ ४४ ०६	२४ ५५ ४८	२५ ०७ ३०	२५ १९ १२	२५ ३० ५४	२५ ४२ ३६
५ कन्या	२८ ४९ ४८	२९ १ ३०	२९ १३ १२	२९ २४ ५४	२९ ३६ ३६	२९ ४८ १८	३० ०० ००	३० ११ ४२	३० २३ २४	३० ३५ ०६	३० ४६ ४८	३० ५८ ३०	३१ १० १२	३१ २१ ५४	३१ ३३ ३६
६ तुला	३४ ४० ४८	३४ ५२ ३०	३५ ०४ १२	३५ १५ ५४	३५ २७ ३६	३५ ३९ १८	३५ ५१ ००	३६ २ ५४	३६ १४ ४८	३६ २६ ४२	३६ ३८ ३६	३६ ५० ३०	३७ २ २४	३७ १४ १८	३७ २६ १२
७ वृश्चिक	४० ३६ ३६	४० ४८ ३०	४१ ०० २४	४१ १२ १८	४१ २४ १२	४१ ३६ ०६	४१ ४८ ००	४१ ५९ ३२	४२ ११ ०४	४२ २२ ३६	४२ ३४ ०८	४२ ४५ ४०	४२ ५७ १२	४३ ८ ४४	४३ २० १६
८ धनु	४६ २४ ४८	४६ ३६ २०	४६ ४७ ५२	४६ ५९ २४	४७ १० ५६	४७ २२ २८	४७ ३४ ००	४७ ४३ ५६	४८ ५३ ५२	४८ ३ ४८	४८ १३ ४४	४८ २३ ४०	४८ ३३ ३६	४८ ४३ ३२	४९ ५३ २८
९ मकर	५१ ३२ २४	५१ ४२ २०	५१ ५२ १६	५२ ०२ १२	५२ १२ ०८	५२ २२ ०४	५२ ३२ ००	५२ ४० ०२	५२ ४८ ०४	५२ ५६ ०६	५३ ४ ०८	५३ १२ १०	५३ २० १२	५३ २८ १४	५३ ३६ १६
१० कुम्भ	५५ ४४ ४८	५५ ५२ ५०	५६ ०० ५२	५६ ०८ ५४	५६ १६ ५६	५६ २४ ५८	५६ ३३ ००	५६ ३९ ५४	५६ ४६ ४८	५६ ५३ ४२	५७ ०० ३६	५७ ०७ ३०	५७ १४ २४	५७ २१ १८	५७ २८ १२
११ मीन	५९ १८ ३६	५९ २५ ३०	५९ ३२ २४	५९ ३९ १८	५९ ४६ १२	५९ ५३ ०६	० ० ०	० ६ ५४	० १३ ४८	० २० ४२	० २७ ३६	० ३४ ३०	० ४१ २४	० ४८ १८	० ५५ १२

	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	४ ३९ २८	४ ४७ ३०	४ ५५ ३२	५ ३ ३४	५ ११ ३६	५ १९ ३८	५ २७ ४०	५ ३५ ४२	५ ४३ ४४	५ ५१ ४६	५ ५९ ४८	६ ७ ५०	६ १५ ५२	६ २३ ५४	६ ३१ ५६
१ वृष	८ ५७ ३४	९ ७ ३०	९ १७ २६	९ २७ २२	९ ३७ १८	९ ४७ १४	९ ५७ १०	१० ७ ६	१० १७ ०२	१० २६ ५८	१० ३६ ५४	१० ४६ ५०	१० ५६ ४६	११ ०६ ४२	११ १६ ३८
२ मिथुन	१४ ९ ४८	१४ २१ २०	१४ ३२ ५२	१४ ४४ २४	१४ ५५ ५६	१५ ७ २८	१५ १९ ००	१५ ३० ३२	१५ ४२ ४	१५ ५३ ३६	१६ ५ ८	१६ १६ ४०	१६ २८ १२	१६ ३९ ४४	१६ ९९ १६
३ कर्क	१९ ५१ ०६	२० ११ ०	२० २२ ५४	२० ३४ ४८	२० ४६ ४२	२० ५८ ३६	२१ १० ३०	२१ २२ २४	२१ ३४ १८	२१ ४६ १२	२१ ५८ ०६	२२ १० ०	२२ २१ ५४	२२ ३३ ४८	२२ ४५ ४२
४ सिंह	२५ ५४ १८	२६ ०६ ००	२६ १७ ४२	२६ २९ २४	२६ ४१ ०६	२६ ५२ ४८	२७ ०४ ३०	२७ १६ १२	२७ २७ ५४	२७ ३९ ३६	२७ ५१ १८	२८ ०३ ००	२८ १४ ४२	२८ २६ २४	२८ ३८ ०६
५ कन्या	३१ ४५ १८	३१ ५७ ००	३२ ८ ४२	३२ २० २४	३२ ३२ ०६	३२ ४३ ४८	३२ ५५ ३०	३३ ०७ १२	३३ १८ ५४	३३ ३० २३	३३ ४२ १८	३३ ५४ ००	३४ ०५ ४२	३४ १७ २४	३४ २९ ०६
६ तुला	३७ ३८ ०६	३७ ५० ००	३८ १ ५४	३८ १३ ४८	३८ २५ ४२	३८ ३७ ३६	३८ ४९ ३०	३९ १ २४	३९ १३ १८	३९ २५ १२	३९ ३७ ०६	३९ ४९ ००	४० ०० ५४	४० १२ ४८	४० २४ ४२
७ वृश्चिक	४३ ३१ ४८	४३ ४३ २०	४३ ५४ ५२	४४ ६ २४	४४ १७ ५६	४४ २९ २८	४४ ४१ ००	४४ ५२ ३२	४५ ४ ४	४५ १५ ३६	४५ २७ ०८	४५ ३८ ४०	४५ ५० १२	४६ ०१ ४४	४६ १३ १६
८ धनु	४९ ०३ २४	४९ १३ २०	४९ २३ १६	४९ ३३ १२	४९ ४३ ०८	५० ५३ ०४	५० ०३ ००	५० १२ ५६	५० २२ ५२	५० ३२ ४८	५० ४२ ४४	५० ५२ ४०	५१ ०२ ३६	५१ १२ ३२	५१ २२ २८
९ मकर	५३ ४४ १८	५३ ५२ २०	५४ ० २२	५४ ८ २४	५४ १६ २६	५४ २४ २८	५४ ३२ ३०	५४ ४० ३२	५४ ४८ ३४	५४ ५६ ३६	५५ ०४ ३८	५५ १२ ४०	५५ २० ४२	५५ २८ ४४	५५ ३६ ४६
१० कुम्भ	५७ ३५ ०६	५७ ४२ ००	५७ ४८ ५४	५७ ५५ ४८	५८ ०२ ४२	५८ ९ ३६	५८ १६ ३०	५८ २३ २४	५८ ३० १८	५८ ३६ १२	५८ ४३ ०६	५८ ५० ००	५८ ५७ ५४	५९ ४ ४८	५९ ११ ४२
११ मीन	१ ०२ ०६	१ ०९ ००	१ १५ ५४	१ २२ ४८	१ २९ ४२	१ ३६ ३६	१ ४३ ३०	१ ५० २४	१ ५७ १८	२ ०४ १२	२ ११ ०६	२ १८ ००	२ २४ ५४	२ ३१ ४८	२ ३८ ४२

❁ दशम-लग्न-सारिणी ❁

विशेष : दशम लग्न निकालने के लिए अभीष्ट अक्षांश से सम्बन्धित लग्न-सारिणी से सूर्य के राशि अंश का फल लेकर इष्टकाल जोड़ना चाहिए। जुड़े हुए फल में से १५ घटी घटा कर शेष फल को दशम लग्न सारिणी में बाईं ओर राशि एवं ऊपर अंश देखकर उसके तुल्य दशम लग्न होगा। सूक्ष्म फल हेतु अनुपात द्वारा कला विकला का आनयन करना चाहिए।

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
० मेष	३ ४० ६	३ ४९ २४	३ ५८ ४२	४ ८ ०	४ १७ १८	४ २६ ३६	४ ३५ ५४	४ ४५ १२	४ ५५ १०	५ ५ ८	५ १५ ६	५ २५ ४	५ ३५ २	५ ४५ ०	५ ५४ ५८
१ वृष	८ ३४ २६	८ ४४ २४	८ ५४ २२	९ ४ २०	९ १४ १८	९ २४ १६	९ ३४ १४	९ ४४ १२	९ ५४ ५६	१० ५ ४०	१० १६ २४	१० २७ ८	१० ३७ ५२	१० ४८ ३६	१० ५९ २०
२ मिथुन	१३ ५१ ४	१४ १ ४८	१४ १२ ३२	१४ २३ १६	१४ ३४ ०	१४ ४४ ४४	१४ ५५ २८	१५ ६ १२	१५ १६ ५६	१५ २७ ४०	१५ ३८ २४	१५ ४९ ८	१५ ५९ ५२	१६ १० ३६	१६ २१ २०
३ कर्क	१९ १३ ४	१९ २३ ४८	१९ ३४ ३२	१९ ४५ १६	१९ ५६ ०	२० ६ ४४	२० १७ २८	२० २८ १२	२० ३८ १०	२० ४८ ८	२० ५८ ६	२१ ८ ४	२१ १८ २	२१ २८ ०	२१ ३७ ५८
४ सिंह	२४ १७ २६	२४ २७ २४	२४ ३७ २२	२४ ४७ २०	२४ ५७ १८	२५ ७ १६	२५ १७ १४	२५ २७ १२	२५ ३६ ३०	२५ ४५ ४८	२५ ५५ ६	२६ ४ २४	२६ १३ ४२	२६ २२ ०	२६ ३१ १८
५ कन्या	२९ ० ६	२९ ९ २४	२९ १८ ४२	२९ २८ ०	२९ ३७ १८	२९ ४६ ३६	२९ ५५ ५४	३० ५ १२	३० १५ ३०	३० २४ ४८	३० ३४ ६	३० ४३ २४	३० ५२ ४२	३१ २ ०	३१ ११ १८
६ तुला	३३ ४० ६	३३ ४९ २४	३३ ५८ ४२	३४ ८ ०	३४ १७ १८	३४ २६ ३६	३४ ३५ ५४	३४ ४५ १२	३४ ५५ १०	३५ ५ ८	३५ १५ ६	३५ २५ ४	३५ ३५ २	३५ ४५ ०	३५ ५४ ५८
७ वृश्चिक	३८ ३४ २६	३८ ४४ २४	३८ ५४ २२	३९ ४ २०	३९ १४ १८	३९ २४ १६	३९ ३४ १४	३९ ४४ १२	३९ ५४ ५६	४० ५ ४०	४० १६ २४	४० २७ ८	४० ३७ ५२	४० ४८ ३६	४० ५९ २०
८ धनु	४३ ५१ ४	४४ १ ४८	४४ १२ ३२	४४ २३ १६	४४ ३४ ०	४४ ४४ ४४	४४ ५५ २८	४५ ६ १२	४५ १६ ५६	४५ २७ ४०	४५ ३८ २४	४५ ४९ ८	४५ ५९ ५२	४६ १० ३६	४६ २१ २०
९ मकर	४९ १३ ४	४९ २३ ४८	४९ ३४ ३२	४९ ४५ १६	४९ ५६ ०	५० ६ ४४	५० १७ २८	५० २८ १२	५० ३८ १०	५० ४८ ८	५० ५८ ६	५१ ८ ४	५१ १८ २	५१ २८ ०	५१ ३७ ५८
१० कुम्भ	५४ १७ २६	५४ २७ २४	५४ ३७ २२	५४ ४७ २०	५४ ५७ १८	५५ ७ १६	५५ १७ १४	५५ २७ १२	५५ ३६ ३०	५५ ४५ ४८	५५ ५५ ६	५६ ४ २४	५६ १३ ४२	५६ २३ ०	५६ ३२ १८
११ मीन	५९ १ ६	५९ १० २४	५९ १९ ४२	५९ २९ ०	५९ ३८ १८	५९ ४७ ३६	५९ ५६ ५४	० ६ १२	० १५ ३०	० २४ ४८	० ३४ ६	० ४३ २४	० ५२ ४२	१ २ ०	१ ११ १८

	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	६ ४ ५६	६ १४ ५४	६ २४ ५२	६ ३४ ५०	६ ४४ ४८	६ ५४ ४६	७ ४ ४४	७ १४ ४२	७ २४ ४०	७ ३४ ३८	७ ४४ ३६	७ ५४ ३४	८ ४ ३२	८ १४ ३०	८ २४ २८
१ वृष	११ १० ४	११ २० ४८	११ ३१ ३२	११ ४२ १६	११ ५३ ०	१२ ३ ४४	१२ १४ २८	१२ २५ १२	१२ ३५ ५६	१२ ४६ ४०	१२ ५७ २४	१३ ८ ८	१३ १८ ५२	१३ २९ ३६	१३ ४० २०
२ मिथुन	१६ ३२ ४	१६ ४२ ४८	१६ ५३ ३२	१७ ४ १६	१७ १५ ०	१७ २५ ४४	१७ ३६ २८	१७ ४७ १२	१७ ५७ ५६	१८ ८ ४०	१८ १९ २४	१८ ३० ८	१८ ४० ५२	१८ ५१ ३६	१८ २ २०
३ कर्क	२१ ४७ ५६	२१ ५७ ५४	२२ ७ ५२	२२ १७ ५०	२२ २७ ४८	२२ ३७ ४६	२२ ४७ ४४	२२ ५७ ४२	२३ ७ ४०	२३ १७ ३८	२३ २७ ३६	२३ ३७ ३४	२३ ४७ ३२	२३ ५७ ३०	२४ ७ २८
४ सिंह	२६ ४० ३६	२६ ४९ ५४	२६ ५९ १२	२७ ८ ३०	२७ १७ ४८	२७ २७ ६	२७ ३६ २४	२७ ४५ ४२	२७ ५५ ०	२८ ४ १८	२८ १३ ३६	२८ २२ ५४	२८ ३२ १२	२८ ४१ ३०	२८ ५० ४८
५ कन्या	३१ २० ३६	३१ २९ ५४	३१ ३९ १२	३१ ४८ ३०	३१ ५७ ४८	३२ ७ ६	३२ १६ २४	३२ २५ ४२	३२ ३५ ०	३२ ४४ १८	३२ ५३ ३६	३३ २ ५४	३३ १२ १२	३३ २१ ३०	३३ ३० ४८
६ तुला	३६ ४ ५६	३६ १४ ५४	३६ २४ ५२	३६ ३४ ५०	३६ ४४ ४८	३६ ५४ ४६	३७ ४ ४४	३७ १४ ४२	३७ २४ ४०	३७ ३४ ३८	३७ ४४ ३६	३७ ५४ ३४	३८ ४ ३२	३८ १४ ३०	३८ २४ २८
७ वृश्चिक	४१ १० ४	४१ २० ४८	४१ ३१ ३२	४१ ४२ १६	४१ ५३ ०	४२ ३ ४४	४२ १४ २८	४२ २५ १२	४२ ३५ ५६	४२ ४६ ४०	४२ ५७ २४	४३ ८ ८	४३ १८ ५२	४३ २९ ३६	४३ ४० २०
८ धनु	४६ ३२ ४	४६ ४२ ४८	४६ ५३ ३२	४७ ४ १६	४७ १५ ०	४७ २५ ४४	४७ ३६ २८	४७ ४७ १२	४७ ५७ ५६	४८ ८ ४०	४८ १९ २४	४८ ३० ८	४८ ४० ५२	४८ ५१ ३६	४९ ०२ २०
९ मकर	५१ ४७ ५६	५१ ५७ ५४	५२ ७ ५२	५२ १७ ५०	५२ २७ ४८	५२ ३७ ४६	५२ ४७ ४४	५२ ५७ ५२	५३ ७ ४०	५३ १७ ३८	५३ २७ ३६	५३ ३७ ३४	५३ ४७ ३२	५३ ५७ ३०	५४ ७ २८
१० कुम्भ	५६ ४१ ३६	५६ ५० ५४	५७ ० १२	५७ ९ ३०	५७ १८ ४८	५७ २८ ६	५७ ३७ २४	५७ ४६ ४२	५७ ५६ ०	५८ ५५ १८	५८ १४ ३६	५८ २३ ५४	५८ ३३ १२	५८ ४२ ३०	५८ ५१ ४८
११ मीन	१ २० ३६	१ २९ ५४	१ ३९ १२	१ ४८ ३०	१ ५७ ४८	१ ७ ६	२ १६ २४	२ २५ ४२	२ ३५ ०	२ ४४ १८	२ ५३ ३६	३ २ ५४	३ १२ १२	३ २१ ३०	३ ३० ४८

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
मित्र	चं. मं. गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.	बु. शु. श.
शत्रु	शु. श.	रा.	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	सू. चं. मं
सम	बु.	मं. गु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.	गु.

तात्कालिक-मैत्री

ग्रह स्थान से २, ३, ४, १०, ११, १२ स्थान में स्थित ग्रह मित्र तथा ग्रह स्थान से १, ५, ६, ७, ८, ९ स्थान में स्थित ग्रह शत्रु होते हैं।

नक्षत्रों की अन्धाक्ष-मन्दाक्ष-सुलोचनादि संज्ञा

अन्धाक्ष	रो., पु., उ.फा., वि., पू.षा., ध., रे.,	पूर्व	शीघ्र लाभ
मन्दाक्ष	मृ., आश्ले., ह., अनु., उ.षा., शत., अश्वि.,	दक्षिण	प्रयत्न से लाभ
मध्याक्ष	आ., म., चि., ज्ये., अभि., पू.भा., भ.	पश्चिम	दूरश्रवण, लाभ नहीं
सुलोचन	पुन., पू.फा., स्वा., मू., श्रव., उ.भा., कृ.	उत्तर	न श्रवण न लाभ

तिथि-वार-नक्षत्रदिवस सिद्ध्यादि योगचक्र

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सिद्धि योग	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृत योग	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थ सिद्धि योग	अश्वि. पुष्य हस्त, मूल उ.फा., उ.षा. उ.भा.	रो.मृ. पुष्य श्रवण अनु.	अश्वि. उ.भा. कृ., आश्ले.	रो. मृ. ह. अनु.	अश्वि. पुष्य पुन. अनु. रे.	अश्वि. पुन. अनु. श्रव. रे.	रो. स्वा. श्रवण
मृत्यु योग	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रद योग	x	x	४।९।१४	x	x	x	४।९।१४

शिव-वास

वर्तमान तिथि को दो से गुणा करके पाँच जोड़ने पर जो प्राप्त हो, उसको सात से भाग देने पर एक शेष रहने पर कैलाश में श्रेष्ठ, दो से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ, तीन से वृषोपरि श्रेष्ठ, चार से सभा में सामान्य, पाँच से ज्ञानलेवा में श्रेष्ठ, छः से क्रीड़ा में नेष्ट तथा शून्य से श्मशान में मृत्युकारक है।

विविध-मुहूर्त्तों का विचार

गर्भाधान के मुहूर्त्त का विचार-

रजोदर्शन प्रारम्भ से ४ रात्रि उपरान्त सम-रात्रियों में रो०, ह०, स्वा०, मृ०, अनु०, श्र०, ध०, शतभिषा तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में मेष, कर्क, सिंह, तुला, धनु, मकर इन लग्नों में तथा लग्न से ३-६-११वें स्थानों पर पाप ग्रह हो रवि, मंगल और गुरु की लग्न पर दृष्टि, नवांश विषम राशि का हो, (स्त्री को विशेष रूप से चन्द्र श्रेष्ठ हो) ऐसे समय का विचार कर गर्भाधान संस्कार करें। (पुन०, अश्वि०, पुष्य, चित्रा) इन नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम है।

गर्भाधान-मुहूर्त्त-चक्र

रो०, हस्त, स्वाती, मृग०, अनु०, श्र०, ध०, शत०, तीनों उत्तरा	श्रेष्ठ नक्षत्र
पुनर्वसु, अश्विनी, पुष्य, चित्रा	मध्यम नक्षत्र
१-४-५-७-९-१०	लग्न
लग्न से ३-६-११वें पापग्रह हों	
१-३-५-७-९-११	नवांश
रजोदर्शन से ६-८-१०-१२-१४-१६वीं	रात्रियाँ

पुंसवन तथा सीमन्त मुहूर्त्त विचार-

गर्भ के तृतीय मास में रवि, मंगल, गुरुवार को दम्पति के श्रेष्ठ चन्द्र में, तारा शुद्धि में, रो०, मृग०, पुष्य, पुन०, हस्त, मू०, श्रवण, ३ उत्तरा नक्षत्रों में जन्म को त्याग कर, शुक्ल पक्ष १-२-३-५-७-१०-११, १३ तथा कृष्ण पक्ष की में दशमी पर्यन्त तिथियों में दिन में पूर्व भाग में पुरूष संज्ञक नवमांश लग्न में होने पर तथा लग्न से १-४-५-७-९-१० स्थानों पर शुभ ग्रह तथा ३-६-११वें स्थानों पर पापग्रहों की स्थिति में एवं चन्द्र की १-६-८-१२वें स्थिति न होने पर पुंसवन व सीमन्त संस्कार शुभ हैं इस संस्कार में गुरु शुक्रास्त अविचारणीय है। (गर्भ से) ६-८ मासों में मासाधिपति बली होने पर शुभ है।

पुंसवन तथा सीमन्त मुहूर्त्त चक्र

गर्भ से तृतीय मास में तथा मासाधिपति बली होने पर ६, ८ मासों में	मास
शुक्ल पक्ष की १-२-३-५-७-१०-११- १३, कृष्ण पक्ष की १ से १० (जन्म नक्षत्र को छोड़कर)	तिथि
रो०, मृग०, पुष्य, पुन०, हस्त, मूल, श्रवण तीनों उत्तरा	नक्षत्र
१-३-५-७-११	लग्न
रवि, मंगल, गुरु मतान्तर से सोम, बुध, शुक्र	वार

स्तनपान कराने का मुहूर्त्त-

जन्म के पाँचवें दिन अथवा भद्रा, व्यतिपात, वैधृति ४-९-१४ तिथि को छोड़कर शुभ तिथि को सोम, बुध, गुरु, शुक्र वारों में पुन०, पुष्य, मृ०, म०, श्र०, रे० नक्षत्रों में बालक को प्रथम बार स्तनपान शुभ है।

स्तनपान मुहूर्त्त चक्र

२-३-५-८-१०-११-१३-१५	तिथि
सोम, बुध, गुरु, शुक्र	वार
पुन०, पुष्य, मृ०, म०, श्र०, रे०	नक्षत्र
भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, रिक्ता तिथि	त्याज्य

जलपूजन करने का मुहूर्त्त-

जन्म के अनन्तर प्रथम मास की समाप्ति पर बुध, गुरु, चन्द्र वारों में ४-९-१४-३०

तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, अनु०, मूल, श्रवण नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन करना (कुंआ-पूजना) श्रेष्ठ है।

चैत्र, पौष, अधिमास, गुरु-शुक्रास्त का विचार १ मास के बाद ही करें।

जल पूजन करने के लिए मुहूर्त्त-चक्र

१-२-३-५-६-८-१०-११-१२-१३-१	तिथि
बुध, गुरु, सोम	**वार**
मृग०, पुन०, पुष्य, हस्त, अनु०, मूल, श्रवण	**नक्षत्र**
प्रथममासोपरान्तचैत्र, पौष अधिक-मास, गु-शुक्रास्त, रिक्ता व अमा० तिथि	**त्याज्य**

जातकर्म और नामकरण संस्कार मुहूर्त्त-

जातकर्म अर्थात् शिशु के जन्म होने के बाद का कार्य नाल छेदन से पूर्व करना उचित है। नामकरण सूतक निवृत्ति के उपरान्त ब्राह्मण ११वें दिन, क्षत्रिय १३वें दिन, शूद्र २१वें दिन कुल की परम्परा के अनुसार करें। दस दिन से पूर्व कदापि शुद्धि के अभाव के कारण नामकरण संस्कार न करें। सूतक समाप्ति पर ११वें या १२वें दिन नाम संस्कार बिना मुहूर्त्त विचार कर लें। १२ दिन के बाद भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, संक्रान्ति रहित दिनों में रिक्ता १-२-३-५-६-७-१०- ११-१२-१३ इन तिथियों में शुभ वार, अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, तीनों उत्तरा, अभि०, श्र०, ध०, श०, रे०, नक्षत्रों में लग्न नवांश बल का विचार कर नामकरण करें।

नामकरण संस्कार मुहूर्त्त चक्र

१-२-३-५-६-७-८-१०-११-१२-१३	तिथि
सोम, बुध, गुरु, शुक्र	**वार**
अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, ३ उत्तरा, अभि०, श्रव०, धनि०, शत, रेवती	**नक्षत्र**
जन्म से १० दिन, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, संक्रान्ति रहित दिन, पर्व व रिक्ता तिथि।	**त्याज्य**

निष्क्रमण मुहूर्त्त अर्थात् बालक के प्रथम बार घर से निकलने का मुहूर्त्त-

जन्म से बारहवें दिन बिना मुहूर्त्त विचार के बालक का निष्क्रमण कर, सूर्य नक्षत्रों का पूजन करके सूर्य नक्षत्र व देवताओं का दर्शन करावें। यदि बारहवें दिन यह न हो पावें तब जन्म से ३ मास में मंगल शनि वर्जित वारों व रिक्ता, विष्टि, अमा० आदि अशुभ योग से भिन्न शुभ दिन में अश्वि०, रो०, पुन०, पुष्य, हस्त, अनुराधा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रों में प्रथम निष्क्रमण शुभ है।

बालक के प्रथम बार घर से निष्क्रमण के लिए मुहूर्त्त चक्र

तिथि	१-२-३-५-६-७-८-१०-११-१२-१३
वार	**रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र**
नक्षत्र	**अश्वि०, रो०, पुन०, पुष्य, हस्त, अनु०, स्वा०, मूल, श्र०, धनि०**
त्याज्य	**मंगल, शनिवार, रिक्ता, अमा०, विष्टि, अशुभ योग**

भूमि पर प्रथमोपवेश का विचार-

जन्म से पंचम मास में रिक्ता, अमा०, रहित तिथि, शुभवार, अश्वि०, रो०, मृ०, पुष्य, हस्त, अनु०, ज्येष्ठा, अभि०, ३ उत्तरा नक्षत्रों में स्थिर लग्न का विचार कर बालक की कमर में काला सूत्र बांधकर पृथवी और वराह का पूजन कर 'पृथ्वी' पर बैठावें। इस समय बालक के सामने विविध वस्तुएँ रखें आजीविका की जिस वस्तु को वह उठावे उसी से आजीविका समझनी चाहिए।

भूमि पर पहली बार बैठाने के लिए मुहूर्त्त चक्र

तिथि	पंचममास में १-२-३-५-६-७-८-१० ११-१२-१३-१५
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि०, रो०, मृ०, पुष्य, हस्त, अनु०, ज्ये०, ३ उत्तरा
लग्न	२-५-८-११

अन्नप्राशन कराने का विचार-

बालक के नामकरण, निष्क्रमण, भूमि उपवेशन के बाद ६, ८, १०, १२वें मास में पुत्र को और ५, ७, ९, ११वें मास में कन्या को अन्नप्राशन करावें।

विशेष-

उक्त मासों में भद्रा व्यतिपात दोष रहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में शुभवार अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, शत०, तीनों उत्तरा, रेवती नक्षत्रों में १, ३, ४, ५, ७, ९ स्थानों में शुभ ग्रह हों जन्म-लग्न व जन्म राशि से अष्टम लग्न या नवांश तथा १२, १, ८ लग्न को त्यागकर पाप शुद्ध दशम भाव इन सभी बातों का ध्यान कर अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है।

अन्नप्राशन कराने के लिए मुहूर्त्त-चक्र

मास	पुत्र को - ६, ८, १०, १२
	कन्या को - ५, ७, ९, ११
तिथि	१, ३, ५, ७, १०, १३, १५
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, श०, तीनों उत्तरा, रेवती
लग्न	२, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११
त्याज्य	जन्म लग्न से व जन्म राशि से अष्टम लग्न या नवांश तथा १२, १, ८ लग्न। दशम में पाप ग्रह, भद्राव्यतिपातादि दोष।

कर्ण-वेध करने का विचार-

समवर्ष, चैत्र, पौष, जन्ममास, देवशयन, जन्म नक्षत्र व तिथि, क्षयतिथि व रिक्ता को त्यागकर जन्म से १२वें या १६वें दिन अथवा ६, ७, ८वें मास में या विषम वर्षों में शुभवार, अश्वि०, मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, अनु०, श्र०, धनि०, रे० नक्षत्रों में लग्न से अष्टम शुद्ध समय में वृष, तुला, धनु, मीन, लग्न में तथा गुरु की लग्न में स्थिति होने पर कर्ण-वेध श्रेष्ठ होता है।

कर्णवेध-मुहूर्त्त चक्र

वर्षादि	विषम वर्ष । ६, ७, ८वें मास।
	जन्म से १२वें या १३वें दिन।
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि०, मृ०, पुन०, पु०, हस्त, चि०, अनु०, श्र०, धनि०, रे०
लग्न	२, ७, ९, १२
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
त्याज्य	समवर्ष, देवशयन, (आषाढ़ शु० ११) से कार्तिक शु० ११ तक) चैत्र, पौष, जन्ममास-तिथि-नक्षत्र, क्षय तथा रिक्ता तिथि ।

चूडाकर्म (मुण्डन) संस्कार विचार-

अपने कुल की परम्परा के अनुसार इष्टदेव या तीर्थ स्थान पर मुण्डन संस्कार और कर्ण वेध किया जा सकता है। यह चौल कर्म विषम वर्ष, उत्तरायण, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अश्वि०, मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, ज्ये०, श्र०, धनि०, शत०, रे० नक्षत्रों में करना श्रेष्ठ है। अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिए। ज्येष्ठ, चैत्र मास में न करें। बालक की माता को ५ मास की गर्भ स्थिति होने पर ५ वर्ष से न्यून अवस्था के शिशु का मुण्डन न करें।

चूडाकर्म संस्कार के मुहूर्त्त के लिए चक्र

वर्ष	विषम । सूर्य उत्तरायण होने पर
तिथि	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि०, मृग०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, ज्ये०, श्रव०, धनि०, श०, रे०
त्याज्य	लग्न से अष्टम ग्रह, ज्येष्ठ, चैत्रमास समवर्ष, दक्षिणायन।

कन्या के नाक बिंधवाने का विचार-

शुक्ल पक्ष रिक्ता व अमा० रहित तिथि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, अशुभ योग रहित प्रथम प्रहर, अश्वि०, मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, अनु०, श्र०, धनि०, रे०, ३ उत्तरा, स्वाती, शत०, इन नक्षत्रों में कन्या की नाक बींधना शुभ है।

कन्या नासिकाछेदन-मुहूर्त्त-चक्र

पक्ष	शुक्ल पक्ष
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
वार	सोम-बुध-गुरु-शुक्र
प्रहर	प्रथम
नक्षत्र	अश्वि०, मृग०, पुन०, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, श्रव०, धनि०, शत०, तीनों उत्तरा, रेवती

अक्षरारम्भ करने का विचार-

बालक को विद्यारम्भ से पूर्व अक्षर अंक आदि ज्ञानार्थ अक्षरारम्भ का विचार होता है। सूर्य उत्तरायण हो, जन्म से ५, ७वें वर्ष में। १,२, ३, ५, ६, १०, ११,१२ तिथि, शुभवार, अश्वि०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्रव०, रे०, इन नक्षत्रों में चरलग्नों को छोड़कर अन्य लग्नों में गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा अपने कुल देवताओं का पूजन कर अक्षरारम्भ मुहूर्त्त करें।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त-चक्र

अयन	उत्तरायण
वर्ष	५वां, ७वां
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२
लग्न	२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२
नक्षत्र	अश्वि०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, रेवती।

विद्यारम्भ कराने का विचार-

अक्षरारम्भ के उपरान्त विशेष ज्ञान बढ़ाने वाली किसी भी भाषास्थ विद्या (विशेषतः संस्कृत भाषास्थ विद्या) का प्रारम्भ फाल्गुन मास छोड़कर उत्तरायण, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, रवि बुध, गुरु, शुक्र वारों में और अश्वि०, आश्ले०, मृग०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, मूल, श्र०, ध०, श०, तीनों पूर्वा, रेवती इन नक्षत्रों में श्रेष्ठ है। अंग्रेजी, फारसी, उर्दू के विद्यारम्भ के लिए रवि, मंगल, शनिवार, रिक्ता तिथि, ज्ये०, आश्ले०, म०, ३ पूर्वा, भ०, कृ०, वि०, आर्द्रा, उ०षा०, शत०, इन नक्षत्रों में शुभ है।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त-चक्र

अयन		उत्तरायण
तिथि		२, ३, ५, ६, १०, ११, १२
संस्कृत व हिंदी विद्यारम्भ त्याज्य		फाल्गुन मास, रिक्तादि तिथि अशुभवार
वार		रवि, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र		अश्वि०, रो०, मृ०
ग्राह्य		आर्द्रा, पुन०, पुष्य०, आ०, ह०, चि०, स्वा०, अनु, मू०, श्र०, ध०, श०, ३ पूर्वा, रे०
अंग्रेजी	वार	रवि, मंगल, शनि
फारसी	तिथि	४, ९, १४
उर्दू आदि	नक्षत्र	ज्ये०, आश्ले०, म०, ३ पूर्वा०, मू०, कृ०, वि०, आर्द्रा, उ० षा०, शत० ।

उपनयन संस्कार के मुहूर्त्त का विचार-

यज्ञोपवीतपरिधान (उपनयन संस्कार)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों को करना चाहिए। बालक के जन्म से या गर्भ से ब्राह्मण ८वें, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करे इस काल के व्यतीत हो जाने पर ब्राह्मण १६वें, क्षत्रिय २२वें, वैश्य २४वें वर्ष तक उपनयन करा सकते हैं। बालक (बटुक) का गुरुबल तथा चन्द्रबल विचारें। देवशयन से पूर्व तक उत्तरायण सूर्य में, रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवारों में शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ तथा कृष्णपक्ष की २, ३, ५ तिथियों में अश्वि०, रो०, मृ०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, आश्ले०, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, मूल, श्र०, ध०, शत०, रेवती इन नक्षत्रों के क्रूर तथा वेधरहित होने पर पूर्वाह्न में, अभिजित मुहूर्त में यज्ञोपवीत संस्कार करावें।

चैत्र मास, मीन के सूर्य में, वृष या कर्क के पूर्ण चन्द्रमा के लग्न में रहने पर विशेष श्रेष्ठतम होता है।

सामवेदियों को मंगलवार भी श्रेष्ठ है तथा भौमबल विचार भी आवश्यक है। उपनयन संस्कार में दक्षिणायन सूर्य, देवशयन, गुरु, शुक्र का बाल वृद्धास्त, अपराह्न, ज्ये०, शु० २, आषाढ़ शु० १०, पौष शु० ११, माघ शु० १२, संक्रान्ति दिन, रोगबाण, रवि के ८, १७, २६ गतांश, लग्नेश और चन्द्र, शुक्र, गुरु की ६, ८, १२ में स्थिति, १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। अतः इन सब का परित्याग कर उपनयन संस्कार करें।

उपनयन मुहूर्त्त-चक्र

	ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य		
वर्ष	(८ या १६) (११ या २२) (१२ या २४)		
अयन	देवशयन से पूर्व उत्तरायण में,		
वार	रवि, चं.०, बुध, गुरु, शुक्र		
पक्ष	शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११,१२		
तिथि	कृष्ण पक्ष की २, ३, ५		
नक्षत्र	अश्वि०, रो०, मृग०, आर्द्रा०, पुन०, पुष्य,		
	आश्ले०, तीनों पूर्वा, ३ उत्तरा, ह०,		
	चि०, स्वा०, अनु०, मूल, श्र०,		
	ध०, शत०, रेवती		
गुरु	५, ११, ९ २, ७ श्रेष्ठ	१०, ६, ३, १ पूज्य	४, ८, १२, निन्दित
अन्य	पूर्वाह्न, अभिजित मुहूर्त्त		
ग्राह्य	(सामवेदियों को भौमबल व मंगलवार भी)		
त्याज्य	गुरु, शुक्र का बाल वृद्धास्त, दक्षिणायन, संक्रान्ति दिवस, रोगबाण तथा लग्नेश, चं०, शु०, गु०, की ६, ८, १२वें, पाप ग्रहों की १, ५, ८वें स्थिति।		

जन्मराशि से विवाह मुहूर्त्तोपयोगी त्रिबलशुद्धि

बल	गुरु	चन्द्र	सूर्य
श्रेष्ठ	२, ५, ७, ९, ११	१, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११	३, ६, १०,११
पूज्य	१, ३, ६, १०	१२	१, २, ५, ७, ९
नेष्ट	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

यहाँ वर को सूर्यबल कन्या को गुरुबल तथा दोनों को चन्द्रबल देखना चाहिए।

वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत्॥

विशेष– गुरु व सूर्य स्वोच्च, स्वमित्र स्वराशि, स्वनवांश, वर्गोत्तम नवांश में होने पर ४, ८, १२वें होने पर भी शुभ माने जाते हैं।

'स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरौ।
रिष्फाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्॥'
(राम दैवज्ञ)

यदि गुरु नीच या शत्रु राशि का हो तो शुभ होने पर भी अशुभ फलप्रद होता है अतः नीच या शत्रु राशिस्थ गुरु, कन्या की राशि से २, ५, ७, ९, ११वें होने पर भी अशुभ माना गया है यह पूजा, (गुरु का दान व्रत जपादि आचरण) करने पर ही शुभफलप्रद होता है। ऐसे ही सूर्य के ४, ८, १२वें होने पर परिहार वाक्य–

'स्वोच्चे स्वमित्रसदने स्वगृहे स्ववर्गे।
स्वांशे ततश्च निधनव्ययतुर्यगोऽपि॥
श्रेयस्तनोति रिपुनीचगतोऽप्यनिष्टम्।
तुल्यं फलं निगदितं रविजीवयोश्च॥
(दैवज्ञ कल्पद्रुम)

सूर्य यदि तुला राशि वाले वर के लिए २, ५, ९वें में हो तो शुभफलप्रद होता है उसकी पूजा की आवश्यकता नहीं होती। यथा–

धर्मधीधनगतोदिवाकर–
स्तौलिराशिजनितस्य शोभनः॥

अन्य राशि वालों के लिए २, ५, ९वां रवि १३ अंश बीत जाने के उपरान्त शुभ माना जाता है। अर्थात् पूज्य नहीं होता यथा–

'गर्ग्याङ्गिरो वत्सवशिष्ठगौत–
मपराशराद्या मुनयो वदन्ति।
द्वितीयपंचाङ्गगतो दिवाकर
स्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः।'

वधू–प्रवेश मुहूर्त्त का विचार–

विवाह संस्कार हो जाने के बाद प्रथम बार वधू का पतिगृह में प्रवेश वधू–प्रवेश कहलाता है। विवाह से १६ दिन के अन्दर बिना तिथ्यादि का विचार किए भी स्थिर लग्न में वधू–प्रवेश शुभ है। एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त स्थिर लग्न में । तीसरे, ५वें वर्ष में भी शुभ है। इसके उपरान्त शुभ मुहूर्त्त (तिथ्यादि का) विचार कभी हो सकता है। वधू –प्रवेश में रे०, अ०, रोहि०, मृ०, श्र०, ध०, ह०, चि०, स्वा०, म०, मू०, ३ उत्तरा, पुष्य, अनु०, इन नक्षत्रों में शुभ वारों में १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ तिथियों में स्थिर लग्नों में चतुर्थाष्टम् शुद्ध होने पर शुभ होता है।

व्यतिपात, क्षयतिथि, ग्रहण, वैधृति, अमा०, संक्रान्ति, रिक्ता तिथियों में वधू–प्रवेश वर्जित है।

वधू–प्रवेश मुहूर्त्त–चक्र

दिन	१६ दिन तक अथवा ७, ५, ९वें दिन
मास, वर्ष	विषम मास, विषम वर्ष।
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
नक्षत्र	रे०, अ०, रो०, मृ०, श्र०, ध०, हस्त, चि०, स्वा०, म०, मूल, पुष्य,
	अनु०, तीनों उत्तरा, अभि०
वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र
लग्न	२, ५, ८, ११ लग्न ४, ८ भाव शुद्ध हो।
त्याज्य	व्यतीपात, क्षयतिथि, रिक्ता, अमा०, ग्रहण, वैधृति, संक्रान्ति दिन

विशेष–

वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः
राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः
सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

द्विरागमन–मुहूर्त्त–

वधूप्रवेशोपरान्त द्वितीय बार पिता के घर से पतिगृह में प्रवेश द्विरागमन कहलाता है। यह १–३–५ इन विषम वर्षों में १–८–११ राशि के सूर्य में सूर्य, गुरु की शुद्धि देखकर शुभ वार १, २, ३, ६, ७, १२ लग्नों में ह०, अ०, रे०, तीनों उत्तरा, रो०, मृग०, स्वा०, पुन०, पु०, श्र०, ध०, शत०, मू०, चि०, अनु० नक्षत्रों में शुभ माना गया है।

वर्ष	विषम (५ वर्ष तक)
मास	१, ८, ११वीं राशि के सूर्य में, सूर्य गुरु की शुद्धि
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १५
वार	सोम, बुध, गुरु एवं शुक्र
नक्षत्र	ह०, चि०, अ०, रे०, रो०, स्वा०, पुन०, पुष्य०, श्र०, ध०, श०, मृग०, मू० अनु०, ३ उत्तरा
त्याज्य	सम्मुख तथा दखिण शुक्र। (रवेती से मृगशिरा तक चन्द्र के रहने पर शुक्र शुभ हो जाता है। सामान्य अवस्था में त्याज्य)

विशेष–

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति–
चन्द्रमा तावच्छुक्रो
भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः॥

जन्माक्षर-चक्र

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद्	चतुष्पद्	मानव	जलचर, कीट
राशीश	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२
घात वार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनुराधा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिध	व्याघात
घात करण	बव	शकुनी	चतुष्पाद्	नाग
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम
स्त्री घा. चं.	१	८	७	९
पु. घा. चं.	१	५	९	२

नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्तिका				रोहिणी				मृगशिरा				आर्द्रा				पुनर्वसु				पुष्य				आश्लेषा			
योनि	अश्व				गज				मेष				सर्प				सर्प				श्वान				मार्जार				मेष				मार्जार			
गण	देव.				मनुष्य				राक्षस				मनुष्य				देव				मनुष्य				देव				देव				राक्षस			
नाड़ी	आद्य				मध्य				अन्त्य				अन्त्य				मध्य				आद्य				अन्त्य				मध्य				अन्त्य			
युंजा	पूर्व				पूर्व				पूर्व				पूर्व				पूर्व				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ	इ	उ	ए	ओ	वा	वि	वु	वे	वो	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
वर्ग	सिं.	सिं.	सिं.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	ग.	ग.	ग.	ग.	ग.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	सिं.	मा.	मा.	मे.	मे.	मे.	मे.	मे.	श्वा.	श्वा.	श्वा.	श्वा.	श्वा.
नवांश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.
नवांशेश	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
ग्र. स्प. रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४
ग्र. स्प. अं.	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	००	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
ग्र. स्प. क.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
भो. वि. दशा. व.	५	३	१	०	१५	१०	५	०	४	३	१	०	७	५	२	०	५	३	१	०	१३	९	४	०	१२	८	४	०	१४	९	४	०	१२	८	४	०
भो. वि. दशा. मा.	३	६	९	०	०	०	०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	३	६	९	०	६	०	६	०	०	०	०	०	३	६	९	०	९	६	३	०
भो. वि. दशा. दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दशाधीश	केतु				शुक्र				सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				राहु				गुरु				शनि				बुध			

जन्माक्षर-चक्र

	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद्	मानव	मानव	कीट, सरीसृप
राशीश	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल
घात मास	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन
घात तिथि	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११
घात वार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती
घात योग	धृति	शुभ	शुक्ल	व्यतिपात
घात करण	बव	कौलव	तैतिल	गर
घात प्रहर	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम
स्त्री घा. चं.	४	३	६	२
पु. घा. चं.	६	१०	३	७

नक्षत्र	मघा	पूर्वा फाल्गुनी	उत्तरा फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
योनि	मूषक	मूषक	गौ	महिषी	व्याघ्र	महिषी	व्याघ्र	मृग	मृग
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
नाड़ी	आद्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आद्य
युंजा	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	अन्त्य
दशाधीश	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध

चरण		१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर		मा	मी	मु	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो	रा	री	रु	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
वर्ग		मू.	मू.	मू.	मू.	मू.	श्वा.	श्वा.	श्वा.	श्वा.	श्वा.	मू.	मू.	मू.	मे.	श्वा.	श्वा.	मू.	मू.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	मृ.	मृ.	मृ.
नवांश		मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
नवांशेश		मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
स्प. ग्र.	रा.	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८
	अं.	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	००	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
	क.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
भो. वि. दशा.	व.	५	३	१	०	१५	१०	५	०	४	३	१	०	७	५	२	०	५	३	१	०	१३	९	४	०	१२	८	४	०	१४	९	४	०	१२	८	४	०
	मा.	३	६	९	०	०	०	०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	३	६	९	०	६	०	६	०	०	०	०	०	३	६	९	०	९	६	३	०
	दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

जन्माक्षर-चक्र

	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	मानव १५ चतु. १५	चतु. १५ जलचर १५	मानव	जलचर
राशीश	गुरु	शनि	शनि	गुरु
घात मास	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घात करण	तैतिल	शकुनी	वणिज	विष्टि
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
स्त्री घा. चं.	१०	११	५	१२
पु. घा. चं.	४	८	११	१२

नक्षत्र		मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
योनि		श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
गण		राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी		आद्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अन्त्य
युंजा		आन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
चरण		१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ | २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ | ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ | ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
अक्षर		ये यो भा भी	भू धा फा ढ़ा	भे | भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी | गू गे	गो सा सी सू	से सो दा | दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
वर्ग		मृ. मृ. मू. मू.	मू. सर्प मू. श्वा	मू. | मू. सिं. सिं	मा. मा. मा. मा.	मा. मा. | मा. मा.	मा. मे. मे. मे.	मे. मे. स. | स.	स. स. सिं. सिं.	स. स. सिं. सिं.
नवांश		मे. वृ. मि. क.	सिं. कं. तु. वृ.	ध. | म. कुं. मी.	मे. वृ. मि. क.	सिं. कं. | तु. वृ.	ध. म. कु. मी.	मे. वृ. मि. | क.	सिं. कं. तु. वृ.	ध. म. कुं. मी.
नवांशेश		मं. शु. बु. च.	सू. बु. शु. मं.	गु. | श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. | शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. | चं.	स. वु. शु. मं.	गु. श. श. गु.
प्र. स्प.	रा.	८ ८ ८ ८	८ ८ ८ ८	९ | ९ ९ ९	९ ९ ९ ९	९ १० | १० १०	१० १० १० १०	१० १ ११ | ११	११ ११ ११ ११	११ ११ ११ ११
	अं.	३ ६ १० १३	१६ २० २३ २६	० | ३ ६ १०	१३ १६ २० २३	२६ ०० | ३ ६	१० १३ १६ २०	२३ २६ ० | ३	६ १० १३ १६	२० २३ २६ ०
	क.	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० | २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० | २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० | २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०
भो. वि. दशा.	व.	५ ३ १ ०	१५ १० ५ ०	४ | ३ १ ०	७ ५ २ ०	५ ३ | १ ०	१३ ९ ४ ०	१२ ८ ४ | ०	१४ ९ ४ ०	१२ ८ ४ ०
	मा.	३ ६ ९ ०	० ० ० ०	६ | ० ६ ०	६ ० ६ ०	३ ६ | ९ ०	६ ० ६ ०	० ० ० | ०	३ ६ ९ ०	९ ६ ३ ०
	दि.	० ० ० ०	० ० ० ०	० | ० ० ०	० ० ० ०	० ० | ० ०	० ० ० ०	० ० ० | ०	० ० ० ०	० ० ० ०
दशाधीश		केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध

मेलापक सारिणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२८ न	३३	२८।। त	१८।। बभ त	२१।। बभ त	२२।। बभ त	२६ बत र	१७ बन तर	१६ बन तर	२३।। नत	३१।। त	२८ ग	२१ वभ ग	२५ वभ	१५।। वभ नत	११ बभ नतर	६ तबभ यनर	१३ वभ तर
	भर. १,२,३,४	३४	२८ न	२६ ग	१६ बग भ	२१।। बभ त	१४।। बभ तन	१८ नब तर	२६ बत र	२७ बत र	३१।। त	२३।। न त	२५।। ग त	२० गव भ	१८ वभ न	२६ वभ	२१।। बभ र	२० बभब रत	४ भग नतर
	कृति. १	२७।। गत	२६ ग	२८ न	१८ बभ न	१० गब नभ	१६।। गब भत	२० गब त	२० गब त	२१ गब तर	२५।। गत	२६।। गत	२३।। नत	१६।। वभ नत	२० गव भ	२० गव भ	१५।। गव भ	१५।। गव भर	१८ ब भत
वृष	कृति. २,३,४	१८।। गभ त	२० गभ	१६ भन	२८ न	२० गन	२६।। गत	१७।। गब भत	१७।। बग भत	१८।। गब भत	२२ गत र	२३ गत र	२० नत र	१८।। नव तर	२२ रव ग	२२ रव ग	२१ गभ	२१ गभ	२३।। भत
	रोहि. १,२,३,४	२३।। भत	२३।। भत	११ गभ न	२० गन	२८ न	३६	२७।। बभ	२३।। बभ त	२२।। भब तय	२६ तर य	२७ त र	१२ गन तरय	१०।। रवग नतय	२४।। रव तय	२७ रव	२६ भ	२६ भ	२० गभ
	मृग. १,२	२३।। भत	१४।। भन त	१८।। भत ग	२७।। तग	३५	२८ न	१६ बभ न	२४ बभ	२२।। बभ तय	२६ तय र	१६ तर न	२१ तर यग	१६।। गरव तय	१५।। रव तनय	२४।। रव त	२३।। भत	२६ भ	१३ भन ग
मिथुन	मृग. ३,४	२७ तर	१८ नत र	२२ तर ग	१६।। भग त	२७ भ	२० भन	२८ न	३३	३१।। तय	१६ भव तयर	१२ भन वतर	१४ भवत यगर	२३।। वत यग	१६।। वन तय	२८।। व त	३१।। त	३४	२१ नग
	आर्द्रा १,२,३,४	१६ तर न	२७ तर	२१ तर ग	१८।। गभ त	२४।। भ त	२६ भ	३४	२८ न	२५ न य	१२।। भन तयर	२० भव तर	१३ गभर वतय	२३।। गत व	२६।। वत	२१।। नव त	२४।। नत	२४।। नत	२७ गय
	पुन. १,२,३,	२० नत र	२७ तर	२३ तर	२०।। भत ग	२२।। भत	२३।। भत य	३१।। तय	२४ नय	२८ न	१५।। नभ वर	२२।। भ वर	१७।। भव तरग	२२।। यव तग	२६।। यव त	२१।। नव त	२४।। नत	२५।। नत	२७।। तग
कर्क	पुन. ४	२२।। बन त	२६।। बत	२५।। बत ग	२२ बग तर	२४ बत यर	२५ बत यर	१८ बभव रतय	१०।। बभव नयर	१४।। बभ रनत	२८ न	३५	२६।। तग गत	१६।। बभय तय	२०।। बभ नत	१५।। बभ तर	१८ नभ वतर	१६ नब वतर	२१ बग
	पुष्य १,२,३,४	३०।। बत	२१।। बन त	२६।। बत ग	२३ बत रग	२५ बत र	१८ बन तर	११ बभन वतर	१८ बभ वतर	२१।। बभ वर	३५	२८ न	३० ग	१६।। बभ गत	१५।। बभ नत	२३।। बभ त	२६ बव तर	२७ बव तर	१२ नबवय तरग
	आश्ले. १,२,३,४	२६ बग	२४।। बग त	२२।। नब त	१६ नब तर	११ गबत नयर	१६ गब तयर	१२ गबत भवयर	१२ गबभ वतयर	१५ गबत भवर	२८।। गत	२६ ग	२८ न	१५ यब भन	१५।। गबय भत	१८।। गब भत	२१ गब वतर	२१ गब वतर	२६ बव तर
सिंह	मघा १,२,३,४	२० गव भ	२० गव भ	१६।। भव नत	१७।। वब रनत	६।। वबत गरनय	१७।। वबत गरय	२१।। वब गतय	२२।। वब गत	२०।। वब गयत	१६।। गभ यत	१६।। गभ त	१६ नभ य	२८ न	३० ग	२७।। गत	१६।। वभ गभत	१६।। वभ गभत	२१।। वब भत
	पू.फा. १,२,३,४	२६ वभ	१८ वभ न	२० गव भ	२१ बव रग	२३।। वब रतय	१५।। वबन रतय	१६।। वब नतय	२८।। वब त	२६।। वब तय	२२।। यभ त	१७।। भन त	१६।। गभ यत	३० ग	२८ न	३५	२४ वब भ	२२।। वब भत	७।। वबत गनभ
	उ.फा. १	१६।। वभ तन	२६ वभ	२० वग भ	२१ वब गर	२६ वब र	२४।। वब रत	२८।। वब त	२०।। वब नत	२१।। वब नत	१७।। भन त	२५।। भत	१६।। गभ त	२७।। गत	३५	२८ न	१७ वब भन	१६ वब भन	१३।। वयब तगभ
कन्या	उ.फा. २,३,४	१३ भन तर	२२।। भर	१६।। गभ र	२१ गभ	२६ भ	२४।। भत	३१।। बत	२३।। नब त	२४।। नब त	२० नव तर	२८ वत र	२२ गव तर	१७।। गव भत	२५ भव	१८ वभ न	२८ न	२७ न	२४।। यग त
	हस्त १,२,३,४	१० यभ नतर	२० भत र	१७।। भर ग	२२ भग	२५ भ	२६ भ	३३ ब	२२।। नब त	२४।। नब त	२० नव तर	२८ व तर	२३ वत रग	१८।। वभ तग	२२।। वभ त	१६ वभ न	२६ न	२८ न	२८ यग
	चित्रा १,२	१३ गभत यर	५ गभन तयर	१६ भत यर	२३।। भत य	२० गभ	१२ गभ न	१६ गब न	२६ गब य	२५।। गब त	२१ गव तर	१२ गनव तयर	२७ वत र	२२।। वभ त	८।। गव भनत	१४।। वय गभत	२४।। गय त	२७ गय	२८ न

(ब = वर्णदोष । व वश्यदोष । त = तारादोष । य = योनिदोष । र = राशिदोष । ग = गणदोष । भ = भकूट दोष । न = नाडी दोष।)

मेलापक सारिणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२ ३,४	विशा. १,२,३	विशा. ४	अनु. १,२ ३,४	ज्ये. १,२ ३,४	मूल १,२ ३,४	पू.षा. १,२ ३,४	उ.षा. १	उ.षा. २,३,४	श्रव. १,२ ३,४	धनि. १,२	धनि. ३,४	शत. १,२ ३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२ ३,४	रेव. १,२ ३,४
मेष	अश्वि. १,२ ३,४	२२॥ बय तग	२६॥ बय त	२२॥ तब यग	१८॥ गभ तय	२५॥ भत	१४ भन ग	१३॥ भन ग	२५ भ	२३॥ भत	२५ ब तर	२६ बत र	२० बत यरग	२० बत यरग	१५ बन तरग	१६ बन तयर	१४॥ नभ तय	२४॥ भ त	२६ भ
	भर. १,२ ३,४	१३॥ बगन तय	२६॥ बत	२१॥ गब तय	१७॥ गभ तय	१७॥ नभ त	१६॥ गभ त	२० गभ	१८ नभ	२६ भ	२७॥ बर	२६ ब तर	१० बय गनतर	१० बयग नतर	२० गब तर	२४ बय तर	२२॥ तभ	१७॥ नभ त	२६॥ भत
	कृत्ति. १	२७॥ बत य	१५॥ बग नत	१६॥ बन तय	१५॥ भन तय	१६॥ गभ त	२५॥ भत	२४॥ भत	१८ गभ य	१२ गभ न	१३॥ बग नर	११॥ बय रगन	२५ बत यर	२५ बत यर	२७ बत र	१६ बग तयर	१७॥ गभ तय	१६॥ गभ त	११॥ गभ तन
वृष	कृत्ति. २,३,४	२२॥ बभ तय	१०॥ गब भनत	१४॥ बभ तनय	२०॥ न तय	२४॥ गत	३०॥ त	२० भ तर	१३॥ यग भर	७॥ गभ नर	१२ गभ न	१० यग भन	२३॥ भत य	२६॥ बत य	३१॥ बत	२३॥ गब तय	२० गत यर	२२ गग तर	१४ न तर
	रोहि. १,२,३,४	१६ गब भ	१५॥ बभ नत	६॥ तबग नभ	१५॥ गन त	२६॥ त	२३॥ ग त	१४ गभ तर	१६ रभ तय	११॥ यभ नर	१६ भय न	१७ नभ य	२० गभ	२६॥ गब	२४॥ गब त	३०॥ बत	२७ तर	२७ तर	१६ र नत
	मृग. १,२	१२ बभ नग	२५ बभ	१८॥ बभ तग	२४॥ तग	२१॥ नत	२४॥ तग	१५ भत रग	१० नभ तयर	१७ यभ तर	२१॥ भय त	२५ भय	१३ नभ ग	१६ बग न	२७ बग	२६॥ बत	२६ तर	१८ न तर	२७ तर
मिथुन	मृग. ३,४	१४ नभ ग	२७ भ	२०॥ भत ग	१४ भव तरग	११ भवन तर	१४ भव तरग	२३ तर ग	१८ नत यर	२५ यत र	२० भय वत	२३॥ भव य	११॥ नभ वग	१३ भनग	२१ भग	२३॥ भत	२५॥ तव र	१७॥ नव तर	२६॥ वत र
	आर्द्रा १,२,३,४	२० गभ य	२७ भ	२० गभ य	१३॥ रगव भय	१७ तभ वयर	३ यतगव भनर	१६ गन तर	२८ तर	२८ तर	२३ भव त	२३ भव त	१७॥ गभ वय	१६ गभ य	१२ गभ न	१७ नभ य	१६ नर वय	२६॥ वत र	२६॥ वत र
	पुन. १,२,३	२०॥ भत ग	२८ भ	२२ भग	१५॥ वभ रग	२१॥ वभ र	७ रगव भनत	१४ यरत नग	२७ तर	२७ तर	२२ वत भ	२३ वत भ	१७ वतभ यग	१८॥ भग तय	१४ नभ ग	१६ नभ य	१८ रन यव	२८ रव	२७॥ वत र
कर्क	पुन. ४	२०॥ बत रग	२८ वर ब	२२ वर बग	२० गभ	२६ भ भन	११॥ तग भगनय	८ वतब वत	२१ बभ वत	२१ बभ र	२६ बत र	२७ बत यर	२१ बगत तयगर	१२॥ बभव नगर	८ बभव नवय	१० बभर य	१६ नभ	२० भ	२५॥ भत
	पुष्य १,२,३,४	११॥ गनबव तयर	२६॥ बव तर	२१ रबग वय	१६ भ यग	१८ भन	२१ भग	१७ गबभ वत	११ यबभ तनव	२१ बभ वत	२६ बत र	२५ बय तर	१३ गबन तयर	४॥ भबगय वनतर	१४॥ बवत रगभ	१८ बभव यर	२४ भय	१८ नभ	२७ भ
	आश्ले. १,२,३,४	२५॥ बव तर	१२॥ गबव तरन	१७॥ नबव तर	१५॥ नभ त	२० गभ	२६ भ	२२॥ बभ वय	१६ गबव भत	८ गबव भनत	१३ गबर नत	१३ बगत नर	२६ बत यर	१७॥ बभव तरय	१६॥ बभव तर	११॥ गबभ वतयर	१७॥ गभ तय	२१ गभ	१३ गभ न
सिंह	मघा. १,२,३,४	२४॥ बव तर	११॥ बवत रगन	१६॥ बवत रन	२२॥ नव त	२५॥ गव त	३३ व	२५ भव	१६ गव भ	८॥ वगभ नतय	३॥ बरतय गभन	४॥ बरत गभन	१८॥ बर तभ	२४॥ बव तर	२५॥ बव तर	१८॥ बवर गत	१८॥ गभ त	१६॥ गभ त	१३ गभ न
	पू.फा. १,२,३,४	१०॥ बवत रगन	२५॥ बव तर	१८॥ बवर गत	२४॥ गव त	२३॥ नव त	२५॥ गव त	१६ गव भ	१७ भव न	२४ भव न	१७ बर भय	१८॥ बत भत	४॥ बरत गभन	१०॥ बवत रगन	१६॥ बवर गत	२४॥ बव रत	२४॥ भत	१७॥ नभ त	२५॥ भत
	उ.फा. १	१६॥ बवत यगर	२५॥ बव तर	१६॥ बवय गतर	२२॥ यव गत	३१॥ वत	१७॥ गव तन	६॥ गव नभत	२५ भव	२५ भव	२० बर भ	२० बर भ	११॥ बरत गभय	१७॥ बवत गरय	११॥ बवत गनर	१५॥ बवत नरय	१५॥ नभ तय	२६॥ भत	२५॥ भत
कन्या	उ.फा. २,३,४	१६॥ गबय भत	२५॥ बभ त	१६॥ गबय भत	१८ यवत गर	२७ वत र	१३ गवत नर	१४ गन तर	२६॥ र	२६॥ र	२४॥ भव	२४॥ भव	१६ गभ वतय	१६॥ गबभ तय	१०॥ गबन भत	१४॥ बभन तय	१७॥ तनव यर	२८॥ वत र	२७॥ वत र
	हस्त १,२,३,४	२० बभ यग	२६॥ बभ त	१८॥ बभ तयग	२० वग तयर	२६ वत र	१३ नव तरग	१५ नत रग	२७ तर	२८॥ र	२३॥ भव	२४॥ भव	१८॥ भग वय	१६ बभ यग	८॥ बयभ नतग	१३॥ बभ नतय	१६॥ वनत यर	२६॥ वत र	२७॥ वत र
	चित्रा १,२	२० बभ न	१६ गब भय	२६॥ बभ त	२८ वत र	११ गवन तयर	२५ वत यर	२७ तय र	१४ गन तर	२२ गत र	१७ गभ त	१८॥ गभ व	१५॥ भव नय	१६ बय भन	२४ बभ य	१६॥ गबत भय	१६॥ गवत यर	१०॥ गयव नतर	१६॥ वगत यर

(ब = वर्णदोष । व वश्यदोष । त = तारादोष । य = योनिदोष । र = राशिदोष । ग = गणदोष । भ = भकूट दोष । न = नाड़ी दोष।)

मेलापक सारिणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
तुला	चित्रा ३,४	२२।। गतय	१४।। गनतय	२८।। तय	२३।। भतय	२० गभन	१२ गभन	१३ गभ	२१ गभत	१६।। गभवत	२०।। गरवरत	११।। गनयर	२६।। वतत	२५।। वरनत	११।। वरगगरत	१७।। वयभत	१७।। यगय	२० गभ	२१ भन
	स्वाती १,२,३,४	२७।। यत	२६।। त	१७।। नत	१२।। भनत	१५।। भनत	२६ भ	२७ भ	२६ भ	२८ भ	२६ वर	२७।। वतर	१४।। नवतर	१३।। वनतग	२५।। वरत	२५।। वरत	२५ं। भत	२७।। भत	२१ भयग
	विशा. १,२,३	२२।। तयग	२२।। तयग	२०।। तयन	१५।। तभनय	१०।। गभतन	१८।। गभत	१६।। गभत	२० गभय	२१ गभ	२२ गवर	२१ गतर	१८।। नवतर	१७।। वरतन	१६।। वरतग	१७।। वयरगत	१७।। यगतभ	१८।। गभतय	२७।। भत
वृश्चिक	विशा. ४	१६।। बगभयत	१६।। बगभयत	१४।। बभनयत	१६।। बनयत	१४।। बगनत	२२।। बगतग	१२ बवरभत	१२।। वबयगभर	१३।। बवगभर	१६ गभ	१८ गभय	१५।। भनत	२१।। बवनत	२३।। बवगत	२१।। बवगयत	१७ तबवगयर	१८ बवगतयर	२७ बवतर
	अनु. १,२,३,४	२४।। बभत	१५।। बभनत	१६।। बभगत	२४।। बतग	२७।। बत	२०।। बनत	१० बवतनभर	१५।। तबवरभय	२०।। बवभर	२६ भ	१८ भन	२१ भग	२४।। बवतग	२०।। बवतन	२६।। बवत	२५ बवतर	२६ बवत	११ बरवतनय
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१२ बगभन	१८।। बगतभ	२४।। बभत	२६।। बतत	२२।। बगत	२२।। बगगभर	१२ तबवगभनर	२ तवबयगभन	५ तबवरभन	१०।। तग	२० गभ	२६ भ	३१ बव	२३।। बवगत	१६।। तबवगन	१२ तबवगनर	१२ तबवगनर	२४ बवतयर
धनु	मूल १,२,३,४	१२ गभन	२० गभ	२४।। भत	१६ बभतर	१३ बगतभर	१३ रबगतभ	२१ बगतर	१५ बगनतर	१२ रबगतनय	८ यगभवनत	१७ गभवत	२३।। भवय	२५ वभ	१६ वगभ	६।। तवगभन	१३ तरबगन	१३ तरबगन	२६ रबतय
	पू.षा. १,२,३,४	२६ भ	१८ भन	१८ गभय	१२।। बयगभर	१८ बभतयर	१० रबभतनय	१८ बनतयर	२७ बतर	२७ बतर	२३ भवत	१३ यभनवत	१७ गभवत	१६ वगभ	१७ वभन	२५ वभ	२८।। बर	२७ बतर	१३ तबगनर
	उ.षा. १	२४।। भत	२६ भ	१२ गभन	६।। रबयभन	१०।। बयरभन	१७ बयतभर	२५ बयतर	२७ बतर	२७ बतर	२३ भवत	२३ भवत	६ गभवनत	८।। तगवयभन	२४ वभय	२५ वभ	२८।। बर	२८।। बर	२१ गबतर
मकर	उ.षा. २,३,४	२७ तर	२८।। र	१४।। गनर	१२ गभन	१६ भनय	२२।। यभत	२० बयतभ	२२ बभत	२२ बभवत	२८ तर	२८ तर	१४ गनतर	४।। तयरगभन	२० रभय	२१ रभ	२४।। भत	२४।। वभ	१७ गभवत
	श्रव. १,२,३,४	२७ तर	२६ तर	१३।। यनर	११ यभगन	१६ भनय	२५ भय	२२।। बभवय	२१ बभवत	२२ बभवत	२८ त	२६ यतर	१५ नत	६।। तगररभन	१८।। रभत	२० भर	२३।। भव	२४।। भव	१६।। भव
	धनि. १,२,३,४	२० गतयर	११ यगनतर	२६ तयर	२३।। भतय	२० गभ	१२ गभन	६।। वबगभन	१६।। वयबगभ	१६ बगवतभ	२२ गतर	१३ रगनतय	२८ तर	१६।। रभत	५।। तगरभन	१२।। तयरगभ	१६ गभवतयव	१७।। गभव	१५।। भनय
कुम्भ	धनि. ३,४	२० गतयर	११ यगतनर	२६ तयर	३०।। तय	२७ ग	१६ गनन	१२ गभय	१६ गभत	१८।। गभवतर	१३।। गभगभनव	४।। तयरतर	१६।। भवर	२५।। वतगन	११।। वतरतय	१८।। वरगतय	१७।। गभय	१६ गभन	१७ यभ
	शत. १,२,३,४	१५ गनतर	२१ गतर	२८ तर	३२।। त	२५।। गत	२७ ग	२० गभ	१२ गभन	१३ गभन	८ गभवनर	१४।। गभवतर	२०।। वभतर	२६।। वरत	२०।। वरगत	१२।। वरतगन	११।। तगनभ	८।। तयगनभ	२५ भय
	पू.भा. १,२,३	१८ नतयर	२५ यतर	२० गरतय	२४।। गतय	३१।। त	३१।। त	२४।। भत	१७ भनय	१८ भन	१३ भनव	२० भरवय	१३।। गभवतर	१६।। वरतग	२५।। वरत	१६।। वरयनत	१५।। भनत	१५।। भनत	१७।। गभयतय
मीन	पू.भा. ४	१४।। बभतनय	२१।। बयतभ	१६।। गबतभय	१६ गबतयर	२६ बतर	२६ बतर	२५।। बवतर	१८ बनवयर	१६ नबवर	१८ नभ	२५ भय	१८।। गभत	१७।। बगतभ	२३।। बभत	१४।। बभतनय	१६।। रबनवतय	१६।। रबनवतय	१८।। रबगवतय
	उ.भा. १,२,३,४	२४।। बभत	१६।। बभतन	१८।। गबतभ	२१ गबतर	२६ बतर	१८ नबतर	१७।। नबवतर	२५।। बरवत	२८ बवर	२७ भ	१६ भन	२१ गभ	१८।। गबतभ	१६।। बभन	२५।। बभत	२७।। बवतर	२६।। बवतर	६।। बतरवयगन
	रेव. १,२,३,४	२५ बभ	२४।। बभत	११।। तगबभन	१४ गबनतर	१७ वनतर	२६ बतर	२५।। बरवत	२४।। रबवत	२६।। रबवत	२५।। भत	२७ भ	१४ भनग	१३ बभगन	२३।। बभत	२३।। बभत	२५।। बरवत	२६।। बरवत	१६।। बयरवतग

(ब = वर्णदोष । व वश्यदोष । त = तारादोष । य = योनिदोष । र = राशिदोष । ग = गणदोष । भ = भकूट दोष । न = नाड़ी दोष।)

मेलापक सारिणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।

कन्या \ वर		तुला चित्रा ३,४	तुला स्वाती १,२,३,४	तुला विशा. १,२,३	वृश्चिक विशा. ४	वृश्चिक अनु. १,२,३,४	वृश्चिक ज्ये. १,२,३,४	धनु मूल १,२,३,४	धनु पू.षा. १,२,३,४	धनु उ.षा. १	मकर उ.षा. २,३,४	मकर श्रव. १,२,३,४	मकर धनि. १,२	कुम्भ धनि. ३,४	कुम्भ शत. १,२,३,४	कुम्भ पू.भा. १,२,३	मीन पू.भा. ४	मीन उ.भा. १,२,३,४	मीन रेव. १,२,३,४
तुला	चित्रा ३,४	२८ न	२७ गय	३४।। त	२३।। भवत	६।। यगवतनभ	२०।। भवतय	२७ तयर	१४ गभतर	२२ गतर	२५ गतव	२६।। गव	२३।। नवय	१८ नभय	२६ भय	१८।। गभतय	१२।। गभवतयर	३।। वतयगभनर	१२।। यगरभवत
	स्वाती १,२,३,४	२८ यग	२८ न	२० नयग	६ भवयनग	२१।। भवत	१६।। भवतग	२३ तरग	२७ तरग	१६ तनर	२२ नवत	२३ नवत	२६।। वयग	२१ यगभ	२० गयभ	२५ यभ	१६ वभयर	१६।। वतभर	१२।। वतभनर
	विशा. १,२,३,	३४।। त	१६ गनय	२८ न	१७ भवन	१६ गवभय	२०।। भवतय	२७ तयर	२२ गतर	१४ गनतर	१७ गनवत	१७ गनवत	३० वतय	२४।। भतय	२६ भय	२० गभय	१४ गभवयर	१३ गयभतर	४।। गभवनयतर
वृश्चिक	विशा. ४	२२।। बवभत	७ बवगनभय	१६ बवनभ	२८ न	२७ गय	३१।। तय	२१।। बवतयभ	१६।। बवगभत	८।। बवगनभत	१२ गबनतर	१२ बनगतर	२५ बतयर	२४ बवतयर	२५।। बवयर	१६।। बवगयर	१६ गभय	१८ गयभ	६।। गभनतय
	अनु. १,२,३,४	६।। बवतभयगन	२१।। बवभत	१६ बवभयग	२८ यग	२८ न	३१ ग	१५।। बवतगयभ	१३।। तबवनभ	२१।। बवतभ	२५ बतर	२६ बतर	१२ तयबनरग	११ तयबवनरग	२१ बवतरग	२४।। बवयर	२४ भय	१८ नभ	२७ भ
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१६।। बवतभय	१५।। तबवगभ	१६।। बवभतय	३१।। तय	३० ग	२८ न	१४ बवनभय	१६।। बवतगभ	१६।। बवतगभ	२० वतर	२० वतर	२५ बतयर	२४ बवतयर	१८ बवनरत	१० तबवयगनर	६।। गभतनय	२१ गभ	२१ गभ
धनु	मूल १,२,३,४	२६ तबयर	२१ गबतर	२६ तबयर	२२।। भवतय	१५।। गवभयत	१५ यवनभ	२८ न	२८ ग	२६।। गत	१५ गबभवत	१५ गबभवत	२० बभवतय	२८।। बवय	२१।। बनत	१४।। गनबतय	१६ गनवतय	२५ गवत	२६ गव
	पू.षा. १,२,३,४	१३ गबतनर	२७ बतर	२१ गबतर	१७।। गवभत	१५।। भवनत	१७।। गवभत	२८ ग	२८ न	३४	२२।। बभव	२३ बभवत	६ गबवभनतय	१४।। गबतनय	२३।। गबत	२८।। बतय	३० वतयत	२३ नव	३१ वत
	उ.षा. १	२१ गबतर	१६ नबतर	१३ गबनतर	६।। गवभनत	२३।। भवत	१७।। गवभत	२६।। गत	३४	२८ न	१६।। बभवन	१४।। बभवन	१५ गबवभत	२३।। गबत	२३।। गबत	२६।। बतत	३१ वत	३१ वत	२३ नव
मकर	उ.षा. २,३,४	२४ गबत	२२ नबवत	१६ गबनत	१३ गनतर	२७ तर	२१ गतर	१६ गभवत	२३।। भव	१७।। नभव	२८ न	२६ न	२६।। गत	१७ गबभवत	१७ गबवभत	२३ बभवत	३०।। त	३०।। त	२२।। नत
	श्रव. १,२,३,४	२६।। बवग	२२ नबवत	१७ नबगवत	१४ नतर	२७ तर	२२ तर	१७ भवतग	२३ भवत	१४।। नभव	२५ न	२८ न	२८ यग	१८।। बभवयग	१८ बभवतग	२१ बभवतय	२८।। तय	२६।। त	२२।। नत
	धनि. १,२	२२।। नबवय	२४।। गबवय	२६ बवतय	२६ तयर	१२ गनतयर	२६ तयर	२१ भवतय	७ गभयवनत	१६ गभवत	२६।। गत	२७ गय	२८ न	१८।। बभनव	२३।। बभवय	१६ गबवतभ	२६।। गत	१५।। गनतय	२२।। गयत
कुम्भ	धनि. ३,४	१८ नभय	२० गभय	२४।। भतय	२५ तवयर	११ गवयतनर	२५ तवयर	२६।। तय	१५।। गतनय	२४।। तग	१८ गभवत	१८।। गभवय	१६।। भवन	२८ न	३३ य	२८।। गत	१८ गभवत	७ तगभवनय	१४ गयवभत
	शत. १,२,३,४	२६ भय	१६ भयग	२६ भय	२६।। यवर	२१ गवतर	१६ नवतर	२२।। नत	२४।। गत	२४।। गत	१८ गभवत	१८ गभवत	२४।। भवय	३३ य	२८ न	१६ गनय	८।। गभवनय	१७ गभवत	१६ गभवत
	पू.भा. १,२,३	१८।। गभतय	२६ भय	२० गभय	२०।। गवयर	२६।। वयर	११ गवतयनर	१५।। नगतय	२६।। तय	३०।। त	२४ भवत	२३ भवतय	२० भगवत	२८।। गत	१६ नगय	२८ न	१७।। नभव	२२।। भवय	२० भयवत
मीन	पू.भा. ४	११।। गबभवतयर	१६ बभवयर	१३ गबवभयर	१६ गभय	२५ भय	६।। गभनतय	१५ गबतनय	२६ बवतय	३० बवत	२६।। बत	२८।। बतय	२५।। गबत	१७ गबभत	७।। गबयभतन	१६।। बभतन	२८ न	३३ य	३०।। यत
	उ.भा. १,२,३,४	२।। यवबरगभनत	१६।। भवबतर	१२ गवरभयब	१८ गयभ	१६ नभ	२१ गभ	२४ गबवत	२२ नबवत	३० बवत	२६।। बत	२६।। बत	१४।। गबतनय	६ गबवनभतय	१६ गबवभत	२१।। बभतय	३३ य	२८ न	३५
	रेव. १,२,३,४	१२।। बभवतयर	११।। बभतवनर	४।। बभवनतगयर	१०।। नभतयग	२७ भ	२२ भग	२६।। बगव	२६ बवत	२१ नबवत	२०।। नबत	२१।। नबत	२२।। बयतग	१४ बवयभतग	१६ बभवतग	१८ बयभवत	२६।। यत	३४	२८ न

(ब = वर्णदोष । व वश्यदोष । त = तारादोष । य = योनिदोष । र = राशिदोष । ग = गणदोष । भ = भकूट दोष । न = नाडी दोष।)

मंगली दोष विचार

ज्योतिषशास्त्र मेलापक द्वारा दम्पत्ति के आगामी जीवन के सुख-दु:ख, सम्पत्ति, विपत्ति, आय-व्यय तथा आने वाली घटनाओं का मनोवैज्ञानिक एवं तात्त्विक विवेचन करता है। अत: वर-कन्या के शुभ-अशुभ ग्रह योगों की सामञ्जस्यता एवं मित्रता होगी, तो आगामी जीवन सुखमय तथा आनन्दमय होगा। यदि ग्रहों में परस्पर शत्रुता एवं एक की कुण्डली में सौम्यग्रह तथा एक की कुण्डली में अरिष्टकारक ग्रह बैठे हों तो संघर्षमय जीवन के साथ-साथ एक-दूसरे को घातक सिद्ध हो सकते हैं। अत: कुण्डली मिलान के समय अरिष्ट योगों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। यदि वर या कन्या किसी एक की जन्मकुण्डली या चन्द्रकुण्डली से लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या व्यय स्थान में मंगल स्थित हो तो इस प्रकार की कुण्डली मंगली कही जाती है। यदि वर की कुण्डली में उपरोक्त स्थानों में मंगल हो तो कन्या को तथा यदि कन्या की कुण्डली में हो तो वर के लिए नेष्ट होता है।

'लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्याभर्तृविनाशाय भर्ताकन्याविनाशद:॥'

(मुहूर्त्त-संग्रह-दर्पण)

मंगली दोष परिहार-

उपरोक्त कथनानुसार यदि वर-कन्या में से किसी एक की कुण्डली में मंगलीयोगकारक ग्रह स्थित हो तो परस्पर अरिष्टकारक होते हैं, किन्तु 'लोहा लोहे को काटता है' इस तथ्य के अनुसारयदि वर-कन्या दोनों की कुण्डली में समान मंगली योगकारक ग्रह स्थित हों तो दोनों का मंगली दोष कट जाता है, यह ध्यान रहे कि वर के मंगली योग का कन्या से प्रबल होना आवश्यक है। इसी प्रकार यदि एक की कुण्डली में मंगल योगकारक स्थानों 1, 4, 7, 8, 12 में हो तथा दूसरे की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल अरिष्ट योगकारक शनि, राहु, केतु आदि पापग्रह स्थित हों तो एक-दूसरे के दोष को नष्ट कर देते हैं-

'शनिभौमोऽथवा कश्चित्-
पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेवभवनेष्वेवभौमदोषविनाशकृत्॥'

(फलित नवरत्न संग्रह)

'यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुके तथा ।
अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥''

यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चतुर्थ में, मकर राशि का सप्तम में, कर्क राशि का अष्टम में तथा धनु राशि का व्यय स्थान में हो तो मंगल का दोष नहीं होता-

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।
द्यूने मृगे कर्कि चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते ॥

अन्य आचार्य के मत में वृष राशि के मंगल को सप्तम भाव तथा कुम्भ राशि के भौम को अष्टम भाव में होने पर भौम दोष नहीं होता-

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते ॥

बली गुरु शुक्र के लग्न या सप्तम भाव मे होने पर तथा मंगल के वक्री, नीचस्थ, शत्रुगृही तथा अस्तंगत होने पर भी मंगल का दोष समाप्त हो जाता है।

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवा भौमे ।
वक्रनीचारिगृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोष: ॥

द्वितीय भाव में चन्द्र और शुक्र स्थित हो, मंगल पर गुरु की दृष्टि हो तथा केन्द्र स्थित राहु मंगल की युति हो, तो मंगली का दोष नहीं होता।

न मंगली चन्द्रभृगुर्द्वितीये,
न मंगली पश्यति यस्य जीव:।
न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न-
मंगली मंगलराहुयोगे॥

केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा 3, 6, 11वें भाव में अशुभ ग्रह सप्तमेश स्वगृही हो तो भौम का दोष नहीं होता-

'केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदनपस्तथा ॥'

राशि की मित्रता, गण की ऐक्यता तथा गुणों की बहुलता मंगली दोष को नष्ट कर देती है-

'राशिमैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत्।
अथवा गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते॥'

उपरोक्त मंगली दोष परिहार से स्पष्ट है कि रामाचार्य ने बालवैधव्य का विचार करके सावित्री या पीपल के वृक्ष का व्रत कराकर विष्णु की प्रतिमा (शालिग्राम) पीपल वृक्ष या कुम्भ से विवाह के अनन्तर चिरंजीवी वर के साथ विवाह का जो विधान किया है, उसका भी यही तात्पर्य है-

"जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं,
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतया दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाह स्फुटं
दद्यातां चिरंजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः॥"

विवाहादिकार्यों में सूर्य, गुरु व चन्द्र का अष्टक वर्ग विचार- विवाहादि शुभ कार्यों में यदि नाम राशि या जन्म राशि से गोचरीय ग्रह शुद्धि प्राप्त न हो तो अष्टकवर्गशुद्धि का विचार करना चाहिए, क्योंकि अष्टकवर्ग द्वारा शुद्ध गुरु, चन्द्र व सूर्य गोचर के अशुद्ध होने पर भी ग्राह्य माने जाते हैं। कहा भी है-

"अष्टकवर्गविशुद्धेषु गुरुशीतांशुभानुषु ।
व्रतोद्वाहौ च कर्त्तव्यौ गोचरेण कदाचन ॥"

क्योंकि........

"अष्टकवर्गेण ये शुद्धास्ते शुद्धाः सर्वकर्मसु
सूक्ष्माष्टवर्गसंशुद्धिः स्थूलाशुद्धिस्तु गोचरे"

सूर्याष्टकवर्ग रेखा - ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

गुरु का अष्टकवर्ग रेखा - ४९

गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२
३	६	६	३	७	४	४	४
४	९	१२	४	९	७	५	५
७	१०		७	११	८	६	६
८	११		८		१०	९	७
१०			९		११	१०	९
११			१०			११	१०
			११				११

चन्द्राष्टकवर्ग रेखा - ५६

च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
११	१०	८	११	१०		११	
	११	१०	१२	११			
		११					

यात्रा मुहूर्त्त का विचार- यात्रा करने में चन्द्रवास, दिक्शूल, योगिनी, चन्द्रबल ये ४ बातें मुख्य विचारणीय हैं, साथ ही तिथि नक्षत्र आदि का भी विचार है। ह०, श्र०, अश्वि०, मृ०, पुष्य, पुन०, ध०, अनु०, रे० नक्षत्र सर्वश्रेष्ठ हैं अत्यावश्यकता में निन्द्य नक्षत्रों (भ०, कृ०, आर्द्रा, आश्ले०, म०, चि०, स्वा०, वि०, ज्ये०) की प्रारम्भ की क्रमश ७-२१-१०-१४-११-४०-१४-१४-१४ घटियां यात्रा में त्याज्य हैं। रो०, तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, मूल ये नक्षत्र मध्यम माने हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि में यात्रा शुभ है। जन्मलग्न और जन्म राशि से अष्टम लग्न व नवांश में, कुम्भ लग्न या कुम्भ के नवांश में यात्रा सर्वथा निषिद्ध है।

चन्द्रवास का विचार-

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च-
कन्यामकरे च याम्ये ।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां-
कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥१॥

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

यात्राफल- यात्रा काल में चन्द्रमा सम्मुख होने पर अर्थलाभ, दक्षिण होने पर सुख-सम्पत्ति, पृष्ठ होने पर मरण तुल्य कष्ट या मरण, वाम होने पर धन की हानि करता है।

'सर्वे दोषाः लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे ही सम्मुखे।'

दिशा	सम्मुख	दक्षिण	पृष्ठ	वाम
फल	अर्थलाभ	सुख-सम्पत्ति	मरण	धनक्षय

(महाकष्ट)

यथा-

सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥२॥

योगिनी विचार- प्रतिपदा से प्रारम्भ कर पूर्व, उत्तर अग्नि, नैऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य, ईशान इन दिशाओं में क्रमशः योगिनी का भ्रमण होता है। यह योगिनी यात्रा करने वालों के लिए सम्मुख तथा वाम शुभ नहीं होती। दक्षिण तथा पृष्ठ में रहने पर शुभ होती है।

योगिनीवासचक्र	
तिथियाँ	**दिशा**
१-९	पूर्व
२-१०	उत्तर
३-११	अग्नि
४-१२	नैऋत्य
५-१३	दक्षिण
६-१४	पश्चिम
७-१५	वायव्य
८-३०	ईशान
योगिनीवासचक्रम्	

योगिनी का विशेष-विचार- योगिनी के शुभा-शुभत्व के विषय में ज्योतिष ग्रन्थों में दोनों प्रकार के वाक्य उपलब्ध होते हैं। यथा-

योगिनी सम्मुखे द्यूते गमे युद्धे च मृत्युदा ।
अशुभा वामभागस्था पृष्ठे दक्षे जयप्रदा ॥२॥

(मुहूर्त गणपति)

इसके विपरीत शीघ्रबोध में निम्नवाक्य मिलता है।

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥२॥

(शीघ्रबोध)

तथा **जयदा पृष्ठदक्षस्था भंगदा वामसम्मुखी ।**
त्रिविधंयोगिनीचक्रम् इत्युक्तं ब्रह्मयामले ॥३॥

(स्वरोदय)

मुहूर्त्त चिन्तामणिकार द्वारा-

'सम्मुखवामगा न शस्ता' यह कहा गया है।॥४॥

तथा च-

पृष्ठतो दक्षिणे वापि योगिनी गमने हिता ।
वामसम्मुखयोर्नेष्टा वायुमेवं विचिन्तयेत् ॥५॥

(विजय कल्पलता)

तथा-

वामे शुभकरीदेवी पृष्ठेसर्वार्धदायिनी ।
वंशबन्धकरी चाग्रे दक्षिणे मृत्युदायिनी ॥७॥

(ज्योतिस्तत्त्व)

इस प्रकार के विरोधी वचनों को देखते हुए मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्त्तगणपति, स्वरोदय एवं विजय कल्पलता के वचनों के आधार पर दक्षिण तथा पृष्ठस्थ योगिनी शुभ एवं वाम और सम्मुखस्य योगिनी को अशुभ माना है।

दिक्शूल-विचार

वार	दिशा
सोम, शनि	पूर्व
सोम, गुरु	आग्नेय
गुरु	दक्षिण
रवि, शुक्र	नैऋत्य
रवि, शुक्र	पश्चिम
मंगल	वायव्य
मंगल, बुध	उत्तर
बुध, शनि	ईशान

आवश्यक कार्य में रविवार में घृतपान, सोम को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि, शुक्र को यवान्न, शनि को उड़द तेल या तेल की वस्तु का सेवन करके जाना शुभ है।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्येष्ठा	पू.भा.	रोहिणी	उ.फा.	नक्षत्र

विशेष- यात्रा में घातचन्द्र, शुक्रास्त, जन्मराशीश, जन्मदशेश के अस्त होने पर शुभफल नहीं होता है।

पहली तीर्थ यात्रा गुरु, शुक्र होने पर वर्ज्य है। सिंह राशि का गुरु एवं नीच राशि का गुरुवर्ज्य है।

समयशूल-विचार

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
प्रातःकाल	मध्याह्न	सायंकाल	अर्धरात्रि

दिक्शूल परिहार-

'न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ
देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्।
दिवा शशांकार्कजभूसुतानां
सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥'

दिशाओं के विभाग से लग्न-विचार				
दिशा	शुभ लग्न	मध्यम	भय	महाभय
पूर्व	१-५-९	२-६-१०	४-८-१२	३-७-११
दक्षिण	२-१०-६	३-७-११	१-५-९	४-८-१२
पश्चिम	३-७-११	४-८-१२	२-६-१०	१-५-९
उत्तर	४-८-१२	१-५-९	३-७-११	२-६-१०

प्रस्थान-विचार- यात्रा मुहूर्त्त में विलम्ब होने पर यात्रा के तीन दिन के अन्दर वर्णानुसार यज्ञोपवीतादि वस्तु या मन की सबसे प्रियवस्तु को किसी के यहां रख दें। पुनः यात्रा में जाते समय ले जायें।

गृहारम्भ विचार- नवीन गृहनिर्माण के पूर्व नींव खोदने के उपरान्त इष्टिका स्थापना का विचार करना चाहिए। नींव खनन करते समय राहुमुख का विचार कर राहुमुख के पीछे वाली दिशा से खात (नींव) खनन प्रारम्भ करें।

राहुमुख एवं खातदिशा ज्ञान के लिए चक्र				
कोण	ईशा	वायव्य	नैऋत्य	अग्नि
गृहारम्भ	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन, कर्क
देवालया-रम्भ	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
जलाशया-रम्भ	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृष, धनु
खातदिशा	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैऋत्य

गृहारम्भ से पूर्व भूमि के शुभाशुभत्व की भी परीक्षा कर लेनी चाहिए। भूमि में एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर रात्रि में उसे जल से भरकर प्रातःकाल देखें की यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल हो तो मध्यम, जलहीन के साथ फटी हो तो भूमि अशुभ समझें।

गृहारम्भ मुहूर्त्त-चक्र		वार	बुध, गुरु, शुक्र, सोम, शनि	त्याज्य	भद्रा, अशुभ योग, अष्टमचन्द्र, चक्र अशुद्धि।
नक्षत्र	तीनों उत्तरा, मृग०, पुष्य, अनु०, ध०, श०, चि०, ह०, स्वा०, रे०, रो०	तिथियाँ लग्न	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ २, ३, ५, ६, ८, ११, १२		
मास	वै०, श्रा०, मार्ग०, माघ, फाल्गुन इन मासों में। सूर्य क्रमशः १, ४, ५, ८, १०, ११ राशियों में स्थित होने पर।	लग्न शुद्धि	स्वामी की दृष्टि हो, लग्न से १, ४, ७, १०, ५, ९वें शुभ ग्रह, ३, ६, ११वें, पाप ग्रह तथा ८, १२ स्थान शुभ पाप से रहित।	विशेष :- शुक्ल पक्ष, गुरु-शुक्र के उदय में गृहराम्भ विशेष शुभ है। यात्रा में दिन में दिनमान अष्टमांश से, रात्रि में रात्रि के अष्टमांश से वेलाफल बोधक चक्र-	

चतुर्घटिका (चौघड़िया) मुहूर्त्त

घटी	रवि	रवि	सोम	सोम	मंगल	मंगल	बुध	बुध	गुरु	गुरु	शुक्र	शुक्र	शनि	शनि
	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
४	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ
४	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग
४	लाभ	चर	शुभ	काल	चर	उद्वेग	काल	अमृत	उद्वेग	रोग	अमृत	लाभ	रोग	शुभ
४	अमृत	रोग	रोग	लाभ	लाभ	शुभ	शुभ	चर	चर	काल	काल	उद्वेग	उद्वेग	अमृत
४	काल	काल	उद्वेग	उद्वेग	अमृत	अमृत	रोग	रोग	लाभ	लाभ	शुभ	शुभ	चर	चर
४	शुभ	लाभ	चर	शुभ	काल	चर	उद्वेग	काल	अमृत	उद्वेग	रोग	अमृत	लाभ	रोग
४	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ

विशेष - विजयदशमी को बिना मुहूर्त्त के भी यात्रा शुभ है वाम स्वर चलने पर पूर्व व ईशान, दक्षिण स्वर चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य कोण में जाना अशुभ है।

मन की तीव्र इच्छा भी एक मुहूर्त्त है। मन के निषेध करने पर न जावें। मन के कहने पर बिना मुहूर्त्त भी यात्रा शुभ है। श्वास ग्रहण करते समय वाहन पर पैर रखें तो यात्रा सुरक्षित कहलाती है।

चैत्रादि मास में गृहारम्भ का मास के अनुसार फल

मास	फल
चैत्र	शोक
वैशाख	धान्य
ज्येष्ठ	पशु मरण
आषाढ़	हानि
श्रावण	द्रव्य वृद्धि
भाद्रपद	नाश
आश्विन	शुभ
कार्तिक	मृत्यु
माघ	धन
पौष	श्री प्राप्ति
मार्गशीर्ष	वह्निभय
फाल्गुन	लक्ष्मी लाभ

गृहारम्भ में शिलान्यास (प्रथम इष्टिका स्थापना) पूर्व दक्षिण कोण (अग्निकोण) में करें।

'क्षेत्रभित्तिशिलान्यासस्तम्भस्यारोपणं तथा।
पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याह कश्यपः॥'

वत्स चक्र विचार– सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें पुनः चक्रानुसार फल विचारें।

वत्स-चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
३	शीर्ष	वह्निभय
४	अग्रिमपाद	रिक्त, अशुभ
४	पृष्ठपाद	स्थिरता
३	पृष्ठ	श्रीलाभ
४	दक्षिण कुक्षि	शुभ लाभ
३	पुच्छ	स्वामिनाश
४	वाम कुक्षि	निर्धनता
३	मुख	अशुभ, कष्ट

अन्य विशेष– पुष्य, 3 उत्तरा, रो०, म०, आश्ले०, पू०षा०, इन नक्षत्रों में, गुरु जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र में, गुरुवार को गृहारम्भ पुत्र और लक्ष्मीदायक माना गया है। रो०, ह०, श्र०, उ०फा०, चि०, इनमें बुधाधिष्ठित नक्षत्र में बुध वार को गृहारम्भ पुत्र और सुखप्रद है। वि०, चि०, आ०, आश्ले०, ध०, श० इनमें शुक्राधिष्ठित नक्षत्र में शुक्रवार को गृहारम्भ धनधान्यप्रद होता है।

भूमि शयन– नींव खनन में भूमि शयन का भी विचार करें। सूर्य नक्षत्र से 5, 7, 9, १२, १९, २६ संख्यक नक्षत्रों में भूमि खनन अशुभ है। अत्यावश्यकता में इन नक्षत्रों की ५, ११, ७, ६, २, १० ये घड़ी वर्जित करें।

कुँआ या नल लगाने के लिए– गृह में उत्तर, ईशान, पूर्व व पश्चिम दिशायें श्रेष्ठ है अन्य शुभ हैं।

कुँआ खोदने व नल लगाने के लिए चक्र

दिशा	फल
पूर्व	ऐश्वर्य
अग्नि	सुत हानि
दक्षिण	स्त्री नाश
नैर्ऋत्य	गृहपति नाश
पश्चिम	सम्पत्ति
वायव्य	शत्रुभय
उत्तर	सुख
ईशान	पुष्टि
मध्य	अर्थ हानि

द्वार शाखा (द्वारस्थापन) विचार

द्वार चक्र– सूर्य नक्षत्र से गणना करके चक्र देखकर शुभ फलदायक नक्षत्र में चक्रबल शुद्धि में द्वार (मुख्यद्वार) की स्थापना करें।

द्वारस्थापन-चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
४	शिर	श्री प्राप्ति
८	कोण	उद्वसन
८	शाखा	सौख्य
३	देहली	गृहेशनाश
४	मध्य	सौख्य

जीर्ण व नूतन गृह-प्रवेश मुहूर्त्त-चक्र

मास	वै०, ज्ये०, माघ, फाल्गुन
नक्षत्र	तीनों उत्तरा, अनु०, रो०, मृ०, चि०, रे०, इन नक्षत्रों में कुम्भ चक्र शुद्धि होने पर ।
वार	चं०, बु, गु०, शु०, श०
तिथियाँ	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३
लग्न	(२, ५, ८, ११) शुभ (३, ६, ९, १२) मध्यम
लग्न शुद्धि	लग्न से १, २, ३, ५, ७, ९, १०, ११वें स्थानों पर शुभ ग्रह ३, ६, ११ पाप तथा ४, ८ स्थान ग्रह रहित श्रेष्ठ हैं।
जीर्ण	उपरोक्त मास तथा श्रा०, मार्ग०, कार्तिक भी ग्राह्य है। गुरु शुक्रास्त में भी।
गृह-प्रवेश	शत०, पुष्य, स्वाती और धनिष्ठा नक्षत्रों में शुभ है।

जीर्ण व नूतन गृह–

प्रवेश मुहूर्त्त विचार- गृह निर्माण के बाद मास, तिथि, वार नक्षत्र, लग्न व चन्द्र तारा शुद्धि में कुम्भचक्रशुद्धि तथा जन्म लग्न व जन्म राशि से प्रवेश लग्न अष्टम से अन्य होने पर दम्पत्ति जलपूर्ण कलश पर पुष्पमाला, पञ्चपल्लव तथा नारिकेल रखकर, गीत-वाद्य ब्राह्मण, कन्या व गौ के सहित गृहप्रवेश करें।

कुम्भ–चक्र– कुम्भ-चक्र- सूर्य नक्षत्र से गणना कर विचार करें।

सूर्य नक्षत्र से गृह प्रवेश नक्षत्र तक उक्त चक्रानुसार गणना कर शुभफल के समय में ही प्रवेश करना चाहिए।

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

स्पष्ट फल ज्ञान के लिए अन्य कुम्भ-चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
१	मुख	अनिग्दाह
४	पूर्व	उद्वसन
४	दक्षिण	लाभ
४	पश्चिम	लक्ष्मीप्राप्ति
४	उत्तर	कलह
४	गर्भ	विनाश
३	अधः	स्थिरता
३	कण्ठ	स्थिरता

दुकान (विपणि) करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	रो०, तीनों उत्तरा, ह०, पुष्य, चि०, रे०, अनु०, मृ०, अश्वि०
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, १०, १२, १३
अन्य	चन्द्रशुद्धि, शुभलग्न

क्रय नक्षत्र– क्रय नक्षत्र- रे०, अ०, शत०, स्वा०, श्र०, चित्रा नक्षत्र बुध तथा रविवार श्रेष्ठ हैं।

विक्रय नक्षत्र– पू०, फा०, पू०षा०, पू०भा०, वि०, चि०, कृ०, आश्ले०, भर० ये सात नक्षत्र गुरुवार और सोमवार श्रेष्ठ हैं।

विशेष- बेचने के नक्षत्रों में खरीदना तथा खरीदने के नक्षत्रों में बेचना हानिप्रद है।

बड़ा व्यापार करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	हस्त, पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा।
वार	बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, ११, १३

नौकरी करने का मुहूर्त्त- हस्त, चित्रा, अनु०, रे०, अ०, मृ०, पुष्य नक्षत्रों में बुध, गुरु, शुक्र, रवि इन वारों में रिक्ता, अमा०, रहित तिथियों में नौकरी प्रारम्भ करनी श्रेष्ठ है

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	ज्ये०, आर्द्रा०, म०, तीनों उत्तरा, मृ०, आश्ले०, भ०
वार	रवि, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	३, ५, ८, १०, १५
लग्न	३, ६, ७, ८, १२
लग्नशुद्धि	सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र ये ग्रह १, ४, ७, १० इन स्थानों में, पापग्रह ३, ६, ११ स्थानों पर शुभ हैं। अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो।

विशेष- लग्न में कोई प्रबल पाप ग्रह हो ऐसे लग्न में मुकदमा दायर करना अत्यन्त शुभ है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त्त

वार	बुधवार, अत्युत्तम है अन्य शुभ वार
नक्षत्र	धनि०, अश्वि०, ह०, चि०, अनु०, पु०, पुष्य, ज्ये०, एवं रेवती।
लग्नशुद्धि	श०, मं०, शु०, श० शुभ स्थानों में हों।
अन्य	शनि की होरा, चन लग्न

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त- गाय खरीदने के लिए उ.फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक (खरीदने के नक्षत्र तक) गणना करें, वह नक्षत्र ४, ५, २६ या २७वाँ हो तो गाय लेना अशुभ है। शेष सभी नक्षत्रों में गाय खरीदना शुभ है। भैंस लेने के लिए नक्षत्र से गणना करने पर ४, ५, २६, २७वाँ नक्षत्रों को त्याग कर शेष श्रेष्ठ हैं। बैल लेने के लिए उ.फा. से ३-४-२६-२७वें नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्र लाभपद हैं। तिथियों में ९-१४-४ (रिक्ता) तथा मंगलवार को कभी भी पशु न लें।

मन्दिर निर्माण का मुहूर्त्त

मास	माघ, फा०, वै०, ज्ये, मार्ग, पौष
नक्षत्र	पुष्य, तीनों उत्तरा, मृग०, श्र०, अश्वि०, चि०, पुन०, आर्द्रा, ह०, ध०, रो०।
वार	सो०, बु, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, ११, १२, १३

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठामुहूर्त्त

समय	उत्तरायण, गुरु, शुक्र व मंगल के बली होने पर
तिथि	शुक्ल पक्ष की १-२-५-१०-१३-१५ कृष्ण पक्ष की १-२-५ मतान्तर से शुक्लपक्ष की ७-११ ।
नक्षत्र	पुष्य, तीनों उत्तरा, ह०, रे०, रो०, अश्वि०, मृ०, श्र०, ध०, पुन०, (मतान्तर से चि०, स्वा०, भ०, मू०, अत्यावश्यक होने पर।)
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र ।
लग्न शुद्धि	२,३,५,९,११,१२ (लग्न राशियाँ) केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह ३, ६, ११वें पापग्रह, अष्टम शुद्ध हो।
अन्य	पूर्वाह्न, अपने-अपने मास तिथि, नक्षत्र में दक्षिणायन में प्रतिष्ठा के लिए शास्त्राज्ञा। (यथा चतुर्दशी में शंकर चतुर्थी में गणेश) इत्यादि।

प्रतिष्ठामुहूर्त्त- देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्च-मासेषु कृष्णेऽप्यापंचमीदिने। मातृभैरववाहारनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहन्त्री च स्थाप्या च वै दक्षिणायने।

चुल्लिचक्र विचार

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस से चन्द्र नक्षत्र (दिन नक्षत्र) तक गणना करके पुनः चक्रानुसार फल का विचार करें।

नक्षत्र संख्या	६	४	८	३	६
फल	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

हल प्रवहण मुहूर्त्त

मृगशीर्ष, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल, मघा और विशाखा इन नक्षत्रों में रिक्ता, अमावस्या, षष्ठी और अष्टमी तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में १, ५, ७, १०, ११ इन लग्नों को छोड़कर भूमिशयन एवं भद्रादि का विचार कर हलचक्र शुद्धि होने पर प्रथम बार हल प्रवहण करना श्रेयस्कर होता है।

हल चक्र – सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र (चन्द्र नक्षत्र) तक गणना करके निम्न चक्रानुसार शुभाशुभ फल का विचार करें।

नक्षत्र संख्या	३	७	९	८	६
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

बीजवपन मुहूर्त्त

हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, मृगशीर्ष, रेवती, स्वाती, धनिष्ठा, मघा एवं मूल इन नक्षत्रों में, रिक्ता तिथि, अष्टमी, अमा, भद्रा, क्षीण चन्द्र, तिथिक्षय, सूर्य, मंगल और शनिवार, रात्रि एवं दोनों सन्ध्याओं को छोड़कर राहु नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र के अनुसार बीजवपन शुभ होता है।

राहु नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
३	शिर	धान्यनाश
३	गला	कालिमा युक्त
१२	उदर	वृद्धि
४	पुच्छ	तुष
५	बाह्य	नाश

औषधसेवन मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, स्वाती पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, रेवती, अनुराधा, मृगशीर्ष मूल नक्षत्र तथा रविवार व शुभ दिनों (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) में रिक्ता, अष्टमी, अमा एवं भद्रा तिथियों को छोड़कर, शुभ ग्रहों के बली होने पर तथा लग्न से ६, ७, ८, १२ भावों के शुद्ध (ग्रहरहित) होने पर औषध निर्माण व सेवन आयुष्यवर्धक एवं शुभ होता है।

वाहन आरोहण मुहूर्त्त

रेवती, अश्विनी, शतभिषा, स्वाती, मृगशीर्ष, चित्रा, पुनर्वसु, श्रवण, हस्त, पुष्य व धनिष्ठा नक्षत्र तथा सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र वारों में, रिक्ता, अमा एवं भद्रा रहित तिथियों में तथा चर लग्नों में प्रथम बार वाहन की सवारी करना शुभ होता है।

वास्तु मुहूर्त विचार

वसन्त्यस्मिन् इति वास्तु अर्थात् जिस भूमि अथवा भवन में निवास करने वाले लोगों को समुचित सुरक्षा, सुविधा एवं प्राकृतिक शक्तियों तथा पंचमहाभूतों के सामने वाले स्वास्थ्य लाभ मिलता रहे, उस भवन को "वास्तु" कहा जाता है। वास्तु सम्बन्धी नियमादि का वर्णन जिस शास्त्र में मिलता हो उसको "वास्तुशास्त्र" कहते हैं। ऋषियों, मनीषियों, आचार्यों ने सतत मनन-चिन्तन तथा अनुभवों के आधार पर इस शास्त्र को समृद्धशाली बनाया है। यद्यपि यह शास्त्र बहुत विस्तृत है, तथापि वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमि एवं भवन के विधिसम्मत निर्माण में जिन कारकों का समावेश होता है, उसे "गृहवास्तु" कहा जा सकता है। गृहवास्तु के आधार पर भवन निर्माण में क्रमिक रूप से जो कार्य सम्पन्न किए जाते हैं उनमें भूमि पूजन से प्रारम्भ कर गृह प्रवेश पर्यन्त तक के सभी कृत्यों का वर्णन शास्त्रों में प्राप्त होता है।

प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करने में "काल" का विशेष महत्त्व होता है। यदि उचित समय पर बीजारोपण किया जाए, तो कृषि भी उन्नत एवं पैदावार अधिक होती है। समय पर बीजारोपण न करने पर पैदावार भी न्यूनतम होने की सम्भावना रहती है। अतः भवन निर्माण भी समय सापेक्ष अनिवार्य माना जाता है। यदि शुभ समय पर भवन निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ की जाए तो भवन का निर्माण निर्विघ्न समाप्त होगा, अशुभ समय में प्रारम्भ प्रक्रिया से पग-पग पर विघ्न-बाधाओं के चलते भवन निर्माण की सम्भावना क्षीण एवं सन्देहास्पद ही रहेगी। ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र के अनुसार शुभ-समय का चयन करना ही "मुहूर्त" कहलाता है। मुहूर्त पंचांग शुद्धि एवं लग्नादि के आधार पर निश्चित होता है। कार्य की प्रवृत्ति, देश-काल का सम्यक् बोध करके ही, पूर्वाचार्यों ने मुहूर्तों के लिए शास्त्रों में निर्देश दिए हैं। "गृहवास्तु" में भूमि पूजन से प्रारम्भ कर गृह-प्रवेश पर्यन्त तक के विविध कृत्यों में मुहूर्तों का महत्वपूर्ण स्थान है।

भूमि पूजन मुहूर्त विचार

गृहारम्भ में सर्वप्रथम भूमि पूजन होता है। बाद में शिलान्यास किया जाता है। कुछ लोग भ्रान्तिवश भूमि पूजन एवं शिलान्यास को एक ही कार्य मान लेते हैं और दोनों कार्य एक साथ ही सम्पन्न करते एवं कराते हैं। भूमि पूजन में शिलान्यास से पूर्व नींव के लिए खुदाई का कार्य होता है। शिलान्यास में नींव में प्रथम शिला स्थापित करके भवन की नींव भरी जाती है। भूमि पूजन हेतु मुहूर्त के लिए मास शुद्धि, पक्ष शुद्धि, पंचांग शुद्धि एवं लग्न का विचार विशेष रूप से किया जाता है किन्तु इन सब के विचार करने के पूर्व भूमि को शयनावस्था का विचार करना चाहिए। भूमि शयन में भूमि पूजन न करके जाग्रत भूमि में ही भूमि पूजन करना श्रेयस्कर होता है।

प्रद्योतनात्यंचनगांकसूर्यनवेन्दुषड्विंशतिमितेषु भेषु।
शेते मही नैव गृहं विधेयं तडागवापी खननं न शस्तम्।।

– बृहद्वास्तुमाला प्रयोग मिश्रप्रकरण श्लोक ९६

अर्थात् सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक (जिस दिन भूमि-पूजन अभीष्ट हो) ५, ७, ९, १२, १९ एवं २६ वाँ नक्षत्र हो तो, भूमि खनन अर्थात् नींव खोदने का कार्य नहीं करना चाहिए। मतान्तर से सूर्य संक्रान्ति के दिन से ५, ७, ९, ११, १५, २०, २२, २३ एवं २८ वें दिन भूमि शयन होता है। इसको विचार कर ही भूमि पूजन का मुहूर्त निश्चय करें। अन्य विचारणीय विषय निम्न प्रकार हैं –

१. गुरु-शुक्र तथा चन्द्रमा के अस्त होने पर भूमि पूजन नहीं होता।

२. रविवार एवं मंगलवार भूमि खनन में वर्जित हैं।

३. रिक्ता (४, ७, ९, १४) एवं अमावस्या तिथि त्याज्य हैं।

प्रशस्त मास – वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष एवं फाल्गुन मास द्वारदिक्परक से ग्राह्य हैं। इनमें चान्द्र एवं सौरमासों का ग्रहण किया गया है।(मुहूर्तचिन्तामणि वास्तुप्रकरण श्लोक १५)–

स्पष्टार्थ चक्र

मास (चान्द्र)	सूर्यराशि	द्वारदिशा
वैशाख	मेष, वृष	उत्तर–दक्षिण
श्रावण	कर्क, सिंह	पूर्व–पश्चिम
मार्गशीर्ष	तुला, वृश्चिक	उत्तर–दक्षिण
पौष	मकर	पूर्व–पश्चिम
फाल्गुन	कुम्भ	पूर्व–पश्चिम

मतान्तर से कार्तिक एवं माघ मास भी ग्राह्य हैं। शुभ मुहूर्त में यथोपलब्धोपचार से भूमि पूजन कर यथाशक्ति ग्रहों एवं वास्तु देवताओं का भी पूजन स्मरण करके नींव खनन का कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

नींव खनन का कार्य विदिशाओं से ही प्रारम्भ किया जाता है। मुख्य दिशा अर्थात् पूर्व–पश्चिम–उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं में खनन प्रारम्भ नहीं होता है। राहु मुख का विचार पूर्वको विविध कार्यों में कोण दिशा से खनन प्रारम्भ किया जाता है। राहु मुख का विचार करके पृष्ठविदिशा में नींव खनन का कार्य प्रारम्भ करके चारों तरफ खनन कार्य सम्पन्न करना चाहिए।

देवालये गेहविधौ जलाशये
राहोर्मुखं शम्भुविशो विलोमतः।
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे खाते
मुखात् पृष्ठविविक् शुभा भवेत्।।

– मुहूर्तचिन्तामणि वास्तुप्रकरण श्लोक १९

खातदिक् ज्ञापक चक्र (राहु मुख-पृष्ठ चक्र)

कार्य	राहु मुख दिशा (ईशान)	राहु मुख दिशा (वायव्य)	राहु मुख विशा नैर्ऋत्य कोण	राहु मुख विशा अग्निकोण
देवालय	१२, १, २ राशि के सूर्य में	३, ४, ५ राशि के सूर्य में	६, ७, ८ राशि के सूर्य में	९, १०, ११ राशि के सूर्य में
गृहारम्भ	५,६,७ राशि के सूर्य में	८, ९, १० राशि के सूर्य में	११, १२, १ राशि के सूर्य में	२, ३, ४ राशि के सूर्य में
जलाशय	१०,११,१२ राशि के सूर्य में	१, २, ३ राशि के सूर्य में	४, ५, ६ राशि के सूर्य में	७.८.९ राशि के सूर्य में
खनन दिशा	**अग्निकोण**	**ईशान**	**वायव्य**	**नैर्ऋत्य**

अभीष्ट कोण से प्रारम्भ करके दक्षिणावर्तीक्रम से नींव का खनन करना उचित होता है।

शिलान्यास (गृहारम्भ) मुहूर्त –

नींव खनन हो जाने के पश्चात् नींव को भरने का कार्य प्रारम्भ होता है। प्रारम्भिक इंट अथवा पत्थर की प्रथम शिला रखने को ही शिलान्यास कहते हैं। तत्पश्चात् गृह निर्माण करने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। फिर निरन्तर कार्य चालू रखना ही उचित होता है। शिलान्यास (प्रथम इष्टिका न्यास) सर्वदा अग्निकोण में ही करना चाहिए। खात (खनन) का प्रारम्भ तो यम इष्टिका न्यास) सर्वदा अस्तिकता है किन्तु शिलान्यास सदैव अग्निकोण में ही किए जाने का बहुसम्मत मत शास्त्रों में उपलब्ध होता है।

यथा शारंगधरः -

दक्षिणपूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत्प्रथमम् ।
शेषाः प्रदक्षिणेन स्तम्भाश्च प्रतिस्थाप्या।
प्रासादेषु हर्येषु गृहेष्वन्येषु सर्वदा।
आग्नेय्यां प्रथमं स्थापयेत्तद्विधानतः ।।

- बृहद्वास्तुमालाप्रयोग मिश्रप्रकरण श्लोक १२३-१२४

कश्यप ऋषि का मत

सूत्रभित्तिशिलान्यासं स्तम्भस्यारोपणं तथा।
पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याह कश्यपः।।

- हद्वास्तुमालाप्रयोग मिश्रप्रकरण श्लोक १२५

अग्निकोण में शिलान्यास करके ताम्र कलश की स्थापना करनी चाहिए। ताम्रपात्र (कलश) में तीर्थों की मिट्टी, ईंट, स्वर्ण, पंचरत्न, सप्तधन्य, शैवाल (काई) रख कर अग्निकोण में खुदे हुए गड्ढे में स्थापित करना अभीष्ट होता है। वह भवन निर्माण के समय का खातपात्र होता है।

मृदिष्टिका स्वर्णरत्नधान्यशैवालसंयुतम् ।
ताम्रपात्रस्थितं सर्वं खातमध्ये नियोजयेत् ।।[1]

गृहारम्भ में मास विचार गृहारम्भ में वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन ये चार माह श्रेष्ठ हैं, मकर के सूर्य होने पर पौष मास में भी गृहारम्भ किया जा सकता है। मतान्तर से कार्तिक मास भी ग्राह्य है। वृद्ध नारद के मतानुसार विष्णु के जाग्रतावस्था के मासों में ही गृहारम्भ करना चाहिए।

तिथि - शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तथा १५ (पूर्णिमा) तिथियाँ शुभ हैं। मतान्तर से सप्तमी तिथि भी ग्राह्य है। कुछ विद्वानों के अनुसार कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियाँ भी प्रशस्त हैं। वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार शुभ हैं।

शुभ नक्षत्र - रोहिणी, मृगशीर्ष, हस्त, चिचा, स्वाति, अनुराधा, तीनों उत्तरा, धनिष्ठा, शतभिषा एवं रेवती[2] नक्षत्र प्रशस्त माने गए हैं। मतान्तर से पुनर्वसु तथा पुष्य भी ग्राह्य हैं।[3] उपर्युक्त शुभ नक्षत्रों में **वृषवास्तुचक्र** के अनुसार लाभप्रद होने पर ही गृहारम्भ करना उचित होता है, अन्यथा नहीं। (वृषवास्तु चक्र पृष्ठ संख्या 191 में देखें।)

वृषवास्तु चक्र में अभिजित नक्षत्र सहित २८ नक्षत्रों की गणना की जाती है।[4]

गेहारम्भ में प्रशस्त नक्षत्रों में से जिस चान्द्र नक्षत्र में मुहूर्त अभीष्ट हो, उस नक्षत्र का वृषवास्तु चक्र में अवलोकन करने के ही बाद मुहूर्त का निश्चय करना चाहिए। सूर्य जिस नक्षत्र में चल रहा हो उस नक्षत्र से अभीष्ट नक्षत्र की गणना करें, वह नक्षत्र वृषवास्तु चक्र में शुभ फलदायक हो, तभी उस नक्षत्र में गेहारम्भ-मुहूर्त करना चाहिए, अन्यथा नहीं। सारांश में वृषवास्तु चक्र में सूर्य नक्षत्र से ७ नक्षत्र अशुभ तथा बाद के ११ नक्षत्र शुभ, अन्तिम १० नक्षत्र अशुभ फल देने वाले होते हैं। अतः सम्यक् रूप से विचार करके ही मुहूर्त का निश्चय किया जाए।

लग्न शुद्धि - भवन की स्थिरता के लिए स्थिर लग्न विशेष शुभ माने गए है। द्विस्वभाव लग्न भी ग्राह्य है। लग्न से छठें एवं आठवें भाव में शुभ ग्रह न हों, अन्य भावों में हों, तृतीय, षष्ठ एवं एकादश भाव में पाप ग्रहों की स्थिति होने पर लग्न शुद्धि होती है। बृहद्वास्तुमाला प्रयोग ग्रन्थ में लग्न शुद्धि इस प्रकार है शुभ ग्रहों से युक्त अथवा इष्ट स्थिर या

1. बृहद्वास्तुमालाप्रयोग मिश्रप्रकरण श्लोक १४२
2. बृहद्वास्तुमालाप्रयोग गणनाप्रकरण श्लोक ६५
3. मुहूर्त विज्ञान - प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी पृष्ठ १२९
4. मुहूर्तचिन्तामणि वास्तुप्रकरण श्लोक १४

द्विस्वभाव लग्न में वास्तुकर्म (गृहारम्भ) शुभ होता है। लग्न से केन्द्र अथवा त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह तथा त्रिषडाय स्थानों में पाप ग्रहों की स्थिति को शुभ माना गया है। अष्टम स्थान में यदि क्रूर ग्रह हो तो, गृहकर्ता की मृत्यु हो जाती है। श्रीपति का कथन भी इसी प्रकार प्राप्त होता है।[5]

रामदैवज्ञ ने मुहूर्तचिन्तामणि के वास्तु प्रकरण में पञ्चाङ्ग शुद्धि एवं लग्न शुद्धि के विषय में लिखा है-

भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोनगे विपंचके।
व्यष्टान्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भत्र्यायारिगैः खलैः ।।[6]

अर्थात् मंगलवार, रविवार, रिक्ता तिथि (४, ९, १४), अमावस्या, सप्तमी, चर लग्न (१, ४, ७, १० लग्न) एवं पंचक को त्याग दें। विपंचके का अर्थ कुछ लोग पंचक के नक्षत्र को छोड़कर ऐसा करते हैं, किन्तु, ध निष्ठा, शतभिषा का गृहवास्तु में उल्लेख होने से यह अर्थ उचित नहीं, कुछ विद्वान बाण पंचक ग्रहण करते हैं, वह भी उचित नहीं, अतः पांचवी राशि सिंह राशि के सूर्य को छोड़कर, अर्थ ग्रहण करना उचित प्रतीत होता है। इनको त्याग कर लग्न से १२ एवं ८ स्थान के अतिरिक्त स्थानों में शभ ग्रहों की स्थिति तथा ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रहों के रहने पर स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) एवं द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) लग्नों में वास्तु अर्थात् गेहारम्भ शुभ माना है। त्याज्य-गुरु-शुक्र के अस्त एवं बाल-वृद्धत्व के दिनों में गृहारम्भ नहीं किया जा सकता है।

द्वार स्थापन मुहूर्त - भवन निर्माण के समय द्वार स्थापना के समय भी मुहूर्त विचार किया जाता है। द्वार चक्र की शुद्धि देखना अभीष्ट होता है। अतः निम्नलिखित द्वार चक्र के आधार पर नक्षत्र शुद्धि के उपरान्त

5. बृहद्वास्तुमाला गणनाप्रकरण श्लोक ७३
6. मुहूर्त चिन्तामणि वास्तु प्रकरण श्लोक १८

ही मुहूर्त विचारणीय होता है। (द्वारचक्र पृष्ठ संख्या 192 में देखें।)

उपर्युक्त चक्रानुसार नक्षत्र शुद्धि विचार कर निम्न नक्षत्रों में द्वार की स्थापना करना शुभ होता है। अश्विनी, तीनों उत्तरा, स्वाति, रेवती, रोहिणी नक्षत्रों में द्वार स्थापना शुभ होती है।[7] मतान्तर से मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त एवं श्रवण नक्षत्र भी द्वार स्थापना में ग्राह्य हैं।[8]

- **शुभ-वार**[9] - द्वार स्थापना में बुध, गुरु, शुक्र एवं सोमवार शुभ माने गए हैं। मतान्तर से रविवार भी ग्राह्य है।
- **शुभ तिथि**[10] - बृहद्वास्तुमाला प्रयोग में ५, ७, ८ एवं ९ तिथियाँ शुभ मानी गई हैं तथा १, २, ३, ४, ६, १०, १५ एवं ३० तिथियाँ अशुभ मानी गई हैं। किन्तु मतान्तर से मुहूर्त मुक्तावलि में नन्दा (१, ६, ११), पूर्णा (५, १०, १५) एवं जया (३, ८, १३) तिथियों में द्वार स्थापना शुभ बतलाया गया है।
- **शुभ लग्न** - स्थिर लग्न अर्थात् वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ लग्न में ही द्वार स्थापना करना शुभ होता है।[11]

गृह-प्रवेश मुहूर्त

गृह प्रवेश शास्त्रों में तीन प्रकार का बतलाया गया है- १. अपूर्व, २. सपूर्व, ३. द्वन्द्व। नव निर्मित भवन में निवास हेतु प्रथम बार प्रवेश करने को अपूर्व प्रवेश कहा जाता है। अधिक दिनों से बन्द अथवा लम्बी यात्रा के बाद जिस मकान में प्रवेश किया जाए उसको सपूर्व प्रवेश की संज्ञा दी गई है। अग्नि आदि उत्पात से अथवा जीर्ण होने पर पुनः मरम्मत

7. मुहूर्त चिन्तामणि वास्तु प्रकरण श्लोक २९
8. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गणनाप्रकरण श्लोक १६५ टीका
9. तत्रैव १६८
10. बृहद्वास्तुमाला, प्रयोग श्लोक १६६-१६८
11. बृहद्वास्तुमाला, प्रयोग श्लोक १६९

कराकर प्रवेश किया जाए, उसे द्वन्द्व प्रवेश बतलाया गया है।[12] नूतन गृह प्रवेश दिन अथवा रात्रि में किसी भी समय शुभ माना गया है, सपूर्व एवं द्वन्द्व प्रवेश को दिन में विशेष प्रशस्त माना जाता है।[13]

त्याज्य – गुरु-शुक्र के अस्त एवं अधिकमास क्षयमास, गुरु एवं शुक्र के अतिचारी या नीच राशि में जाने पर, तेरह दिन का पक्ष होने पर भी गृह प्रवेश वर्जित है। होलिका दाह से पूर्व आठ दिनों (होलाष्टक) में भी गृह प्रवेश शुभ नहीं होता है। जिन नक्षत्रों में पापग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) स्थित हों एवं जो नक्षत्र पापविद्ध हों, वे नक्षत्र भी तीनों गृह प्रवेश में त्याज्य हैं।[14]

ग्राह्य मास नारदीय वचनानुसार तीनों प्रकार के गृह प्रवेश केवल उत्तरायण सूर्य में ही करने चाहिए।[15] माघ, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास ही गृह प्रवेश में प्रशस्त (शुभ) माने गए हैं। कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास मध्यम माने गए हैं।[16]

वशिष्ठ के मतानुसार माघ मास में नूतन गृह प्रवेश में धनलाभ तथा फाल्गुन मास में निश्चित ही पुत्रलाभ एवं धनलाभ भी होता है। वैशाख में प्रथम प्रवेश करने से सभी प्रकार का अर्थात् धन-धान्य, पशु एवं पुत्र का लाभ होता है। हर्म्य अर्थात् ईट, पत्थर आदि से निर्मित पक्के मकानों में उत्तरायण सूर्य (माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, चौत्र को त्याग कर) में ही गृहारम्भ में प्रशस्त नक्षत्रवार आदि में गृह प्रवेश करना चाहिए। घास-फूस से निर्मित मकानों में किसी भी समय प्रवेश किया जा सकता है।[17]

पक्ष एवं तिथि – शुक्ल पक्ष में रिक्ता (४, ९, १५) तिथियों एवं अमावस्या को छोड़कर सभी तिथियों (१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५) में प्रवेश शुभ होता है।

वार:- चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवार श्रेष्ठ होते हैं। मतान्तर से शनिवार भी ग्राह्य है।

नक्षत्र:- चित्रा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशीर्ष, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती तथा शतभिषा नक्षत्रों में त्रिविध प्रवेश करने से आयु, धन, आरोग्यता, सुपुत्र-पौत्रादि एवं सुकीर्ति की वृद्धि होती है।[18] मुहूर्त चिन्तामणि में हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाति एवं श्रवण नक्षत्र भी, उपर्युक्त नक्षत्रों सहित प्रशस्त माने गए हैं। इन नक्षत्रों में कुम्भ (कलश) चक्र की शुद्धि देखकर ही मुहूर्त का विचार करना अभीष्ट होता है, बगैर कुम्भ चक्र के गृह प्रवेश का निर्णय करना सर्वथा निषिद्ध माना गया है।[19]

कुम्भ चक्र – सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त वाले दिन के चन्द्र नक्षत्र तक गणना करके निम्नलिखित चक्र में नक्षत्र शुद्धि देखकर ही मुहूर्त का निश्चय करना अभीष्ट होता है।[20] (कुम्भ/कलश चक्र पृष्ठ संख्या 192 में देखें।)

इसके अतिरिक्त वाम रवि का विचार किया जाता है। वाम रवि का विचार गृह प्रवेश लग्न से सूर्य स्थित भाव से विचार किया जाता है। यह भवन के द्वार (मुख्य) के अनुसार किया जाता है।

---

12. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गृहप्रवेशप्रकरण श्लोक १
13. तत्रैव श्लोक २
14. तत्रैव श्लोक ६ का पूर्वार्ध।
15. तत्रैव श्लोक सं. ३
16. तत्रैव श्लोक सं. ४
17. तत्रैव श्लोक सं. ५
18. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गृह प्रवेश श्लोक ७
19. मु. चि. गृह प्रवेश प्रकरण श्लोक ३
20. मु. चि. गृह प्रवेश श्लोक ६

वामरविचक्र

पूर्वाभिमुख	दक्षिणाभिमुख	पश्चिमाभिमुख	उत्तराभिमुख
गृह	गृह	गृह	गृह
८	५	२	११
९	६	३	१२
१०	७	४	१
११	८	५	२
१२	९	६	३

गृह प्रवेश लग्न से सूर्य जिस भाव (राशि) में स्थित हो, उससे विचार किया जाता है। प्रवेश लग्न से वामरवि होने पर गृह प्रवेश विशेष शुभ माना जाता है।[21]

लग्न शुद्धि – सामान्य रूप से स्थिर एवं द्विस्वभाव राशि वाली लगन को गृह प्रवेश में शुभ माना जाता है। चर लग्न सर्वथा त्याज्य हैं।[22] मतान्तर से कुम्भ लग्न को भी अशुभ माना गया है। गृह स्वामी की जन्म लग्न से अष्टम राशि की लग्न को भी त्याज्य माना गया है। दैवज्ञवल्लभ के अनुसार निन्दित अर्थात् चर लग्न भी शुभ (स्थिर–द्विस्वभाव) नवांश में हों, अथवा चर राशि के लग्न में भी यदि गृह स्वामी की राशि से उपचय (३. ६, १०, ११) स्थानों में प्रवेश लग्न हो तो चर लग्न भी शुभ फल देने वाला होता है।[23] स्थिर एवं द्विस्वभाव लग्न से १, २, ३, ५, ७, ९, १० एवं ११वें भाव में शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) तथा ३, ६, ११ भावों में पाप ग्रह शुभ फल देने वाले होते हैं। लग्न से चतुर्थ एवं अष्टम भाव ग्रह रहित होना ही शुभ माना गया है।

पृष्ठस्थ शुक्र विचार – यात्रा में जिस प्रकार सम्मुख चन्द्र देखा जाता है, उसी प्रकार शुक्र का परिभ्रमण भी चारों दिशाओं में माना गया है। गृह प्रवेश के समय गृहस्वामी जिस दिशा के द्वार से प्रवेश करता है उससे विप. रीत (गृहस्वामी के पृष्ठ भाग वाली) दिशा में शुक्र पृष्ठस्थ होता है। पृष्ठस्थ शुक्र में गृह प्रवेश करना शुभ फल कारक होता है।[24]

पृष्ठस्थ शुक्र विचार

द्वार दिशा	शुक्र स्थित राशि
पूर्व	मेष, सिंह, धनु
दक्षिण	वृष, कन्या, मकर
पश्चिम	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	कर्क, वृश्चिक, मीन

गृह प्रवेश करते समय सपत्नीक गृहस्वामी जलपूर्ण कलश पर पंच पल्लव तथा नारियल रखकर गीत–वाद्य, घण्टा ध्वनि सहित, ब्राह्मण, गाय व कन्या सहित गृह प्रवेश का कार्य सम्पन्न करें।

जीर्ण गृह प्रवेश – जीर्ण गृह प्रवेश नवीन गृह प्रवेश के सभी मुहूर्तों में होता है किन्तु श्रावण, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य हैं। शतभिषा, पुष्य, स्वाति और धनिष्ठा नक्षत्रों को भी शुभ माना गया है। गुर्वस्त–शुक्रास्त में भी गृह प्रवेश शुभ होता है।

डॉ. खेमराज रेग्मी
ज्योतिष–विभाग

21. मु. चि. गृह प्रवेश श्लोक ६
22. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गृह प्रवेश श्लोक ११
23. तत्रैव श्लोक १२
24. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गृह प्रवेश श्लोक १

जन्मोत्सव-पूजा-विधिः

जन्मोत्सवविधिः -

जन्मतिथिरौदयिकी ग्राह्या।

जन्मदिने कर्ता ब्राह्म-मुहूर्ते उत्थाय तिलतण्डुलचूर्णसर्वोषधि-मिश्रितङ्गोदकेनस्नानपूर्वकं सन्ध्यादिनित्यक्रियां कुर्यात्। ततः सामग्रीं सम्पाद्य अहतवाससीं भूषणानि च धृत्वा गृहान्तः शुभासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्याचम्य प्राणयामं च विधाय प्रतिज्ञासङ्कल्पं कुर्यात्।

युगाद्यावर्षवृद्धिश्च सप्तमी पार्वतीप्रिया।
रवेरुदयमिच्छन्ति न तत्र तिथियुग्मता॥

-कृत्यतत्वार्णववचनात्

मृते जन्मनि सङ्क्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिने तथा ।
अस्पृश्यस्पर्शने चैव न स्नायादुष्णवारिणा ॥

-तिथितत्वे

खण्डनं नखरोमाणां मैथुनाध्वगमौ तथा ।
आमिषं कलहं हिंसां वर्षवृद्धौ विवर्जयेत् ॥
नवाम्बरधरो भूत्वा पूजयेच्च चिरायुषम्।
मार्कण्डेय नरो भक्त्या पूजयेत् प्रययस्तथा॥
तथा दीर्घायुषं व्यासं रामं द्रौणिं कृपं बलिम्।
प्रह्लादञ्च हनूमन्तं विभीषणमथार्चयेत्॥
स्वनक्षत्रं जन्मतिथिं राशिं वारञ्च पूजयेत्।
षष्ठीं च दधिभक्तेन वर्षे पुनः पुनः॥

-तिथितत्वे

सर्वैश्च जन्मदिवसे स्नात्वा मङ्गलवारिभिः।
गुरुदेवाग्निविप्राश्च पूजनीयाः प्रयत्नतः॥
स्वनक्षत्रं च पितरं तथा देवं प्रजापतिम।
प्रतिसंवत्सरं यत्नात् कर्तव्यश्च महोत्सवः॥

-कृत्यचिन्तामणौ

प्रतिज्ञासङ्कल्पः- ॐ अद्येत्यादि देशकालादीन् सङ्कृत्य (अमुक) गोत्रस्य (अमुक) शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मम जन्मदिवसे वर्षवृद्धौ वर्धापनाख्यं जन्मोत्सवकर्मणि दीर्घायुरारोग्यैश्वर्योदयाद्यभिवृद्ध्यर्थं दीप- कलश-गणेश-पूजनपूर्वकं मार्कण्डेयाद्यष्टचिरञ्जीविनां षष्ठिकायाश्च यथामिलितोपचारैः पूजनमहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य ब्राह्मणवरणं पुण्याहवाचनं च विधाय दीपकलश-गणेशान् यथाविधिपूजनं कुर्यात्। तत्र मङ्गलाभिधानकलशो-परिगणपत्यादीन् पूजयेत्। यथा-

श्री गणपतये नमः, ब्रह्मणे नमः, विष्णवे नमः, महेश्वराय नमः, कुलदेव्यै/देवतायै नमः, ईष्ट देवतायै नमः, ग्रामदेवताभ्यो नमः, स्थानदेवताभ्यो नमः, सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः, गुरवे नमः, अग्नये नमः, जन्म-संवत्सर-तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करण-राशि-लग्नाधिपतिभ्यो नमः, पितृगणेभ्यो नमः, वास्तुदेवाय नमः, क्षेत्रपालाय नमः इत्यावाह्य सम्पूजयेत्।

अष्टचिरञ्जीविनां पूजनम्

पूर्वे- ॐ मार्कण्डेयाय नमः, मार्कण्डेयम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो मार्कण्डेय इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम्, आचमनीयम्, स्नानीयम्, पञ्चामृतम्, पुनराचमनीयम्, चन्दनम्, अक्षतान्, पुष्पाणि/पुष्पमाल्यं समर्पयामि मार्कण्डेयाय नमः।

प्रार्थनाः-

ॐ शरदिन्दुनिभं शान्तं द्विभुजं तं वरप्रदम्।
छत्राभयकरं ध्याये मार्कण्डेयं महामुनिम् ॥
वटवृक्षसमारूढं सच्छत्रं ब्रह्मचिन्तकम् ।
ऋषिवृन्दशतैस्तुत्यं मार्कण्डेयं नमाम्यहम् ॥

आग्नेयाम्- ॐ व्यासाय नमः, व्यासम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो व्यास! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि, तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः-

ॐ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञं वेदवेदाङ्गपारगम्।
शास्त्रमूलप्रपक्तारं पराशरसुतं भजे ॥

दक्षिणे- ॐ परशुरामाय नमः, परशुरामम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो परशुराम! इहागच्छ, इहतिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः-

ॐ कार्तवीर्यस्य हन्तारं पर्शुहस्तं महाबलम्।
एकविंशतिनिःक्षत्रं कुर्वन्तं त्वां नमाम्यहम् ॥

नैऋत्याम्- ॐ अश्वत्थाम्ने नमः, अश्वत्थामानम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो अश्वत्थामन्! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करामि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः -

ॐ ब्राह्मणाय नमस्तुभ्यं द्रोणाचार्यसुताय वै।
वेदवेदाङ्गपूर्णाय अश्वत्थाम्ने नमो नमः॥

पश्चिमे- ॐ कृपाचार्याय नमः, कृपाचार्यम् आवाहयामि,स्थापयामि, पूजयामि। भो कृपाचार्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः-

धनुर्बाणधरं वीरं श्वेतपीतद्युतिं परम् ।
भारद्वाजकुलोत्पन्नं कृपं ध्याये मलापहम् ॥

वायव्याम्- ॐ बलये नमः, बलिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो बले! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि, तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः -

दैत्येन्द्रकुलसम्भूत दानयज्ञक्रियारतः।
प्रपन्नः शरणं त्वाहं दीर्घमायुः प्रयच्छ मे॥

उत्तरे- ॐ हनुमते नमः, हनुमन्तम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो हनुमन्! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि, तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः -

ॐ वायुपुत्रं महावीरं रक्तवर्णं त्रिलोचनम्।
कन्दमूलफलप्रीतं हनूमन्तं नमाम्यहम्॥

ऐशान्याम्- ॐ विभीषणाय नमः, विभीषणम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो विभीषण! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाहय पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः -

ॐ लङ्कावासनमस्तुभ्यं पौलस्त्य कुलसम्भव।
राक्षसाधिपते देव नमस्तेऽस्तु विभीषण॥

मध्ये- ॐ षष्ठिकायै नमः, षष्ठिकाम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो षष्ठिके! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरा भव, सुप्रसन्ना भव, सुवरदा भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः -

ॐ जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्दकारिणि ।
प्रसीद मम कल्याणि महाषष्ठि नमोऽस्तुते ॥

तत्समीपे- ॐ कार्तिकेयाय नमः कार्तिकेयम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

ॐ कार्तिकेय महाबाहो गौरीहृदयनन्दन।
कुमारं रक्ष मे भीतेः कार्तिकेय नमोऽस्तुते ॥

तदनन्तरं वस्त्रं यज्ञोपवीतं धूपं दीपं नैवेद्यं फलं ताम्बूलं पूजायाः साद्गुण्यार्थद्रव्यञ्च समर्पयेत्। षष्ठिकायै दधिभक्तवलिं दद्यात् -

ममायुरारोग्यवृद्धये षष्ठिकायै एष दधिभक्तबलिस्तुभ्यं नमः। पोटलिकानिर्माणः पीतवस्त्रे गुग्गुलनिम्बपत्रसिद्धार्थ दूर्वागोरोचनादिकञ्च संस्थाप्य तत्र गणशं भाष्करञ्च पूजयेत्। पश्चात् मार्कण्डेयाय गुडतिलमिश्र दुग्धं समर्प्य, गन्धपुष्पादिकं गृहीत्वा प्रार्थयेत् -

मार्कण्डेयप्रार्थनाः

ॐ मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीविनः।
आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थमस्माकं वरदो भव॥
चिरञ्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवर द्विज।
कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीविनम्॥

(ततो होमादिकं करणे तु अग्निस्थापनविधिनां कुर्यात्)

पोटलिका/ रक्षाबन्धनम् (मन्त्रं पठित्वा पोटलिकां दक्षहस्ते धारयेत्)

ॐ मार्कण्डेय महाभाग आयुरारोग्यदायक ।
शुभदौ विघ्नहर्तारौ भानु विघ्नेश एव तु॥
धारयामि भुजे दक्षे मम कल्याणहेतवे।
पूरयध्वं सदास्माकं कामनाश्च मनोरथान्॥

तिलगुडयुतं पयःपानम्॥ (पयोऽञ्जलीनाऽऽदाय तदर्द्धं पिबेत्, शेषं पशचभागे त्यजेत्)

ॐ सतिलं गुडसंमिश्रमञ्जल्यर्धमिदं पयः।
मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये॥

विसर्जनम् -

ततः ब्राह्मणेभ्यो पूर्णपात्रं, दक्षिणाञ्च दत्वा देवान् विसृज्य, 'कायेन वाचा' इति पठित्वा अभिषेकं कृत्वा, कर्म समापयेत् ।

- डॉ. खेमराज रेग्मी
ज्योतिष-विभाग

ग्रहों के दान, दान समय, जप-संख्या, जपनीय-मन्त्र एवं हवनसमिधा ज्ञानार्थ-चक्र

दान-पदार्थ													दान समय	जप संख्या	जपनीय मन्त्र	हवन समिधा
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तपुष्प	केशर	मूंग	रक्तगी	र.वस्त्र	र. चन्दन	सूर्योदय	७०००	ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिश्री	दही	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वे.वस्त्र	श्वे. चन्दन	सन्ध्या	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तकेशर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तवस्त्र	र.चन्दन	घ.२ शेष दिन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	ह.वस्त्र	फल	घ.5 शेष दिन	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अ.मार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दा.चना	खांड	घी	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतवस्त्र	पीतफल	सन्ध्या	२९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिश्री	दूध	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वे.घोड़ा	श्वे.वस्त्र	श्वे. चन्दन	सूर्योदय	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	उदुंबर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	कृ.वस्त्र	उपानह	मध्याह्न	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	कृष्णपुष्प	खड्ग	कम्बल	घोड़ा	नी.वस्त्र	शस्त्र	रात्रि	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	लसन	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधा	तेल	धूम्रपुष्प	नारियल	कम्बल	बकरा	धूम्रवस्त्र	शस्त्र	रात्रि	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुन्था	भौम	सुवर्ण	चाँदी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतपुष्प	कपूर	मिश्री	श्वेतवस्त्र	श्वे.चन्दन	हाथीदांत	मुं.काल	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रवत्	

भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश, रेखांश, एवं देशान्तर

(नोट- यहाँ (+) चिह्न का अर्थ दिल्ली से पूर्व तथा (-) चिह्न का अर्थ दिल्ली से पश्चिम समझना चाहिए)

नगर	पलभा	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर	नगर	पलभा	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर
अजमेर	५।५८।१२	२६.२७	७४.४२	-१०.००	गोरखपुर	६।२।५५	२६.४२	८३.२४	+२४.४८
अम्बाला	७।१।२५	३०.२१	७६.५२	-१.२०	गोंडल	४।४९।४१	२१.५५	७०.५३	-२५.२०
अमरावती	४।३५।२५	२०.५६	७७.४८	+२.२४	गौंडा	६।१४।१७	२७.२८	८२.१	+१९.१६
अमृतसर	७।२३।१४	३१.३७	७४.५५	-९.०८	गोहाटी	५।५४।१	२६.११	९१.४७	+५८.२०
अयोध्या	६।३।४२	२६.४८	८२.१४	+२०.०८	चण्डीगढ़	७।८।४	३०।४४	७६।२५	-३.४८
अलवर	६।१५।५२	२७.३४	७६.३८	-२.१६	चितौड़गढ़	५।३४।१३	२४.५४	७४.४२	-१०.००
अलीगढ़	६।२१।१३	२७.५४	७८.०६	+३.३६	छत्तीसगढ़	४।४३।३७	२१.३०	८२.००	+१९.१२
अलीपुर (उ.प्र.)	४।५८।४३	२२.३२	८८.२४	+४४.४८	छपरा	५।४७।४८	२५.४७	८४.११	+२९.५६
अल्मोड़ा	६।४९।१८	२९.३७	७९.४०	+९.५२	जम्मू	७।४२।४९	३२.४४	७४.५४	-९.१२
अहमदनगर	४।१।५	१९.५	७४.४८	-९.३६	जबलपुर	५।८।६	२३.१०	७९.५९	+११.०८
अहमदाबाद	५।६।७	२३.२	७२.३७	-१८.२०	जयपुर	६।५।३२	२६.५५	७५.५२	-५.२०
आगरा	६।१।३०	२७.१०	७८.५	+३.३२	जालन्धर	७।१८।३	३१.१९	७५.१८	-७.३६
आजमगढ़	५।५१।५७	२६.३	८३.१३	+२४.४	जामनगर	४।५७।३०	२२.२७	७०.५	-२८.२८
आबू	५।३०।३९	२४.४०	७२.४५	-१७.४८	जूनागढ़	४।४३।५१	२१.३१	७०.३६	-२६.२४
आसनसोल	५।१६।३	२३.४२	८७.१	+३९.१६	जोधपुर	५।५५।५१	२६.१८	७३.४	-१६.३२
आनन्द	४।४९।२८	२२.३५	७२.५८	-१६.५६	जौनपुर	५।४७।३३	२५.४६	८२.४४	+२२.८
इटारसी	४।५८।१४	२२.३०	७७.५५	+२.५२	झालावाड़	५।२९।३९	२४.३६	७४.९	-१२.१२
इटावा	६।३।२६	२६.४७	७९.२	+७.२०	झांसी	५।४२।३९	२५.२७	७८.३७	+५.४०
इन्द्रगढ़	५/४७/२	२५.४४	७६.१२	-४.००	टोंक	५।५४।१	२६.११	७५.५०	-५.२८
इन्दौर	५।१।४०	२२.४४	७५.५४	-५.१२	डूंगरपुर	५।१८।३	२३.५०	७३.५०	-१३.२८
इलाहाबाद	५।४२।५५	२५.२८	८१.५४	+१८.४८	तिरुपति	२।५५।४	१३.४०	७९.२०	+८.३२
उज्जैन	५।७।५१	२३.९	७५.४३	-५.५६	तूतीकोरिन	१।५०।४९	८.४५	७८.११	+३.५६
उदयपुर	५।३१।१०	२४.४२	७३.३३	-१४.३६	त्रिवेन्द्रम	१।४७।२३	८.२९	७६.५९	-०.५२
उदयगिरि	३।११।०८	१४.५२	७९.१९	+८.२८	त्रिनेवल्ली	१।५०।२३	८.५३	७७.५७	+३.००
उन्नाव	६।३।४२	२६.४८	८०.४३	+१४.०४	थानेसर	६।५८।८	२९.२५	७६.५६	-१.४
एकलिंगजी	५।३१।२५	२४.४३	७३.४३	-१३.५६	दरभंगा	५।५३।४६	२६.१०	८५.५१	+३४.३६
औरंगाबाद	४।२०।२४	१९.५३	७५.२३	-७.१६	दिल्ली	६।३३।६	२८.३८	७७.१२	०.००
कटक	४।२८।४३	२०.२८	८५.५४	+३४.४८	द्वारका	४।५४।१९	२२.१४	६९.०१	-३२.४४
कन्नौज	६।७।३९	२७.३	७९.५८	+११.०४	देवास	५।५।८	२२.५८	७६.०६	-४.२४
कलकत्ता	४।४९।१३	२२.३४	८८.२४	+४४.४८	देहरादून	७।०१।०१	३०.१९	७८.४	+३.२८
करनाल	६।५०।५१	२९.४२	७७.२	-०.४०	धर्मशाला	७।३४।३५	३२.१६	७६.२३	-३.१६
कानपुर	५।५८।२७	२६.२८	८०.२०	+१२.३२	धार	४।५९।२८	२२.३५	७५.२०	-७.२८
किशनगढ़	६।०।१७	२६.३५	७४.५६	-९.४	धरमपुर (गुजरात)	४।२९।४०	२०.३२	७३.१३	-१५.५६
कोटा	५।३८।१८	२५.१०	७५.५२	-५.२०	धौलपुर	६।२।७	२६.४२	७७.५३	+२.४४
कोल्हापुर	३।३६।१	१६.४२	७४.१६	-११.४४	धांगड़ा	५।५।२२	२२.५६	७१.३१	-२२.४४
कांगड़ा	७।३१।२२	३२.०५	७६.१८	-३.३६	नडीआद	५।०।५६	२२.४१	७२.५५	-७.८
खंडवा	४।४८।२८	२१.५०	७६.२३	-३.१६	नवसारी	४।३८।४	२१.७	७२.५५	-१७.८
गया	५।३२।५६	२४.४९	८५.१	+३१.१६	नवलगढ़	६।२०।२५	२७.५१	७५.१६	-७.४४
गढ़वाल	५।५९।५३	३०.१५	७९.३०	+९.१२	नसीराबाद	५।५५।५१	२६.१८	७४.४६	-९.४४
ग्वालियर	५।५४।४८	२६.१४	७८.१०	+३.५२	नागपुर	४।३८।३३	२१.९	७९.९	+७.४८
गाजियाबाद	६।३२।३९	२८.४०	७७.२८	+१.४	नाथद्वार	५।३४।४३	२४.५६	७३.४८	-१३.३६
गाजीपुर	५।४४।२७	२५.३४	८३.३५	+२५.३२	नालंदा	५।३८।२	२५.९	८५.२४	+३२.४८
गंगापुर	५।५८।४३	२६.२९	७६.४५	-१.४८	नासिक	४।२२।३२	२०.२	७३.५०	-१३.२८
गुड़गांव	६।३२।५०	२८.३७	७७.४	-०.३२	नीमच	५।२७।२२	२४.२७	७४.५२	-९.२०
गुरुदासपुर	७।३०।४७	३२.०३	७५.२७	-७.००	नैनीताल	६।४५।२५	२९.२३	७९.३०	+९.१२
गोवा	३।१९।४०	१५.३०	७३.५७	-१३.००	पजिम	३।१९।४०	१५.३०	७३.५५	-१३.८

नगर	पलभा	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर	नगर	पलभा	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर
पन्ना	५।३१।२५	२४.४३	८०.१२	+१२.००	मथुरा	६।१४।१७	२७.२८	७७.४१	+१.५६
पटना	५।४५।१३	२५.३७	८५.१३	+३२.०४	एटा (कासगंज)	६।१६।०८	२७.३५	७८.४१	+५.५६
पठानकोट	७।३४।५२	३२.१७	७५.४२	-६.००	मद्रास	२।४७।०६	१३.४	८०.१७	+१२.२०
प्रतापगढ़ (राज०)	५।२१।४	२४.२	७४.४५	-९.४८	माणसा	५।१२।४	२३.२६	७२.४०	-१८.८
प्रतापगढ़ (यूपी)	५।४९।२१	२५.५३	८१.५८	+१९.४	मिर्जापुर	५।३८।१८	२५.१०	८२.३७	+२१.४०
पटियाला	७।१।१८	३०.२०	७६.२५	-३.८	मुगलसराय	५।४०।५	२५.१७	८३.११	+२३.५६
प्रयाग	५।४३।२५	२५.३०	८१.५६	+१८.५६	मेरठ	६।३९।२३	२९.१	७७।४५	+२.१२
पानीपत	६।४५।२५	२९.२३	७७.१	-०.४४	राँची	५।११।१९	२३.२३	८५.२३	+३२.४४
पांडिचेरी	२।३२।१०	११.५६	७९.५३	-१०.४४	रायबरेली	५।५४।४८	२६.१४	८१.१६	+१६.१६
पीलीभीत	६।३३।०६	२८.३८	७५.५१	-५.२४	रेवाड़ी	६।२६।४	२८.१२	७६.३६	-२.२४
पुरी जगन्नाथ	४।१९।१३	१९.४८	८५.५२	+३४.४०	रोहतक	६।३७।२८	२८।५४	७६.३८	-२.१६
पूना	४।०।५५	१८.३०	७३.५८५	-१३.०८	लखनऊ	६।५।३२	२६.५५	८०.५९	+१५.०८
पोर्टब्लेवर	२।२८।५३	११.४१	९२.४३	+६२.४	लद्दाख	७।२९।५४	३२.००	८०.०	+११.०
पोरबन्दर	४।४५।१९	२१.३७	६९.४९	-२९.३२	लुधियाना	७।११।२९	३०.५६	७५.५२	-५.२०
फतेहगढ़	६।१२।५७	२७.२३	७९.४०	+९.५२	वाराणसी	५।४०।३६	२५.१९	८३.१	+२३.१६
फतेहपुर	५।४९।५२	२५.५५	८०.५२	+१४.४०	वृन्दावन	६।१५।३६	२७.३३	७७.४४	+२.०८
फतेहाबाद	६।४७।३८	२९.३१	७५.२०	-७.२८	शिमला	७।१४।२०	३१.०६	७७.१०	-०.०८
फार्रुखाबाद	६।१३।१३	२७.२४	७९.३७	+९.४०	शिलांग	५।४४।२७	२५.३८	९१.५६	+५८.५६
फैजाबाद	६।३।२६	२६.४७	८२.१२	+२०.००	श्रीगंगानगर	६।५४।३५	२९.५६	७३.५२	-१३.२०
बक्सर	५।४४।२७	२५.३४	८४.१	+२७.१६	श्रीनगर	८।७।२९	३४.६	७४.५१	-९.२४
बड़ौदा	४।५५।१८	२२.१८	७३.१६	-१५.४४	सतना	५।२९।२८	२४.३४	८०.५५	+१४.५२
बद्रीनाथ	७।८।४	३०.४४	७९.३२	+९.२०	सागर	५।१८।३	२३.५०	७८.५०	+६.३२
बम्बई	४।६।४५	१८.५५	७२.५०	-१७.२८	सहारनपुर	६।५५।८	१९.५८	७७.२३	+०.४४
बरेली	६।२८।७६	२८.२२	७९.२७	+९.००	सूरत	४।३९।१६	२१.१२	७२.५२	-१७.२०
बीकानेर	६।२३।६	२८.१	७३.२२	+१५.२०	सोमनाथ	४।३७।२१	२१.४	७०.२६	-२७.०४
बीजापुर	३।३७।५०	१६.५०	७५.४७	-५.४०	हरिद्वार	६।५५।८	२९.५८	७८.१३	+४.०४
बैंगलोर	२।४५।४७	१२.५८	७७.३८	+१.४४	हावड़ा (प०बं०)	४।५९।२८	२२.३५	८८.२३	+४४.४४
भरतपुर	६।१०।४९	२७.१५	७७.३०	+१.१२	हैदराबाद	३।४४।४३	१७.२०	७८.३०	+५.१२
भीलवाड़ा	५।४१।७	२५.२१	७४.३८	-१०.१६	होशियापुर	७।२१।४८	३१.३२	७५.५७	-५.००
भोपाल	५।०९।३५	२३.१६	७७.३६	+१.३६	होशंगाबाद	५।२।१०	२२.४६	७७.४५	+२.१२

लग्नसाधन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि:

विद्यापीठ पञ्चाङ्ग में अक्षांश रेखांश सारिणी में दी गई पलभा अथवा पलभा के ज्ञान से पलभा को क्रम से १०।९।१०/३ से गुणा करके अभीष्ट स्थानीय चरखण्ड सिद्ध होगें।

उदाहरण- दिल्ली की पलभ ६।३३।०६

६।३३।०६ × १०=६०।३३०।६०=६६ प्रथम चरखण्ड स्वल्पान्तरात्

६।३३।०६ × ८=४८।२६४।४८=५२ द्वितीय चरखण्ड स्वल्पान्तरात्

प्रथम चरखण्ड ६६/३=२२ तृतीय चरखण्ड।

इस प्रकार चरखण्ड का साधन करके केतकर के मत से मेषादि द्वादश राशियों के लंकोदयमान २७९।२९९।३२२, ३२२।२९९।२७९, २७९।२९९।३२२, ३२२।२९९।२७९ तीन-तीन राशियों में मेषादि क्रमोत्क्रम से चरखण्ड का ऋण-धन, धन-ऋण, संस्कार करने पर स्वदेशीय उदयमान सिद्ध होंगे।

लङ्कोदयमान		चरखण्ड		स्वदेशीय उदयमान
मे. २७९ मी.	-	६६	=	मे. २१३ मी.
वृ. २९९ कुं	-	५२	=	वृ. २४७ कुं.
मि. ३२२ म.	-	२२	=	मि. ३०० म.
क. ३२२ ध.	+	२२	=	क. ३४४ ध.
सि. २९९ वृ.	+	५२	=	सिं. ३५१ वृ.
क. २७९ तु.	+	६६	=	क. ३४५ तु.

इस प्रकार स्वदेशीय उदयमान द्वारा "तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाः" इत्यादि विधि द्वारा लग्न साधन किया जा सकता है।

लघुरिक्थ सारिणी

मि.क्र.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मि.क्र.
००		१.३८०२	१.०७९२	९०३१	७७८१	६८१२	६०२१	५३५१	४७७१	४२६०	३८०२	३३८८	३०१०	००
१	३.०१५८४	१.३७३०	१.०७५६	९००७	७७६३	६७९८	६००९	५३४१	४७६२	४२५२	३७७५	३३८२	३००४	१
२	२.८५७३	१.३६६०	१.०७२०	८९८३	७७४५	६७८४	५९९८	५३३०	४७५३	४२४४	३७८८	३३७५	२९९८	२
३	२.६८१२	१.३५९०	१.०६८५	८९५९	७७२८	६७६९	५९८५	५३२०	४७४४	५३३६	३७८०	३३६८	२९९२	३
४	२.५५६३	१.३५२२	१.०६४९	८९३५	७७१०	६७५५	५९७३	५३१०	४७३५	४२२८	३७७३	३३६२	२९५६	४
५	२.४५९४	१.३४५४	१.०६१४	८९१२५	७६९२	६७४१	५९४१	५३००	४७२६	४२२०	३७६६	३३५५	२९८०	५
६	२.३८०२	१.३३८८	१०.०५८०	८८८८	७६७४	६७२६	५९४९	५२८९	४७१७	४२१२	३७५९	३३४९	२९७४	६
७	२.३१३३	१.३२२३	१.०५४६	८८६५	७६५७	६७१२	५९३७	५२७९	४७०८	४२०४	३७५२	३३४२	२९६८	७
८	२.२५५३	१.३२५८	१.०५११	८८४२	७६३८	६६९८	५९२५	५२६९	४६९९	४१९६	३७४५	३३३६	२९६२	८
९	२.२०४१	१३१९५	१.०४७८	८८१९	७६२२	६६८४	५९१३	५२५९	४६९०	४१८८	३७३७	३३२९	२९५६	९
१०	२.१५८४	१.३१३३	१.०४४४	८७९६	७६०४	६६७०	५९०२	५२४९	४६८२	४१८०	३७३०	३३२३	२९५०	१०
११	२.११७०	१.३०७१	१.०४११	८७७३	७५८७	६६५६	५८९०	५२३९	४६७३	४१७२५	३७२३	३३१६	२९४४	११
१२	२.०७९२	१.३०१०	१.०३७८	५७५१	७५७०	६६४२	५८७८	५२२९	४६६४	४१६४	३७१६	३३१०	२९३८	१२
१३	२.०४४४	१.२९५०	१.०३४५	८७२८	७५५२	६६२८	५८६६	५२१९	४६५५	४१५६	३७०९	३३०३	२९३३	१३
१४	२.०१२२	१.२८९१	१.०३१३	८७०६	७५१८	६६००	८५४३	५१९९	४६३८	४१४१	६३९५	३२९१	२९२१	१४
१५	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	१५
१६	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	१६
१७	१.९२७९	१.२७१९	१.०२१६	८६३९	७४८४	६५७३	५८२०	५१७९	४६२०	४१२५	३६८१	१२७८	२९०८	१७
१८	१.९०३१	१.२६६३	१.०१८५	७६१७	७४६७	६५५९	५८०९	५१६९	५६११	४११७	३६७४	३२७१	२९०३	१८
१९	१.८७९६	१.२६०७	१.०१५३	८५९५	७४५१	६५४६	५७९७	५१५९	४६०३	४१०९	३६६७	३२६५	२८९७	१९
२०	१.८५७३	१.२५५३	१.०१२२	८५७३	७४३४	६५३२	५७८६	५१४९	४१०२	४१०२	३६६०	३२५८	२८९१	२०
२१	१.८३६१	१.२४९९	१.००९१	८५५२	७४१७	६५१९	५७७४	५१३९	४५८५	४०९४	३६५३	३२५२	२८८५	२१
२२	१.८१५९	१.२४४५	१.००६१	८५३०	७४०१	६५०५	५७६३	५१२९	४५७७	४०८६	३६४६	३२४६	२८८०	२२
२३	१.७९६६	१.२३९३	१.०४३०	८५०९	७३८४	६४९२	५७५२	५१२०	४५६८	४०७९	३६३९	३२३९	२८७४	२३
२४	१.७७८१	१.२३४१	१.००००	८४८७	७३६८	६४७८	५७४०	५११०	४५५९	४०७१	३६३२	३२३३	२८६८	२४
२५	१.७६०४	१.२२८९	०.९९७०	८४६६	७३५१	६४६५	५७२९	५१००	४५५१	४०६३	३६२५	३२२७	२८६३	२५
२६	१.७४३४	१.२२३९	०.९९४०	८४४५	७३३५	६४५१	५७१८	५०९०	४५४२	४०५५	३६१८	३२२०	२८५६	२६
२७	१.७२७०	१.२१८८	०.९९१०	८४२४	७३१८	६४३८	५७०६	५०८१	४५३४	४०४८	३६११	३२१४	२८५०	२७
२८	१.७११२	१.२१३९	०.९८८१	८४०३	७३०२	६४२५	५६९५	५०७१	४५२५	४०४०	३६०४	३२०८	२८४५	२८
२९	१.६९६०	१.२०९०	०.९८५२	८३८२	७२८६	६४१२	५६८४	५०६१	४५१६	४०३२	३५९७	३१०१	२८३९	२९
३०	१.६८१२	१.२०४१	०.९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	४०२५	३५९०	३१९५	२८३३	३०
३१	१.६६७०	१.१९९३	०.९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	४०१७	३५८३	३१८९	२८२७	३१
३२	१.९५३२	१.१९४६	०.९७६५	८३२०	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	४०१०	३५७६	३१८३	२८२१	३२
३३	१.६३९८	१.१८९९	०.९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	४००२	३५७०	३१७६	२८१६	३३
३४	१.६२६९	१.१८५२	०.९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४६६	३९९४	३५६३	३१७०	२८१०	३४
३५	१.६१४३	१.१८०६	०.९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००३	४४६६	३९८७	३५५६	३१६४	२८०४	३५
३६	१.६०२१	१.१७६१	०.५६५२	८२३९	७१७४	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३९७९	३५४९	३१५७	२७९८	३६
३७	१.५९०२	१.१७१६	०.९६२५	८२६९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३९७२	३५४२	३१५१	२७९३	३७
३८	१.५७८६	१.१६७१	०.९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४४०	३९६४	३५३५	३१४५	२७८७	३८
३९	१.५६७३	१.१६२७	०.९५७०	८१७९	७१२८	६२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९५७	३५२९	३१३९	२७८१	३९
४०	१.५५६३	१.१५८४	०.९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	३९४९	३५२२	३१३३	२७७५	४०
४१	१.५४५६	१.१५४०	०.९५१५	८१४०	७३१७	६२५६	५५५२	४९४७	३९४२	३९४२	३५१५	३१२६	२७७०	४१
४२	१.५३५१	१.१४९८	०.९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३७	४४०७	३९३४	३५०८	३१२०	२७६४	४२
४३	१.५२४९	१.१४५५	०.९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	३९२७	३५०१	३११४	२७५८	४३
४४	१.५१४९	१.१४१३	०.९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४२९०	३९१९	३४९५	३१०८	२७५३	४४
४५	१.५०५१	१.१३७२	०.९४०९	८०६३	७०३५	६२०५	५५०९	४९०९	४३८२	३९१२	३४८८	३१०२	२७४७	४५
४६	१.४९५६	१.१३३१	०.९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	३९०५	३४८१	३०९६	२७४१	४६
४७	१.४८६३	१.१२९०	०.९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६५	३८९७	३४७५	३०८९	२७३६	४७
४८	१.४७७१	१.१२४९	०.९३३०	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	५३५७	३८९०	३४६८	३०८३	२७३०	४८
४९	१.४६८२	१.१२०८	०.९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	३८८२	३४६१	३०७७	२७२४	४९
५०	१.४५९४	१.११७०	०.९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	३८७५	३४५४	३०७१	२७१९	५०
५१	१.४५०८	१.११३०	०.९२५४	७९४७	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	५३३३	३८६८	३४४८	३०६५	२७१३	५१
५२	१.४४२४	१.१०९१	०.९२२८	७९२९	६९३०	४११८	५४३५	४८४४	४३२४	३८६०	३४४१	३०५९	२७०७	५२
५३	१.४३४१	१.१०५३	०.९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	३८५३	३४३४	३०५३	२७०२	५३
५४	१.४२६०	१.१०१५	०.९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	३८४६	३४२८	३०४७	२६९६	५४
५५	१.४१८०	१.०९७७	०.९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	३८३८	३४२१	३०४१	२६९१	५५
५६	१.४१०२	१.०९३९	०.९१२८	७८५४	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	३८३१	३४१५	३०३४	२६८५	५६
५७	१.४०२५	१०.९०२	०.९१०४	७८३६	४८५६	६०५७	५३८२	४७९८	४२८४	३८२४	३४०८	३०२८	२६७९	५७
५८	१.३९४९	१.०८६५	०.९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	३८१७	३४०१	३०२२	२६७४	५८
५९	१.३८७५	१.०८२८	०.९०५५	७८००६	६८२७	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	३८०९	३३९५	३०१६	२६६८	५९

लघुरित्थ सारिणी

मि.क्र.	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	मि.क्र.
००	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२४९	१०१५	०७९२	०५८०	०३७८	०१८५	००
१	२६५२	२३३०	२०३६	१७५६	१४९३	१२४५	१०११	०७८८	०५७७	०३७५	०१८२	१
२	२६५२	२३३०	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	०७८५	०५७३	०३७१	०१७९	२
३	२६४६	२३२५	२०२७	१७४७	१४८५	१२३७	१००३	०७८१	०५७०	०३६८	०१७५	३
४	२६४०	२३२०	२०२२	१७४४३	१४८१	१२३३	०९९९	०७७७	०५६६	०३६५	०१७२	४
५	२६३५	२३१५	२०१७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९६	०७७४	०५६३	०३६१	०१६९	५
६	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	०९९२	०७७०	०५५९	०३५८	०१६६	६
७	२६२४	२३०५	२००८	१७२९	१४६८	१२२१	०९८८	०७६७	०५५६	०३५५	०१६३	७
८	२६१८	२३००	२००३	१७२५	१४६४	१२१७	०९८४	०७६३	०५५२	०३५२	०१६०	८
९	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४५९	१२१३	०९८०	०७५९	०५४९	०३४८	०१५७	९
१०	२६०७	२२८९	१९९३	१७१६	१४५५	१२०९	०९७७	०७५६	०५४६	०३४५	०१५४	१०
११	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५१	१२०५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	०१५०	११
१२	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२०१	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७	१२
१३	२५९१	२२७४	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४१	०५३२	०३३२	०१४१	१३
१४	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४१	०५३२	०३३२	०१४१	१४
१५	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११९०	०९५८	०७३८	०५२५	०३२९	०१३८	१५
१६	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३०	११८६	०९५४	०७३४	०५२५	०३२६	०१३५	१६
१७	२५६९	२२५४	१९६०	१६८५	१४२६	११८२	०९५०	०७३१	०५२२	०३२२	०१३२	१७
१८	२५६४	२२४९	१९५५	१६८०	१४२२	११७८	०९४७	०७२७	०५१८	०३१९	०१२९	१८
१९	२५५८	२२४४	१९५०	१६७६	१४१७	११७४	०९४३	०७२४	०५१५	०३१६	०१२६	१९
२०	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	०९३९	०७२०	०५१२	०३१३	०१२२	२०
२१	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४०९	११६६	०९३५	०७१६	०५०८	०३०९	०११९	२१
२२	२५४२	२२२९	१९३६	१६६२	१४०५	११२२	०९३२	०७१३	०५०५	०३०६	०११६	२२
२३	२५३६	२२२३	१९३२	१६५८	१४०१	११५८	०९२८	०७०९	०५०१	०३०३	०११३	२३
२४	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	०९२४	०७०६	०४९८	०३००	०११०	२४
२५	२५२६	२२१३	१९२२	१६४९	१३९२	११५०	०९२०	०७०२	०४९५	०२९६	०१०७	२५
२६	२५२०	२२०८	१९१७	१६४५	१३८८	११४६	०९१७	०६९९	०४९१	०२९३	०१०४	२६
२७	२५१५	२२०३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	०९१३	०६९५	०४८८	०२९०	०१०१	२७
२८	२५०९	२१९८	१९०८	१६३६	१६८०	११३८	०९०९	०६९२	०४८४	०२८७	००९८	२८
२९	२५०४	२१९३	१९०३	१६३२	१३७६	११३४	०९०६	०६८८	०४८१	०२८४	००९५	२९
३०	२४९९	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१	३०
३१	२४९३	२१८३	१८९८	१६२३	१३६८	११२७	०८९८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८	३१
३२	२४८८	२१७८	१८८९	१६१८	१३६४	११२२	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५	३२
३३	३४८३	२१७३	१८८५	१६१४	११५९	११११	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२	३३
३४	२४७७	२१६८	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७१	०४६४	०२६७	००७९	३४
३५	२४७२	२१६४	१८७५	१६०५	१३५१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६	३५
३६	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६४३	०४५८	०२६१	००७३	३६
३७	२४६१	२१५४	१८६६	१५९८	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०	३७
३८	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	०८७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७	३८
३९	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१०९५	०८६९	०६५३	०४४८	०२५१	००६४	३९
४०	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९१	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६१	४०
४१	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२६	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८	४१
४२	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२२	१०८४	०८५७	०६४२	०६३८	०२४२	००५५	४२
४३	२४३०	२१२४	१८३८	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२	४३
४४	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३६	००४९	४४
४५	२४१६	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४७	०६३२	०४२८	०२३२	००४६	४५
४६	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२८	०४२४	०२२९	००४२	४६
४७	२४०९	२१०४	१८३०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९	४७
४८	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२२	०४१८	०२२३	००३६	४८
४९	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३	४९
५०	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५३	०८२८	०६१५	०४११	०२१६	००३०	५०
५१	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२५	०६११	०४०८	०२१३	००२७	५१
५२	२३८३	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४	५२
५३	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१	५३
५४	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३८	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००४८	५४
५५	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५	५५
५६	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९७	००१२	५६
५७	२३५६	२०५६	१७४	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९४	०००९	५७
५८	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६	५८
५९	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३	५९

लघुरित्थ सारिणी द्वारा ग्रह स्पष्ट करने की विधि– लघुरित्थ से ग्रह स्पष्ट करने के लिए पञ्चाङ्ग में दिए गए ग्रह स्पष्ट के भारतीय स्टैण्डर्ड समय तथा जन्म समय के भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर करने पर घण्टों मिनिटों में चालन आता है। यदि जन्म समय पञ्चाङ्ग में दिए गए ग्रह स्पष्ट समय से कम हो तो चालन ऋण, अधिक होने पर धन होता है। इस प्रकार सारिणी में घण्टे के नीचे तथा मिनिटों के सामने का चालन दशमलवात्मकलघुरित्थ लेकर तथा अभीष्ट ग्रह की दैनिक गति यदि अंशात्मक हो तो अंश के नीचे तथा कला के सामने के दशमलवात्मक लघुरित्थ को लेकर चालन में लघुरित्थ में जोड़ने पर जो प्राप्त हो, वह सारिणी में जिस अंश के नीचे तथा जिस कला के सामने मिले वही चालन फल होगा। यदि चालन ऋण हो तो पञ्चाङ्ग के ग्रह स्पष्ट में ऋण तथा यदि धन हो धन करने पर जन्मकालीन ग्रह स्पष्ट होगा। यह ध्यान रहे, कि सारिणी में घण्टे या अंश तथा मिनिट या कला का लघुरित्थ एक ही आता है, तथा जहाँ (३ अंश के नीचे से अन्त तक) लघुरित्थ के आगे दशमलव नहीं दिए गए हैं वहाँ दशमलव सहित लेना चाहिए, जैसे ९०३१ के स्थान पर ०९०३१ इत्यादि।

अभीष्ट स्थान के सूर्योदय तथा इष्टकाल बनाने की विधि

अभीष्ट स्थान का इष्टकाल बनाने के लिए वहाँ के सूर्योदयकाल की आवश्यकता होती है, क्योंकि सूर्योदय से जन्मकाल तक के समय को इष्टकाल कहते है, या यूं कहिए कि जन्मकालीन स्टैण्डर्ड समय में से वहां का स्टैण्डर्ड सूर्योदय घटाने पर इष्टकाल बनता है, अत: किसी भी स्थान के स्टैण्डर्ड बनाने की विधि यहां दी जा रही है।

मान लीजिए १९ दिसम्बर १९८५ को स्टैण्डर्ड समय प्रात: १० बजकर २० मिनट पर दिल्ली का इष्टकाल निकालने के लिए यहाँ का स्टैण्डर्ड सूर्योदय बनाना है-

किसी भी स्थान का सूर्योदय बनाने के लिए वहां के अक्षांस उस दिन की क्रान्ति, वेलान्तर, रेखांश तथा रेखान्तर की आश्वयकता होती है। छ: घण्टे में चर का संस्कार करने पर स्थानीय सूर्योदय, तथा पञ्चाङ्ग की सारिणी से वेलान्तर तथा रेखान्तर का विपरीत संस्कार अर्थात् यदि दोनों की ऋण हों तो धन, तथा धन हो तो ऋण करने पर वहां का स्टैण्डर्ड सूर्योदय बनता है।

दिल्ली का अक्षांश=२८०।३८', १९ दिसम्बर की क्रान्ति दक्षिणा=२३°।२५', वेलान्तर+३ मिनट, रेखांश ७७°।१२', रेखान्तर मि० २१ से. १२ ऋणात्मक है।

चरसाधन- उपरोक्त उपकरणों द्वारा पञ्चाङ्ग की चर सारिणी से अक्षांश तथा क्रान्ति के संस्कार से चर मिनिट लाने हैं। दिल्ली के अक्षांश २८°।३८' के सामने तथा कान्त्यंश २२° के नीचे चर मिनिट ५१ एवं २४° के नीचे मि० ५६ से. १८ लिखे हैं, किन्तु अभीष्ट चर क्रान्ति २३°।२५' का लाना है, अत: चर मिनिटादि दो अंशों के अन्तर पर होने के कारण अभीष्ट चर मिनिटादि लाने के लिए अनुपात किया:-

यदि दो क्रान्त्यंशो के अन्तर में चर ५ मिनिट १८ से. मिलते हैं तो क्रान्त्यंशान्तर २३°।२५'-२२°।००=१°।२५' में क्या ?

$$\frac{\text{मि० ५ से० 18×१°।२५'}}{2^\circ}$$ स्वल्पान्तरात् ४ मिनिट

इसको २२° क्रान्त्यंश के चर मिनिट ५१, में जोड़ने पर ५५ मिनिट अभीष्ट चर हुआ।

चर संस्कार विधि-

चर का साधन करके यदि उत्तरा क्रान्ति तथा उत्तरी अक्षांश हो, तो चर मिनिटादि ६ घण्टे में ऋण करने पर एवं दक्षिणा क्रान्ति व उत्तरी अक्षांश हो, तो ६ घण्टे में चर मिनिटादि धन करने पर, इसी प्रकार उत्तरा क्रान्ति दक्षिण अक्षांश हो तो ६ घण्टे में चर मिनिटादि धन करने पर स्थानीय सूर्योदय होगा। भारतवर्ष में सर्वत्र अक्षांश उत्तर दिशा के ही हैं। अत: भारतवर्ष में २१ मार्च से २२ सितम्बर तक चर मिनिटों का ६ घण्टे में घटाने पर तथा २३ सितम्बर से २० मार्च तक चर मिनिटों को ६ घण्टे में जोड़ने पर स्थानीय समय अर्थात् धूप घड़ी (स्थानीय) का सूर्योदय काल ज्ञात होता है। उसमें मध्यमान्तर और वेलान्तर का विपरीत संस्कार करने पर स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदय काल प्राप्त होता है। अभीष्ट स्थानीय सूर्योदय साधन हेतु चर संस्कार ज्ञान के लिए चक्र:-

उत्तरी अक्षांश		दक्षिणी अक्षांश	
उत्तरा क्रान्ति	दक्षिणा क्रान्ति	उत्तरा क्रान्ति	दक्षिणा क्रान्ति
घं. 6- चर मि.	घं. 6+चर मि.	घं. 6+चर मि.घं.	६- चर मि.
= स्था. सूर्योदय	= स्था. सूर्योदय	= स्था. सूर्योदय	= स्था. सूर्योदय

१९ दिसम्बर को क्रान्ति दक्षिणा है, तथा अक्षांश उत्तरी है, अत: घं. ६+मि. ५५= घं. ६ मि. ५५=स्थानीय सूर्योदय।

इस दिन वेलान्तर+ ३ मिनट हैं, अतः स्थानीय सूर्योदय में वेलान्तर का विपरीत संस्कार करने पर घं. ६ मि. ५५ - मि.३ । = घं. ६ मि. ५२ = स्था. मध्यम सूर्योदय तथा रेखान्तर- मि. २१ सें. १२ का विपरीत संस्कार करने पर घं. ६ मि. ५२+मि. २१ सें. १२= घं. ७ मि. १३ से. १२ = स्टैं. सूर्योदय होगा।

स्थानीय सूर्योदय	= ६/५५/००		मि./सें.
स्पष्टान्तर	= +१८/१२	मध्यमान्तर =	-२१/१२
स्टैं० समय सूर्योदय काल का	= ७/१३/१२	वेलान्तर =	+ ३/००
		सपष्टान्तर =	-१८/१२

स्पष्टान्तर द्वारा स्थानीय सूर्योदय से स्टैं. सूर्योदय, स्टै. सूर्योदय से स्थानीय सूर्योदय तथा स्टैं० समय से स्थानीय समय बनाने की विधि :-

स्पष्टान्तर साधन-

यदि रेखान्तर तथा वेलान्तर दोनों ऋण हो तो दोनों का योग करने पर ऋण (-) स्पष्टान्तर एवं दोनों धन हो तो दोनो का योग करने पर धन (+) स्पष्टान्तर तथा यदि एक संख्या धन एक ऋण हो तो अधिक संख्या में से घटाने पर अधिक संख्या वाला चिह्न लगाने पर स्पष्टान्तर होता हैं।

जैसे :- रेखान्तर-मि० २१ से० १२, वेलान्तर + मि० ३

अतः स्पष्टान्तर = -मि० २१ से० १२+मि० ३ = -मि० १८ से० १२

इस स्पष्टान्तर का स्टैं. सूर्योदय में यथावत् संस्कार करने पर स्थानीय सूर्योदय होगा।

स्टैं. सूर्योदय घं. ७ मि. १३ से. १२ - स्पष्टान्तर मि. १८ से. १२ = स्थानीय सूर्योदय घं. ६ मि. ५५

इसी प्रकार स्टैं. समय में स्पष्टान्तर का संस्कार करने पर स्थानीय समय होगा।स्टैं. समय घं. 10 मि. 20-मि. 18 से. 12= घं. 10 मि. 1 से. 48 = स्थानीय समय ।

इसके विपरीत स्थानीय सूर्योदय में स्पष्टान्तर का विपरीत संस्कार करने पर स्टैं० सूर्योदय तथा स्थानीय समय में संस्कार विपरीत करने पर स्टैं० समय होगा।

स्था. सूर्योदय घं० ६ मि. ५५+मि. १८ से. १२ = स्टैं. सूर्योदय घं. ७ मि. १३ से. १२

स्था. समय घं. १० मि. १ से. ४८+मि. १८ से. १२ = स्टैं. समय घं १० मि. २०

इस प्रकार स्टैं. जन्म समय में स्टैं. सूर्योदय अथवा स्थानीय समय में स्थानीय सूर्योदय घटाने पर घण्टा मिनट में इष्टकाल तथा उसे २॥ से गुणा करने पर घटीपलात्मक इष्टकाल होता है।

यह ध्यान रहे कि यदि जन्म समय स्टैण्डर्ड हो तो सूर्योदय भी स्टैण्डर्ड तथा यदि जन्म समय स्थानीय हो तो सूर्योदय भी स्थानीय होना चाहिए।

स्थानीय समय तथा स्थानीय सूर्योदय से एवं स्टैं. समय तथा स्टैं. सूर्योदय से इष्टकाल साधन- घं. । मि. । से. घं. । मि. । से.

स्टैं. जन्म समय	= १०।१२।००	स्थानीय जन्म समय	= १०।०१।४८
स्टैं. सूर्योदय	= -७।१३।१२	स्थानीय सूर्योदय	= -६।५५।००

घण्टा मिनटात्मक इष्टकाल = ३ । ०६ । ४८

घण्टा मिनटात्मक इष्टकाल = ३ । ०६ । ४८

अढाई से गुणा करने पर = × २ ॥ अढ़ाई से गुणा करने पर = ✗ २ ॥

घं. । प. । वि.	घं. । प. । वि.
७ । ३० । ००	७ । ३०। ००
१५ । ००	१५ । ००
७ । ४५ । ००	७ । ४५ । ००

घटीपलात्मक इष्टकाल = ७/४५/०० घटीपलात्मक इष्टकाल = ७/४५/००

❀ विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरली) गिरने का फल एवं उपचार ❀

शरीर पर पल्ली (छिपकली/किरली) गिरने पर उस समय जो वस्त्र पहने हो उन वस्त्रों सहित स्नान करना चाहिए। जन्म नक्षत्र, दग्धा-तिथि, मृत्युयोग, पापग्रहयुक्त लग्न एवं अष्टम चन्द्रमा में पल्ली पतन अरिष्ट फलदायक होता है, अतः उसकी शान्ति के लिए पञ्चगव्य से स्नान कर छायापात्रदान, महामृत्युञ्जय का जाप, होमादि करना श्रेयस्कर होता है।

पल्ली-पतन के शुभ तिथि, वार एवं नक्षत्र :-

❀ अङ्ग विभागवश पल्ली-पतनफल जानने के लिए चक्र ❀

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल	अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
मस्तक	राज्यलाभ	कण्ठ	शत्रुनाशक	पृष्ठ मध्य	झगड़ा	कटिप्रदेश	रोग-भय
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति	दक्षिण-भुज	मान-सम्मान	दक्षिण-पृष्ठ	सुखलाभ	दक्षिण जङ्घा	धन हानि
नासिकाग्र	व्याधि	वाम-भुज	राज-भय	वाम-पृष्ठ	रोग-भय	वाम जङ्घा	पुत्र-लाभ
मुख-प्रदेश	मिष्ठान-भोजन	दक्षिण-स्कन्ध	सफलता	दक्षिण-हस्त	धन-लाभ	गुदा	रोग-भय
दक्षिण-कर्ण	आयु-वृद्धि	वाम-स्कन्ध	शत्रुभय	वाम-हस्त	धन-हानि	गुप्ताङ्ग	मित्र-प्राप्ति
वाम-कर्ण	भूषण लाभ	स्तन-प्रदेश	दौर्भाग्य	नाभि-प्रदेश	पुत्र-प्राप्ति	दक्षिण-पाद	यात्रा
				हृदय	यश-प्रप्ति	वाम-पाद	रोग भय

अङ्ग स्फुरण फलः-

शकुन की दृष्टि से शरीर के किसी भी भाग में अचानक स्फुरण हो जाता है। यह स्फुरण यदि निरन्तर लम्बे समय तक होता रहे तो वह वायु विकार से सम्बन्धित होता है। वह स्फुरण निष्फल होता है। यदि क्षणिक अंग स्फुरण हो, तो वा शुभाशुभ फल बोधक होता है। सामान्यतया स्त्री का वामाङ्ग एवं पूरूष का दक्षिणाङ्ग स्फुरण शुभ माना गया ह। विस्तृत फल निम्न प्रकार ज्ञात करें।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक (सिर)	भूमिलाभ	भृकुटि	धन प्राप्ति	कण्ठ	भूषण प्राप्ति	पृष्ठ	पराजय	बाहु-प्रदेश	प्रिय-प्राप्ति
ललाट	स्थान लाभ	नासिका	सुगन्ध लाभ	ग्रीवा	शत्रु भय	नाभि	स्त्रीनाश	गुप्ताङ्ग	प्रिय-प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शनलाभ	दक्षिण कर्ण	आयु-वृद्धि	स्कन्ध	मित्र-समागम	कुक्षि	सुप्रीति	जङ्घा	हानिप्रद
कपोल	स्त्री सुख	वाम-कर्ण	भूषण लाभ	वक्षः स्थल	विजय	कटि प्रदेश	प्रिय-प्राप्ति	घुटना	शत्रुसन्धि
भ्रूमध्य	सुख-प्राप्ति	अधर	प्रिय प्राप्ति	हृदय	इष्ट सिद्धि	हस्त	धन-प्राप्ति	पाद	स्थान-प्राप्ति

छींक (छिक्का) विचारः-

कोई शुभ कार्य प्रारम्भ करते समय अथवा यात्रा करते समय छींक आने पर अपशकुन माना जाता है। इसका विचार भारत वर्ष में प्रायः सभी प्रदेशों में होता है इसके विषय में अनेक लोकोक्ति अथवा घाघ, भड्डली इत्यादि की किवदन्तियाँ मुहावरों के रूप में प्रचलित हैं। संकेत में सारांश यह है, कि सूँघनी आदि पदार्थो के द्वारा ली गई बनावटी छींक निष्फल होती है। पीछे की छींक कुशलक्षेमकारक है। बाई ओर की छींक सभी कार्य को सिद्ध करने वाली सामने की छींक लड़ाई कराने वाली, दाहिनी ओर की छींक धन-नाश करने वाली, ऊँची छींक विजय देने वाली, नीची छींक भय करने वाली तथा अपनी अपनी छींक बहुत दुःख देने वाली होती है। कन्या, विधवा, मालिन, धोविन, रजस्वला, वैश्या की छींक बहुत अशुभफल देने वाली होती है। यदि भोजन के अन्त में छींक आए तो दूसरे दिन प्रिय भोजन प्राप्त होता है।

सन्ध्यावन्दनादि, शयन के समय, शौच के समय, दानकाल, भोजन के समय बाई ओर तथा पीछे की छींक शुभफल करने वाली होती है। छींक के विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, उनमें से प्रचलित उक्ति यहाँ दी जा रही हैं-

छींकत न्हइयै छींकत खइयै, छींकत जइयै सोय। छींकत पर घर कबहूँ न जइयै सब सोने की होय। एक नाक दो छींका। इनसे सगुन होत है नीका।

ॐ गण्ड-मूलादि-जन्म विचार ॐ

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती - ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न बालक, माता, पिता, कुल या स्वयं को अरिष्टदायक होता है। यदि यह अरिष्ट से बच जाये तो अपने बल-बुद्धि से संसार में सुखपूर्व दीर्घायु प्राप्त करता है। इसलिए गण्डमूल में उत्पन्न शिशु के पिता को २७ दिन तक उसका मुख नहीं देखना चाहिए। और फिर प्रसूति-स्नान के बाद गण्डमूल की शान्ति गौदान आदि देकर बालक का मुख देखना चाहिए।

मूलनिवास-चक्र

मास के अनुसार	वैशा. ज्ये. मार्ग. फा.	चै.श्रा.का.पौ.	आषा. आश्वि.भाद्र. माघ
लग्न के अनुसार	२, ५, ८, ११	३, ६, ९, १२	१, ४, ७, १०
मूल निवास स्थान	पाताल	भूमि	स्वर्ग
फल	शुभ	कुलनाश	शुभ

मूल-आश्लेषा चरण-फल

मूल चरण-फल		आश्लेषा चरण-फल		समय-फल	
१	पितृनाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृनाश	२	धन नाश	सन्ध्या में	स्वशरीर भय
३	धननाश	३	मातृनाश	रात्रि में	माता को भय
४	शान्ति से शुभ	४	पितृनाश		

मूलजन्म में वृक्ष विभाग

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूल नाश	वंशनाश	मातृ-क्लेश	मातुल-कष्ट	राज्य लाभ	मन्त्री	प्रचुर लक्ष्मी	अल्पाय

मूल-पुरुष-चक्र

विभाग	शिर	मुख	स्कन्ध	बाहु	हाथ	हृदय	नाभि	गुप्तांग	जानु	पैर
घटी	५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६
फल	राजा	पितृ-नाश	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	बुद्धि-मान	बुद्धि-मान

मूल-कन्या-चक्र

विभाग	शिर	मुख	कण्ठ	हृदय	भुजा	हाथ	गुप्तांग	जंघा	जानु	पैर
घटी	४	६	५	५	१०	८	४	४	४	१०
फल	पशु-नाश	धन-नाश	धन-लाभ	कुटिलता	धन लाभ	धर्म-नाश	कामिनी	ज्ये.मातुल-नाश	भ्रातृ-नाश	विधवा

आश्लेषा नक्षत्रोत्पन्न पुत्र/कन्या-अङ्गविभाग

विभाग	शिर	मुख	नेत्र	ग्रीवा	स्कन्ध	हाथ	हृदय	नाभि	गुह्य	पैर
घटी	५	७	२	३	४	८	११	६	९	५
फल	पुत्र प्राप्ति	पितृ-नाश	मातृ-नाश	स्त्री-लम्पट	गुरु भक्ति	बली	आत्म-घाती	भ्रम	तपस्वी हानि	धन

आश्लेषा-वृक्ष-चक्र

विभाग	फल	पुष्प	पत्ता	शाखा	त्वचा	लता	स्कन्ध
घटी	१०	५	९	७	१३	१२	४
फल	धन	धन	राजभय	हानि	भ्रातृहानि	पितृहानि	अल्पायु

अभुक्त मूल-विचार-

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की ४ घटी मतान्तर से १ घटी और मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की ४ घटी मतान्तर से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इस समय में कदाचित् बालक का जन्म हो, तो बालक के पिता को ८ वर्ष तक मतान्तर से ६ मास तक उसका मुख नहीं देखना चाहिए। इसकी शान्ति के लिए रुद्रार्चन अभिषेक एवं महामृत्युञ्जय की विधि सहित अभुक्त मूल शान्ति कर शुभ मुहूर्त में बालक का मुख देखना चाहिए ।

गोधूलिलग्न की वैज्ञानिकता

भारतीय ज्योतिषशास्त्र में लग्न को विशेष स्थान दिया गया है। लग्न की प्रधानता के विषय में श्री रामदैवज्ञ मुहूर्त्त चिन्तामणिकार का कथन है कि सुन्दर स्वभाव युक्त स्त्री धर्म, अर्थ एवं काम तीनों वर्गों को प्रदान करने वाली होती है। पति का सहयोग करते हुए देव, पितृ एवं ऋषि तीनों ऋणो से मुक्त कराती है। स्त्री की सुशीलता विवाह कालिक लग्न के अधीन है। अर्थात् शास्त्रविहित शुभ मुहुर्त्त में विवाह होने पर स्त्री का स्वभाव और आचरण पवित्र होता है। इसलिए विवाह का विचार किया जाता है क्योंकि सुसन्ततिशील और धर्म विवाह कालिक लग्न के अधीन होते हैं।

यथा–

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः।
तस्माद्विवाहसमयः परिचिन्त्यते हि तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः॥

गोधूलि लग्न की विशेषता वास्तविक रूप से गौ माता से है वैज्ञानिक आधार इस लग्न का आशय यह था कि प्रायः सूर्यास्त काल में गायें चारागाह से लौटकर असंख्य झुण्डों में चलती थी तो उनके खुरों के द्वारा उड़ने वाली धूलि से सम्पूर्ण आकाश मण्डल आच्छादित हो जाने पर उस कालखण्ड में किया गया प्रत्येक शुभकार्य निर्विघ्नता पूर्वक सम्पन्न होता था।

गोधूलिलग्न की विशेषता–

गोधूलिलग्न की विशेषता के विषय में शास्त्रीय आधार इस प्रकार से है कि गोधूलिलग्न हेतु तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण मुहूर्त्त, अष्टमभाव दोष, जाम दोष के विषय में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। चूंकि मुनियों द्वारा गोधूलिलग्न को समस्त कार्यों हेतु सर्वश्रेष्ठ कहा है।

यथा–

नास्यामृक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता
नो वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा।
नो वा योगो न च मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता ।

इसी प्रकार से वृहद्दैवज्ञरञ्जन में वर्णित है।

यथा–

यामित्रं न विचिन्त्येद्ग्रयुतं लग्नं नवाशं तथा
नो वेधो न कुवारकं न हिमगो लग्नं च भौमान्विता।
होरायां च नवांशकं न च खगा मूर्त्यादि भावस्थिताः॥
हित्वा वर्जतनूषडाष्टमगते गोधूलिकं शस्यते ॥

अर्थात् गोधूलि लग्न में कोई भी पञ्चाङ्गस्थ बिन्दु पर विचार करना आवश्यक नहीं है। उपर्युक्त कथन का उद्धरण देकर गोधूलि लग्न में किसी भी शुभ कार्य को किया जा सकता है।

गोधूलि काल के विषय में नारद का मत कुछ इस प्रकार से है। यथा– **चतुर्थमभिजिल्लग्नमुदयर्क्षस्तु गोधूलिकं हि भवति सम्पत्पुत्रादि-सौख्यदम्।**

अर्थात् उदयलग्न से सप्तम लग्न जिसको अस्तलग्न कहते हैं वही गोधूलिलग्न होता है। संग्रहशिरोमणि में गोधूलि लग्न के विषय में वराहमिहिर द्वारा कुछ इस प्रकार से कहा गया है–

गोधूलिलीं त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहदिके।
हेमन्ते शिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे ॥

ग्रीष्मेऽर्द्धास्तमिते वसन्त समये भानौ गते दृश्यतां
सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः ॥

गोधूलि लग्न के विषये में रामदैवज्ञ का मत इस प्रकार से है–

पिण्डीभूते दिनकृति हेमन्ततौं स्यार्द्धास्ते तपसमये गोधूलिः।
सम्पूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ॥

गोधूलि लग्न के सूक्ष्मकाल के विषय में केशवार्क का कथन कुछ इस प्रकार से है–

"अत्रोभयत्र घटिकादलमिष्टमाहुः
तदम्बरमणेरपि चार्द्धबिम्बात्।"

कुछ विद्वानों का मत गोधूलि लग्न के विषय में कुछ इस प्रकार से है–

यावद्दिनान्ते दिशि पश्चिमायां पश्येतृतीयं रविबिम्बभागम्।
तस्यापरं नाडिक युग्ममेके गोधूलिकालं मुनयो वदन्ति ॥

गोधूलि लग्न की वैज्ञानिकता

गोधूलि लग्न का तात्पर्य उस समय विशेष से है जब ग्वालों द्वारा हांकी गई गायें वन प्रदेश से घर आती थी तो उस समय गायों के खुरों से उठती हुई धूलि समस्त गगनमण्डल को पवित्र कर देती थी। इस विषय में भागुरि का मत कुछ इस प्रकार से है–

गौपैर्यस्ट माहतानां खुरपुटदलिता याति धूलिर्दिनान्ते
सोद्वाहे सुन्दरीणां विविधधनसुतारोग्य सौभाग्यदात्री ।
तस्मिन् काले न चर्क्षं न च तिथिकरणं नैव लग्नं न योगः
ख्यातः पुसां सुखार्थं शमयति दुरितान्युच्छ्रितं गोरजस्तु ॥

वृहद्दैवज्ञरञ्जन में भी गोधूलि लग्न की वैज्ञानिकता के विषय में वर्णित है।

ऋक्षेशुभेऽपि राशिनी प्रतिकूलभेऽपि।
पापेश्वपि क्षितिसुतोऽपि विलग्नगोपि।
गोधूलियोगमपरे परिकीर्तयन्ति
स्त्रीणापत्यपतिसौख्यवहं विवाहे ॥

लल्लाचार्य अनुसार गोधूलि लग्न को विशेष परिस्थितियों में ही ग्राह्य है। यथा–

लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्योद्गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति।
लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥

भागुरि ऋषि के अनुसार गोधूलि लग्न की विशेषता–

शुभाशुभ युतं सर्वं राशेर्दोषं त्वनिन्दितम् ।
विवाहलग्नवच्देषं गोधूलिं प्राह भागुरि ॥

दैवज्ञमनोहर के द्वारा ब्राह्मणों के लिए गोधूलि लग्न का निषेध कहा है–

घटीलग्नं यदा नास्ति तदा गोधूलिकं शुभम्।
शुद्रादीनां बुधाः प्राहुर्न द्विजानां कदाचन
महादोषान् परित्यज्य प्रोक्तं धिष्ण्यादिकेषु च।
कायरेद् गोरजो यावत्तावल्लग्नं शुभावहम् ॥

इस प्रकार से अत्यन्त आवश्यक होने पर ही गोधूलि लग्न को ग्रहण करना चाहिए अन्यथा की स्थिति में त्याज्य है–

लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी ।
तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥

उपर्युक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राचीन काल में गोधूलि लग्न शुद्रादि वर्णों के लिए ग्राह्य था न कि समस्त वार्गों हेतु। देशकाल के अनुसार भी समस्त प्रदेशों में यह लग्न ग्राह्य नहीं था। पूर्वी प्रदेशों यथा– बंगाल, असम एवं कलिङ्ग (ओडिशा) आदि प्रदेशों के लिए गोधूलि उत्तम है।

इसी के साथ वैश्यवर्ण एवं गान्धर्व विवाह के लिए भी यह योग सर्वोत्तम है। जैसे नारद जी को वचन है–

प्राच्यनाञ्च कलिङ्गानां मुख्यं गोधूलिकं स्मृतम्
गान्धर्वादिविवाहेषु वैश्योद्वाहे च योजयेत्।

वृहद्वेवज्ञरञ्जन में गोधूलि लग्न में केवल कार्तिक मास का उल्लेख ग्राह्य विषय है। एकादशी से पूर्णिमा पर्यन्त ग्राह्य है यथा–

कुर्याद्गोकलिकं लग्नं कार्तिक्यां दिनपञ्च च।
सर्वदोषापहं प्रोक्तमृभिषिस्तत्वदर्शिभिः ॥

गोधूलिलग्न में उपर्युक्त मास, देश काल के अनुसार निम्न पांच महादोषों का अवश्य विचार करके उसको ग्रहण करना चाहिए यथा–

कुलिकं क्रान्तिसौम्यं च मुर्तौ षष्ठाष्टमः शशी ।
पञ्चगोधूलिके त्याज्या स्वन्ये दोषाः शुभावहाः ॥

अतः गोधूलिलग्न में कुलिक, क्रान्तिसाम्य, लग्न, षष्ठ, अष्टम में चन्द्र का परित्याग कर देना चाहिए। गोधूलिलग्न में सप्तम एवं अष्टम भावस्थ मंगल का होना भी अशुभ माना गया है। अतः इस विषय में भी विचार कर लेना चाहिए।

षष्ठाष्टमे चन्द्रजचन्द्रजीवे क्षोणोसुते वा भृगुनन्दने वा ।
मुर्तौ च चन्द्रे नियमेन मृत्युगौधूलिकं स्यादिह वर्जनीयम्॥

मुहूर्तचिन्तामणि में वर्ज्यदोष के विषय में वर्णित है। यथा–

अस्तं याते गुरुदिवसे सौरसार्के, लग्नान्मृतौ रिपुभवने लग्ने चेन्दौ।
कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थे भौमे, वोढुर्लाभे धन सहजे चन्द्रे सौख्यम् ॥

मुहूर्तचिन्तामणिकार ने गोधूलि लग्न के विषय में कहा है कि गुरुवार को सूर्यास्त के बाद एवं शनिवार को सूर्यास्त से पूर्व ही गोधूलिलग्न शुभ होता है। अन्यथा इसके विपरीत अशुभ होता है। इसलिए ग्रहण नहीं करना चाहिए।

डॉ. रत्न लाल
सहायकाचार्य,
ज्योतिष विभाग

❁ जन्म-कुण्डली में द्वादशभावस्थ सूर्यादिग्रहों का फल ❁

ग्रह	तनु १	धन २	सहज ३	सुख ४	पुत्र ५	शुत्र ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	उच्च-शरीर प्रवासी, रोग	भाग्यवान, मितव्ययी	पराक्रमी, अशान्तिचित	बन्धुवैरी, अशान्तचित	बुद्धिमान, वञ्चक	चतुष्पदकष्ठ राज्यव्यय	स्त्रीकष्ट, व्यापारी	कार्यशी, व्यसनी	भ्रातृपीड़ित, चिन्तायुक्त	परिश्रमी, मातृपीड़क	सन्ततिहीन, राज्यभोगी	नेत्रकष्ट युद्धविजयी
चन्द्र	धनी, सुखी दुर्बल, मूर्ख	विलासी, कुटम्बस्नेही	परिश्रमी, भ्रातृकष्ट	उच्चाधिकारी, स्त्रीपुत्रादिसुख	निर्मलबुद्धि, व्यापारी	शुत्रुजित्, मातृकष्टप्रद	स्त्रीसुख, शत्रुकष्ट	संघर्षशील, व्याधियुक्त	साहसी, सुखी	धर्मात्मा, ऐश्वर्यशील	राज्यप्रतिष्ठा, कन्यासन्तति	नेत्ररोगी, अपूणमनोरथ
भौम	लौहाग्निकष्ट, स्त्रीपुत्रनाश	अल्पपरिवार, धनी	पराक्रमी, भ्रातृकष्ट	कुटुम्बकष्ट, राज्यलाभ	तीव्रजठराग्नि, सन्ततिनाशक	शत्रुजित्, बुद्धिमान्	स्त्रीनाशक, कर्त्तव्यहीन	दुर्भाग्यशीली, महाकष्ट	धनी, तेजस्वी	मंगलकार्यहीन, पराक्रमी	शत्रुनाशक, सन्ततिकष्ट	धर्मभ्रष्ट, वृथापवाद
बुध	अरिष्टनाश, श्रेष्ठबुद्धि	बुद्धिमान्, काव्यप्रेमी	नम्रस्वभाव, व्यापारवृत्ति	प्रधानधिकारी, पितृधनहीन	स्वार्थी, कपटी	मनुष्यविरोधी, शत्रुवशी	स्त्रीसुखदायक, सौन्दर्यशीली	दीर्घायु, व्यापारी	बुद्धिमान, प्रतापी	पितृधनभोगी, नीतिज्ञ	धनी, सौन्दर्यप्रमी	शत्रुजित्, अतिथिपूजक
गुरु	सुखी स्वल्पवीर्यवान्	कवि, मुखरोगी	सहोदरयुत, कृतघ्नी	अनुष्ठानकता, शत्रुसेवित	लेखक,वक्ता, विलासी	मातृरोग, स्त्रीसुख	विभूतिमान, सौन्दर्यशीली	प्रवासी, ईर्ष्यालु	ब्राह्मणप्रेमी, आलसी	पुत्रचिन्ता, ज्ञानी	आभूषणप्रेमी, परमार्थी	अपयशी, वञ्चक
शुक्र	सौन्दर्यवान्, सुखी	बुद्धिमान्, काव्यप्रेमी	बन्धुहीन, कायर	मातृसेवक, महान्	सुपुत्रवान्, कवि	प्रबलशत्रु, दु:खी	कटिरोग, विलासी	चतुष्पदव्यय, प्रवासी	व्यापारी, पाखण्डी	वंशावरोधक, विप्रवृत्ति	कीर्तिवान्, गुणी	क्रीडक, बन्धुवैरी
शनि	तृष्णावान् चिन्तित	कटुभाषी, प्रवासी	युक्तभाषी, विघ्नयुक्त	चतुष्पदहीन, वातरोगी	पुत्रहीन, मित्रद्रोही	शत्रुजित्, पशुसुख	चञ्चलस्त्री, वाद-विवादी	बन्धुवियोग, रोगी	संन्यासी, कपटबुद्धि	बन्धुहीन, युद्धविजय	स्थिरवृद्धि, अस्थिरसंपत्ति	निर्लज्ज, शत्रुनाशक
राहु	शत्रुबलहन्ता स्त्रीचिन्ता	कुटुम्बनाशक, निर्भय	पराक्रमी, सम्मानित	मातृरोगी, क्रोधी	पुत्रवान्, स्त्रीचिन्तित	शत्रुनाशक, स्थिरधनी	स्त्रीहीन, लोकनिन्दित	कुटुम्बत्यागी, पण्डित	तीर्थसेवी, दयालु	व्यसनी, लोकनिन्दित	पुत्रवान्, दृष्टात्मा	सिद्धमनोरथ, दीनमैत्री
केतु	दुर्जन-संतप्त स्त्रीपुत्रकष्ट	मुखरोगी, कुटुम्बविरोधी	बाहुरोगी, शत्रुनाशक	मातृसुखहीन, पितृधननाशक	भ्रातृरोग, कष्ट	व्याधिनाश, शत्रुनाश	धननाश, जलभय	गुदारोग, निजगृहसेवी	क्लेशनाशक, म्लेच्छमैत्री	पितृसुखहीन, चतुष्पदपतन	भाग्यवान्, विद्वान	सद्व्ययी, नेत्ररोगी

❁ वर्ष-कुण्डली में द्वादशभावस्थ सूर्यादिग्रहों का फल ❁

ग्रह	तनु १	धन २	सहज ३	सुख ४	पुत्र ५	शुत्र ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	त्रिदोषपीड़ा	कुटुम्बविरोधी	भ्रातृपीड़ा	कृषि-पशुहानि	पित्तप्रकोप	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	भ्रातृकष्ट	भ्रातृकष्ट	धनमानलाभ	धनी,विलासी	उद्विग्नता
चन्द्र	कफरोगी	कुटुम्बपरप्रभाव	भ्रातृसुख-धनी	व्यापारलाभ	प्रबुद्धमित्र	वाद-विवाद	खांसी,वातरोग	मूत्ररोग	भाग्योदय	वेरीनाश,धनी	व्यापारलाभ	नेत्ररोग
भौम	नेत्ररोगी	धनहानि	वाहनसुख	अग्निकष्ट,व्रण	सन्तानकष्ट	शत्रुनाश	स्त्रीरोग	शत्रुकष्ट	भाग्ययशवृद्धि	धनवृद्धि	राज्यधनलाभ	व्यय,व्याधि
बुध	स्त्रीसुखवृद्धि	वाहनलाभ	धनयशपुत्रसुख	भूमिलाभ	धनपुत्रलाभ	स्वीकष्ट	विलासी	कफ,ज्वर	धनपुत्रलाभ	पुत्रधनवृद्धि	धनयशवृद्धि	वैरीविवाद
गुरु	यशस्वी	धनलाभ	कीर्तिलाभ	वाहनसुख	सन्ततिसुख	शत्रु-स्त्रीकष्ट	दाम्पम्यसुख	ज्वरवृद्धि	धनलाभ	राज्यलाभ	विजयलाभ	रोगी,शत्रुवृद्धि
शुक्र	यशस्वी	धन-मानलाभ	सहोदरसुख	कृषिवाहनसुख	सन्तानवृद्धि	उदरविकार	स्त्रीसुख	शरीरकष्ट	धर्मशील	व्यापारी,धनी	सन्तानवृद्धि	नेत्र, चर्मरोग
शनि	वातरोगी	भ्रातृनाश	पराक्रमी	अग्निपीड़ा	पुत्रहानि	कीर्तिवृद्धि	स्त्रीकष्ट	ज्वरपीड़ा	भाग्योदय	कृषिहानि	कीर्तिवृद्धि	विशेषव्यय
राहु	स्त्रीकष्ट	बन्धुविवाद	धन-यशवृद्धि	वाहनकष्ट	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	गुप्तरोग	मृत्युतुल्यकष्ट	धर्मवृद्धि	यशवृद्धि	शत्रुनाश	स्थानभ्रंश
केतु	चिन्ता	परिवारक्लेश	वंशवृद्धि	वाहनपीड़ा	कुबुद्धि	रोगनाश	विवाद	अरिष्टप्राप्ति	भाग्यनाश	अर्थप्राप्ति	विविधलाभ	रोग, शोक
मुन्था	शरीरपुष्टि	उत्साही	पराक्रमी,धनी	शरीरपीड़ा	पुत्रयशलाभ	दुर्बलता	धन-धर्मनाश	व्यसनी	भाग्योदय	राज्यसुख	ऐश्वर्यप्राप्ति	दृष्टसंगति



प्रो. ओंकारनाथ चतुर्वेदी
महाप्रयाण : एक श्रद्धाञ्जलि

यह अत्यन्त दु:ख का विषय है, कि संस्कृत एवं ज्योतिष जगत् के ख्याति प्राप्त ज्योतिषाचार्य, पूर्व ज्योतिष-विभागाध्यक्ष भारतीय ज्ञान परम्परा एवं वेदादि शास्त्रों के परम मनीषी आचार्य ओंकारनाथ चतुर्वेदी जी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी विक्रम संवत् २०८२ तदनुसार २४ नवम्वर २०२५ई. को प्रातः काल ब्रह्मलीन हो गये। यह दु:खद समाचार श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय एवं समस्त संस्कृतानुरागियों के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

प्रो. ओंकारनाथ चतुर्वेदी जी का जन्म नगला पायसा, मथुरा उत्तर प्रदेश में दिनाङ्क ०१ जनवरी, १९४१ ई. को हुआ था। आपने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सन् १९६२ ई. में सिद्धान्त-ज्योतिष विषय में शास्त्री, सन् १९६५ ई. में सिद्धान्त ज्योतिष विषय में आचार्य, सन् १९९१ ई. में फलित-ज्योतिष विषय में आचार्य, सन् १९६९ ई. में आगरा विश्वविद्यालय से एम.ए. (संस्कृत) एवं सन् १९७७ ई. में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान से विद्यावारिधि की उपाधि प्राप्त की। आपने सेठ प्रेमसुखदास भगत इण्टरकालेज, फरह, मथुरा में दिनाङ्क ०१.०७.१९६५ से ०१.०३. १९७९ तक प्रवक्ता (संस्कृत) के रूप में, दिनाङ्क ०२.०३.१९७९ से ३१.१२.२००२ तक सेवानिवृत्ति तक, व्याख्याता, रीडर एवं आचार्य के रूप में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ में सेवायें प्रदान की। इनसे शिक्षा प्राप्त मेधावी छात्र और छात्राओं की संख्या देश एवं विदेश में उनके आचार्यत्व का गुणगान करते हुए संस्कृत तथा ज्योतिष के प्रचार प्रसार में संलग्न हैं।

विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति स्वर्गीय डॉ. मण्डन मिश्र जी और द्वितीय कुलपति स्वर्गीय प्रो. वाचस्पति उपाध्याय जी के साथ इनका अत्यन्त आत्मीय एवं प्रगाढ़ सम्बन्ध था। आचार्य ओंकारनाथ चतुर्वेदी जी द्वारा लिखित संस्कृत ज्ञान चन्द्रिका, संस्कृत ज्ञानदीप, संस्कृत भूषण नामक पुस्तकें आज भारत के अनेक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पढ़ाई जा रही हैं। विश्वविद्यालय में निर्मित वेधशाला एवं विद्यापीठ पञ्चाङ्ग निर्माण में म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा जी के साथ मिलकर प्रारम्भ से ही इनका अद्वितीय योगदान रहा है। आचार्य चतुर्वेदी जी अनुशासन, गुरु शिष्य भारतीय परम्परा, संतुलितशिष्टाचार, मृदुल व्यक्तित्व, विवेक, संयम और साधना प्रधान जीवन के प्रतीक बने रहे। अपने दीर्घ, तपः शुद्ध और स्फुर्तिपूर्ण अध्यापन जीवन में उन्होंने केवल विद्या का प्रचार ही नहीं किया, अपितु असंख्या विद्यार्थियों, शोधार्थियों ओर सारस्वत साधकों के हृदयों में गौरवपूर्ण चरित्र शास्त्र निष्ठा और कर्त्तव्यपरायणता का प्रकाश भी प्रतिष्ठित किया। उनकी गम्भीर विद्वत्ता, सूक्ष्म विश्लेषण शक्ति, शास्त्रीय अनुशासन, सुबोध एवं संयत भाषाशैली तथा सहज सौजन्यभाव ने उन्हें आदर्श आचार्य ही नहीं, बल्कि एक मनीषा संवलित संस्कृति के सारस्वत तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित किया है। विश्वविद्यालय परिवार एवं ज्योतिष विभाग की यह सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी कि आपके पद चिह्नों पर चलते हुए आपकी रचनात्मक एवं सकारात्मक संकल्पनाओं को मूर्त रूप देते हुए आगे बढ़ाया जाय।

शोकाकुल समस्त विश्वविद्यालय परिवार सहित
प्राध्यापकगण, ज्योतिष-विभाग

स्वर्णजयन्तीसदनम्
(ज्योतिष-विभाग)



१. **ज्योतिष–प्रवेशिका** यह षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम वैदिक ज्योतिष की मूल संकल्पना एवं प्राथमिक जानकारी पर आधारित है।

२. **ज्योतिष–प्राज्ञ** यह एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम ज्योतिष शास्त्र के आधारभूत सिद्धान्त और उनकी प्रयोग विधि द्वारा जन–जीवन की घटनाओं के पूर्वानुमान की विधि पर आधारित है।

३. **ज्योतिष–भूषण** यह द्विवर्षीय एडवान्स डिप्लोमा पाठ्यक्रम ज्योतिष शास्त्र की विशिष्ट जानकारी पर आधारित है।

४. **शास्त्री** यह तीन वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है, जो सिद्धान्त ज्योतिष एवं फलित ज्योतिष दोनों विषयों में चलाया जाता है।

५. **आचार्य** यह द्विवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है, जो सिद्धान्त ज्योतिष एवं फलित ज्योतिष दोनों विषयों में चलाया जाता है।

६. **पी–एच.डी.** ज्योतिष शास्त्र के गम्भीर, जटिल एवं लोकोपयोगी पहलुओं पर शोध के माध्यम से नवीन तथ्यों की जानकारी के लिए यह अनुसन्धानमूलक पाठ्यक्रम चलाया जाता है।

७. **मेडिकल एस्ट्रोलॉजी** 'ज्योतिर्वैद्यौ निरन्तरौ' इस आप्त उक्ति के अनुसार ज्योतिर्विद् को आयुर्वेद एवं वैद्य को ज्योतिष, इन दोनों विषयों की जानकारी हेतु भैषज्य ज्योतिष में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम का सञ्चालन किया जाता है।

नोट – सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश प्रक्रिया प्रतिवर्ष जून–जुलाई में विद्यापीठ के निर्धारित नियमों के अनुरूप सम्पन्न होती है।
प्रमाणपत्रीय एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की कक्षायें शनिवार एवं रविवार को सञ्चालित की जाती हैं।

मुद्रक : गणेश प्रिंटिंग प्रेस- नई दिल्ली 110016